



Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W4CZ307981	ImageGroup:	I4CZ308198
LCCN:	n/a	ISBN:	n/a

Title:	ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་གྱི་ལུ་ཁྱུ། ting nge 'dzin gyi tshogs kyi le'u/
Author:	བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ། byang chub bzang po
Descriptor:	copy made available from the Library of Tibetan Works and Archives, LTWA acc No:29796
Original Publication:	bibliotheca indo tibetica ;55
Place:	sarnath, varanasi
Publisher:	wA Na dbus bdod kyi ches mtho'i gtsug lag slob gnyer khang
Date:	2004
Volume:	1
Total Volumes:	1
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at Tibetan Buddhist Resource Center, 1430 Massachusetts Avenue, Cambridge, MA 02138 US.

भोट भारतीय ग्रन्थमाला ५५

སྟོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ་དང་ནག་པོ་ཐབས་ཀྱིས་
མཛད་པའི་ཉིང་རེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེན་ཞེས་བྱ་བའི་
གཞུང་ཆེན་གཉིས་བཞགས་སོ།

आचार्यवोधिभद्र-कृष्णपाद-विरचितों
समाधिसम्भारपरिवर्तों



भोट विद्या संस्थानम्

पुनरुद्भागकर्त्री, अनुवादकर्त्री, सम्पादिका च
डॉ० छेरिङ् डोलकर

पर्यवेक्षकः

प्रो० डॉ० कामेश्वरनाथमिश्रः

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

2.17

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 55

Ācārya Bodhibhadra-Kṛṣṇapāda-Viracitau
SAMĀDHISAM̐BHĀRAPARIVARTAU



Restored, translated and edited by
Dr. Tsering Dolkar

Supervisor
Prof. Dr. Kameshwar Nath Mishra

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

Chief Editor: *Prof. Geshe Ngawang Samten*

Publication Incharge: *Samten Chhoshpel*

First Edition: 550 copies, 2004

Price: Hardback: 190.00

Paperback: 120.00

© Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath -221007
Varanasi (U.P.) India 2003. All rights reserved.

Publisher:

Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

ISBN: 81-87127-26-0 (HB)

ISBN: 81-87127-27-9 (PB)

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - ५५

བོད་ཀྱི་དབེ་མཛོད་ཁང་།
Glass No. ५५
Acc. No. २१७१६

སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ་དང་ནག་པོ་ཞབས་ཀྱིས་
མཛད་བའི་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བའི་
གཞུང་ཚན་གཉིས་བཞུགས་སོ།།

आचार्यबोधिभद्र-कृष्णपाद-विरचितौ
समाधिसम्भारपरिवर्तौ



पुनरुद्धारकर्त्री, अनुवादकर्त्री, सम्पादिका च
डॉ० छेरिङ् डोलकर

पर्यवेक्षकः
प्रो० डॉ० कामेश्वरनाथमिश्रः

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

प्रधान सम्पादक : प्रो० गेशे डवङ्ग समतेन

प्रकाशन प्रभारी : श्री समतेन छोस्फेल

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, २००४

मूल्य : सजिल्द : १९०.००
अजिल्द : १२०.००

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी - २२१००७, २००४
प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार सुरक्षित ।

प्रकाशक :
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

प्रकाशकीय

सामान्यतया बौद्धशासन एवं विशेषकर भोटवासियों पर अत्यन्त कृपालु आचार्य दीपङ्करश्रीज्ञान के गुरु आचार्य बोधिभद्र रचित समाधिसम्भारपरिवर्त नामक ग्रन्थ के द्वारा समाधि-साधना का प्रयोजन एवं विधि की व्यवस्था नौ अवयवों के माध्यम से सूत्रों व शास्त्रों के अनेक आगमों एवं धर्मपर्यायों के उद्धरणों द्वारा युक्तिपूर्वक की गयी है, जो अत्यन्त संक्षिप्त, सुस्पष्ट एवं सुबोध होने के कारण सरलता से प्रवृत्त होने योग्य है।

इसी प्रकार आचार्य कृष्णपाद कृत समाधिसम्भारपरिवर्त नामक एक लघु ग्रन्थ भी प्राप्त होता है, जिसका अभिधेय भी उपर्युक्त ग्रन्थ के समान है। इसके अतिरिक्त आचार्य दीपङ्करश्रीज्ञान कृत एक अन्य समाधिसम्भारपरिवर्त नामक ग्रन्थ भी प्राप्त होता है, जिसका प्रकाशन कुछ वर्षों पूर्व इसी संस्थान द्वारा पुनरुद्धार एवं अनुसंधान सहित किया गया है।

दुर्लभ ग्रन्थ शोध अनुभाग में कार्यरत शोध सहायिका आयुष्मती छेरिङ् डोलकर ने विद्या-वारिधि उपाधि हेतु प्रस्तुत दोनों ग्रन्थों के पुनरुद्धार कार्य को अनुसन्धेय विषय बनाया। तदनुसार उन्होंने आचार्य बोधिभद्र एवं कृष्णपाद के ग्रन्थों का संस्कृत में पुनरुद्धार, हिन्दी अनुवाद एवं विभिन्न उपलब्ध भोट संस्करणों से मिलान कर भोट-पाठ का तुलनात्मक सम्पादन किया। साथ ही, छेरिङ् डोलकर ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में एक विस्तृत भूमिका एवं अन्त में महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी दिये हैं।

सम्प्रति इन दोनों ग्रन्थों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है, जिसके लिए आयुष्मती छेरिङ् डोलकर साधुवाद की पात्र हैं। इस कार्य के सम्पादन में विशेष सहायता एवं मार्ग निर्देशन प्रदान करने के लिए आचार्य कामेश्वरनाथ मिश्र आदि सभी सहयोगी लोगों को धन्यवाद देता हूँ।

आशा करता हूँ कि इन ग्रन्थों के अध्ययन से पाठकों में समाधि-शिक्षा की अभिवृद्धि होगी और निर्मल बुद्ध-शासन चिरस्थायी होगा।

दिनाङ्क २५ दिसम्बर, २००३

प्रो० गेग्ने डवङ्ग समतेन
निदेशक

དཔར་སྐྱོན་ཆེད་བཟློང་།

༡༡ ། དཔར་སྐྱོན་བྱེད་པ་ལྟར་པར་རང་ཅག་གངས་ཅན་པ་རྣམས་ལ་བཀྲིན་མིན་དུ་
ཆེ་བའི་སློབ་དཔོན་དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཀྱི་སྤྱོད་མ་སློབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོས་མཛད་
པའི་བསྐྱོན་བཅོས་ཉིང་དེ་འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་པ་འདི་ནི་མདོ་དང་བསྐྱོན་བཅོས་ཀྱི་
ལུང་དང་རྣམ་གྲངས་དུ་མའི་རིགས་པའི་ལམ་ནས་ཉིང་དེ་འཛིན་སྐྱབ་པའི་དགོས་པ་དང་
ཚུལ་ཡན་ལག་དགུར་སྤྲེ་སྤྲེ་ཉུང་དུ་རྣམ་གསལ་གོ་བདེའི་ལམ་ནས་གཏན་ལ་ཐབ་པ་ཞིག་
ཡིན་པས་ཀུན་གྱིས་འཇུག་པ་བདེ་བ་ཞིག་དུ་སྤྲང་། དེ་བཞིན་དུ་སློབ་དཔོན་ནག་པོ་ཞབས་
ཀྱིས་མཛད་པའི་ཉིང་དེ་འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་པའི་གཞུང་ཆུང་དུ་ཞིག་སྤྲང་བ་དེའང་
གོང་གི་གཞུང་དེ་དང་བཟློང་བྱ་མཚུངས་ཞིང་། སློབ་དཔོན་རྒྱལ་ཁབ་མཛད་པའི་ཉིང་དེ་
འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ་ཞིག་ཡོད་པ་དེ་ཡང་ལོ་འགའ་ཤས་སྟོན་འདི་ག་ཐོད་ཀྱི་
ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་ནས་ཉམས་ཞིབ་ཐབ་བསྐྱར་དང་སྤྲུགས་དཔར་
སྐྱོན་ཞུས་ཟིན།

ད་རེས་དཔེ་རྒྱུན་དགོན་རིགས་ཉམས་ཞིབ་སྤྲེ་ཆན་གྱི་ཉམས་ཞིབ་ལས་རོགས་ཆེ་
དང་ལྷན་མ་ཆེ་རིང་སློལ་དཀར་གྱིས་རང་གི་རིག་པའི་ཚུ་གཉེར་གྱི་ལག་འབྲེར་ཆེད་ཉམས་
ཞིབ་ཀྱི་ལས་གཞིར་སྤངས་ཏེ་སློབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ་དང་སློབ་དཔོན་ནག་པོའི་
གཞུང་གཉིས་པོ་ལོགས་སྐྱར་སྐྱར་དུ་བསྐྱར་གསོ་དང་ཉིན་སྐྱར་དུ་ཐབ་བསྐྱར་། དེ་བཞིན་
ཐོད་དཔེའི་དཔར་མ་མཚུངས་བསྐྱར་དང་སྐྱེད་བཟློང་གྱིས་པ་ཞིག་དང་སྤྲུགས་སྐྱོན་ཐབས་
ཁག་སྐྱར་ཏེ་གཞུང་འདི་གཉིས་སྤྱི་ཆེའི་སྟོག་པ་པོའི་སྐྱོན་སྐྱར་བཤམས་སྐབ་པ་ལ་བསྐྱགས་
བཟློང་དང་། ལས་དོན་འདི་སྐྱབ་པ་ལ་མཐུན་གྲོགས་ལམ་སྟོན་གནང་མཁན་སློབ་དཔོན་

ཆེན་པོ་ཀུམ་ལྷན་ལ་སོགས་པ་ནམས་ལའང་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ལྟ་དང་། གཞུང་འདི་དག
 གི་སློབ་གཉེར་ལ་བཞེན་ནས་ཉིང་རེ་འཛིན་གྱི་བསྐྱབ་པ་གོང་དུ་འཕེལ་བའི་སློ་ནས་
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྐྱན་པ་དྲི་མ་མེད་པ་ཡུན་དུ་གནས་པའི་རྒྱུ་འབྱུང་བའི་སློན་ལམ་བཅས།
 ལྷ་ཆ་དབྱས་པོད་གྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་རེས་སློན་པ་དག་བཤེས་
 དག་དབང་བསམ་གཏན་གྱིས། ཕྱི་ལོ་ ༢༠༠༢ ལྷ་ ༡༢ ཆོས་ ༢༥ ལ་སྐྱུར་བ་དགོའོ། ॥

विषय-सूची

५१२०८५

प्रकाशकीय

v

५१२०८५

vii-viii

प्राक्कथन

xi-xv

५१२०८५

xvii-xx

Introduction

1-19

५१२०८५

21-100

समाधिसम्भारपरिवर्तौ (आचार्यबोधिभद्र-कृष्णपाद-विरचितौ)

1- (संस्कृत-पुनरुद्धारः)

1-29

(क) समाधिसम्भारपरिवर्तः - (आचार्यबोधिभद्रः)

1-26

(ख) समाधिसम्भारपरिवर्तः - (आचार्यकृष्णपादः)

27-29

2- (बाबुलालदासदासदास)

31-108

१ हिन्दू-देवदेव-श्रीकृष्ण-श्रीशिव (श्रीवन्द्य-सुन्दर-सुन्दर-सुन्दर)

31-99

२ हिन्दू-देवदेव-श्रीकृष्ण-श्रीशिव (श्रीवन्द्य-सुन्दर-सुन्दर-सुन्दर)

101-108

3- (हिन्दी-अनुवाद)

109-133

(क) समाधिसम्भारपरिवर्त - (आचार्यबोधिभद्र)

109-130

(ख) समाधिसम्भारपरिवर्त - (आचार्यकृष्णपाद)

131-133

- 4- परिशिष्टानि (ཁ་སྐོང་ལྷན་པ་པས་ཁག) 137-192
- (1) आचार्यबोधिभद्रकृत-समाधिसम्भारपरिवर्ते उद्धरणानुक्रमः 137-144
- (2) आचार्यबोधिभद्रकृत-समाधिसम्भारपरिवर्ते आचार्य-
ग्रन्थादिनामानि 145-146
- (3) སྐོབ་དཔོན་གྱི་རྒྱུ་ལྡན་པའི་མཛད་པའི་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་གྱི་ལེའུར་
གསལ་བའི་ལུང་འདྲེན་ཁག་གི་ཀ་མད་གོ་རིམ། 147-152
- (4) སྐོབ་དཔོན་གྱི་རྒྱུ་ལྡན་པའི་མཛད་པའི་ཉིང་དེ་འཛིན་ཚོགས་གྱི་ལེའུར་
གསལ་བའི་ལུང་འདྲེན་ཚོས་ཚན་ཁག་གི་མཚན་གྱི་། 153-155
- (5) སྐོབ་དཔོན་གྱི་རྒྱུ་ལྡན་པའི་མཛད་པའི་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་གྱི་ལེའུར་
གསལ་བའི་བོད་སྐད་དང་ལེགས་སྒྱུར་གྱི་ཐ་སྐད་ཤན་སྒྱུར། 154-184
- (6) སྐོབ་དཔོན་ནག་པོ་ཞབས་གྱིས་མཛད་པའི་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་གྱི་ལེའུར་
གསལ་བའི་བོད་སྐད་དང་ལེགས་སྒྱུར་གྱི་ཐ་སྐད་ཤན་སྒྱུར། 185-187
- (7) ཟེང་བཛྲིད་ཏུ་ལུང་འདྲེན་སྒྲུངས་པའི་གཞུང་ཚན་ཁག་གི་མཚན་གྱི་། 188-189
- (8) ཟེང་བཛྲིད་ཏུ་བཀོད་པའི་དབྱུང་གཞིའི་གཞུང་ཚན་ཁག་གི་མཚན་གྱི་། 190-192

प्राक्कथन

महाकारुणिक भगवान् बुद्ध द्वारा उपदेशित धर्मों को अभिधेयरूपेण तीन शिक्षापदों एवं अभिधानरूपेण तीन पिटकों में संगृहीत किया जा सकता है। इन्हें भी सत्त्वों को कर्म तथा तीन क्लेश विषों से मुक्त होने के प्रतिपक्ष के रूप में उपदेशित किया गया है। अभिधेय तीन शिक्षापद तो अधिशील, अधिसमाधि एवं अधिप्रज्ञा हैं। इन तीनों के क्रम को भी मोक्ष के अभिलाषी पुद्गलों द्वारा निर्वाण एवं सर्वज्ञ पद प्राप्ति के उपाय के रूप में अधिकृत करके कहा गया है, ऐसा समझना चाहिए। उनमें से चित्त के बाह्य विक्षेप के शमन के उपाय के रूप में शीलशिक्षा, आभ्यन्तर राग-द्वेष के विक्षेप के शमन के उपाय के रूप में समाधिशिक्षा तथा समस्त कल्पनाओं के जाल का समूल विनाश के उपाय के रूप में अधिप्रज्ञाशिक्षा की देशना की गई है। मार्ग की शिक्षा के समय सर्वप्रथम सम्यक् शील से युक्त होकर सम्यक् समाधि के अंगों को क्रमेण अभ्यास कर शमथ सम्भारों की भावना की जाती है। पश्चात् प्रत्यवेक्षण प्रज्ञारूपी विपश्यना के द्वारा समस्त कल्पनाओं का समूल नाश कर सर्वज्ञ जिनेन्द्र पद को प्राप्त किया जा सकता है। जैसे *आर्यरत्नकूटसूत्र* में कहा गया है—

शीलं प्रतिष्ठाय समाधिलाभः

समाधिलाभाच्च हि प्रज्ञाभावना ।

प्रज्ञया ज्ञानं भवति विशुद्धं

विशुद्धज्ञानस्य हि शीलसम्पत् ॥

—देगे काग्युर, (रत्नकूट, 'छ' पुट, पृ० १४६)

तीनों शिक्षापदों में से अधिसमाधि शिक्षा के अभ्यासार्थियों के लिए आचार्य बोधिभद्र रचित यह *समाधिसम्भारपरिवर्त* नामक ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी प्रतीत होता है। कुछ वर्षों पूर्व आचार्य अन्तिम वर्ष में मुझे इस ग्रन्थ को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वर्तमान समय में इस ग्रन्थ के महत्त्व एवं उपयोग को देखते हुए मैंने इस ग्रन्थ के अभिधेय, तथा रचयिता आचार्य की जीवनी के बारे में जानकारी प्राप्त की। साथ ही, यह जानकारी भी प्राप्त की कि इस ग्रन्थ का संस्कृत अथवा अन्य किसी भाषा में पुनरुद्धार हुआ है या नहीं। जब मैंने ग्रन्थ के बारे में सारी सूचनाएं प्राप्त कर ली तो पश्चात् मैं इस संस्थान के तत्कालीन निदेशक प्रो० एस० रिनपोछे के पास गयी और अपनी बात को उनके समक्ष प्रस्तुत किया तथा

उनकी राय माँगी। वे मेरे इस प्रयास से अत्यन्त प्रसन्न हुए और मुझे इस कार्य हेतु प्रोत्साहित किया।

आचार्य अन्तिम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मैंने आचार्य बोधिभद्र रचित *समाधिसम्भारपरिवर्त* ग्रन्थ के साथ आचार्य कृष्णपाद विरचित *समाधिसम्भारपरिवर्त* के पुनरुद्धार कार्य एवं तिब्बती पाठ के सम्पादन का *विद्यावारिधि* उपाधि हेतु इसी संस्थान से प्रोफेसर *कामेश्वरनाथ मिश्र* के निर्देशन में पंजीकरण करा लिया। तदनुसार मैंने उक्त दोनों ग्रन्थों का संस्कृत पुनरुद्धार एवं उनके तिब्बती पाठ का अन्य चार संस्करणों से पाठ-भेद कर सम्पादन कार्य किया तथा ग्रन्थ में प्राप्त उद्धरणों को ढूँढ़कर उन ग्रन्थों का उल्लेख पाद-टिप्पणी में किया।

सामान्यतया तिब्बती तन्त्रगुर सूचियों में *समाधिसम्भारपरिवर्त* नाम के तीन ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। इसमें से एक ग्रन्थ श्लोकबद्ध प्राप्त होता है, जिसकी रचना आचार्य *अतिश* ने की है। संस्थान के कर्ग्युद सम्प्रदाय के प्राध्यापक भिक्षु *रमेशचन्द्र नेगी* ने उक्त ग्रन्थ का पुनरुद्धार हिन्दी अनुवाद सहित पहले ही प्रकाशित कर दिया है। शेष दोनों ग्रन्थों के पुनरुद्धार का दायित्व मैंने ग्रहण किया।

आचार्य *बोधिभद्र* कृत *समाधिसम्भारपरिवर्त* नामक यह ग्रन्थ न केवल अत्यन्त पूजनीय है, अपितु महत्त्वपूर्ण भी है। विशेषकर वर्तमान समय में अभ्यास एवं ध्यान-साधना के अभिलाषी लोगों के लिए सरल, उपयोगी, उचित परिमाण वाला ग्रन्थ है तथा नौ अंगों के विभाजन के साथ इसके अध्ययन में सुगमता आदि अनेक विशेषताएँ हैं। तिब्बतियों के ऊपर महान् कृपा करने वाले आचार्य *दीपंकरश्रीज्ञान* ने भी इस ग्रन्थ को बहुत महत्त्वपूर्ण माना है तथा अपनी पुस्तिका *बोधिपथप्रदीप पञ्जिका* में अनेकों बार इस ग्रन्थ के अभिप्रायों का समावेश किया है। संक्षेप में *बोधिपथप्रदीप* का आधार ग्रन्थ भी यही प्रतीत होता है। जैसे उसमें कहा गया है—

गुरुभिः देशितैः सम्यक् उपायस्तु ज्ञातव्य एव। (.....)

बोधिपथप्रदीप की ही पञ्जिका में 'गुरुभिः' शब्द से आचार्य *बोधिभद्र* को लक्षित किया गया है।

आचार्य *बोधिभद्र* ने सूत्र एवं तन्त्र तथा अन्य अनेक शास्त्रों के अभिप्रायों को आधार बनाकर इस ग्रन्थ की रचना की है। यह ग्रन्थ शमथ एवं विपश्यना

दोनों की समाधि में शिक्षित होने के क्रम को नौ अंगों में संगृहीत कर व्याख्या करती है, जो अत्यन्त मनोहारी है।

संक्षेप में इस ग्रन्थ का अधिधेय इस प्रकार है—क्लेशों के प्रहाण के लिए समाधि-भावना की आवश्यकता। विक्षेप आदि के प्रहाण की आवश्यकता। काय एवं चित्त विवेकता के सेवन की आवश्यकता। काय विवेकता के सेवन से माता-पिता, मित्र एवं सम्बन्धी आदि से सम्बद्ध सांसारिक कार्यों में विक्षेप का प्रहाण करना। चित्त विवेकता के सेवन के उपाय स्वरूप काम वस्तुओं के प्रति राग-द्वेष एवं अनिच्छित वस्तुओं का विरोध कर उनके प्रति क्रोध आदि समस्त विपरीत कल्पनाओं का प्रहाण कर काय-चित्त दोनों की विवेकता के सेवन हेतु अभ्यासक्रम को नौ अंगों द्वारा बताया गया है।

उसमें भी प्रथम अंग प्रहेय है, जिसमें समाधि की भावना में प्रवृत्त होने के अभिलाषियों के मुख्य बाधकों मार एवं मारकर्मों का परिचय, उनके परिषद, उनके कारित्रों तथा उनके विपरीत कल्पनाओं का प्रहाण करना आदि का वर्णन किया गया है। द्वितीय अंग द्वारा श्रवण पूर्वक प्रज्ञा का विकास कर मारकर्मों का निवर्तन करना बताया गया है। तृतीय अंग के द्वारा बहुत अधिक श्रवण से प्रज्ञा का विकास किए जाने पर भी विना अभिज्ञा का उत्पाद किए धर्मोपदेश उचित न होना कहा गया है। यदि उपदेश करता है तो उसके समस्त दोषों को सूत्र एवं तन्त्र दोनों के आगमों का उद्धरण देते हुए करता है। चौथे अंग के द्वारा श्रवणार्थ के अभ्यास हेतु कायविवेकता के सेवन से कष्ट निवारण की आवश्यकता को बताया गया है।

पाँचवें अंग के द्वारा कष्ट निवारण के पूर्व संसार के प्रति अकृत्रिम उद्वेग के विना विवेकता का सेवन करने से कोई लाभ न होने के कारण बाह्य लाभ आदि के प्रति तृष्णा तथा आभ्यन्तर राग-द्वेष आदि सांसारिक दोषों के प्रहाण की आवश्यकता को बताया गया है। छठवें अंग के द्वारा समाधि के विपक्षों का प्रहाण कर गुणों का अनुसरण करना बताया गया है। सातवें अंग के द्वारा मनुष्य जीवन की दुर्लभता, मृत्यु की अनित्यता एवं मृत्यु की अनियतता आदि स्मृति द्वारा उनके सदैव नित्य न होने तथा परिवर्तनीय होने के कारण प्रयत्नपूर्वक उनकी निःसारता की चित्त में भावना आदि को बताया गया है। आठवें अंग के द्वारा शमथ एवं विपश्यना की युगनद्धता की भावना की देशना की गई है। नवें अंग के द्वारा उपर्युक्त आठों अंगों के अभ्यास के अनन्तर साक्षात् शमथ मार्ग में प्रवेश करते

समय स्थान, भोजन, चर्या, वस्त्र एवं मित्रों के अनुकूल चित्त को समाधिस्थ करके सनिमित्त शमथ और अनिमित्त शमथ की अभ्यास विधि तथा तदनन्तर विपश्यना की भावना कर संसार से विमुक्ति की विधि बताई गई है।

आचार्य कृष्णपाद रचित *समाधिसम्भारपरिवर्त* शास्त्र का संक्षिप्त अर्थ इस प्रकार है—सामान्य जन तथा उनमें से भी जो बोधि के अभ्यार्थी जन हैं, उनके द्वारा प्राप्त मनुष्य जीवन की सार्थकता के लिए पूर्वगमन करना, शिष्टचर्या खण्डित न होना, विघ्नों का प्रहाण करना, दूसरों को प्रोत्साहित करना, पीड़ा निवारण करना, साक्षात्कार करना, काय रक्षा कर बाधाओं का निराकरण करना, इन सातों मुख्य अंगों एवं एक अंगपूर्ति सहित आठ अंगों के द्वारा इस सारहीन संसार से पराङ्मुखी हो, एकान्त का सेवन कर संसार से मुक्त होने का उपाय बताया गया है।

आचार्य बोधिभद्र रचित *समाधिसम्भारपरिवर्त* ग्रन्थ मूलतः गद्य में है, किन्तु इसमें विभिन्न छन्दों में आबद्ध अनेकों श्लोकों के उद्धरण प्राप्त होते हैं, जिसके लिए मुझे काफी ध्यान देना पड़ा। ग्रन्थ में प्राप्त *अवतंसकसूत्र* के उद्धरणों का गीति छन्द में, *सुहल्लेख* के उद्धरणों का आर्यागीति छन्द में, *सुबाहुपरिपृच्छातन्त्र* के उद्धरणों का उपेन्द्रवज्रा एवं इन्द्रवज्रा छन्दों में पुनरुद्धार किया गया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में विशेष प्रयोजन तथा ग्रन्थ के अन्त में परिणामना छन्दों में आबद्ध हैं, जिनका शार्दूलविक्रिडित छन्द एवं शिखरिणी छन्दों में पुनरुद्धार किया गया है। इसके अतिरिक्त महासिद्ध *सरह* के *दोहाकोश* के उद्धरणों का भी अपभ्रंश में उपलब्ध संस्कृत में पुनरुद्धार किया गया है। ग्रन्थ में कुछ ऐसे श्लोक भी प्राप्त होते हैं, जिनके स्रोत ग्रन्थों के नाम का उल्लेख नहीं किया गया है। उन श्लोकों को स्मधरा, मत्तमायूरी एवं वसन्ततिलक आदि छन्दों में पुनरुद्धार किया गया है।

मैंने इस ग्रन्थ को के० उ० ति० शि० सं० में *विद्यावारिधि* के लिए प्रस्तुत किया था। सम्प्रति इसे यथासम्भव पुनः संशोधित किया है। इसके साथ-साथ अंग्रेजी में ग्रन्थ का परिचय एवं संक्षिप्त सार भी दिया है। अब इसे हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया जा रहा है।

संस्थान के पूर्व निदेशक परम श्रद्धेय भिक्षु *समदोङ्ग रिनपोछे* जी के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने इन दोनों ग्रन्थों के पुनरुद्धार

एवं तिब्बती पाठों के सम्पादन सहित ग्रन्थगत भावार्थ एवं ग्रन्थकारों की जीवनियों के बारे में अनुसंधान करने का सुअवसर प्रदान किया।

मैं अपने परम आदरणीय अनुसंधान-निर्देशक एवं इस संस्थान के प्रोफेसर *कामेश्वरनाथ मिश्र* जी का कैसे आभार व्यक्त करूँ, जिनके कुशल नेतृत्व के बिना यह कार्य मेरे लिए दुःसाध्य था। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, शैक्षणिक कार्यों एवं अन्य अनुसंधान निर्देशन कार्यों में अत्यन्त व्यस्तता के बावजूद महाकरुणा से न केवल आपने मेरा मार्ग-निर्देशन किया, बल्कि इन दोनों ग्रन्थों के पुनरुद्धार, भाषागत संशोधन, छन्द निर्माण, पाद-टिप्पणियाँ, अंग्रेजी में ग्रन्थ संक्षिप्त परिचय एवं सार-लेखन आदि में पूरा सहयोग प्रदान किया।

ग्रन्थ का पुनरुद्धार कार्य करते समय इस प्रकार के ग्रन्थ में साक्षात् प्रवेश न होने से ग्रन्थ के अर्थावबोध में काफी कठिनाईयाँ हुईं। एतदर्थ संस्थान के भूतपूर्व आचार्य, प्रोफेसर *सेम्या दोर्जे* जी का मैं अत्यन्त आभारी हूँ कि उन्होंने अपने व्यस्तता की परवाह न कर ग्रन्थ के कठिन स्थलों को समझने में मुझे यथासम्भव सहायता प्रदान की तथा कुछ उद्धरणों के स्रोतों को ढूँढने में भी सहायता की।

आचार्य *लोसङ्ग दोर्जे रबलिङ्ग* तथा डॉ० *पेमा तेनजिन* के प्रति मैं आभार व्यक्त करना चाहती हूँ कि इन दोनों शुभचिन्तकों ने निरन्तर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। इसके अतिरिक्त प्रकाशन विभाग के प्रभारी श्री *समतेन छोफेल* तथा कम्प्यूटरीकरणकर्त्ता श्री *एस० पी० सिंह* एवं उनके सहयोगियों को प्रकाशन सम्बन्धित सहयोग के लिए धन्यवाद देती हूँ।

संस्थान के निदेशक प्रो० *गेशे डवङ्ग समतेन* जी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करना चाहूँगी, जिन्होंने हमें अपूर्व सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया।

अन्त में मेरे उक्त *समाधिसम्भारपरिवर्त-*ग्रन्थों के पुनरुद्धार-लेखन आदि से सुखेच्छुक विनेयजनों में समाधि का अंकुर प्रस्फुटित हो और वे फलतः महासुख वज्रधरपद को प्राप्त करें, यही कामना करती हूँ।

दिनाङ्क १ जनवरी, २००४

बुद्धाब्द २५४७

डॉ० छेरिङ्ग डोलकर

(शोध सहायक)

གི་ངེས་སྟོན་པ་ཡསྟུབས་ཏེ་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་ལ་དགོངས་སྒྲོར་ཞུས་པས་
དབྱེས་བཞེས་ཀྱིས་གནང་བ་ཐོབ།

སྟོབ་དཔོན་འཛིན་གྱི་བསྐབ་པ་མཐར་མོན་པའི་རྗེས་སུ་ཉམས་ཞིབ་སྟོབ་གཉེར་གྱི་
ཚུལ་དུ་ཞུགས་ཏེ་རིག་པའི་ཚུ་གཉེར་གྱི་ལག་ཁྱེར་གྱི་ཆ་སྟེན་དུ་སྟོབ་དཔོན་ནག་པོའི་
ཞབས་ཀྱིས་མཛད་པའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཡང་ལྷན་སྐྱར་ཐོག་ལེགས་སྐྱར་དུ་
བསྐྱར་གསོ་དང་བོད་འབྱུར་ལ་དག་ཞུས་དང་སྐྱགས། བར་མ་མི་འདྲ་བ་ལྟའི་ལྷན་དུ་
མཚུངས་བསྐྱར་བྱས་ཏེ་ལུང་འདྲན་ཁག་འཛེལ་ཞིབ་དང་ཁྱ་དག་གི་ལས་འགན་ཆ་ཆང་
ཁྱར་དུ་བྲངས་ཏེ་ཉམས་ཞིབ་སྟོབ་གཉེར་གྱི་ཚུལ་དུ་ཞུགས་སྐྱའི་གོ་སྐྱབས་བཟང་པོ་ཐོབ།

སྐྱར་ད་ལྟའི་བོད་བའི་དཀར་ཆག་མ་ལགས་ཀྱི་འཕྲོད་དུ་ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་
ལེའུའི་མཆོན་གཅིག་པའི་གཞུང་ཆེ་ཆུང་ཁག་གསུམ་ཙམ་མཛལ་རྒྱ་ཡོད། དེ་ལས་ཆོགས་
བཅད་རྒྱང་པའི་ངོར་གནས་པའི་སྟོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཇོ་བོ་རྗེས་མཛད་པ་ཞིག་ཡོད་ཅིང་། དེ་
ནི་འདི་གའི་བཀའ་བརྒྱུད་རང་གཞུང་གི་སྟོབ་དགོ་ལྷ་རྒྱུ་རྒྱུ་མེད་མེད་ཀྱི་ལེགས་སྐྱར་དུ་
བསྐྱར་གསོ་དང་ཉིན་སྐྱར་དུ་ཐབ་བསྐྱར་དང་བོད་དཔེར་དག་ཞུས་ཟིན་ནས་འདི་གའི་གཙུག་
ལག་སྟོབ་ཁང་ནས་དབར་བསྐྱར་ཟིན་པ་མཛལ་རྒྱ་ཡོད། འཕྲོས་སྟོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་
པོ་དང་ནག་པོ་ཞབས་ཀྱིས་མཛད་པའི་གཞུང་ཆོན་གཉིས་པོར་གོང་ཞུས་ལྷན་ངོས་ནས་ཁྱ་
སྐྱེག་གི་ངལ་བ་ཁྱར་དུ་བྲངས།

སྟོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་དེ་ཉིད་ཀྱི་གཞུང་གི་
ཙམ་གཞི་ཆོག་ལྷུག་དུ་གནས་ཀྱང་ལུང་འདྲན་མང་པོ་ཞིག་ཆོགས་བཅད་དུ་གནས་པས་ན་
ཕྱེད་སྟོར་འདྲ་མིན་མང་པོར་དམིགས་བསལ་གྱི་དོ་སྣང་བྱེད་དགོས་བྱུང་། གཞུང་འདིའི་
ནང་ཕྱེད་སྟོར་ལྷ་བྱ་ལ་མཆོན་ན་པལ་ཆེན་གྱི་མདོའི་ལུང་པལ་ཆེ་བ་ཕྱེད་སྟོར་རྗེས་
བསྐྱེགས་དང་། བསེས་སྤྱིངས་ཀྱི་ལུང་རྣམས་འཕགས་མའི་སྒྲའི་རྗེས་བསྐྱེགས་ཀྱི་ཕྱེད་
སྟོར་དང་། དཔུང་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པའི་མདོ་རྣམས་ཉེ་དབང་དོ་རྗེ་དང་དབང་པོ་དོ་རྗེའི་
ཕྱེད་སྟོར་གཉིས་སུ་བསྐྱར་གསོ་བྱས། གཞུང་གི་དབུ་ཞབས་ཀྱི་ཆོགས་བཅད་རིང་པོ་

ནམས་སྐུ་ནམ་ཅེན་དང་གཙུག་ཕྱད་ཅན་གྱི་སྡེ་བ་སྦྱར་དང་། བྱུ་ཆེན་སར་རྒྱུ་དོ་རྒྱ་
མཛོད་གྱི་ལུང་འདྲེན་ནམས་རྩར་ཆག་གི་སྐད་དུ་ཐོབ་པ་ཁག་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྐྱར་གསོ་
བྱས། གཞན་ཡང་སྡེ་བ་སྦྱར་སྡེ་བ་འཛིན་དང་མ་བུ་སྦྱོས་པ་དང་དབྱིད་གྱི་ཐིག་ལེ་སོགས་
སྤུང་བསྐྱར་གསོ་བྱས་ཡོད།

གཙུག་ལག་སྦྱོབ་ཁང་འདི་དེ་ས་སྦྱོན་པ་རྩར་བ་ཡསྐྱབས་ཏེ་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ་
མཆོག་ནས་གཞུང་འདི་གཉིས་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྐྱར་གསོ་དང་བོད་དཔེར་དག་ཞུས་དང་
སྦྱགས་གཞུང་དོན་དང་མཛོད་པ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་སོགས་ལ་ཉམས་ཞིབ་བྱ་རྒྱུ་དེ་གོ་སྐྱབས་
བཟང་པོ་གནང་བར་སྙིང་ཐག་པ་ནས་བྱགས་ཏེ་བཀྲིན་ཏེ་སྤྱན་རྒྱ་བཞིན་ཡོད། དེ་དང་
ཆབས་ཅིག་མཐོ་སྦྱོབ་འདི་དེ་ས་སྦྱོན་པ་དགོ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་ལགས་
ལའང་བྱགས་ཏེ་ཆེ་རྒྱ་རྒྱ་ཡིན།

ཁོ་མོའི་ལམ་སྦྱོན་པ་འདི་གའི་གཙུག་ལག་སྦྱོབ་ཁང་གི་རྒྱ་གར་གྱི་པར་དྲི་སྦྱོབ་དཔོན་
ཆེན་པོ་ཀུ་མེ་ལྷ་རྒྱལ་མི་ཤ་མཆོག་ཏུ་ཕྱི་ནང་གི་སྦྱོབ་བྲ་ཆེན་མོ་ཁག་ལ་ཆོགས་འདུ་དུ་
མར་ཐེབས་རྒྱ་དང་། འདི་གར་བཞུགས་ཤིང་རིགས་གཅིག་ཀྱང་འཛིན་གྱི་སྦྱོབ་བྲ་གྱི་མར་
སྦྱོབ་འབྲིད་དང་སྦྱོབ་སྦྱོན་སོགས་གྱི་དུས་ཀྱིས་ཁོམ་པ་མེད་ནའང་བྱགས་བཅེ་བ་ཆེན་པོས་
ལམ་སྦྱོན་མཐར་ཆགས་སུ་གནང་བ་མ་ཟད། གཞུང་འདི་གཉིས་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྐྱར་
གསོ། ཉིན་སྐད་དུ་པབ་བསྐྱར་དང་ཞུས་དག་སྡེ་བ་སྦྱོར་བསྐྱིག་རྒྱ་དང་མཆོན་འགོད་རྒྱ་
དང་། གཞན་ཡང་འདིར་དགོས་གཤམ་དབང་གིས་བྱིས་པའི་དབྱིན་སྐད་ཐོག་སྡེ་བ་མཛོད་དང་
གཞུང་གི་སྤྱང་དོན་བཅས་ལ་བཅོས་བསྐྱར་སོགས་གྱིས་མཆོན་སྤྱག་རོགས་གང་རུས་གནང་
བར་སྙིང་ཐག་པ་ནས་བྱགས་ཏེ་ཐིན་དུ་ཆེ་རྒྱ་བཞིན་ཡོད།

གཞུང་འདི་གཉིས་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྐྱར་གསོ་བྱེད་སྐབས་དེ་སྦྱོན་གཞུང་འདི་ལྷ་བུ་ལ་
དངོས་སུ་སྦྱངས་པ་མེད་སྐབས་གཞུང་དོན་ཏེ་བཞིན་རྟོགས་བར་དཀའ་ངལ་གང་ཅམ་
འབྲད་ནའང་འདི་གའི་མཐོ་སྦྱོབ་ཁང་གི་སྦྱོབ་དཔོན་རྩར་བ་སྦྱོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་སེམས་
དཔའ་དོ་ཏེ་མཆོག་གིས་རང་གི་ཕ་ཆེའི་དུས་ཚོད་ནམས་ཡལ་བར་དོར་ནས་གཞུང་དོན་

དཀའ་བ་རྣམས་དགོལ་བའི་སྐད་དུ་གཞུང་ཉིད་སློབ་འབྲིང་དང་ལྷན་གཞུང་གི་གཞུང་འགན་
ལུང་ངོས་འཛིན་གྱི་པ་ཕན་གྲོགས་ཅི་ཆེར་གནང་བར་སྤྱིང་ཐག་པ་ནས་བཀྱིན་རྗེས་དྲན་ཞུ་
བཞིན་ཡོད།

གཞུང་འདི་གཉིས་ཀྱི་བར་མ་མཚུངས་བསྐྱར་གྱི་ཆེད་དུ་ས་བོད་ཀྱི་དཔེ་མཛོད་ཁང་དུ་
ཡོད་བའི་སྐར་ཐང་དང་པེ་ཅིང་གཉིས་དང་། སྐར་ཆ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་
སློབ་ཁང་གི་དཔེ་མཛོད་ཁང་གི་སྡེ་དགེ་ཅན་དང་། གསེར་གྲིས་བཅས་ཀྱི་མ་དཔེ་ལ་
མཚུངས་བསྐྱར་བྱས་བ་ཡིན། དཔེ་མཛོད་ཁང་འདི་གཉིས་ཀྱི་འགན་འཛིན་རྣམ་བས་
དགོས་མཁོའི་ཕྱག་དཔེ་རྣམས་ལ་སློབ་གཉེར་དང་འདྲ་བྱས་བྱ་གྱུ་སོགས་ལ་ཕན་གྲོགས་
ཅི་ལྷོགས་གནང་བར་སྤྱིང་ཐག་པ་ནས་བྱགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་གྱུ་ཡིན།

གཞན་ཡང་ཕན་རང་ལ་ཐོག་ཐ་བར་གསུམ་དུ་འབྱར་གྱུ་མཉམ་འདེགས་ཀྱི་རོགས་
གནང་མཁན་ཨུ་རུ་སྟོ་བཟང་དོ་རྗེ་རབ་སྒྲིང་དང་རྟོག་པར་བསྐྱར་བསྐྱར་འཛིན་ལགས་
གཉིས་ཀྱིས་གཙོས་དཔར་སྐྱེད་མཐའ་འབྲེངས་ཡོང་གྱིར་རོགས་རམ་གནང་མཁན་དཔར་
སྐྱེད་སྡེ་ཆཅན་གྱི་འགན་འཛིན་སྐུ་ཞབས་བསམ་གཏན་ཆོས་འཕེལ་ལགས་དང་ཁོང་གི་
ལས་རོགས་ཆོང་མར་བྱགས་རྗེ་ཤིན་དུ་ཆེ་ཞུ་གྱུ་དང་དེ་བཞིན་ཨེས་ཀྱི་སིང་ལགས་ནས་
གཞུང་འདི་གཉིས་ཀྱི་ལེགས་སྐྱར་དང་ཉིན་སྐད་ཆ་ཆོང་ཀུས་པར་ནང་བཅུད་བར་བྱགས་རྗེ་
ཆེ་ཞུ་བཞིན་ཡོད།

གཞུང་འདི་གཉིས་ཀྱི་བསྐྱར་གསོ་དང་ཞུ་བ་སྤྲིགས། སྐད་བཛོད་སོགས་ལ་བསྐྱར་
བཅོས་དག་ཞུས་ཤིང་དགོས་པ་རྣམས་ལ་བསྐྱར་བཅོས་དང་ཞུ་དག་བྱས་ཏེ། ད་ལན་
དཔར་དུ་བསྐྱེད་བྱས་བའི་རྣམ་དཀར་དགེ་བའི་ཆོགས་ཅི་མཆིས་པ་དེས་འགྲོ་ཀུན་གྱི་
ལས་སྤྲིབ་བག་ཆགས་དང་བཅས་པ་དུངས་སྤྱང་ནས་དཔལ་དོ་རྗེ་འཆང་གི་གོ་འཕང་
མཆོག་ཐོབ་བའི་རྒྱར་འབྱར་བའི་སློན་འདུན་བཅས། ཉམས་ཞིབ་བ་ཆེ་རིང་སློབ་དཀར་
ཀྱིས་ཕྱི་ལོ་ ༢༠༠༧ ལྷ་ ༡ ཆོས་ ༡ ཉིན་བཟང་པོར་གྲིས་པ་དགོལ། ॥

INTRODUCTION

Eight fold noble path¹ is the fundamental principle of Buddhism. Meditation (*samādhi*) is one of the most important one of them. Not only Buddhist but also the heretics accept the importance of meditation. Of course, the preliminaries differ in name but consequently deal with the same requisites. For example, the Buddhist literature of both the vehicles describe the philosophers and their philosophies of Buddha's time like *Udraka*, *Kālāma*, *Ajitakeśa Kambala*, etc.. Buddha's quest for knowledge lead him to many preceptors of his time but he was impressed by the *Sāṃkhya* teacher for sometime, but ultimately he relinquished him also and tried to find out his path on himself and set out with resolute vows. This vow has been very beautifully described in the *Lalitavistara*²;

*My body may be dry on this seat,
The skin, bone and the flesh may perish,
My body will not move from this seat,
Till I achieve enlightenment which is hardly attainable
Through many aeons.*

It shows that this meditation is never attainable until one has a firm vow. With this firm conviction Buddha got enlightenment and through *samādhi* realized the truth.

After enlightenment Buddha gave sermons and taught the methods of meditation. His teachings regarding to *samādhi* are extant in the *Samdhinirmocanasūtra*, *Samādhirājasūtra*,

1. Eight fold noble path (*Āryaṣṭāṅgamārga*): right view (*samyakdr̥ṣṭi*), right thought (*samyaksamkalpa*), right speech (*samyagvāk*), right action (*samyakkarmānta*), right livelihood (*samyagājīva*), right effort (*samyagvyāyāma*), right mindfulness (*samyaksmṛti*), right meditation (*samyaksamādhi*).

2. *Śloka-57*, Chapt.-19, Darbhanga, Second ed. 1987.

Ratnameghasūtra etc.. There after Ācārya Nāgārjuna, Āryadeva, Asaṅga, Vasubandhu, Śāntarakṣita, Dīpaṅkara, etc. followed Buddha's teachings, practiced meditation, gave discourses and preached meditation with all the major organs. However, these Ācāryas dealt with meditation just by the way and not comprehensively at one place. *Kamalaśīla*, of course, in his *Bhāvanākrama* dealt with all the relevant aspects of meditation.

Except these Ācāryas, many *siddhas* and *paṇḍitas* in India and Tibet have contributed exclusively on *samādhi*. Among them *Kṛṣṇapāda* and *Bodhibhadra* have presented their views in their *Samādhisambhāraparivartas* and dealt with many relevant aspects of *samādhi*. The details of these texts and the list of meditative literature will be given in the following pages at proper places.

Importance of Meditation

Though Śrāvakas, Pratyekabuddhas, and Bodhisattvas all practice meditation for liberation, but that of the first two is for themselves only and not for the benefit of others. It is only the Bodhisattva who strives for the benefit of all the sentient beings and does not limit his efforts only upto himself. In this way the role of a Bodhisattva is more valuable for the society and also for all the beings.

Infact, meditation is complementary to wisdom and *vice versa*. Meditation is a step to wisdom. Therefore, it is necessary to adopt it for the attainment of wisdom. As meditation is a prerequisite to wisdom, it also requires listening of the authority and contemplation as well. Therefore, listening (*śravaṇa*) and contemplation (*cintana*) are also gradually complementary to meditation. It has been said in the *Abhidharmakośa*¹ by Ācārya Vasubandhu:

1. *Abhidharmakośabhāṣyam*- by Louis de la Vallée Poussin, Eng. Transl. by Leo M.Pruden. Vol. 3, page-911, Asian Humanities Press, Berkeley, California-1989.

Firm in his cultivation, endowed with teaching and reflection, he will be capable of giving himself up to meditation.

The stages of practice are clear from the above statement. It means that before entering the practice of meditation one should acquire the morals (*śīla*). He strives for listening the teachings and there after contemplate properly on the contents and then starts the practice of meditation. Untill and unless the listening and contemplation are observed, one does not get rid of the afflictions of emotions. *Aśvaghōṣa* has emphasised in his *Saṅkṣiptapāramitā*¹ that;

*One, who has not listened the least, is like a blind person
Who does not know how to meditate,
Without listening what could be found to meditate?
One must, thus, strive to listen the teachings
By which one can contemplate, meditate and
There by generate profound wisdom.*

Asaṅga has also supported the above statement in his *Sūtrālaṅkāra*².

The same content has been repeated in *Bodhibhadra's* *Samādhisambhāraparivarta*³:

*That which generates wisdom is listening,
When developed it with contemplation
Engages one in the practice of meditation
There by one cultivates the peerless spiritual attainment.*

Spiritual attainment here stands for Buddhahood that can be

1. Tib.Text, Toh. 3944 'khi' page-234a2.
2. *Śrutamṇi nīśrityādaṃ prabhavati manaskāra iha yo / manaskārājñāna prabhavati ca tattvārthaviśayaṃ* // (1/16) *Mahāyānasūtrālaṅkāra* of *Asaṅga*, ed. by Dr. S. Bagchi, Darbhanga-1970.
3. Tib.Text, Toh. 3924 sDe-dGe, bsTan-hGyur, dBu-ma 'ki' page-81b4.

attained through contemplation on listening.

While starting meditation, the practitioner has also to scrutinise the instructions relating to it and also to examine them on the basis of scriptural authority and reasoning. This generates a firm conviction for it. Meditation is necessary to experience the truth underlying wisdom and insight. Through meditation one knows the real nature of the phenomenon. The more one acquaints oneself with the reality of the things and their nature, the more one indulges oneself in meditation. Through this meditation the obstructions, if any, are removed. Listening and contemplating only do not remove the obstructions. This point has been elaborately dealt with in the *Bhāvanākrama*¹ of *Kamalaśīla*.

When practice goes properly, doubt vanish. If there are doubts, one can not understand the ultimate nature of the phenomenon. If so, the purpose of meditation is not fulfilled, consequently it may not be the meditation advised by the Buddha. In the *Samādhirājasūtra*² the Buddha said;

*When the selflessness of phenomenon is examined
specifically,
And meditation is performed on the basis of that analysis,
That is the cause of the resultant liberation,
No other cause can bring peace.*

Infact, meditation is meant for the realization of the truth that has

1. *ato dānādīparisuddhaye samādhānam āsthāya prajñopādānārthaṃ yatnaṃ kurvīta / tatra prathamam tāvat śrutamayī prajñotpādaniyā / tayā hi tāvad āgamārtham avadhārayati / tatas cintāmyā prajñayā nītaneyārtham nirvedhayati / tatas tayā niścītya bhūtam arthaṃ bhāvayen nābhūtam / anyathā hi viparītasyāpi bhāvanād vicikitsāyās cāvyapagamāt samyagjñānodayo na syāt / - Bhāvanākrama* (G.Tucci, Minor Buddhist Texts, Parts I & II), Page-508, Motilal Banarsidass, 1986.
2. *Samādhirājasūtra*, Buddhist Sanskrit Text-2, Chapter-9, Śloka no.37, Mithila Institute, Darbhanga-1961.

been described in the *sūtras* and *śāstras*. For example, it is found in the texts that objects are selfless, without any permanent nature or not born on the ultimate level, etc.. If one accepts it because it has been described in the text, it is mere conviction or faith based on verbal testimony, it is not realization of the truth that is possible only through meditation. *Bhāvanākrama*¹ emphasises on this point very much.

Actually the objects of meditation are two : 1. tranquility and 2. insight. Meditation on only either of the two does not lead to perfection. Untill and unless one observes the meditation on both the factors, the goal of real meditation can not be achieved. As Buddha said;

There is no concentration for him who lacks wisdom, nor there is wisdom for him who lacks concentration. The one who has both concentration and wisdom is indeed closed to Nirvana ².

Nāgārjuna has also stated this position in his text *Suhrllekha*³. Understanding and perceiving emptiness directly through insight one may attain wisdom, i.e. omniscience. The ultimate goal of meditation is to realize emptiness (*śūnyatā*). *Āryadeva* has dealt with this point in his *Caryāmelāpaka*⁴ that without the realization of

1. *tad evaṃ cintāmayyā prajñayā niścītya bhūtaṃ arthaṃ tasya pratyakṣīkaraṇāya bhāvanāmayiṃ prajñāṃ utpādayet / bahuśrutādimātrakeṇa nārthaḥ pratyakṣo bhavaṭīti niveditaṃ / - Bhāvanākrama.*
(G.Tucci, Minor Buddhist Texts, Parts I & II), Page-514,
Motilal Banarsidass, 1986.
2. *natthi jhānaṃ apañhassa, paññā natthi ajhāyato /
yamhi jhānaṃ ca paññā ca, sa ve nibbānasantike || (Dhammapada 25/13)*
3. *Prajñābhāve dhyānaṃ dhyānābhāve 'pi na jāyate sā prajñā /*
(*Suhrllekha*, śloka-107)
4. *Āryadeva's, Caryāmelāpakapradīpam*, RBT Series-22, Page-2 CIHTS, Samath, 2000.

emptiness, enlightenment can not take place;

*Even if [one practice] for a million aeons,
Without reality one will not achieve.*

In *Mahāyāna* tradition the *madhyamaka* philosophy stands on the top and emptiness (*sūnyatā*) is the foremost principle. One has to meditate on it for the realization of the reality of an object.

Emptiness has been defined by the scholars in many ways and through many terms. Mostly it is defined as suchness (*tathatā*). Suchness is the form of an object as it is. This is the real knowledge because generally persons mistakenly understand an object as the other one and do not take it as it is. This unsuchness can be seen in the mirage, the falls serpent for the rope and the pearl for a dew drop and so forth. Persons who do not know the real nature of the world also, take it as permanent, pleasant and heavenly while it is frail, sorrow, doom, etc.. To attain the capability of correct realization, meditation is practiced. Thus through this practice one can know the real nature of an object, i.e. *sūnyatā* (suchness). At this very level two truths are also revealed.

The *Rāṣṭrapālāpariṣcchāsūtra*¹ narrates that sentient beings transmigrate in the world because they do not understand the nature of emptiness. It is only the compassionate one who realizes through meditation in particular and through other means in general the nature of it.

Emptiness (*sūnyatā*) alone is not competent enough to lead to the world. Therefore compassion is also necessary to accompany it. Neither compassion nor emptiness alone, without the help of each other may lead to the world. The emptiness and compassion may be

1. *Śūnyāśca śānta anutpādanaya avijānadeva jagadudbhramati /
teṣāmapāyanayayuktiśatairavatārayasyapi kṛpālutayā. || (310)*
Mahāyānasūtrasaṃgraha, Part-I, *Rāṣṭrapālāpariṣcchā*, Chapter-2,
Page-154, Darbhanga, 1961.

equated with *upāya* and *prajñā* — means and wisdom, respectively. *Āryavimalakīrtinirdeśasūtra*¹ and *Gayāśīrṣasūtra*² also emphasised on it. Thus it can be concluded in nutshell that *saṁādhi* has listening and contemplation as its prerequisite, *sūnyatā* as its goal with the help of tranquility and insight, compassion and emptiness, means and wisdom.

AUTHORS AND THE *LOTSAVA*

Unfortunately very little information is available relating to the lives and works of the authors and the *Lotsavas* as well. The texts are very important, *ācāryas* too, have dealt very important topics relating to *Samādhi* and the *Sambhāras*. It is mere a pity that the Tibetan sources also do not speak very much. Therefore, the scattered materials lying here and there have been any how collected which are presented here onwards.

Author of the *Samādhisaṁbhāraparivarta-I*

Ācārya Bodhibhadra

Bodhibhadra's complete biographical accounts are not available in the texts on the history of India and Tibet. However, we get very scanty materials referred by the writers. He was one of the four spiritual teachers of *Atiśa* who belonged to the Kadampa school of Buddhist philosophy. It is known to all that the credit of dissemination of Buddhism in later times in Tibet, goes to *Atiśa*.

Kadam Phachoe counts eight distinguished spiritual masters who were well versed in the *sūtra* and *tantra* as well. They were *Nāgārjuna*, *Āryadeva* etc. and *Bodhibhadra* happens to be one of them.

-
1. Ed. & Transl. by *Bhikṣu Prāsādika* & L M Joshi, Chapter-4, Page-116, CIHTS, Sarnath, Varanasi, 1981.
 2. Tib. Text, Toh.106 sDe-dGe, bKa-hGyur, mDo-sDe, 'Ca' page-34.

He came from Kashmir during the tenth century A.D. Later he stayed at Nalanda and became the disciple of senior *Kālacakra* and *Naropa*. He served very much for the cause of Nalanda, therefore, he is known as a Nalandian.

In spite of his vast knowledge, *Bodhibhadra* could not attain much popularity and fame in Tibet. However, some annals give some accounts of the *ācārya* of the same name. It is said that he visited Tibet three times. Firstly, he was invited by *Gyijo Lotsava Dawai Wooser* for translating the commentary on the *Kālacakratāntra* and after him emerged the *Gyijo* tradition. He was an *upāsaka* who perceived *Mañjuśrī* directly by reciting his *mantras* and gradually attained the meditative stability.

Atiśa, one of his eminent disciples, refers him repeatedly in the commentary of his *Bodhipathapradīpa*. The *Blue Annal* mention that his teacher was *Śribhadra* and the Kashmirian *Mahāpaṇḍita Candranātha* was his disciple.

Tāranātha in his *History of Kālacakra* talks very high of *Bodhibhadra*. According to him *Bodhibhadra* was the patron of Nalanda University. He contributed the University through his yogic power. His Kashmirian disciple *Candranātha* visited Tibet thrice.

Ācārya Bodhibhadra, the teacher of *Atiśa*, was one known as the Kashmirian *Bodhibhadra*, who in his later part of life shifted to Nalanda and became the abbot of the University.

The works of this *ācārya* are noted in the catalogues of *bKaḥ-gyur* and *bsTan-gyur*. Five texts are accredited to him. His works are given here under with the numbers in the Tohoku Catalogue—

1. Toh. No. 2458 *Yogalakṣaṇasatyā*
2. Toh. No. 3852 *Jñānasārasamuccaya-nāma-nibandhana*

3. Toh. No. 3924 *Samādhisaṃbhāraparivarta-nāma*
4. Toh. No. 3967 *Bodhisattvasaṃvaravidhi*
5. Toh. No. 4083 *Bodhisattvasaṃvaravimśakapañjikā*

Author of the *Samādhisaṃbhāraparivarta*—II

Ācārya Kṛṣṇapā

Ācārya Kṛṣṇapāda was a very famous and eminent Indian scholar of his days. *Kṛṣṇapāda*, *Kṛṣṇapādācārya*, *Kaṇhapā*, *Kṛṣṇapaṇḍita*, *Kṛṣṇavajrapāda*, etc. are the names of the same person, they say. Some scholars believe that above mentioned names are of three or two different ācāryas who came in early times and some prove them to be one ācārya. I would like to note down the very brief biography of the three different *Kṛṣṇapādas* as mentioned in *Gyagar Penchen Nams ki Namthar*¹.

Kṛṣṇācāryapāda:-

He was one among the eighty four *mahāsiddhas* was contemporary to the Magadh king *Devapāla* (810-851 A.D). He was a *bhikṣu* of Somapuri monastery which was built by the king *Devapāla*. About his birth place Orisa, Vijayanagara and Karnataka are the three different places suggested by various scholars. He was a Brahmin. Later he met *mahāsiddha Jālandharīpa*, who initiated him in tantric vows. In his later life, he left the world in mystic meditation. He also acquired the teachings of *Yamāri*, *Hevajra*, and practiced meditation for twelve years. As a result he attained a direct vision of *Hevajra maṇḍala* and received immense *siddhis*.

1. Tib. Book, *The Arhats, Siddhas and Paṇḍitas of India* compiled by *Khetsun Sangpo*, Vol. I, LTWA, Dharamsala, (H.P) 1973.

Junior Kṛṣṇācāryapāda :-

He was a follower of Kṛṣṇācāryapāda. He studied thoroughly the text of *Cakrasaṃvara*, *Hevajra* and *Yamāri tantras*, practiced and meditated on *Cakrasaṃvara* near Nalanda. There he acquired the precepts from a *ḍākini*. He lived a long life. It was heard that he lived even after the Indian King *Dharmapāla*'s (770-810) rule.

Kṛṣṇasamayavajra:-

He was born at the end of the life of Indian king *Mahīpāla* (988-1038). It was the early period of Buddhist reformation in Tibet. He was a follower of ācārya *Buddhajñāna*. It is said that *Buddhajñāna* born during the end of life of junior *Kṛṣṇācāryapāda*. *Kṛṣṇasamayavajra* got the direct vision of *Hevajra maṇḍala* and acquired infinite *siddhis*. He was one of the six eminent scholars of the monastic university of Nalanda.

Lotsava Choekyi Sherab, *Lotsava Tsultrim Gyalwa* and *Lotsava Gos Khukpa Lhatse* are the great translators of Tibet, during the tenth and eleventh century. All of them worked with the same Ācārya *Kṛṣṇasamayavajra* on the *sūtra* and *tantra* texts both. These *Lotsavas* could not see the first *Kṛṣṇapā* who was a disciple of *Jālandharīpa*. Therefore it is also difficult to prove all the *Kṛṣṇapās* as one person. *Choekyi Sherab* translated the second text the *Samādhisaṃbhārparivarta* with the assistance of *mahāpaṇḍita* Ācārya *Kṛṣṇapāda*.

After studying the period of eminent scholars, Ācārya *Kṛṣṇasamayavajra* may be the author of the second *Samādhisaṃbhārparivarta*.

Choekyi Sherab—The Lotsava

The detailed biography of *Choekyi Sherab* is not available. On the basis of the texts that he translated with Indian *Paṇḍitas*, it can

be said that he existed in the eleventh century. He learned sūtra and tantra texts with other sciences in his early age in Tibet. Thereafter he made his journey to neighboring countries like Nepal, Kashmir and India. There he studied *Sanskrit* Buddhist philosophy — sūtra and tantra texts more deeply from the scholars of these countries. Then he translated many Buddhist *Sanskrit* texts into Tibetan with the help of eminent scholars of India like: *Kṛṣṇapāda*, *Vīryacandra*, *Atulyapāda*, *Suvajra*, *Buddhākaravarma*, and *Abhiyukta* etc..

Nowadays most of the texts are unavailable in their original *sanskrit* form but we can find their Tibetan translations. Due to the great exertions of *Lotsavas*, translations of those rare Buddhist texts which were lost, are extant in Tibetan. Hence *Choekyi Sherab* is also a very important person whose contribution to Buddhist studies can never be forgotten.

In the *Blue Annal*, two different *Lotsavas*, of the same name viz. *Choekyi Sherab* are available. One is *rMa Choekyi Sherab* and the other one is *Nyang Denpa Choekyi Sherab*. *rMa Choekyi Sherab* was born in the twelfth century. He propagated the religion of medieval *Shamak* lineage and *Nyang Denpa Choekyi Sherab* became the disciple of *Shang Tsepong*.

On the basis of the materials available through different sources the first *Choekyi Sherab* is our *Lotsava* and not the others.

SUMMARY

I-Samādhisaṃbhāraparivarta of Bodhibhadra

The author first of all pays his homage to the Buddhas and Bodhisattvas. There after he resolves to compose the lessons for accumulating meditation according to the descriptions made in the *tantra*, *sūtra* and the *pāramitā* texts. He regrets that generally they are imprisoned in the jail of householdership by *māra* and are watched by the four *lokapālas* of *māra*, tied tightly with the reigns

of desire. Unfortunately the majority of *bhikṣus* too, under the control of the *lokapālas* of *māra*, alike the householders leaving apart the discrimination of merit and demerits and fall in the doom. Therefore, the author says that he composed the text simply for his attention towards the virtues and not for the benefit of the others. However, anybody may feel free to use it to know the contents.

After these preliminary remarks *Bodhibhadra* counts the nine organs of the *samādhisambhāra*, e.g. 1. Omission (*praheya*) 2. Prerequisite (*pūrvāṅgama*) 3. Termination (*nivṛtti*) 4. Dissension of remorse (*santāpaccheda*) 5. Detraction of mind from the world (*cittasaṃvega*) 6. Remembering the merits (*guṇānusmaraṇa*) 7. Efforts (*vīrya*) 8. Relation (*sambandha*) 9. Determination of mind (*sthiti-upāya*).

1. Omission (*praheya*):-

Under this title the writer says that *māra*, his deeds, the four guardians, the family of *māra* with the *pretas*, their activities are to be relinquished. *Māra* pierces the beings with his five arrows made of flowers. The person on the target, being pierced with the arrows, looses *mokṣa* and *abhyudaya*. *Māra* with his family, guardians of four directions and attendants mislead the renunciator and householders alike. The way of their teasing is described in detail. The content has been supported on the authority of many *sūtras* and *tantras* like *Trailokyaviṣayamahākālpaparājatantra*, *Āryamañjuśrīvikurvāṇaparivarta*, *Āryadevaputaratnottamaparipṛcchā*, *Āryasubāhuparipṛcchātāntra*, *Āryavajrasēkharatantra* and *Āryāśoka-dattaparipṛcchā*, *Āryasimhavyākaraṇa*.

Therefore all the activities of *māra* and his family are to be neglected by seeking ordination of *śīlas* and practicing them sincerely.

2. Prerequisite (*pūrvāṅgam*):-

Organ for averting the deeds of *māra*, one has to cultivate *prajñā* by acquiring the nature as described in the canons. Therefore, *śravaṇa* and *cintana* are the prerequisites for *samādhi* that lead to excellent attainment, i.e. *prajñā*. In this context, too, he quotes the authority of many *śāstras* and *sūtras*. And concludes that *prajñā* attained through *śravaṇa* and *cintana* is the prerequisite.

3. The termination (*nivṛtti*):-

A Bodhisattva who has listened to the *śāstras* but not attained *abhijñā* (intuition), has been prohibited to give sermons to others, as he can not benefit the listeners properly. Thus the author quotes from many *sūtras* indicating the elements which may qualify a person for preaching. The merits to be acquired by Bodhisattva before giving religious discourses have been counted here in.

4. Dissension of remorse (*santāpaccheda*):-

For taking leave of preaching dharma, the practitioner, intending to relinquish the worldly affairs, begins to think that he could not get the proficiency of controlling the aggregates (*skandhas*) nor he could attain the expertise on controlling the *dhātus* and *āyatanas*. Until and unless one attains his merits, one can not attain *mokṣa*. It has also been said in the *Sūtrālaṅkāra* that without the exertion and expertise on the five *mahāvidyās*¹, even the Bodhisattvas can not attain *sarvajñatā*. Therefore to control others and to please them also or even for his own omniscience the Bodhisattva must exert for the five *mahāvidyās*. The Bodhisattva should also avoid the desire of attaining pleasure from the relation of the teacher and taught, any benefit, honour, respect and eulogies. If one does not meditate on the dharma after listening, he will not be able to bring

1. Five major sciences (*pañcamahāvidyā*): arts and crafts (*śilpa*), medicine (*cikitsā*), grammar (*śabdavidyā*), logic (*hetu*), philosophy (*adhyātma*).

in practice. This fact has been described in the *Gaṇḍavyūhasūtra* in many places. The demerits of the person, not practicing dharma through *bhāvanā*, have been described at many places. Only that much of the lesson is sufficient that makes one capable of meditation, otherwise one should not engage oneself in studying logic, grammar, *abhidharma*, *yogācāra*, etc.. This fact has been supported by the *Paramārthayukti*, i.e., *Dohakośa*, *Uttarasamvara*, *Āryavajroṣṇiṣa*, *Āryasubāhupariṣcchātāntra* and *Abhidharma-kośa* advice that the remorse from the desire of attainment and respects should be understood and removed.

5. Detraction of mind from the world (*cittasamvega*):-

The mind can not be purified by *bhāvanā* without detracting it from the world. Therefore, the practice of detachment of mind should be adopted. The *Bodhisattvacaryāvatāra* describes that firstly *śamatha* should be established in mind and there after *vipaśyanā*. This *śamatha* also arises from the detachment from the worldly pleasures. It means that one should love the world but should not be attached to it. In the same way *Āryasubāhupariṣcchā*, *Āryādhyāśayaśāṇcodanamahāyānasūtra*, *Bodhisattvacaryāvatāra*, etc. advised repeatedly that neither one should develop hatred towards the enemies nor attachment with the relatives, neither liking towards worldly attainments and comforts nor disliking towards the opposition. *Bodhibhadra* advises that all these points should be learned from other texts also like *Saptakumārikāvadāna*, *Suḥṛllekha*, *Śiṣyalekha*, etc.. And on the basis of the teachings one should detach the mind from the pleasure automatically aroused for the world.

6. Remembering the merits (*guṇānusmaraṇa*):-

Having left the contradictory demerits one should keep in mind the merits of *samādhi* which are of two types: firstly, living comfortably and the comfortable position of speech, mind, pleasing

the gods of dharma, use of getting human body, gratitude towards the Buddha, parent, and the teacher, non-injury from the nonhuman beings etc.. The other is to be born in the desired land of the Buddha, abandoning the three vicious destinations, getting rid of all the unauspicious occasions, no birth as a female etc.. During such conditions one gets the pleasure of *samādhi* and enlightenment as well. *Candragomī* in his *Śiṣyalekha* and *Ācārya Śāntideva* in his *Bodhicaryāvatāra* narrates such merits. All these merits can be seen in detail in the *sūtras* like *Candrapradīpa* etc..

7. Efforts (*vīrya*):-

The texts, *sūtra* and *śāstra*, both advice for enthusiastic efforts for meditating on the opposite after visualizing the merits of *samādhi*. There has been described that one must recognize the importance and precious value of human life which is very short. Realizing these, one must practice with the great effort. This is also known as attainment of *vīryapāramitā*. *Sarahaṇpāda*, *Nāgārjuna*, *Ācārya Śāntideva*, *Candragomī*, *Vāgīśvarakīrti*, etc. have described different aspects of effort in their respective works. These are known as constituents of effort (*vīrya-aṅga*) because of meditating on the opposites.

8. Relation (*sambandha*):-

A person, making such an extreme effort, tries to co-relate two organs- *śamatha* and *vipaśyanā* and *upāya* and *prajñā*. Unless quite firm through *śamatha* one can not be steady in *vipaśyanā* and vice-versa. Practice of *śamatha* and *vipaśyanā* removes all the afflictions.

In the same way stand *upāya* and *prajñā* also, which are meant for the attainment of the bodies of two types (*dharmakāya* and *rūpakāya*) and also for getting rid of the two obstructions (*āvaraṇas*). *Bodhisattvacaryāvatāra*, *Vimalakīrtinirdeśasūtra*,

Gayāśīrṣasūtra, *Āryagaṇḍavyūhasūtra*, *Vajrapañjaratantra* and other texts emphasis the practice of *śamatha* and *vipaśyanā* together, not alone and corelate *prajñā* and *upāya* together.

9. Determination of mind (*sthiti-upāya*):-

Thus the aspirant, having possessed all the eight organs should try to concile the place, meal, habits, robes and friends accordingly and should engage the mind in meditation. *Subāhupariṣcchātāntra* describes the importance of the places of birth and previous activities of the Buddhas and *pratyekabuddhas* quite favourable for practice of meditation. In the same way other elements too have been described vividly by philosophers like *Ācārya Nāgārjuna* and the *sūtras* *Āryapūrṇapariṣcchāsūtra*, *Āryasusiddhikaramahāyānatantra*, *Gaṇḍavyūhasūtra*, *Bodhicaryāvatāra*, *Sahajasiddhi*, *Guhyasamājatantra*, *Trailokyavijayarājatantra*, *Krodharājaṣaṇmukhatantra*, *Madhyāntavibhāga* and *Kāśyapapariṣcchāsūtra*. The details may be read therein.

SUMMARY

II-*Samādhisambhāraparivarta* of *Kṛṣṇapāda*

Kṛṣṇapāda describes, in his *Samādhisambhāraparivarta*, seven *aṅgas* each of seven types. The last one, i.e. eighth comprises of only four types. *Kṛṣṇapāda* is very simple in style and gives his ideas very briefly.

Seven types of Prerequisite organ:-

According to him the first prerequisite organ is of seven types. He thinks that this precious human life should not go in vain. Therefore a person willing to make this life useful is required to adopt the seven fold prerequisites. Faith, service to the teacher and adopting his qualities, reverence, belief and undoubtfulness, effort,

unprejudiced mind to others and humbleness are the seven prerequisites counted under the first category.

Seven Inevitable practices:-

Seven types of the inevitable practices for the *āryana* life are also important which have been dealt with under the second category. Neither seeing nor telling the evils of others, nonarogance for ones own capabilities, keeping oneself free from the shameful activities, adopting the practices of the three *saṃvaras*, to live freely with the abandonment of flattery, new connections and ego, to practice by knowing others behaviours through place, time and circumstances, knowing the behaviours of others by getting rid of, not abusing others nor disregarding them. These are the practices which an aspirant of *saṃādhi* should inevitably discard.

Abandoning the seven obstacles:-

Getting satisfied with minimum desires, abandoning serious attachments, getting rid of laziness, nonindulgence in the activities and talks even which are useless and worthless, abandoning unmindfulness (*ayoniśomanasikāra*) and knowledge of the services going against anybody are the seven types of obstacles to be got rid of.

Seven types of the inspiring category:-

Attainment of human life, practice of the dharma and spiritual practices are rarely attainable, these practices are very valuable, the worldly activities are certainly useless, using the suffering of others as ones *pratipakṣa*, I may perish soon under the hands of *māra*, all the collected objects certainly will go away, regretting every time to see the wrinkles on the face and grey hair etc.. These are the seven inspiring categories.

Seven types of avoiding sufferings:-

Thinking it very difficult to get the knowledge of the serious vast and various texts by the unmatured and lazy person within a limited span of life, abandoning attachment and jealousy towards own and heretic principles, taking the relatives and friends just as guests on the way, taking attainments, honours, appreciations, etc. as mere deceit, taking the worldly attainments, fame and regard as fire, poison and weapon, thinking all the internal and external objects like *māyā* and dream are the seven kinds of this category.

Seven types of the facing organs:-

Sitting in seclusion and pleasing the deities as mentioned in texts and facing the deities towards oneself, is one type, on which one has to strive for. One should also sit there avoiding hope, doubt, lust, and fear, being possessed of compassion, not leaving the practices untill the goal is achieved, being undisturbed from the dreams, etc. there on, and also knowing the meanings of dreams and the signs, etc. through advices. All these categories acquired together are the leading factors towards quick realization.

Seven types of practices for the protection of the body and avoiding the obstacles:-

As the body is rarely attained and it is also the main instrument for the achievement of the goal (Buddhahood) one should protect the body. Therefore, one should use clothes, meals and medicines accordingly, protect it from the human and non-human obstacles, residing in the favourable and undisturbed place, avoiding the tiresome activities, nonadoption of meal, etc. untimely, connecting mind to the objects of spiritual practices without any disturbance and also keeping the body involved in practices. These are the kinds of this category.

Four types of other activities:-

There are other four types of activities known as *kṣepaṇa* or *pūrṇa*. When one gets tired of the practices, becomes lazy towards merits, develops options for the agent of the practice, at such moments one should inspire oneself and arouse the opposites. In case, there is some indisposition in the body and there is some doubt in the mind relating to the knowledge, one should remove them through ones own experiences or with the consultations of teacher and other scholars. If there is permission from the ruler, if there is the capability in oneself and if one wants to see others happy, then one is advised to know these four types of activities from the *Vajroṣṇīṣatantra* and the sermons of the teachers. Other allied subjects too should be known accordingly.

This is the brief summary of the contents lying in both the *Samādhisaṃbhāraparivartas* of *Bodhibhadra* and *Kṛṣṇapāda* respectively.



སྒྲིང་བཟོད།

ལྷ་བོད་གཉིས་སུ་ནང་པའི་བསྟན་པ་ཇི་ལྟར་དར་ཚུལ།

༡༡། རྟེན་ལ་འདིར་ཆགས་སྒྲིང་སྒྲིང་ས་གསུམ་གྱི་སྒྲིབ་བསྐྱེད་མཐའ་དག་ལས་ནམ་པ་
ཐམས་ཅད་དུ་གྲོལ་ཏེ་ཐར་པ་དང་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་གོ་འཕང་དོན་དུ་གཉེར་བར་
འདོད་པ་ནམས་ཀྱིས་ཉམས་སུ་སྒྲིང་བྱ་མ་ནོར་བཞི་སྟོན་མཆོག་གྲུབ་ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་
རིན་པོ་ཆེ་འདི་ཉིད་ལ་ཞུགས་ཏེ་བསྐྱེད་པའི་ཚུལ་ནམས་མ་ཉམས་པ་ཇི་ལྟར་བ་བཞིན་དུ་
སྒྲིབ་ན་གྲོལ་བར་འགྱུར་བ་ཐེ་ཆོས་མ་མཆིས་ཤིང་། དེ་ལྟར་བྱ་ཡང་དག་པའི་ཚུལ་སྟོན་པ་པོ་
དེ་ཉིད་སྟོན་སྟོབ་ལས་གྱི་གནས་སྐབས་སུ་ཐོག་མར་བྱང་ཆུབ་མཆོག་དུ་བྱགས་བསྐྱེད།
བར་དུ་བསྐྱེད་ཆེན་གྲངས་མེད་གསུམ་དུ་ཆོགས་བསགས། མཐར་མཛོན་པར་ཇོགས་པ་
སངས་རྒྱས་ཏེ་གདུལ་བྱ་ནམས་ཀྱི་དབང་པོའི་རིམ་པ་དང་འཆོམས་པར་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་
ལོ་རིམ་པ་གསུམ་བསྐྱོར། སྐུ་སྐྱེད་ན་ལས་འདས་ཚུལ་བསྟན།

དེ་ཡང་སྟོན་པ་ཐུབ་པའི་དབང་པོས་བཀའ་དང་སོ་བདེན་བཞི་ཆོས་འཁོར་གཙོ་བོ་ཆེད་
དུ་བྱ་བའི་གདུལ་བྱ་ཐེག་དམན་རིགས་ཅན་རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་ཆེད་དུ་གཟུགས་ནས་བྱང་
སྟོགས་སོ་བདུན་བར་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་གི་མཆོན་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པར་སྟོན་པ་བདེན་
བཞི་ལྟར་བྱ་དངོས་སམ། དེའི་སྟེར་གཏོགས་ལ། འདུལ་བ་ལུང་དང་། མདོ་སྟེ་བླན་པ་ཉིར་
བཞག་དང་། ལྷ་ཆེར་ཐོལ་པའི་མདོ་དང་། མདོ་སྟེ་ལས་བརྒྱུ་པ་དང་རྟོགས་བཟོད་བརྒྱུ་པ་
ལ་སོགས་མདོ་མཐའ་ཡས་པ་གསུངས།

བཀའ་བར་པ་མཆོན་ཉིད་མེད་པའི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་སྐབས་སུ་ཤེས་རབ་སྤྱིང་པོ་
དང་། ཤེར་བྱིན་ལྟ་བརྒྱུ་པ་དང་། བདུན་བརྒྱུ་ལ། དོ་རྩེ་གཙོད་པ་སོགས་ཡིན་ནོ། །སྤྱིང་པོའི་

དོན་སྟོན་པ་ནི། དོན་དམ་སྟོང་ཉིད་དམ་ནམ་ཐར་སྟོ་གསུམ་སྟོན་པ་ཤེས་རབ་སྟོང་པོ་ལ་
 སོགས་དང་། མངོན་པར་དོགས་པའི་དོན་སྟོན་པ་ནི། དུམ་རྒྱས་པ་སྟོང་སྟག་བརྒྱ་པ་དང་།
 འབྲིང་གི་རྒྱས་པ་ཉི་ཁྲི་སྟོང་པ་དང་། འབྲིང་གི་འབྲིང་བྲི་བརྒྱད་སྟོང་པ་དང་། འབྲིང་གི་
 བསྐྱས་པ་ཤེས་རབ་བྲི་བའོ། །བསྐྱས་པའི་རྒྱས་པ་བརྒྱད་སྟོང་པ། བསྐྱས་པའི་བསྐྱས་པ་
 ཡོན་ཏན་རིན་པོ་ཆེ་སྟུང་པའོ། །འཁོར་ལོ་བར་པ་རྣམ་རིག་པ་རྣམས་ཀྱིས་བྲང་དོན་
 དགོངས་པ་ཅན་དང་། དབྱ་མ་པས་ངེས་དོན་དུ་བཞེད་དོ།

བཀའ་ཐ་མ་ལེགས་པར་རྣམ་པར་བྱེ་བ་ནི་ཐེག་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དག་པར་
 ཞུགས་པའི་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དབའ་ཐེག་ཆེན་རིགས་ཅན་གྲངས་མེད་པ་ཞིག་ལ་འཁོར་ལོ་
 བར་པའི་དགོངས་པ་འཁོར་ལོ་ཐ་མས་བཀའ་བ་ལ་བསྟོས་དགོས་པ་རྣམས་ལ་གཙོ་བོར་
 དགོངས་ནས་མཚན་ཉིད་གསུམ་ལ་བདེན་པར་ཡོད་མེད་སོ་སོར་བྱེ་ནས་སྟོན་པའི་མདོ་
 དངོས་དགོངས་འབྲེལ་དང་། རྒྱན་སྟག་པོ་བཀོད་པ་དང་། ལང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་
 སོགས་ཡིན་ནོ། །མདོ་འདི་དག་ནི་གཙོ་བོ་སེམས་ཅམ་པ་རྣམས་ལ་དགོངས་ཏེ་གསུངས་
 པ་དང་འདིས་འཁོར་ལོ་ཐ་མ་ངེས་དོན་དུ་བཞེད་ཅིང་། དབྱ་མ་པས་བྲང་དོན་དུ་བཞེད་དོ།
 ཀུན་མཁྱེན་ཇོ་ནང་པས། སྟོང་པའི་མདོ་བཅུ་འཁོར་ལོ་ཐ་མར་འདོད་ཅིང་ངེས་དོན་དུ་སྟུབ་སྟེ།
 ཤེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱུད་ལ་སངས་རྒྱས་རང་ཆས་སུ་ཡོད་པར་བཞེད་དོ། །ཆོས་རྒྱ་
 །སྟོན་རིན་པོ་ཆེས། མདོ་བཅུ་པོ་དེ་དག་བཀའ་ཐ་མར་བཞེད་ཀྱང་བྲང་དོན་དུ་འབྲེལ་བར་
 །ཇོ་དོ། །དེ་དག་ལེགས་པར་རྣམ་པར་བྱེ་བའི་ཆོས་འཁོར་དུ་འཛོག་ཚུལ་ནི། ཆོས་ཐམས་
 ང་མཚན་ཉིད་གསུམ་དུ་བསྐྱས་ཤིང་། གཞན་དབང་དང་ཡོངས་གྲུབ་བདེན་གྲུབ་དང་ཀུན་
 ཉེགས་བདེན་མེད་དུ་ལེགས་པར་བྱེ་ནས་གསུངས་པས་ན་དེ་སྐད་ཅེས་བཞེད་དོ།

གསང་སྟགས་དོ་རྒྱུ་ཐེག་པ་ཐམ་འབྲས་བྱ་གསང་སྟགས་དོ་རྒྱུ་ཐེག་པའི་ཆོས་འཁོར་
 ར་བཤད་པ་ལ་བཞི་སྟེ། བྱ་རྒྱུད་ཀྱི་ཆོས་འཁོར། སྟོད་རྒྱུད་ཀྱི་ཆོས་འཁོར། རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་

ཀྱི་ཆོས་འཁོར། རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཆོས་འཁོར་བསྐྱོར་ཚུལ་བཞིར་གནས་པ་ལས།

དང་པོ་བྱ་རྒྱུད་ཀྱི་ཆོས་འཁོར་ནི་སྟོན་པ་ནི་དེ་ལོངས་སྤྱི་རྣམ་པར་སྤྱུལ་དེ་ཞལ་ནས་
དངོས་དང་བརྒྱུད་པའི་སྟོན་པ་འཁོར་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དཔག་ཏུ་
མེད་པ་ལ་གཙོ་བོར་གསུངས། བྱ་བ་སྤྱི་རྒྱུད་ལ། གསང་བ་སྤྱི་རྒྱུད། ལེགས་བྱུང་གི་རྒྱུད།
དབྱང་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པའི་རྒྱུད། བསམ་གཏན་སྤྱི་མ་དང་བཞི་ལོ།

སྤྱི་རྒྱུད་ཀྱི་ཆོས་འཁོར་ནི་རྣམ་པར་སྤྱང་མཛད་མཛོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རྒྱུད་ལ་
སོགས་པ་སྟེ། སྟོན་པ་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་དང་པོར་མཛོན་པར་ཐོགས་པར་སངས་རྒྱས་
པའི་ལོངས་སྤྱི་རྣམ་སྤྱང་གང་ཆེན་མཆོས་གཞི་སྤྱི་མེ་ཏོག་གིས་བརྒྱན་པའི་འཛིག་རྟེན་གྱི་
སྤྱི་རྒྱུད་གི་གནས་ཁྱད་པར་ཅན་ལོག་མིན་དང་། མའི་འཛིག་རྟེན་གྱི་གནས་བྱ་ཚོད་ཕྱང་པོ་རི་
ལ་སོགས་པར་གསུངས་སོ།

རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་ཀྱི་ཆོས་འཁོར་ནི། ལོངས་སྤྱི་རྣམ་སྤྱང་ལོག་མིན་ལས་མི་གཡོ་བར་
སྤྱུལ་སྤྱི་རྣམ་སྤྱང་གིས་རི་རབ་ཀྱི་ཅེ་མོར་གཞལ་ཡས་ཁང་སྤྱུལ་དེ་ཅ་རྒྱུད་དེ་ནི་ད་བཟུས་
པ་དང་བཤད་རྒྱུད་རྩི་རྩི་ཅེ་མོ་གཉིས་གསུངས། ཡང་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནི་དེ་གིས་རྣམ་པར་
སྤྱང་མཛད་ཀྱི་སྤྱར་བཞེངས་ནས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལྟོ་གྲོས་ཚད་མེད་པ་ལ་སོགས་
པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རབ་ཏུ་མང་བོ་དང་། ཆངས་པ་དང་བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པའི་
ལྷ་རྣམས་དང་། གནོད་སྦྱིན་དང་བྱི་ཟ་དང་སྤྱུ་ལ་སོགས་པའི་འཁོར་མང་པོ་ལ་ངན་སོང་སྤྱི་
པའི་རྒྱུད་གསུངས། ཅ་རྒྱུད་དེ་ནི་ད་བཟུས་པའི་རྒྱུད་སྤྱི་མ། བཤད་རྒྱུད་རྩི་རྩི་ཅེ་མོ་དང་།
དཔལ་མཆོག་གི་རྒྱུད་ལ་སོགས་པ་ལོ།

རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་རྣམས་ནི། དགའ་ལྷན་དང་ལོག་མིན་ལ་སོགས་དང་འཛམ་
བྱ་གླིང་གི་མགུར་དང་། དཔལ་ལྷན་འབྲས་སྤྱངས་དང་ཡོ་རྒྱུན་རྣམས་སུ་གསུངས་ཞེས་
བཞེད་ཚུལ་མང་། དེའི་ཁོངས་སུ་གཏོགས་པའི་རྒྱུད་ལ་པ་རྒྱུད་གསང་བ་འདུས་པ་དང་།

གཤིན་ཏེ་གཤེད་ཀྱི་རྒྱུད་རྣམས་དང་། མ་རྒྱུད་དཔལ་གྱི་དོ་རྩེ་དང་། བཤད་རྒྱུད་དོ་རྩེ་གུར་དང་། དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་རྒྱུད་རྣམས་གཙོ་བོ་ཡིན་ནོ།

དཔལ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ནི། དཀྱིལ་འཁོར་ལ་བཀོད་པའི་འཁོར་རྣམས་དང་། རྒྱལ་པོ་ཁྲི་བ་བཟང་བོ་གཙོ་བྱས་ཆོས་རྒྱལ་དགུ་བཅུ་གོ་དྲུག་དང་། གཞན་ཡང་དག་པའི་འཁོར་གྲངས་ལས་འདས་པ་དོ་རྩེ་དབྱིངས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཆེན་པོར། འཛིག་རྟེན་དང་འཛིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་དབང་བསྐྱར་ཏེ་འཁོར་རྣམས་སངས་རྒྱས་ཉིད་དུ་ཡུང་བསྟན། བསྟོན་ལའི་གདུལ་བྱ་སྐལ་བ་དང་ལྷན་པ་རྣམས་ལ་དོ་རྩེ་འོ་ཆོག་མ་བྱེ་བ་མེད་པས་རབ་དུ་གསལ་བར་བྱེད་པ་ཙ་པའི་རྒྱུད་མཆོག་གི་དང་པོའི་སངས་རྒྱས་སྟོང་ཐུག་བཅུ་གཉིས་པ་ཡང་དག་པར་གསུངས་སོ།

སྟོན་པ་རྒྱབ་པའི་དབང་པོ་སྤྱང་ན་ལས་འདས་ཚུལ་བསྟན་ནས་མི་རིང་བར་བཀའ་བསྟུ་རིམ་པ་གསུམ་དང་། སྟོན་པའི་གཏད་རབས་བདུན་ལ་སོགས་པ་བྱུང་སྟེ་བསྟན་པ་སངས་རྒྱས་ཉིད་དངོས་སུ་བཞགས་པ་ལྟར་དར། དེ་རྩིས་མཁས་དང་གྲུབ་པའི་སྟེས་ཆེན་རྒྱན་དྲུག་མཆོག་གཉིས་དང་གྲུབ་ཆེན་བརྒྱུད་ཅུ་ལ་སོགས་པ་འཕགས་པའི་ཡུལ་འདིར་རིམ་གྱིས་བྱོན། ཤུལ་རྒྱབ་པས་གསུངས་པའི་ཆོས་རྒྱལ་ཟབ་མོ་རྣམས་སྟེ་འགྲོ་ཡོངས་ལ་དགོངས་པ་མ་འདྲེས་ཤིང་། མི་གསལ་བ་མེད་པ་དང་། ཁོང་དུ་ཆུབ་བདེ་བའི་སྤྱད་འཕགས་མཆོག་ལྷ་སྟེན་ཞབས་ཀྱིས་ཆོས་འཁོར་བར་པའི་དགོངས་པ་ཙ་པ་ཤེས་རབ་སོགས་དབུ་མ་རིགས་ཆོགས་དྲུག་གི་སྟོན་ནས་གསལ་བར་བྱས་ཏེ་དབུ་མ་པའི་ལྷ་བའི་སྟོལ་བཏོད།

སྟོན་པ་འདས་ནས་ལོ་དྲུག་བརྒྱུ་འདས་རྗེས་འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་ཞབས་བྱོན་ནས་སྟེ་སྟོད་གསུམ་ལ་སྤྱངས་པ་མཐར་བུན་པ་གནང་ནས་ཡི་དམ་གྱི་ལྷ་རྩེ་བཅུན་བྱམས་པ་མགོན་པོ་ལོ་གྲངས་བཅུ་གཉིས་བར་དུ་སྟེན་པ་ཙ་ཙེ་གཅིག་དུ་མཛད་དེ་ཞལ་དངོས་སུ་

མཇལ་ནས་དགའ་ལྡན་དུ་མེད་པ། རྩེ་བཙུན་བྱམས་པ་ལས་མངོན་རྟོགས་རྒྱན་ལ་སོགས་
 པའི་བྱམས་ཆོས་སྡེ་ལྡན་གསན་ནས་སྤྲོ་མི་ཡུལ་དུ་མེད་པ། རལོར་ལོ་བར་པའི་སྤྲོ་སྤོམ་
 མངོན་རྟོགས་ཀྱི་རིམ་པ་འཇིག་རྟེན་དུ་གསལ་བར་མཛད། སྟོན་པའི་ཆོས་ལམ་ཐ་མའི་
 དགོངས་པ་གསལ་བར་བྱ་བྱིར་ས་སྡེ་ལྡན་དང་སྟོན་རྣམ་གཉིས་ལ་སོགས་པ་མཛད་དེ་རྣམ་
 པ་རིག་པའི་གྲུབ་མཐའི་སྟོལ་བཏོད། ཤིང་རྩ་ཆེན་པོ་དེ་གཉིས་ཀྱི་དགོངས་པ་མཐའ་བྱིན་
 པ་གསལ་བར་བྱ་བྱིར་སྟོབ་དཔོན་འཕགས་པ་ལྷ། སངས་རྒྱུ་བསྐྱངས་དང་། ལེགས་ལྡན་
 འབྱེད། རྒྱ་བ་གྲགས་པ། མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཇོ། གཙུང་དབྱིག་གཉེན། འཕགས་པ་གྲོལ་སྡེ།
 བཙུན་པ་རྣམ་གྲོལ་སྡེ། སྟོ་གྲོས་བཏན་པ། ཡེ་ཤེས་སྤྱིང་པོ། ཀམལ་སྤྱིལ། རྒྱལ་སྤྲས་ཆེན་པོ་
 ཞི་བ་ལྷ། གནས་བཏན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ། རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བ། རྩོ་བོ་རྩེ་དཔལ་
 ལྡན་ཨ་ཏི་ཤ་ལ་སོགས་མཁས་གྲུབ་གཉིས་ལྡན་གྱི་སྤྲོས་ཆེན་དུ་མ་བྱོན་ནས་སྟོན་པ་བྱབ་
 པའི་དབང་པོའི་དགོངས་དོན་སྤྱི་ཅི་མ་ལོག་པ་འཇིག་རྟེན་ཡོངས་ལ་ཆོས་གསལ་བར་བྱ་
 བྱིར་མདོ་སྤྲུགས་ཀྱི་བཀའ་དུ་མའི་དཀའ་འབྲེལ་དང་དགོངས་འབྲེལ་བརྒྱ་ཐུག་དུ་མ་
 བཙུམས་ཏེ་བསྟན་པ་ཉིན་མོ་ལྷར་གསལ་བར་བྱས་ནའང་མི་རིང་བར་རྒྱ་གར་འཕགས་
 པའི་ཡུལ་དུ་ཁྲ་སྟོའི་དབྱུང་ཤུགས་རྩེ་ཆེར་བྱིན་ཏེ་བསྟན་པ་ལ་ཉམ་ཆག་ཆེན་པོ་བྱུང།

ཐོད་གངས་ཅན་སྟོངས་སུ་རྒྱལ་པོའི་ཐོག་མ་གཉའ་བྲི་བཙན་པོ་ནས་རིམ་གྱིས་
 བརྒྱད་པའི་རྒྱལ་རབས་ཉེར་བདུན་པ་རྒྱལ་པོ་ལྷ་མོ་ཐོ་ཐོ་ཐོ་གཉན་བཙན་ལ་སྤངས་སྟོང་བྲུག་
 བརྒྱ་པ། ཅིན་མཆིའི་གཟུངས་ཀྱི་བསྟོས་པོར། མདོ་སྡེ་ཟ་མ་ཏོག་གསེར་གྱི་མཆོད་རྟེན་
 རྣམས་ཐུག་དུ་སོན་ཏེ་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་དབྱ་བཞེས་པའི་རྟེན་འབྲེལ་འགྲིགས།

དེའི་གདུང་རབས་ལྷ་པ་ཆོས་རྒྱལ་སྟོང་བཙན་སྤྲུམ་པོའི་སྤྲུམ་དངོས་སུ་དབྱ་བཞེས་
 པ་ཡིན་རྟེ། དེ་ཡང་སྟོན་པོ་ཐོན་མིས་སྟུན་རས་གཟིགས་ཀྱི་མདོ་རྒྱད་ཉེར་གཅིག་རྣམས་
 བསྐྱར་བས་དམ་པའི་ཆོས་དངོས་སུ་དབྱ་བཞེས་ཤིང་སྟོལ་གཏོད་པ་འདི་དག་ནི་ཐོད་དུ་

དམ་ཚེས་འགྱུར་བའི་ཐོག་མ་ཡིན་པས་ཐོན་མི་ཉིད་ནི་བོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུ་བ་ཐོག་མ་ཡིན་ནོ།
 རྒྱལ་པོ་བློ་མེད་གཙུག་བཏན་ནས་མེ་མཁོ་ཚེས་ཀྱི་སྐུ་རིང་ལ་དམ་ཚེས་ཅུང་ཟད་དར་བར་
 མཛད། རྒྱལ་པོ་བློ་མེད་མེད་བཅན་གྱི་དུས་སུ་མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཆོད་དང་སློབ་དཔོན་བསྐྱེ་
 འབྱུང་གནས་ལ་སོགས་པ་རྒྱ་གར་འཕགས་པའི་ཡུལ་གྱི་མཁས་གྲུབ་དུ་མ་གདན་དྲངས་
 ཉེ་རབ་བྱུང་གི་སྤྱི་ཐོག་མར་བཅུགས་བ་དང་། དམ་ཚེས་འགྱུར་བ་དང་གཙུག་ལག་ཁང་
 གསར་བཞེངས་སོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་མངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྐྱན་བ་དར་ཞིང་རྒྱས་པར་བྱུང་། ཚེས་
 རྒྱལ་བློ་རལ་སྐབས་སུ་འདྲ་བར་གར་མཁན་པོ་ཇིན་མིད། ལུ་མེ་མེད་མི་དེ་དེ་དེ་དེ་དེ་དེ་དེ་
 པོ་ཇིན་མིད་སོགས་རྒྱ་གར་གྱི་བཀ་ཆེན་དུ་མ་གདན་དྲངས་པས་སྤྱོད་ཡབ་མེས་ཀྱི་དུས་ལོ་
 བཀ་རྒྱལ་གྱིས་ཚེས་འགྱུར་བའི་ཆོ་བོད་སྐད་དུ་མ་གྲགས་པའི་གཞུང་བླག་རྒྱུ་ལུགས་
 དང་མི་མཐུན་བ་དང་། གོ་དཀའ་བ་རྒྱལ་ཡུལ་སྐད་ཀྱི་མིང་རྒྱལ་བཅོལ་ནས་ཐེག་བ་ཆེ་
 རྒྱུང་གི་གཞུང་དང་མཐུན་པར་འགྱུར་བཅོས་བྱས། དུས་ཤིས་སྤྱང་དར་མས་བསྐྱན་བ་
 བསྐྱབས་ནས་བོད་དུ་བྱུང་བའི་བསྐྱན་བ་ཉག་སྤྱོད་པའི་སྐབས་མངའ་རིས་རྒྱལ་པོས་ཇོ་བོ་
 ཇི་དཔལ་ལྷན་ཨ་ཉི་ཤ་ལ་སོགས་བ་བོད་དུ་གདན་དྲངས་པས་དམ་ཚེས་ཀྱི་བསྐྱན་བ་
 ཉམས་བ་སྤྱར་གསོས་བོང་འཕེལ་བྱུང་།

དེ་ལྟར་བོད་ཀྱི་ཚེས་རྒྱལ་རིམ་བྱོན་དང་། ལོ་རྒྱུ་བ་མཁས་གྲུབ་རྒྱལ་གྱི་དཀའ་སྤྱད་
 དང་ལྷག་པར་འཕགས་པའི་ཡུལ་གྱི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་རྒྱལ་གྱི་བཀྱི་ལས་དུས་ད་ལྟའི་
 བར་དུ་བོད་དུ་བྱུང་བའི་བསྐྱན་བ་རྒྱས་ཤིང་གནས་བ་ནི་བོད་ཀྱི་ཚེས་བརྒྱུད་ཆེན་པོ་བཞི་
 རྒྱལ་པོ་ཡིན་ནོ།

བོད་དུ་མདོ་སྐྱབས་ཀྱི་གཞུང་རྒྱལ་པོ་ལྟར་དར་ཚུལ།

བོད་གངས་ཅན་གྲོངས་སུ་མདོ་སྐྱབས་གཉིས་དང་དེ་དག་གི་དཔོངས་འབྲེལ་བསྐྱན་
 བཅོས་ཁག་བྱོན་ཚུལ་ཇི་ལྟར་ཡིན་ཞེ་ན། དང་པོ་དམ་ཚེས་འདུལ་བ་ནི། ལུང་སྤེ་བཞི་རྒྱལ་ས་

ཕལ་ཆེ་བ་བསྟན་པ་ལྟ་དཔེ་གྱི་དུས་སུ་གྲུར་ཟིན། སྤྱིས་འདུལ་བ་ལུང་སྡེ་བཞིའི་དགོངས་
འགྲེལ་སྟོབ་དཔོན་ཡོན་ཏན་འོད་གྱིས་མཛད་པའི་འདུལ་བ་མདོ་རྩ་བ་དང་ལས་བརྒྱ་པ་
དང་མེ་ཏོག་སྡེང་རྒྱུད་སོགས་བསྟར་ཏེ་འདུལ་བའི་བསྟན་པ་དར།

གཉིས་པ་མངོན་པ་ནི། ཆོས་ཀྱན་གྱི་བཤད་བྱའི་གཞི་ཡིན་པས་དམ་ཆོས་ཀྱི་མ་མོ་
ཆོས་ཀྱན་གྱི་བཤད་པའི་གཞི་དང་འབྲེག་པའི་སྟོ་ཡིན་ནོ། དེ་ལ་ཐེག་ཆེན་གྱི་མངོན་པ་ཀུན་
ལས་བདུས་པ་དང་། ཐེག་དམན་གྱི་བྱེ་བྲག་བཤད་མཛད་ཀྱི་དོན་བསྟུས་པ་སྟོབ་དཔོན་
དབྱིག་གཉེན་གྱིས་མཛད་པ་ཆོས་མངོན་པ་མཛད་གཉིས་བསྟན་པ་ལྟ་དཔེ་གྱི་དུས་སུ་
ཇི་མཉམ་དང་ལོ་རྒྱུ་བ་ག་ཅག་ཞང་གསུམ་གྱིས་བསྟར། མངོན་པ་གོང་མ་ཀུན་བདུས་ཀྱི་
འཆད་ཉན་སྟོན་དུ་དར་རྒྱས་ཆེན་པོ་བྱུང་ཡང་སྤྱིས་སུ་སྟོབ་དཔོན་བྲན་པ་ཡེ་ཤེས་གྲགས་
པས་ཁམས་སུ་ཆོས་མངོན་པ་མཛད་ཀྱི་བཤད་བྱ་བཅུགས་པས་མངོན་པ་གོང་མ་ལ་
འཆད་ཉན་བྱེད་པ་བྱུང་དུ་སོང་།

གསུམ་པ་ཤར་སྤྱན་ནི། ཆོས་འཁོར་བར་པའི་དགོངས་དོན་གྱི་སྟེན་དོན་མངོན་རྟོགས་
ཀྱི་རིམ་པ་བསྟན་པའི་གཞུང་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རྒྱན་གྱི་བསྟན་བཅོས་ཞེས་པ་ཇེ་བཅུན་
བྱམས་མགོན་གྱིས་མཛད་པ། དེ་ལ་སྟོབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་ཀྱི་འགྲེལ་བ་དེ་
ཉིད་རྣམ་ངེས་དང་། གཞུང་དབྱིག་གཉེན་གྱི་ཡུམ་གསུམ་གཞོད་འཛམས། སྟོབ་དཔོན་སེང་
བཟང་གི་ཡུམ་གསུམ་དང་སྦྱར་བའི་འགྲེལ་བ་དོན་གསལ་སོགས་མངོན་རྟོགས་རྒྱན་ལ་
རྒྱ་འགྲེལ་བཅུ་སྟག་འགའ་ཤས་བྱུང་བ་གྲགས།

གངས་ཅན་ལྗོངས་སུ་ཤར་སྤྱན་འབྱུང་བ་གཙོ་བུས་པའི་ཤར་སྤྱན་གྱི་གཞུང་མང་པོ་
ཞིག་བསྟན་པ་ལྟ་དཔེ་གྱི་དུས་སུ་ཆངས་ཁམ་པ་གོ་ཆ། ཞང་ཡེ་ཤེས་སྡེ། ཇི་མཉམ་།
སྤུ་ལྷོ་ཤར་སོགས་ཀྱིས་ཤོད་སྐྱད་དུ་བསྟར། བསྟན་པ་ཕྱི་དར་གྱི་དུས་སུ་ལོ་ཆེན་རིན་བཟང་
གིས་བརྟེན་གྲུ་མཉམ་ལས་མངོན་རྒྱན་གྱི་འགྲེལ་བ་དང་བཅས་པ་གསན་ནས་བཤད་སྟོལ་

གྱི་འགོ་ཐོག་མར་བཏོད། དེ་ལས་ཇོ་སོས་འབྲོམ་སྟོན་པ་དང་ཁྱ་ཆེན་ལྷ་མྱེངས་པ་ལ་
སོགས་པར་པར་སྟོན་གྱི་བཤད་པ་བསྐྱལ། དེ་ནས་སྟིམ་རྟོག་ལོས་པ་རྫིད་འབྲུམ་སྟག་
གསུམ་པ་ལས་ཤེར་སྟོན་གསན་པའི་རྒྱན་རང་གི་སྟོབ་མ་འབྲེ་ཤེས་རབ་འབར་ལ་བྱིན།
འབྲེས་ཇོ་བོ་ཇེ་དང་ལོ་ཆེན་རིན་ཆེན་བཟང་པོ་དང་རྟོག་ལོ་གསུམ་གའི་བཤད་རྒྱན་གཅིག་
དུ་བྲིལ་ཏེ་རང་གི་སྟོབ་མ་ཨར་བྱང་ཆུབ་མེད་གེ་ལ་གཏད་དེ་རིམ་གྱིས་བྱ་སྟོན་དང་མི་
ཅམ་དང་། དེ་ནས་རོང་སྟོན་སོགས་ལ་བརྒྱད་དེ་བཤད་རྒྱན་ད་ལྟའི་བར་དུ་མ་ཉམས་པར་
གནས་ཡོད།

བཞི་བ་དབུ་མ་ནི། སྟོབ་དཔོན་འཕགས་པ་རྒྱ་སྐྱབ་ཀྱིས་དབུ་མ་རིགས་ཚོགས་ལྷའམ་
དུག་མཛད། དེ་ལ་སྟོབ་དཔོན་སངས་རྒྱས་བསྐྱེད་ཀྱིས་ཐལ་འབྱུར་དང་ལེགས་ལྷན་
འབྲེད་ཀྱིས་རང་རྒྱད་དུ་བཀྲལ། རྒྱ་བྲགས་ཀྱིས་ཐལ་རང་གཉིས་ཀྱི་བཞེད་པ་སོ་སོར་
གསལ་བར་སྟེ་སྟེ་ཐལ་འབྱུར་འཐད་པ་དང་རང་རྒྱད་མི་འཐད་པའི་སྟོབ་སྟེ་བའི་གཞུང་
དབུ་མ་ཆོག་གསལ་དང་དབུ་མ་འཕྲུག་པ་སོགས་མཛད་པས་དབུ་མའི་རྣམ་གཞག་དར་
རྒྱས་ཆེན་པོ་བྱུང་།

གངས་ཅན་བོད་དུ་ཐལ་རང་གཉིས་ལས་རང་རྒྱད་སྟོན་དང་ཐལ་འབྱུར་རྗེས་སུ་བྱུང་།
དེ་ཡང་ཅོག་རོ་རྒྱའི་རྒྱལ་མཆན་གྱིས་ཅ་ཤེས་དང་ཤེས་རབ་སྟོན་མེ་དང་སྟོན་རས་
གཟིགས་བརྟལ་ཞུགས་ཀྱིས་མཛད་པའི་འབྲེལ་བཤད་སོགས་ལེགས་སྦྱར་ནས་བོད་སྐད་
དུ་བསྐྱུར། མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཚོས་རང་རྒྱད་པའི་གཞུང་དེ་དག་གི་འཆད་ཉན་དབུ་
བཅུ་མས། རང་ཉིད་ཀྱིས་དབུ་མ་རྒྱན་དང་བཞེན་གཉིས་ཀྱིས་དཀའ་འབྲེལ་སོགས་མཛད་
དེ་གསལ་བར་བྱས། སྟོབ་མ་ཀམལ་ཤི་ལས་སྟོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་དང་དབུ་མ་
སྒྲུང་བ་སོགས་མཛད་དེ་མཁན་བོའི་དགོངས་པ་སྟག་པར་གསལ་བར་བྱས། བསྟན་པ་སྟེ་
དར་སྐྱབས་རྟོག་ལོ་རྣམས་དཔལ་ལྷན་གསང་བུའི་གདན་ས་འཛིན་བ་རྣམས་དང་སྐྱ་བ་

ཆོས་མེད་དང་མེད་ཆེན་བརྒྱད་ལ་སོགས་པར་རང་རྒྱུད་པའི་ཕྱོད་འཛིན་ཚུགས་ཀྱང་རྒྱུད་
 ཚུགས་པ་ནི་ཕྱིས་སུ་མ་བྱུང་བ་སྤང་ངོ་། །པ་ཚབ་ལོ་རྩ་བ་ཁ་ཆེར་བྱོན་ཏེ་བརྒྱུད་སྤྲུལ་དང་
 ཀན་ཀམས་སོགས་ཀྱི་ཞབས་ལ་གཏུགས་ནས་ཐལ་འགྱུར་བའི་ལྷ་བའི་རྣམ་གཞག་ལ་ལོ་
 བྱངས་ཉེར་གསུམ་གྱི་བར་དུ་གསལ་སྤྲུངས་ཚུལ་བཞིན་དུ་མཛད་དེ་བོད་དུ་ཅ་འཇུག་བཞི་
 གསུམ་སོགས་ཀྱི་འགྲེལ་པ་རྒྱ་བས་མཛད་པ་རྣམས་བོད་སྐད་དུ་བསྐྱུར། འཆད་ཉན་
 ལེགས་པར་གཏན་ལ་ཐག་སློབ་མ་པ་ཚབ་བྱ་བཞིར་གྲགས་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཐལ་འགྱུར་ལྷ་
 བའི་དགོངས་པ་ལྷག་པར་སྤེལ་བས་གངས་ཅན་ཆོས་ལྷན་ཞིང་ཁམས་སུ་དབྱ་མ་ཐལ་
 འགྱུར་བའི་བྱུང་མཐའི་རྣམ་གཞག་གིན་དུ་རྒྱས་པར་མཛད། ཕྱིས་སུ་ཞང་ཐག་སྐག་བ་དང་
 ས་སྐྱའི་རྗེས་འབྲང་པ་རྣམས་དང་མཁས་མཆོག་བྱ་སྟོན་ཞབས་དང་། རྗེ་རེད་མདའ་བ་དང་
 དེ་ལས་རྗེ་སྟོ་བཟང་གྲགས་པ་རྣམས་སུ་བརྒྱུད་དེ་ཐལ་འགྱུར་བའི་ལུགས་ད་ལྟའི་བར་དུ་
 མི་ཉམས་པར་གནས་སོ།།

ལྷ་པ་ཚད་མའི་བྱུང་བ་ནི། ནང་པའི་ཚད་མའི་རྣམ་གཞག་བསྐྱར་པའི་མདོ་རང་ཚན་པ་
 མེད་ཀྱང་སློབ་དཔོན་སྟོགས་ཀྱི་སྒྲུང་པོས་ཚད་མའི་སྐོར་མདོ་དུ་མ་ནས་སྟོགས་བདུས་བྱས་
 ཏེ་ཚད་མ་ཀུན་གྱི་མདོ་ཚད་མ་ཀུན་ལས་བདུས་པ་ཅ་འགྲེལ་མཛད་དེ་ནང་པའི་ཚད་མའི་
 རྣམ་གཞག་གི་ཕྱོད་སྤྲུལ། དེ་ལ་ཕྱིས་སུ་སློབ་དཔོན་ཆོས་གྲགས་ཀྱིས་དེའི་དགོངས་
 འགྲེལ་ཚད་མ་སྤེལ་བདུན་མཛད་དེ་ནང་པའི་ཚད་གཞུང་གི་རྣམ་གཞག་ཆེས་རྒྱས་པར་བྱས་
 ཏེ་རྒྱ་གར་ཡུལ་གྱུ་ཀུན་དུ་དར།

བོད་གངས་ཅན་གྱི་མེད་ས་སུ་ལོ་རྩ་བ་ཀ་ཅོག་ཞང་གསུམ་གྱི་ཚད་མ་སྤེལ་བདུན་ལས་
 འགའ་ཞིག་བསྐྱར་པ་སྤྲ་དར་གྱི་དུས་སུ་ལེགས་སྐྱར་ནས་བོད་སྐད་དུ་བསྐྱུར་ཀྱང་དེ་ལ་
 འཆད་ཉན་རྒྱུད་ཚུགས་པ་མ་བྱུང་། དེ་ནས་བསྐྱར་པ་སྤེལ་དར་གྱི་སྐབས་ལོ་རྩ་བ་ཁ་ཆེར་མེད་
 ཆེན་གྱིས་ཚད་མ་ཀུན་བདུས་ཅ་འགྲེལ་དང་མ་དགེ་བའི་སྟོ་གྲོས་ཀྱིས་རྣམ་འགྲེལ་བསྐྱུར་

ཅིང་བྱུང་སྐོས་བཤད་པར་ཚད་མ་ཉིང་མ་ཞེས་གྲགས་པ་ཅུང་ཟད་དར། སྤྱིས་སུ་ལོ་རྒྱུ་བ་སློ་
ལྷན་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྣམ་པུས་དང་རིགས་ཐིགས་གཉིས་ཆ་ཚད་བསྒྱུར་བ་མ་ཟད། ལྷན་
མཁན་པོ་དང་ཆོས་མཆོག་གི་དགོངས་པ་སོ་སོར་བརྟོན་ནས་ཆད་མ་གསར་མ་དར། དེའི་
བརྒྱུད་འཛིན་ཕྱ་པ་སོགས་སེང་ཆེན་བརྒྱུད་བྱུང་། སྤྱ་བས་ཆད་མའི་བསྐྱུས་གྲུ་ཆེ་ཆུང་
གཉིས་མཛད་ནས་བོད་དུ་ཆད་མའི་འཆད་ཉན་གྱི་བཤད་གྲུ་བཅུགས་ནས་བསྐྱུས་གྲུའི་
སྒོལ་བརྟེད། སྤྱིས་རྗེ་བཅུན་ས་བརྟེད་ཀྱིས་ཆད་མ་རིགས་གཉིས་ཀྱི་ཅ་འགྲེལ་མཛད་པས་
བོད་མི་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ཆད་མའི་གཞུང་གི་ཐོག་མར་འགྱུར། རྣམ་འགྲེལ་ལ་མ་རྟོག་
ས་གསུམ་གྱི་འགྱུར་མི་འདྲ་བ་གསུམ་ཅུམ་བྱུང་། དེའི་འཆད་ཉན་ད་ལྟ་འང་མི་ཉམས་པ་
ཆོས་བརྒྱུད་ཀྱན་གྱི་བཤད་གྲུར་སློབ་བཞིན་ཡོད།

རྒྱུད་ཐེ་བཞིའི་བྱུང་བ་ནི། གྲུ་སློང་གི་རྒྱུད་གཉིས་ནི་རྒྱ་གར་དུ་སློབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་
མཆོག་གི་སྐལ་པ་ཅན་དང་སངས་རྒྱས་གསང་བ་དང་སངས་རྒྱས་ཞི་བས་བཤད་སྐྱབ་
ཅུལ་འདོན་གྱིས་སྒྲེལ་བར་མཛད། རྒྱུད་འདི་གཉིས་བོད་དུ་ཆོས་རྒྱལ་གྱི་སྤྱང་ལྷེ་བཅན་ཡང་
ན་བཅན་པོ་མེ་ཨག་ཚོམས་ཀྱི་སྐུ་དུས་སུ་གོང་ཞུས་སློབ་དཔོན་སངས་རྒྱས་གསང་བ་དང་
སངས་རྒྱས་ཞི་བ་གཉིས་རི་བོ་ཉི་མའི་བསྐྱོམ་ལ་བཞུགས་པ་ཐོས་ནས་སྐྱན་འདྲེན་དུ་
བཏང་ཡང་མ་འདྲོངས་ཀྱང་བསམ་གཏན་སྤྱི་མ་དང་རྣམ་སྤང་མཛད་བྱུང་གི་རྒྱུད་རྣམས་དེ་
གཉིས་ལས་གསན་ཏེ་བསྐྱར། ལོ་རྒྱུ་བ་དཔལ་བཅེགས་ཀྱིས་བསྐྱར་ཏེ་བཤད་ཉན་བཅུགས་
པ་གྲགས། སྤྱིས་བཟུན་པ་སྤྱི་དར་སྐབས་བ་རི་ལོ་རྒྱུ་བ་དང་པོར་ཆེན་དོ་རྗེ་འཆང་སོགས་
ཀྱི་ལུགས་སྒོལ་སྒྲེལ་ཏེ་བཤད་རྒྱན་སྒྲེལ་ཡང་མ་འཕེལ།

རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་ནི། རྒྱ་གར་དུ་སློབ་དཔོན་སྤྱུ་བ་ཤེས་གཉིན་དང་སངས་རྒྱས་
གསང་བ་དང་ཀུན་སྤྱིང་གསུམ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་ལ་མཁས་པར་གྲགས། དེ་གསུམ་གྱི་
བཀའ་སྒོལ་ཡང་འཕགས་ཡུལ་དུ་གྲགས་ཆེ། བོད་དུ་སངས་རྒྱས་གསང་བའི་བཤད་རྒྱན་

བསྟན་པ་ལྟ་བུ་དཔེ་གྱི་སྐབས་སུ་བྱུང་ཡང་རྒྱན་གནས་མ་ཐུབ། བྱི་དར་སྐབས་ལོ་ཆེན་རིན་
བཟང་གིས་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་མང་པོར་གསལ་བསམ་མཛད་དེ་གསར་འགྱུར་ཡང་མང་དུ་
མཛད། གཙོ་བོ་ཀུན་སྙིང་གི་དེ་ཉིད་བསྐྱུས་པའི་རྒྱུད་འབྲེལ་གྱི་འཆད་ཉན་ལེགས་པར་
བཅུགས་པས་མང་དུ་བྱེས། དཔལ་མཆོག་དང་བཤད་རྒྱུད་དོ་རྩེ་ཅེ་མོའི་རྒྱུད་རྣམས་ཀྱང་
སློབ་མ་མང་པོར་བཤད། བྱིས་ཟངས་དཀར་ལོ་རྩེས་ཀྱང་རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་སློབ་མང་དུ་
གསལ་ཏེ་བརྒྱུད་པ་ཟངས་དཀར་བྱ་བཞི་སོགས་ལ་དར།

རྣལ་འབྱོར་སླ་མེད་གྱི་རྒྱུད་ནི། རྣལ་འབྱོར་སླ་མེད་ལ་པ་རྒྱུད་གསང་བ་འདུས་པ་དང་
མ་རྒྱུད་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་གཉིས་ལས་པ་རྒྱུད་གསང་འདུས་ལ་རྒྱ་གར་ཉིད་དུ་ལྷགས་
མི་འདྲ་བ་ཉེར་བཞི་ཅུ་མཆིས། བོད་དུ་དེ་དག་ལས་འཕགས་ལྷགས། ཡེ་ཤེས་ཞབས་
ལྷགས། བརྟེ་པའི་ལྷགས། རྩེ་མཚན་པའི་ལྷགས། བསྐྱེད་ལྷགས། ཀུན་སྙིང་ལྷགས་
བཅས་དུག་བྱུང་། བསྟན་པ་ལྟ་བུ་དཔེ་གྱི་སྐབས་སུ་རྩེ་བ་ལྷེ་བགྱིས་ཏུ་ཆེན་པོ་སྟེ་བཙོ་བརྒྱད་
བསྐྱུར། འབྲེལ་མཛད་བཤད་པ་བྱུང་བ་རྣམས་ནི་རྩེ་མཚན་པའི་ལྷགས་ཡིན་པར་གྲགས།
འོན་ཀྱང་སློབ་དཔོན་འཕགས་ལྷགས་དང་། ཡེ་ཤེས་ཞབས་ལྷགས་ལས་གཞན་པའི་དབང་
བཤད་མན་ངག་རྣམས་ལུན་རིང་མ་དར། བོད་དུ་འཕགས་ལྷགས་དང་ཡེ་ཤེས་ཞབས་
ལྷགས་ད་ལྟའི་བར་དུ་རྒྱན་གནས་ཐུབ་པ་ནི་ལོ་ཆེན་རིན་བཟང་གིས་ཐོག་མར་གསང་
འདུས་དང་དེའི་འབྲེལ་པ་སློན་གསལ་སོགས་གཞུང་ཆེ་ཆུང་མང་པོ་བསྐྱར་སྐབས་པའི་བགྱིན་
ཉག་ཅིག་ཡིན། བྱིས་འཕགས་ལྷགས་ལའང་མར། འགོས། རྩེ་བོ་རྩེ། ཆག་ཁ་ཆེ་པ་ཆེན་
གྱི་སྟོལ་བཅས་ལྟ་བུར། བྱི་མ་ཡེ་ཤེས་ཞབས་ལྷགས་ལའང་ཁམས་ལྷགས། ས་ལྷགས།
རྩ་ལྷགས། གཉིས་ལྷགས་བཅས་བཞི་ཅུ་མ་བྱུང་བ་གྲགས་སོ། ཁོང་གི་ལྷགས་སྟོལ་དག་
པོ་དེ་དག་ལས་མར་ལྷགས་དང་འགོས་ལྷགས་མཆོག་དུ་གྱུར་པ་འདོད་པ་གྲགས་སོ།

གཉིས་པ་མ་རྒྱུད་ལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ བརྟེ་སྟེ་རྩེ་གདན་བཞི། སངས་

རྒྱལ་ཐོད་པ་སོགས་ལས་དང་པོ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ནི་ཐོག་མར་བོད་དུ་བྱི་དར་སྐབས་
 མར་པ་དང་ལོ་ཆེན་རིན་བཟང་འགོས་ལོ་སོགས་ཀྱིས་རྒྱུད་དང་སྐྱབ་ཐབས་དང་དཀའ་
 འགྲེལ་སོགས་མང་པོ་བོད་སྐད་དུ་བསྒྲུར། རྒྱུ་ཤེས་རབ་བཅེགས་ཀྱིས་བལ་པོ་པམ་ཐིང་
 པ་སྐྱ་མཆེད་ལ་བདེ་མཆོག་གི་ཆོས་འཁོར་གསལ་པ་བྱིས་མན་ལོ་རྩ་བ་སློ་བྱོས་གྲགས། དེ་
 ལས་པམ་ཐིང་སྐྱ་མཆེད་སོགས་ལས་བརྒྱུད་དེ་ས་སྐྱ་ཡབ་སྐས་དང་བཅས་པར་ཆེས་དར།
 མར་པས་ན་རོ་པ་ལས་གསལ་པ་མར་པའི་སློབ་མ་རྒྱ་ནམ་དོ་གཟེ་བ་སློ་ལྷན་སོགས་ལས་
 བྱིས་བརྒྱུད་པ་འདི་བྱ་སྟོན་ཞབས་ལ་བྱུང་བའོ། །མ་རྒྱུད་གཞན་མདུལ་། རྩོམ་གདན་བཞི།
 སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་རྣམས་ཀྱི་དབང་བྲིད་མན་ངག་དང་བཤད་པ་རྣམས་ད་ལྟའང་མི་
 ཉམས་པ་བཞུགས་ཡོད།

རྣམ་འབྱོར་སྒྲ་མེད་ཀྱི་རྒྱུད་ཀྱི་ཁོངས་སུ་གནོགས་པ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པ་དུས་འཁོར་
 གྱི་རྒྱུད་ནི། རྒྱ་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་དུས་ཞབས་པ་འཇམ་པའི་རྩོམ་ཅི་ལུ་པ། མིད་ལྷན་
 གསུམ་སོ་སོས་བྱང་ཤུབ་ལ་ནས་དུས་འཁོར་ཙ་རྒྱུད་སྟོན་བྲངས་ཏེ་དེ་ཉིད་རྒྱ་གར་དུ་ཆེས་
 དར་བར་བྱས་སོ།

གཞུང་འདི་བོད་དུ་ཐོག་མར་རྒྱ་གར་གྱི་པཎ་ཆེན་ཕྱིནྟ་བོནྟེ་དང་གྱི་ཇོ་ལོ་རྩ་བ་རྒྱ་བའི་
 འོད་ཟེར་གྱིས་སྒྲིལ་ ༡༠༥༧ ལོར་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུད་ཀྱི་སྟོང་པོ་དང་དེའི་འགྲེལ་ཆེན་
 བསྒྲུར་པ་ལས་དབང་དང་བཤད་པ་མན་ངག་གི་སྟོལ་བཏོད་པ་བྲོམ་ལོ་རྩ་བ་སོགས་ལས་
 བརྒྱུད་པ་གྱི་ཇོའི་ལུགས། དེ་ནས་ཅ་མི་སངས་རྒྱལ་གྲགས་ཀྱིས་དུས་ཞབས་པ་ལས་
 གསལ་ཏེ་འགྲེལ་ཆེན་བསྒྲུར་ནས། རྒྱ་ལོ་སོགས་སློབ་མ་རྣམས་ལ་བཤད་པ་ཅ་མི་ལུགས་
 དང་། རྩ་ཆོས་རབ་ཀྱིས་བལ་པོ་བརྟེན་སམ་རྟེན་ལས་དབང་རྒྱུད་མན་ངག་དང་བཅས་པ་
 གསལ་ནས་རྒྱུད་འགྲེལ་བསྒྲུར་བ་ལས། རྩ་ཡེ་ཤེས་མེད་གོ་སོགས་ལ་མཆེད་བ་རྩ་ལུགས་
 དང་། འབྲོ་ལོ་རྩ་བས་ཁ་ཆེ་རྒྱ་བ་མགོན་པོ་བསྟེན་ནས་མཆོག་མི་འགྲུར་གྱི་ལེའུ་མ་

གཏོགས་ཀྱིད་འབྲེལ་ཚོགས་པར་བསྐྱར་བ་ཕྱིས་དེའི་བརྒྱད་པ་སྟོ་སྟོན་སོགས་ནས་ཆོས་མེ་
 ཀུན་མཁྱེན་ཆེན་པོ་པད་དཀར་བར་བརྒྱད་པར་འབྲོ་ལུགས་སོ། །ཆག་ལོ་རྩ་བ་ཆོས་མེ་
 དཔལ་གྱིས་རྒྱུ་ལྷི་བྱེད་དང་། རིན་འཁྱིལ་ལས་དབང་བཤད་མན་ངག་ཆ་ཆར་བ་ཞུས་པ་
 ལས་ཆག་ལུགས་བྱུང་། ཕྱིས་རྩེ་བརྒྱད་པ་རྩ་ཡེ་ཤེས་སེང་གེ་དེ་ལས་རྩ་འབྲུམ་སེང་དང་
 དེས་ལྷ་ལོ་རྩ་བ་རྣམས་ཀྱིས་རྩེ་མེ་དེས་སྤྲ་མ་ཤེས་རབ་སེང་གེ་དེས་སྤྲ་མ་དཔལ་ལྷན་སེང་གེ་
 དེས་སྤྲ་མ་རྩེ་མེ་ཀྱུ་མཆོན། དེ་ལས་མཁས་མཆོག་བྱ་སྟོན་རིན་པོ་ཆེས་གསལ། བྱ་སྟོན་
 གྱིས་འབྲོ་ལུགས་འཛིན་པ་འཕགས་ལོད་ཡོན་ཏན་ཀྱི་མཆོལ་འདུས་འཁོར་གསན་པས་
 བྱ་སྟོན་ལ་རྩ་དང་འབྲོ་གཉིས་ཀའི་བརྒྱད་པ་གཅིག་ཏུ་འདུས་ཤིང་འབྲུམ་འཁོར་གྱི་བཤད་པ་
 དང་འབྲེལ་པ་སོགས་མང་པོ་མཛད་དེ་ཀྱ་ཆར་སྟེལ། བྱ་སྟོན་གྱིས་དེའི་བརྒྱད་པ་རང་གི་
 སྟོབ་མ་སྟོ་ཆད་པ་རིན་ཆེན་རྣམས་ཀྱིས། བོད་གསུམ་བདེ་ཆེན་པོ་ཆོས་ཀྱི་དཔལ་དང་དཔལ་
 ལྷན་སྤྲ་མ་དམ་པ་བསོད་ནམས་ཀྱིས་མཆོན་སོགས་ལ་གནང་། བྱ་སྟོན་གྱི་སྟོབ་མ་བོད་
 གསུམ་པ་བདེ་ཆེན་ཆོས་ཀྱི་དཔལ་ལས་མེ་རིན་པོ་ཆེས་གསལ། ཁོང་གིས་བཤད་ཀྱིན་ལན་
 གཅིག་ཁོ་ནར་སྟེལ་བའི་སྐབས་སྟེ་སྟོད་འཛིན་པ་མཐའ་ཡས་པ་འདུས་ཤིང་འབྲེལ་ཆེན་
 ཡང་ཁག་གསུམ་ཅན་མཛད་པ་གནང་། དེའི་རྒྱན་མཁས་བྱུང་དགེ་ལེགས་དཔལ་བཟང་
 སོགས་ནས་བརྒྱད་དེ་ད་ལྟོ་འདུས་ཏམས་པ་བཞགས་ཡོད་དོ།

དེ་ལྟར་ལྟར་བོད་སྐད་ཏུ་གྲུར་བའི་ཀྱ་གར་གྱི་ནང་བའི་གཞུང་མལ་ཆེ་བ་རྣམས་དུས་ད་
 ལྟའི་བར་དུ་འདུས་ཏམས་པ་མ་ཟད་འཕགས་ཡུལ་གྱི་བརྒྱད་པ་ཉིད་ལ་ལྟར་དང་འབྲུམ་པ་
 གང་ཡང་མེད་པར་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གནས་ཐུབ་པ་ནི་སྟོན་གྱི་པཎ་ཆེན་དང་ལོ་ཆེན་རྣམས་ཀྱི་
 བཀའ་དྲིན་ཉག་ཅིག་ཡིན་ལོ།

ནང་པའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་བསྟོམ་ཚུལ་གྱི་བྱུང་བ་དང་རྣམ་གཞག

ནང་པའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་སྟོམ་ཚུལ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པ་ཐོག་མར་བདག་ཅག་གི་སྟོན་པ་

གྲུ་ཐུབ་པ་ཉིད་ནས་དར་བ་ཡིན་ལ། སྟོན་མཆོག་དེ་ཉིད་ཀྱི་མཛད་ཆེན་བཅུ་གཉིས་སུ་
 མཆིས་པ་ལས་རབ་བྱུང་དང་དཀའ་སྤྱད་ཀྱི་མཛད་པ་གཉིས་ཀྱི་སྐབས་སུ་ཉིང་འཛིན་ལ་
 སྟོ་སྟོང་ཚུལ་གྱི་རིམ་པ་དངོས་སུ་གསལ་ལ། དེ་ཡང་ཐེག་པ་ཐུན་མོང་གི་དབང་དུ་བྱས་ན།
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་སྤྱད་ཚུལ་ལེམས་དཔའ་དགའ་གངས་ཉེར་དགུ་ལ་སོན་པ་ན་
 རྟོགས་བཞིའི་ཀྱིལ་སྟེའི་ཕྱི་རོལ་དུ་སྐྱེ་འཆས་ལ་ཐེབས་པ་ན་མིའི་རིགས་ལ་རང་བཞིན་གྱི་
 རྣམ་པ་མི་འདྲ་བ་ན་ག་དང་ན་བ་དང་འཆི་བའི་སྐྱག་བསྐལ་གྱིས་གཟིར་བའི་ཚུལ་རྣམས་
 གཟིགས། རྗེས་སུ་ཚུལ་དེ་ཉིད་རང་ཉིད་ལའང་འབྱུང་བ་དང་སྟོང་བར་འགྱུར་བ་དགོངས་ཏེ་
 དེ་དག་མི་འབྱུང་བའི་སྐྱད་ཐར་བ་ཐོབ་བར་བཙོན་དགོས་པ་གཟིགས་ནས་འདོད་བ་ལ་ཞེ་
 ཐག་པ་ནས་ཞེན་པ་སྟོང་དགོས་པ་དང་དེ་དག་ཅད་ནས་གཅོད་བའི་འདུན་པ་དྲག་དུ་སྐྱེས་
 ཏེ་མཆོན་མོ་ནམ་ཤེད་ཅམ་ན་ཐུགས་འབྱུང་ནས་འདོད་པའི་ཅ་བ་གཅོད་པའི་ཐར་ལམ་
 འཛོལ་ཕྱིར་ཀྱིས་ཤིད་དང་ས་མ། རང་གི་གཅེས་པའི་སྤྲས་སྐྱ་གཅན་འཛིན་ཆུང་མ་དང་
 བཅས་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་ཏེ་མཆོད་རྟེན་རྣམ་དག་གི་བྱང་དུ་ཐེབས། འདུན་པ་ལ་རྟ་དང་
 ཀྱུན་ལ་སོགས་པ་སྤྱིན་ནས་ཉིད་ཀྱི་གཙུག་ཕྱུང་ཉིད་ཀྱིས་བཅད་དེ་རང་བྱུང་གིས་རབ་དུ་
 བྱུང་བར་མཛད། ཐུག་དར་ཁྲོད་ཀྱི་གོས་གསོལ་ནས་ཤིང་ཀར་བེར་འེ་ལོ་མས་ལྷུང་བཟེད་
 བཅོས་ཏེ་བསོད་སྟོམས་བཞེས། ཡང་དག་པའི་ཉིང་འཛིན་གྱི་ཚུལ་ལ་སྟོབ་བར་བརྟུལ་
 ཞུགས་དང་དཀའ་སྤྱད་ཐུབ་མ་རྩོལ་ན་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་བ་དགོངས་ནས་བྱ་ཆོད་བྱང་པོ་རིའི་
 ཉེ་འགྲམ་བྱང་སྟོང་སྟོང་ངེས་ཀྱི་གནས་སུ་གཤེགས་ཏེ་བྱང་སྟོང་རྣམས་ཀྱི་དཀའ་སྤྱད་དེ་
 འདྲ་ཉིས་གྱུར་སྤྱད་པས་དགེ་སྟོང་ཆེན་མོ་ཞེས་གྲགས། དེའི་མཐར་ཐུག་གི་གཉེར་བྱ་མཐོ་
 རིས་ཅམ་ལས་མེད་པ་མཁྱེན་ནས་སྐྱེ་ཅལ་ཤེས་ཀྱི་བྱ་རིང་འཕྱར་སྟོབ་མ་སུམ་བཞུ་དང་
 བཅས་པའི་བསྟི་གནས་སུ་ཐེབས། ཅི་ཡང་མེད་པའི་སྐྱེ་མཆོད་ཀྱི་ལམ་བསྐྱབས་པས་དུས་
 བྱང་དུ་ཞིག་དུ་མཛོན་དུ་གྱུར་ཏེ་རིང་འཕྱར་གྱི་རྟོགས་པ་དང་མཉམ་བར་གྱུར་ཡང་ལམ་དེ་
 ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ངེས་པར་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་བ་དགོངས་ནས། དེ་བས་ལྷག་པ་ཞིག་

བཅའ་དགོས་སྐྱེ་མེད་ཀྱིས་རངས་བྱེད་ཀྱི་བྱ་ལྟ་སྤྱོད་རྒྱལ་པོའི་ཁབ་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་
 ཆེན་པོར་གནས་བཅས་ནས་སློབ་མའི་ཚོགས་བདུན་བརྒྱུ་ལ་འདུ་ཤེས་མེད་འདུ་ཤེས་མེད་
 མེད་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་སྐྱེ་མས་པར་འབྲུག་པའི་ལམ་ཞེས་བྱ་བ་སྤྱི་ཙམ་ཉིང་འཛིན་ཐོབ་
 བྱེད་ཀྱི་ལམ་བསྟན་ཞིང་ཡོད་པའི་སར་ཐེབས། ལྷག་སྤྱོད་ལས་འདུ་ཤེས་མེད་འདུ་ཤེས་
 མེད་མེད་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ཉིང་འཛིན་གྱི་གདམས་ངག་རྣམས་གསལ། དེ་ནས་བྱང་ཆུབ་
 སེམས་དཔའ་སྤྱོད་གཅིག་དུ་སོང་སྟེ་སྤྱི་ལོ་མོ་ཀྱང་བཅས་ནས་གདམས་ངག་རྣམས་ཀྱི་
 དོན་རྣམས་བསྟོམས་པས། སྤྱི་ལོ་བཅོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བྱང་པར་དང་། སྤྱི་
 ལེགས་པར་སྤྱོད་པའི་འབྲས་བྱ་དང་། ཉིང་འཛིན་ཐམས་ཅད་ལ་འདྲིས་པའི་བྱང་པར་གྱི་
 སྤྱོད་པས་ཀྱིས་ཡུན་རྒྱུ་དུ་ཞིག་དུ་ལྷག་སྤྱོད་ཀྱི་རྟོགས་པ་དང་མཉམ་པར་གྱུར་ཀྱང་ཉིང་འཛིན་
 ཀྱི་བྱང་པར་དེས་ཀྱང་ཡིད་འབྱུང་བར་མི་འབྱུར་བ་དང་། འདོད་ཆགས་དང་མི་
 གཤམ་བ་དང་། མངོན་པར་ཤེས་བ་ཐོབ་པར་མི་གྱུར་བ་དང་། རྟོགས་བྱང་དང་སྤྱང་འདས་
 ཐོབ་པར་གྱུར་བ་མ་ཡིན་པ་དགོངས་ནས་ལམ་དེ་ཉིད་སྤྱོད་སྤྱོད་སྤྱོད་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་གཡའི་ལྷ་
 རྟོགས་ཀྱི་རྒྱ་བོ་ནོར་རྒྱུན་འབྲུག་དུ་བྱོན་ཏེ་བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་ཤིང་གི་ལོག་དུ་བཞགས་ནས་
 ཟས་སྟོམ་བཅད་དེ་འདི་སྐྱེ་ལྷ་དུ་དགོངས་ཏེ། སྤྱོད་པས་མ་ལྷའི་དུས་འདིར་སེམས་ཅན་
 དམན་པར་མོས་པ། ལྷ་སྤྱོད་པས་ཅན་གྱི་སྤྱོད་པར་བ། ལྷ་བ་སྤྱོད་པས་དང་། ལྷ་བས་མ་ཡིན་
 བ་ལ་སྤྱོད་པས་སྤྱོད་པས་འཛིན་པ། དག་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་དག་པར་འཛིན་པ་སོགས་ཡང་དག་པའི་
 ལམ་ལ་འབྲིང་པར་བྱ་བའི་སྤྱོད་དང་། ལྷ་སྤྱོད་པས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་རྒྱགས་པ་གཞིལ་བ་དང་།
 བརྒྱལ་ཞུགས་ངན་པ་དང་། དཀའ་རྒྱུ་ངན་པ་དག་པར་འཛིན་པ་རྣམས་སྤྱོད་སྤྱོད་པའི་
 སྤྱོད་། བརྒྱལ་ཞུགས་དང་དཀའ་རྒྱུ་གྱི་བྱང་པར་བཅུ་པར་བྱའོ་དགོངས་ནས་བྱི་དོར་མ་
 གུས་པའི་ས་ཐ་མལ་བ་ལ་སྤྱི་ལོ་མོ་ཀྱང་བཅས་ཏེ་མཁའ་ཁབ་ཀྱི་ཉིང་འཛིན་ལ་སྤྱོད་པས་
 བར་ཞུགས་ཏེ། རིལ་འབྲུ་གཅིག་དང་། ལྷ་སྤྱོད་པས་ཅན་གཅིག་དང་། འབྲས་འབྲུ་གཅིག་
 གིས་ཡོ་རྒྱུ་དུ་དཀའ་སྤྱོད་མི་འདྲ་བ་བདུན་གྱི་སྤྱོད་པས་དཀའ་བ་སྤྱོད་།

དེ་ནས་དཀའ་ཐུབ་ཁོ་ནས་གྲོལ་བར་དཀའ་བ་གཟིགས་ནས་ཁ་ཟས་རགས་པ་
གསོལ་ཏེ་ལུས་ཀྱི་མཐུ་སྟོབས་ཅུང་ཟད་རྒྱས་པས་བྱང་ཆུབ་སྣིང་པོར་གཤེགས་པར་
དགོངས། ལེགས་སྦྱེས་མའི་བྱན་མོ་བྱུབ་མ་གྱི་བའི་རོ་གོས་རས་ཀྱིས་དགྲིས་པ་དེ་སྤངས་
ནས་བཀྲས་ཏེ་སྦྱས་སྦྱར་དུ་བས་པ་ཞིག་དང་། ལྷའི་བྱ་བྱི་མ་མེད་པས་ལྷའི་གོས་དུར་
སྦྱིག་གི་ཚོན་གྱིས་བཙོས་པ་ཕུལ་བས་བཞེས། བྱ་མོ་ལེགས་སྦྱེས་མས་ཕུལ་བའི་བ་སྟོང་གི་
འོ་མ་ལན་བདུན་དུ་ཉིང་ཁྱ་བྱས་པ་བཞེས་ནས་སྦྱ་སྟོབས་རྒྱས་ཞིང་། གསེར་མདངས་འདྲ་
བ་འོད་ཟེར་འཕྲོ་བའི་རང་བཞིན་ཅན་དུ་གྱུར་རོ།

དེ་ལྟར་རིང་འཕྲར་དང་ལྷག་སྟོང་གཉིས་སྟོབ་དཔོན་དུ་བསྟེན་པའི་རྩེས་སུ་ལོ་དྲུག་རིང་
དཀའ་བ་སྦྱད་དེ་ཉམས་ལེན་ལ་གནས་ཀྱང་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་གང་ཡང་མངོན་དུ་བྱེད་
མ་ཐུབ་ཀྱང་ཞི་ལྷག་གཉིས་ལས་ཞི་གནས་སྦྱབ་ཚུལ་གྱི་རིམ་པ་སྟོབ་དཔོན་དེ་གཉིས་ལ་
བསྟེན་ནས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནམ་སྙམ་མོ།

དེ་ནས་ལྷ་ནམས་ཀྱིས་བསྐུལ་བ་ལྟར་བཙོམ་ལྷན་འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་རྟོ་རྩེ་
གདན་དུ་གཤེགས། ལམ་གྱི་གཡས་སྟོགས་སུ་རྩ་འཛོེང་བ་བྱེད་བཀྲིས་ཀྱིས་རྩ་རྩ་བ་ལ་
བཙོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས།

བཀྲ་ཤིས་རྩ་དག་ངལ་སྦྱར་དུ་བྱིན།

དེ་རིང་ངལ་རྩས་ནི་དོན་ཆེན་གྱུར།

དཔྱང་དང་བཙས་པའི་བདུད་ནི་བཙོམ་ནས་སུ།

བྱང་ཆུབ་དམ་པ་ཞི་བ་རེག་པར་འགྱུར།

གང་གི་ཆེད་དུ་ངལ་ས་བསྐུལ་སྟོང་དུ།

སྒྲིན་དང་དུལ་དང་སྒྲོམ་དང་གཏོང་བྱས་དང་།
 ཚུལ་གྱིས་ས་བརྟལ་ཞུགས་དཀའ་ཐུབ་རབ་སྦྱད་པ།
 དེ་ནི་དེ་རིང་ལོས་ཐོབ་པར་འགྱུར།

ཞེས་སོགས་གསུངས་པས་ན་བཟ་ཤིས་ཀྱིས་སྒྲུར་བ་ཐོན་པོ་ཤིན་ཏུ་འཇམ་པ་
 རྣམས་ཕུལ། བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་དེ་བསྐྱམས་ནས་དོ་རྩེ་གདན་དུ་བྱོན། བྱང་ཆུབ་སྒྲོན་
 ཤིང་ལ་ལན་བདུན་དུ་བསྐྱོར་བ་བྱས་ནས། ལྷའི་ཅེ་མོ་རྣམས་ནང་དུ་བསྟན། ཅ་བ་ཕྱིར་
 བསྟན་པའི་སྤང་ཞལ་ཤར་བྱོགས་སུ་བསྟན་ཏེ་བཞུགས། ལུས་བྱངས་པོར་བསྐྱངས། དུན་པ་
 མཛོན་དུ་བཞག་སྟེ། ལྷ་ཆེར་པོལ་པའི་མདོ་ལས།²

སྒྲན་འདིར་བདག་གི་ལུས་ནི་སྐྱམས་ཀྱང་རུང་།
 བགས་པ་རུས་པ་ཤ་རྣམས་ཞིག་ཀྱང་རུང་།
 བསྐལ་མང་རྙེད་དཀའ་བྱང་ཆུབ་མ་ཐོབ་པར།
 སྒྲན་འདི་ལས་ནི་ལུས་བསྐྱོད་མི་བྱ་ལོ།
 ཞེས་ཡིད་ཀྱིས་དམ་བཅའ་བརྟན་པོ་བྱས་སོ།

དེ་ནས་བདུད་རྣམས་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་འཛང་རྒྱ་བར་འགྱུར་བ་སྐྱམ་ནས་
 བདུད་དམག་གྲེ་བ་དྲུང་ཕྱར་བཏང་སྟེ་ཐབས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཉིང་དེ་འཛིན་
 ལས་བསྐྱོག་ཐབས་བྱས་ཀྱང་ལྷགས་མ་རྙེད་ནས་བདུད་དབྱང་ཐམས་ཅད་བྱམས་པའི་ཉིང་
 དེ་འཛིན་གྱིས་བརྟལ་ཏེ་བདུད་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་ཏོ། །དེ་ནས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ས་
 ག་རྒྱ་པའི་ཆོས་བཅོ་ལྷའི་མཆན་མོར་བསམ་གཏན་བཞི་དང་། མཛོན་ཤེས་དུག་དང་། རིག་
 པ་གསུམ་བསྐྱེད་དེ་ནམ་གྱི་ཆ་སྦྱད་སྦྱ་རེངས་འཆར་ཁ་ཙམ་ན་རྟེན་འབྲེལ་ཡན་ལག་བརྩ་

2. Toh.95 ཐཱ་བཱ་ཐཱ་མདོ་ཐཱ་ “ཁ” ༡༧༩ན་༡

གཉིས་དང་བདེན་བཞིའི་གནས་ལུགས་མཐའ་དག་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་རྟོགས་ནས་མངོན་པར་
 རྟོགས་པ་སངས་རྒྱུས་སོ། །དེའི་སྐབས་ཤིང་ཏེ་ལ་བདུན་ཅུ་འཕགས་པ་དང་ས་ཆེན་
 བོ་རྣམ་པ་དྲུག་ཏུ་གཡོས་པ་དང་། རྟོགས་ཐམས་ཅད་འོད་གྱི་སྤང་བས་བྱུང་བར་བྱས་སོ། །

དེ་ལྟ་བུའི་ཉིང་པེ་འཛིན་གྱི་སྒྲོམ་ཚུལ་གྱི་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་ཁོང་དུ་ཆུད་པ་ན་
 སྤྱིས་རིས་མེད་ཀྱི་གདུལ་བྱ་རྣམས་ལ་མདོ་སྡེ་དགོངས་འབྲེལ་དང་། ཉིང་པེ་འཛིན་གྱི་
 ཚུལ་པོའི་མདོ་དང་། དཀོན་མཆོག་སྤྱིན་གྱི་མདོ་སོགས་བསྟན་པ་ན་ཤིང་རྟེན་ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་
 ཡབ་སྲས་དང་ཐོགས་མེད་སྐྱེ་མཆེད་སོགས་ཀྱིས་ཉམས་སུ་གླངས་པ་ལས་བརྒྱད་དེ་
 མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཛོམས་ཐུགས་སྲས་མདུ་བྱང་བ་སྒྲོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཀམ་ལ་སྤྱིལས་སྒྲོན་
 པའི་གསུང་བྲངས་སུ་བཀོད་དེ་ནང་པ་སངས་རྒྱུས་པའི་ལུགས་ཀྱི་ཉིང་པེ་འཛིན་བསྒྲོམ་
 ཚུལ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་རིམ་པའི་ཚུལ་གཏན་ལ་ཐབ་པ་བསྒྲོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་
 གསུམ་མཛད། དེ་ལ་འཕགས་བོད་ཀྱི་མཁས་གྲུབ་པལ་མོ་ཆེས་ཆེད་མར་བྱས་ཏེ་ནང་པའི་
 ཉིང་པེ་འཛིན་བསྒྲོམ་ཚུལ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་རྣམ་གཞག་གཞན་ལ་སྒྲོགས་པར་བྱས་པ་
 ལེམས་སོ། །

ཉིང་པེ་འཛིན་བསྒྲོམ་དགོས་པའི་གལ་གནད།

སྒྲོན་པས་དམ་ཆོས་ཇི་སྟེད་ཅིག་བསྐྱེལ་བ་རྣམས་སྐལ་ལྷན་གདུལ་བྱས་ཐོས་བསམ་
 སྒྲོམ་གསུམ་གྱི་སྒྲོ་ནས་ཉམས་སུ་གླངས་ཏེ་ཐར་བ་དང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་གོ་འཕང་
 དོན་དུ་གཉེར་བ་བྱས་ཀྱང་། ཉན་རང་གཉིས་རང་ཉིད་ཁོ་ན་གྲོལ་བ་དོན་དུ་གཉེར་བར་
 བརྩོན་ཞིང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་དུ་རྣམ་པ་
 ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་གོ་འཕང་དོན་དུ་གཉེར་བའི་ཆེད་འབད་ལ། དེས་ཐོག་མར་ས་ལམ་
 གྱི་རྣམ་གཞག་ཐབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དོན་ཐོས་བསམ་གྱིས་གཏན་ལ་ཐབ་ཏེ་
 རིམ་གྱིས་སྒྲོམ་པ་ལ་འཇུག་པར་བྱེད་དོ། །ཐོས་པ་དང་བསམ་པ་ལེགས་པར་སྦྱངས་ནས་

ཤེས་རབ་རྒྱས་ཀྱང་དོན་རྣམས་ཁ་ནང་དུ་སྤྱོད་པ་ཉམས་སུ་མི་སྤངས་ན།
 ཐོས་བསམ་རྒྱུ་བས་ཐར་བ་དང་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་གོ་འཕང་ཐོབ་ཐབས་བྲལ།
 དཔེར་ན་ལོ་འབྲས་ལེགས་ཀྱང་མ་སྤྱད་ན་ལྷོགས་པ་སེལ་བར་མི་འགྱུར་བས་བཟའ་བར་
 སྤྱོད་དགོས་པ་དང་། སྤན་དབྱེད་བསྐྱུག་པ་དང་བསམ་པ་དང་ནད་བརྟག་བར་མཁས་ཀྱང་
 སྤན་སྦྱར་མ་ཤེས་ན་ཟུག་རྩ་གཅོད་མི་ཐུབ་པ་བཞིན་ནོ། །དེ་བས་ན་ཐོས་པ་དང་བསམ་པ་
 ལེགས་པར་སྤངས་པའི་རྗེས་སུ་བསྐྱོམ་པ་ལ་ལེགས་པར་སྦྱོར་དགོས་པ་ཡིན་ཏེ་ཆོས་
 མངོན་པ་མཛོད་ལས།³

ཚུལ་གནས་ཐོས་དང་བསམ་ལྟན་བས།

བསྐྱོམ་པ་ལ་ནི་རབ་དུ་སྦྱོར།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། ཡང་དག་པའི་ཚུལ་བྲིམས་ལ་ལེགས་པར་གནས་པའི་རྗེས་
 སུ་ཐོས་པ་ལེགས་པར་སྤངས། ཐོས་ནས་བྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་སེམས་བར་བྱེད་དོ།
 བསམས་ནས་ཉིང་རེ་འཛིན་བསྐྱོམ་པ་ལ་རབ་དུ་སྦྱོར་དགོས་པ་རིམ་བཞིན་བསྟན་དོ།

དེ་དག་ལས་དང་པོ་ཐོས་པ་སྦྱོང་བ་གལ་ཆེ་སྟེ། ཐོས་པ་མ་སྤྱང་བར་བསྐྱོམ་པར་
 ཞུགས་ན་ཉོན་མོངས་པའི་འཆིང་བ་ལས་གྲོལ་བར་དགའ་སྟེ། རི་སྐད་དུ་སྦྱོབ་དཔོན་དབང་
 བོས་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་བསྐྱས་པ་ལས།⁴

ཐོས་ཉུང་དཔྱུས་ལོང་བསྐྱོམ་པའི་ཚུལ་མི་ཤེས།

དེ་མེད་དེས་ཀོ་ཅི་ཞིག་བསམ་པར་བྲ།

3. གནས། 6 རྒྱུ་ བ་ Toh.4089 གྲེ། བསྐྱུ་ མངོན་པ། “ཀྱ” ༡༤ བ ༧

4. Toh.3944 གྲེ། བསྐྱུ་ དབྱ་མ། “ཁི” ༢༣ ན ༢

དེ་བས་ཐོས་ལ་བརྩོན་བྱ་དེ་རྒྱ་ལས།

བསམས་བཞིན་བསྒྲུབས་པས་ཤེས་རབ་ཡངས་བ་འབྱུང་།

ཞེས་དང་མདོ་སྡེ་རྒྱན་ལས།

འདི་ན་དང་པོར་ཐོས་ལ་བརྩོན་ནས་ཡིད་ལ་བྱེད་བ་འབྱུང་།

རྒྱལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་ལས་ཡང་དག་དོན་ཡུལ་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཐོས་པའི་དོན་རྣམས་བསམ་འབྱུང་གི་སྒྲོལ་རྒྱལ་བཞིན་ཡིད་ལ་
བྱས་ཏེ་ཡང་དག་པའི་དོན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་བསྒྲུབས་པ་ལས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་
པའི་ཡེ་ཤེས་མངོན་དུ་འབྱུང་བ་བཤད་དོ། །གཞན་ཡང་ཇི་སྐད་དུ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་
ཀྱི་ལཱུ་ལས།⁵

ཤེས་རབ་རྒྱས་བྱེད་པ་ནི་ཐོས་བ་སྟེ།

བསམ་བ་དང་ནི་གཉིས་པོ་ཡོད་གྱུར་ན།

དེ་ནས་བསྒྲུབ་པ་ལ་ནི་སྦྱོར་བ་སྟེ།

དེ་ལས་དངོས་གྲུབ་སྒྲ་ན་མེད་བ་ཐོབ།

ཅེས་བས་ཐོས་བ་བསམ་ཏེ་བསྒྲུབས་པས་དངོས་གྲུབ་སྒྲ་མེད་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་
འཕང་ཐོབ་པ་གསུངས་སོ།

དེ་བས་ན་གང་ཉམས་སུ་སྤང་བུའི་ཚོས་རྣམས་ཚད་ལྡན་གྱི་སྒྲ་མ་དག་ལས་ཉན་
དགོས། ཐོས་དོན་རྣམས་ལུང་རིགས་གཉིས་ཀྱིས་རྒྱལ་བཞིན་བསམ་པའི་རྗེས་སུ་ངེས་བ་

5. Toh.4020 སྡེ། བཞུན། སེམས་ཅམ། “ཐི” २ བ ४

6. Toh.3924 སྡེ། བཞུན། དབྱ་མ། “ཀི” ८ བ ༩

རྟེན་ནས་ཡང་དང་ཡང་དུ་འདྲིས་ཕྱིར་བསྟོམ་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་ཐོས་བསམ་ལས་བྱུང་བའི་
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་རང་སྤྱིའི་མཆན་ཉིད་དང་། ཟབ་མཐོའི་ལྟ་བའི་གནད་ལ་སྟོ་
 འདོགས་ཆོད་ཅིང་ངེས་པ་རྟེན་པའི་དོན་དེ་ཉིད་སྟོམ་པས་རྒྱུད་ལ་སྟོར་ཞིང་ཉམས་སུ་བྱང་
 དགོས་ཀྱི། བསྟོམ་པ་དང་བྲལ་བའི་ཐོས་བསམ་རྒྱུད་པ་ཇི་ཙམ་ཟབ་ཀྱང་ཉོན་ཤེས་ཀྱི་སྒྲིབ་
 པ་ལས་གྲོལ་བ་མི་འགྱུར་ཏེ། སྟོམ་རིམ་དང་པོ་ལས།⁷ “སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་
 དག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་མཉམ་པར་བཞག་པ་ལ་གནས་པར་བྱས་ལ། ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པ་ལ་
 ཇི་འབད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་ཐོས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པར་
 བྱ་སྟེ། དེས་རེ་ཞིག་ལུང་གི་དོན་ཀུན་ཏུ་འཛིན་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་བསམ་པ་ལས་བྱུང་
 བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ངེས་པ་དང་བྲང་བའི་དོན་རྣམས་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་དེས་བྱེ་
 བྲག་བྱེད་པའི་དོན་ལ་བརྟེན་ནས་ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དོན་བསྟོམ་པར་བྱའོ། ཡང་དག་པ་མ་
 ཡིན་པ་དེ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་དུ་ཟེན་ན་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་བསྟོམས་ཤིང་ཐེ་ཆོས་ཡང་
 མ་བསལ་བས་ཡང་དག་པའི་ཤེས་པ་ཡང་འགྱུར་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་བསྟོམ་པ་དོན་
 མེད་པར་འགྱུར་བས་སུ་སྟེགས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོམ་པ་དང་འདྲའོ། །བཙུང་ལྟར་འདས་
 ཀྱིས་ཉིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་ལས།⁸

གཤམ་ཏེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་རྟོག།
 སོ་སོར་དེར་བརྟགས་གཤམ་ཏེ་བསྟོམ་པ་ནི།
 དེ་ཉིད་ཐུང་ན་འདས་ཐོབ་འབྲས་བྱའི་རྒྱ།
 རྒྱ་གཞན་གང་ཡིན་དེ་ནི་ཞི་མི་འགྱུར།

ཞེའོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་བསམས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རིགས་པ་དང་ལུང་གིས་བརྟགས་

7. Toh.3915 རྩེ། བཟུམ། དབྱ་མ། “ཀྱི” 24 ན 2

8. Toh.127 རྩེ། བཀའ། མདོ་རྩེ། “ད” 27ནལ

ལ་ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །ཡང་དག་པའི་དངོས་
 པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་ནི་དོན་དམ་པར་ན་སྟེ་བ་མེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། རིགས་པ་དང་ལུང་གིས་
 གཏན་ལ་དབབ་པོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། །ཡང་དེ་ཉིད་ལས།⁹ “དེ་ལྟར་བསམ་པའི་ཤེས་
 རབ་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དོན་བྱེ་བྲག་བྱེད་བར་བྱས་ལ་དེ་མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་
 བསྒྲུབས་པའི་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་དོ། །ཐོས་པ་ལ་སོགས་པ་ཅམ་གྱིས་དོན་མངོན་སུམ་དུ་མི་
 འགྱུར་རོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། ། ཇི་སྐད་དུ་ཉིང་ཇེ་འཛིན་རྒྱལ་བའི་མདོ་ལས།¹⁰

ཁྱོད་ལ་བསྟོ་ཞིང་ཁོང་དུ་རྒྱུད་བར་བྱ།

ཇི་ལྟར་མི་དག་མང་དུ་རྟོག་བྱེད་པ།

དེ་ལ་གནས་པའི་རྟོག་པ་དེ་དག་གིས།

དེ་བཞིན་དུ་ནི་དེ་ལ་སེམས་གཞོལ་འགྱུར།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་བསྒྲུབ་པ་ལ་རབ་དུ་
 འབྱུག་དགོས་པ་གསུངས་སོ། །

བསྒྲུབ་པ་ལ་སེམས་ལེཾ་བར་གཏད་ཕྱིར་ཐོག་མར་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་ལ་
 བསྐྱབས་ཏེ་ཞི་གནས་བསྐྱབ་པར་བྱ་དགོས་ཏེ། སེམས་ནི་རྒྱུད་བཞིན་དུ་གཡོ་བའི་རང་
 བཞིན་ཅན་ཡིན་པས་ཞི་གནས་ཀྱི་གཞི་མེད་བར་སེམས་གནས་པ་མེད་དོ། །དེའི་འོག་དུ་
 ལྷག་མཐོང་ལ་སྟོབ་དགོས་ཏེ། ཞི་གནས་འབའ་ཞིག་གིས་སྲིད་ཅ་གཅོད་མི་ཐུབ་པ་དང་།
 ལྷག་མཐོང་བསྒྲུབ་པས་སྲིད་ཅ་གཅོད་པར་བྱེད་དེ། །དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ་རྣམ་པ་
 ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་མངོན་སུམ་དུ་རྟོགས་པར་འགྱུར་རོ། ། ཇི་སྐད་དུ་སྟོབ་དཔོན་འཕགས་

9. Toh.3915 གླེ་བསྟན་པ་དབྱུག་པ། “ཀྱི” 30 བ 2

10. Toh.127 གླེ་བཀའ། མདོ་གླེ་“ད” 73 བ 2

པ་ལྷས་མཛད་པའི་སྤྱད་པ་བསྐྱས་པའི་སྤོན་མ་ལས།¹¹ “དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མི་ཤེས་པར་འཆང་
གྱི་བར་མི་འགྱུར་རོ། །ཞེས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་ཏེ།

བསྐྱལ་བ་བྱེ་བ་རྣམས་སུ་ཡང་།

དེ་ཉིད་བྲལ་ན་འགྲུབ་མི་འགྱུར་།

ཞེས་པ་ལྷར་དེ་ཁོ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བའི་རང་གི་མཆན་ཉིད་གསུང་རབ་ཀྱི་སྤོན་ནས་ཉན་
པར་འཆལ་ལོ། །གང་གི་སྤྱིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་དང་རྟོག་གེ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་དེ་ཁོ་ན་
ཉིད་ལ་གནས་ནས་རྣམ་པ་སྒྲ་ཆོགས་བས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོག་པར་བགྱིད་ན། དེ་རྣམས་བསྐྱ་
བར་བྱ་བའི་སྤྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་དག་པར་གང་ཡིན་པ་དང་། ཡང་དག་པ་ནི་
གང་མི་བསྐྱ་བ་དང་། མི་བསྐྱ་བ་ནི་ཤིན་ཏུ་ཡང་དག་པའི་ཚུལ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཉིང་
ངེ་འཛིན་དེའོ། །དེ་ནི་བདེན་པ་གཉིས་གཉིས་སུ་མེད་པའི་རྣམ་པའི་མཆན་ཉིད་ཅན་དེ་ནི་
ཡང་དག་པའི་ཚུལ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཉིང་ངེ་འཛིན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །
འཕགས་པ་ཡུལ་འཁོར་སྤྱིང་གིས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས།¹²

སྤྱང་པ་ཞི་བ་སྤྱེ་བ་མེད་པའི་ཚུལ།

མི་ཤེས་པས་ནི་འགྲོ་བ་འཁྲུམས་གྱུར་ཏེ།

ཐུགས་རྗེ་ཐབས་ཚུལ་རིགས་པ་བརྒྱ་དག་གིས།

དེ་དག་རྣམས་ནི་འཕྲོད་པར་མཛད་པ་ལགས།

ཅེས་པའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་མ་ཤེས་ན་སེམས་ཅན་འཁོར་བའི་
གནས་ལས་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར་བ་གཟིགས་ནས་སྤོན་པ་ཐུགས་རྗེ་ཅན་གྱིས་ཐབས་ཀྱི་

11. Toh.1803 རྩོམ་གྱི་སྤྱིང་གིས་ “ངེ” ལྷག་པ་ ༡༧ བ་ ༤, ༡༧ བ་ ༡

12. Toh.62 རྩོམ་གྱི་སྤྱིང་གིས་ “ང” ལྷག་པ་ ༢༧ བ་ ༢

ཚུལ་དང་རིགས་པའི་སྒོ་དུ་མས་དེ་ཁོང་དུ་རྒྱད་པར་འབད་དགོས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་
ཡང་ཐབས་ཤེས་བྱང་འབྲེལ་བསྒྲུབས་པའི་སྒོ་ནས་མངོན་པར་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་འགྲུར་བ་
ཡིན་ཏེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་བསྐྱས་པ་ལས།¹³

ཤེས་རབ་ཐོབ་པའི་ཚུལ་ལ་ཐབས་ཀྱི་མདོ།

བསམ་གཏན་དེ་དོན་ངེས་པའི་ཐོས་མང་བ།

ཡོན་ཏན་ཚོགས་སྒྱུ་ཤེས་རབ་སྒྲུང་བ་ནི།

གཉིས་པོ་དེ་ལས་གཙུབ་ཤིང་མེ་ལྷར་འབྱུང་།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་བྱི་མ་མེད་པར་གྲགས་
བས་བསྐྱར་བ་ལས།¹⁴ “ཐབས་ཀྱིས་མ་ཐེན་པའི་ཤེས་རབ་ནི་བཅིངས་པའོ། །ཐབས་
ཀྱིས་ཐེན་པའི་ཤེས་རབ་ནི་གྲོལ་བའོ།” ཞེས་དང་། འཕགས་པ་གཡུ་མགོ་རིའི་མདོ་
ལས།¹⁵ “བྱང་རྒྱལ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་ལམ་ནི་མདོར་བསྐྱས་ན་འདི་གཉིས་ཏེ། བྱང་
རྒྱལ་སེམས་དབང་དག་ལམ་འདི་གཉིས་དང་ལྷན་ན་སྦྱར་དུ་སྒྲུབ་པ་ཡང་དག་པར་
རྫོགས་པའི་བྱང་རྒྱལ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཆང་བྱའོ། །གཉིས་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ།
ཐབས་དང་ཤེས་རབ་བོ།” ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་ནོ།

མདོར་ན་བསྒྲུབ་པ་མ་སྦྱངས་ན་ངེས་ལེགས་ཀྱི་ཆ་གང་ཡང་མངོན་དུ་གྱུར་བ་མེད་
པས་བསྒྲུབ་པ་ལ་འཇུག་དགོས་པ་མེད་དུ་མི་རུང་བའོ། །དཔེར་ན་སྒྲིན་སེམས་རྒྱང་པས་
སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཐར་ཕྱིན་པ་སྦྱབ་པར་དཀའ་བས་ན་འཇུག་སེམས་ལ་དངོས་སུ་
ཞུགས་དགོས་པ་བསྐྱར་བ་དང་མཆུངས་སོ།

13. Toh.3944 རྟེན་གཞི་དཔྱད་པ་ “ཁི” 232 ན 2

14. Toh.176 རྟེན་གཞི་མདོ་སྟེ། “མ” 207 བ 7

15. Toh.109 རྟེན་གཞི་མདོ་སྟེ། “ཅ” 240 ན 7

ཉིང་འཛིན་ཐམས་ཅད་གང་དུ་བསྐྱུ་ཚུལ།

བསྐྱུ་ཚུལ་གྱི་ཉིང་འཛིན་འདི་ཉིང་གང་ཡིན་ཞེ་ན། ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་བསྐྱུ་ཚུལ་པའི་
 ཉིང་འཛིན་ལ་རྣམ་གྲངས་མཐའ་ཡས་པ་མཆིས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་བསྐྱུ་ན་ཞི་ལྷག་
 གཉིས་སུ་འདུ་སྟེ། རི་སྐད་དུ་དགོངས་འབྲེལ་ལས།¹⁶ “བྱམས་པ་ངས་ཉན་ཐོས་རྣམས་
 དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་དང་། དེ་བཞིན་གསུངས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཉིང་འཛིན་
 རྣམ་པ་དུ་མ་བསྐྱུ་ན་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་བསྐྱུ་པ་རིག་པར་བྱའོ།” །ཞེས་
 གསུངས་སོ། །སྐྱོམ་རིམ་བར་པ་ལས་ཀྱང་།¹⁷ “དེ་གཉིས་ཀྱིས་ཉིང་འཛིན་ཐམས་ཅད་
 བསྐྱུ་པའི་སྤྱི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ངས་པར་ཞི་གནས་
 དང་ལྷག་མཐོང་བསྟེན་པར་བྱ་སྟེ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཉིང་འཛིན་ཐམས་ཅད་ཞི་
 ལྷག་གཉིས་སུ་བསྐྱུ་པ་དང་། ཞི་ལྷག་གཉིས་པོ་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་
 ཀྱི་འབྲས་བྱ་ཡིན་ཏེ། དགོངས་འབྲེལ་ལས།¹⁸ “བྱམས་པས་ཡང་ཉན་ཐོས་རྣམས་
 ཀྱི་འཇམ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་འཇམ། དེ་བཞིན་གསུངས་པ་རྣམས་ཀྱི་དགེ་བའི་
 ཆོས་འཇིག་རྟེན་པ་དང་། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞི་གནས་དང་ལྷག་
 མཐོང་གི་འབྲས་བྱ་ཡིན་པར་རིག་པར་བྱའོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། །

ཉིང་འཛིན་གྱི་ངོ་བོ་འཇམ་དོན།

སྤྱི་རྣམས་ཉིང་འཛིན་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཡུལ་ངེས་ལཱ་ལྷའི་ཡ་གྲུལ་ཞིག་ཡིན། བསྐྱུ་ཚུལ་གྱི་
 ཆོས་སྤྱི་སྤྱི་མིང་ལྟ་བུའོ། །དེ་འོ་ངོ་བོ་འཇམ་དོན་འཇོག་ཚུལ་ལ་མཁས་པའི་བཞེད་ཚུལ་མང་

16. Toh.106 ཟླ། བཀའ། མདོ་ཟླ། “ཅ” ༣༧ བ ༡

17. ཐོག་གུངས་ ༩༡ ལྟ་རྒྱུ་མཐོ་སྐྱོབ་དཔེ་སྟུང་། ༡༩༩༧

18. Toh.106 ཟླ། བཀའ། མདོ་ཟླ། “ཅ” ༣༧ བ ༢

བས་འདིར་ཐམས་ཅད་འགོད་ཐབས་བྲལ་ཡང་། འགའ་ཞིག་མཚོན་དོན་དུ་བཀོད་ན། ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི། སེམས་དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་ཏུ་གནས་ཤིང་འཛིན་པ། དེ་ཡང་རྒྱན་ལྷན་དུ་གནས་པ་ལོ། ཆོས་མངོན་པ་མཛོད་ཀྱི་རང་འབྲེལ་དུ།¹⁹ “སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ” ཞེས་གསུངས་སོ།

སྒྲོབ་དཔོན་སྒྲོ་བརྟན་གྱི་སུམ་ཅུ་པའི་འབྲེལ་བར།²⁰ “ཏིང་ངེ་འཛིན་ནི་བརྟན་པའི་དངོས་པོ་ལ་སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། བརྟན་པའི་དངོས་པོ་ནི། ཡོན་ཏན་དུ་འཇམ་ངེས་པར་བརྟན་པར་བྱའོ། ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་ནི་དམིགས་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། སེམས་མཉམ་པར་གཞག་ན་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་དུ་ཤེས་པའི་རྟེན་བྱེད་པའི་ལས་ཅན་ནོ།”

ཞེས་གསུངས་པས་ན་ཡོན་ཏན་དང་སྒྲོན་ལ་ཅེ་གཅིག་ཏུ་བརྟན་པ་ཞིག་ལ་འདོད་དགོས་པ་སྣང་ངོ་། དེའི་གྲོགས་ལ་དུན་ཤེས་གཉིས་ཡོད་པའི་དང་པོ་དུན་པ་ནི་སེམས་ཅེ་གཅིག་པའི་དམིགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་མི་གཡེངས་པའི་ཐབས་བྱེད་པ་དང་། ཤེས་བཞིན་གྱིས་ནི་སེམས་གཡེང་མི་གཡེང་དང་འགྱུར་མི་འགྱུར་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ཤེས་པ་བྱས་པའོ།

ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབྱེ་བ།

ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ངོ་བོའི་སྒྲོ་ནས་དབྱེ་ན། འཇིག་རྟེན་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གཉིས་ཡོད། དང་པོ་ནི། སོ་སྒྲུའི་རྒྱུད་ཀྱི་ཞི་གནས་དང་། གཉིས་པ་ནི་འཕགས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་ཞི་གནས་ཤིག་ལ་ཟེར་རོ།

19. Toh.4090 གྲེ། བཞུན། མངོན་པ། “ཀྱ” ཅེ་བ་ལ་

20. Toh.4064 གྲེ། བཞུན། སེམས་ཅམ། “ཤི” ཏལ་ན་ཅ

ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྒྲུབ་པ་ཤད།

ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ལེགས་སྒྲུབ་སྤྲད་དོན་ནི་སུ་རྟེན་ཡིན་ལ། འདི་བད་སྤྲོད་ཀྱི་ལམ་ནས་
 ཆོག་དོན་རི་ལྟར་འབྲེལ་ཞེ་ན། སྤྲོད་སྒྲུབ་ཀྱི་ལམ་དེའི་སྤྲོད་ཀྱི་ཏིང་སྒྲུབ་སུ་རྟེན་དང་ཨང་སྒྲུབ་བ་ལ་
 རྟེན་གྱི་སྤྲོད་བས་སུ་རྟེན་ཞེས་པའི་ཆོག་གྲུབ། རྟེན་དོན་ནི་ཀུན་ནས་གཟུང་བའམ་འཛིན་བ་
 ལ་བཞེད་དོ། ཆོག་ཁོ་ནའི་དོན་ནི་ཡང་དག་པར་ཀུན་ནས་གཟུང་བའམ་འཛིན་བ་དང་།
 ཡང་ན་ཡང་དག་པར་ཀུན་ནས་ཅེ་གཅིག་ཏུ་ཡོངས་སུ་འཛིན་བ་ལ་བཞེད་དོ། ཡང་ན་
 གང་གིས་སུ་གང་ལ་ཡང་དག་པར་ཀུན་ཏུ་སེམས་འཛིན་པར་བྱེད་པས་ན་ཏིང་ངེ་འཛིན་
 ཞེས་སོ། དེས་ན་ཡང་དག་པར་ཀུན་ནས་སེམས་ཅེ་གཅིག་ཏུ་འཛིན་བ་ཞེས་པའི་ཆོག་དོན་
 བསྐྱུས་པས་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་པའི་ཆོག་གྲུབ་པ་སྤྲང་ངོ་།

ཞི་ལྷག་གཉིས་སོ་སོའི་དོན།

ཞི་གནས་ཀྱི་དོན་ནི། སེམས་སྤྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་རྣམ་པར་མི་གཡེང་བར་བྱན་ཤེས་
 བཞུན་པའི་སྒྲོ་ནས་རང་གི་ཡང་དག་པའི་དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་ཏུ་འཛོག་པའི་དགའ་བ་
 དང་ཤིན་སྤངས་ཀྱིས་ལེགས་པར་ཟིན་པའི་དགོ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞིག་ལ་འདོད་དགོས་པ་
 སྤྲང་ངོ། ཡང་ན་སེམས་དགོ་པའི་དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་ཏུ་རྣམ་པར་འཛོག་པའི་ཏིང་
 ངེ་འཛིན་ཞིག་ལ་འཛོག་གོ།

ལྷག་མཐོང་གི་དོན་ནི། ཞི་གནས་ཀྱི་རང་ནས་རང་གི་ཅེ་གཅིག་པའི་དམིགས་པ་ལ་སོ་
 སོར་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱེད་པ་བྱས་སྟོབས་ཀྱིས་བྱངས་པའི་ཤིན་སྤངས་ཀྱིས་
 ཟིན་པའི་ཆོས་རབ་ཏུ་རྣམ་འབྱེད་ཀྱི་ཤེས་རབ་ལ་ལྷག་མཐོང་ཞེས་བཞེད་དོ། ལྷོ་མ་རིན་
 བར་པ་ལས་ཀྱང་།²¹ “སྤྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་རྣམ་པར་གཡེངས་པ་ཞི་ནས་ནང་དུ་དམིགས་
 པ་ལ་རྟེན་དུ་རང་གི་རང་གིས་འཕྲུག་པ་ལ་དགའ་བ་དང་ཤིན་དུ་སྤངས་པ་དང་ལྷན་པའི་

སེམས་ཉིད་ལ་གནས་པ་ནི་ཞི་གནས་ཞེས་བྱའོ། ཞི་གནས་དེ་ཉིད་ལ་དམིཌ་པའི་ཚེ་དེ་ཁོ་
ན་ལ་རྣམ་པར་དབྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལྷག་མཐོང་ཞེས་བྱའོ། ཞེས་དང་། འཕགས་པ་
དགོན་མཆོག་སྤྱན་ལས།²² “ཞི་གནས་ནི་སེམས་ཙེ་གཅིག་པའོ། ལྷག་མཐོང་ནི་ཡང་དག་
པ་ཇི་ལྷ་བ་བཞིན་དུ་ཆོས་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། མདོ་སྡེ་དགོངས་
འགྲེལ་ལས།²³ “དེ་གཅིག་ཕྱ་དབེན་པར་འདུག་སྟེ། རང་དུ་ཡང་དག་བཞག་ནས་ཇི་ལྷ་ར་
ལེགས་པར་བསམས་པའི་ཆོས་དེ་དག་ཡིད་ལ་བྱེད་ཅིང་། སེམས་གང་གིས་ཡིད་ལ་བྱེད་
པའི་སེམས་དེ་རང་དུ་རྒྱན་ཆགས་སུ་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་ཡིད་ལ་བྱེད་དོ། ཉེ་ལྷར་བཞུགས་
ཤིང་དེ་ལ་ལན་མང་དུ་གནས་པ་དེ་ལ་ལུས་ཤིན་དུ་སྦྱངས་པ་དང་། སེམས་ཤིན་དུ་སྦྱངས་
པ་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཞི་གནས་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྷར་ན་བྱང་རྒྱུ་སེམས་དཔའ་ཞི་
གནས་ཡོངས་སུ་འཛོལ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། ལྷག་མཐོང་ནི་མདོ་
དེ་ཉིད་ལས།²⁴ “དེ་ལུས་ཤིན་དུ་སྦྱངས་པ་དང་། སེམས་ཤིན་དུ་སྦྱངས་པ་དེ་མོས་ནས་
དེ་ཉིད་ལ་གནས་ཏེ་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པ་སྤངས་ནས། ཇི་ལྷར་བསམས་པའི་ཆོས་དེ་དག་
ཉིད་རང་དུ་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་སྟོད་ཡུལ་གཟུགས་བརྒྱན་དུ་སོ་སོར་རྟོག་པར་བྱེད་མོས་པར་
བྱེད་དོ། ཉེ་ལྷར་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་སྟོད་ཡུལ་གཟུགས་བརྒྱན་དེ་དག་ལ་ཤེས་བྱའི་དོན་དེ་
རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་། རབ་དུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་། ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་དང་། ཡོངས་
སུ་དབྱེད་པ་དང་། བཟོད་པ་དང་། འདོད་པ་དང་། བྱེ་བྲག་འབྱེད་པ་དང་། ལྷ་བ་དང་རྟོག་པ་
གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལྷག་མཐོང་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྷར་ན་བྱང་རྒྱུ་སེམས་དཔའ་ལྷག་མཐོང་ལ་

21. Toh.3916 གྲེ། བསྐྱུ་མ། དབྱ་མ། “ཀྱི” ༧༩ བ ༦

22. Toh.231 གྲེ། བཀའ། མདོ་སྡེ། “མ” ༩༨ བ ༡

23. Toh.106 གྲེ། བཀའ། མདོ་སྡེ། “ཙ” ༩༩ བ ༡

24. Toh.106 གྲེ། བཀའ། མདོ་སྡེ། “ཙ” ༩༩ བ ༢

མཁས་པ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། །ཇི་བཅུན་བྱམས་མགོན་གྱིས་མཛད་བའི་མདོ་སྡེ་
གྱུན་ལས་ཀྱང་།²⁵

ཆོས་ཀྱི་མིང་ནི་བསྐྱེད་པ་ལའང་འདི།

ཞི་གནས་ལམ་དུ་ཤེས་པར་བྱ།

ལྷག་མཐོང་ལམ་ནི་དེའི་དོན་རྣམས།

རྣམ་པར་དཔྱད་པར་ཤེས་པར་བྱ།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་མིང་སྡེ་དངོས་པོ་རྣམས་སྟོགས་སུ་བསྐྱེད་པ་ཏེ་
ཅེ་གཅིག་དུ་ཡིད་ལ་བྱེད་དེ་སྒྲོམ་པ་ནི་ཞི་གནས་ཀྱི་ལམ་ཡིན་པ་ཤེས་པར་བྱ་ལ། ཆོས་དེ་
རྣམས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོ་རྣམ་རྣམ་པར་དཔྱད་དེ་སོ་སོར་འབྱེད་ནས་བརྟགས་པ་ལྷག་
མཐོང་གི་ལམ་དུ་ཤེས་པར་བྱ། ཞེས་གསུངས་སོ། །མདོར་ན། ཇི་ལྟ་བུ་དང་ཇི་སྟེད་བའི་
ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དོན་ལ་མ་དབྱེད་པར་དེ་ཉིད་ཅེ་གཅིག་དུ་སྒྲོམ་པ་ཞི་གནས་དང་། དེ་
གཉིས་ཆོས་རབ་དུ་རྣམ་འབྱེད་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་སོ་སོར་དབྱེད་དེ་སྒྲོམ་པ་ལྷག་མཐོང་དུ་
འདོད་པ་སྤང་ངོ་།

ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀ་བསྒྲོམ་དགོས་དོན།

ཞི་གནས་རྒྱུད་པ་སྒྲོམ་པས་ཐར་པ་ཐོབ་པ་མི་འགྱུར་ལ། ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་ལྷག་
མཐོང་རྒྱུད་པ་སྒྲོམ་པས་དམིགས་པ་བརྟན་པར་མི་འགྱུར་ངོ་། །དེ་བས་ན་ཞི་ལྷག་གཉིས་
ཀ་སྒྲོམ་དགོས། དཔེར་ན་མར་མེ་ཆེས་གསལ་བ་དང་རྒྱུད་གིས་མི་གཡོ་བ་གཉིས་ལྟར་བྱུང་
ན་གང་བཟོ་བུའི་གཟུགས་བརྟན་མཐོང་བདེ་བ་དང་གསལ་བར་མཐོང་བྱུང་བ་དང་། མར་

25. ཡེུ་ ༡༧ ཆོགས་བཅད་ ༤ Toh.4020 རྟེན་གྱི་སྐུ་མེས་ཙམ། “ཐི” ༡༩ན་ ༢

མེ་ཡོད་ཀྱང་མི་གསལ་བ་དང་རྒྱང་གིས་བསྐྱོད་པ་གཉིས་བྱུང་ན་མཐོང་མི་བདེ་བ་དང་གསལ་བ་མི་སྤང་བ་ལྟར་དེ་བཞིན་དུ་ཟབ་མོ་སྤྱོད་པ་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལ་ལྟ་བ་ན་འདུང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་གྱི་ཅི་མ་ལོག་བར་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་དང་སེམས་དམིགས་པ་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་དུ་གནས་པའི་མི་གཡོ་བ་གཉིས་དང་ལྷན་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་གསལ་བར་མཐོང་ཞིང་། སེམས་གཞན་དུ་མི་གཡོངས་པའི་ཞི་གནས་ཀྱི་ཉིང་པེ་འཛིན་ཡོད་ཀྱང་གནས་ལུགས་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་དང་མི་ལྷན་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་ལྟ་བའི་མིག་དང་བྲལ་བས་ཉིང་པེ་འཛིན་ལ་ཇི་ཅམ་གྱི་གོམས་འབྲིས་བྱས་ཀྱང་གནས་ལུགས་རྟོགས་པ་མི་སྲིད་བ་དང་། བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཁོང་དུ་རྒྱུད་པའི་ལྟ་བ་ཡོད་ཀྱང་སེམས་ཅེ་གཅིག་དུ་བརྟན་པར་གནས་པའི་ཞི་གནས་ཀྱི་ཉིང་པེ་འཛིན་མེད་ན། རང་དབང་མེད་པར་གཡོ་བའི་རྣམ་རྟོག་གི་རྒྱང་གིས་དཀྱུགས་པས་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་མཐོང་བ་མི་སྲིད་པས་ན་ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀ་བསྐྱོམ་དགོས་པ་གལ་ཆེའོ། སྤྱོད་རིམ་བར་བ་ལས་ཀྱང་།²⁶ “ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་ལྷག་མཐོང་འབའ་ཞིག་གིས་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའི་སེམས་ཡུལ་ལ་རྣམ་པར་གཡོང་བར་འགྱུར་གྱི། རྒྱང་གི་ནང་ན་འདུག་པའི་མར་མེ་བཞིན་དུ་བརྟན་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤང་བ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་འབྱུང་སྟེ། དེ་ལྟ་བུས་ན་གཉིས་ཀ་འདྲ་བར་བསྟེན་པར་བྱའོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་བས་ན་མདོ་ཆེན་པོ་སྤང་འདས་ལས་ཀྱང་། “ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱིས་ནི་དེ་བཞིན་གསེགས་པའི་རིགས་མ་མཐོང་སྟེ་ཉིང་པེ་འཛིན་ཤས་ཆེ་བའི་བྱིར་དང་ཤེས་རབ་རྒྱུད་པའི་བྱིར་རོ། །བྱང་རྒྱུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་མཐོང་མོད་གྱི། མི་གསལ་ཏེ་ཤེས་རབ་ཤས་ཆེ་བའི་བྱིར་དང་ཉིང་པེ་འཛིན་རྒྱུད་པའི་བྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་གསེགས་པས་ནི་ཐམས་ཅད་གཟིགས་ཏེ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་

26. ཤོག་གུངས་ 27 ལྟ་མཐོ་སྤྱོད་དཔེ་སྟུང་། 1992

མཐོང་མཚུངས་པར་ལྟན་པའི་བྱིར་རོ། ཁྱེས་བཀའ་སྒྲུལ་དོ།” ཁགན་ཡང་། ཉིང་འཛིན་
 རྒྱལ་པོའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།²⁷ “ཞི་གནས་སྟོབས་ཀྱིས་བསྐྱོད་པ་མེད་བྱུང་ཅིང་། ལྷག་
 མཐོང་གིས་ནི་རི་བོ་ལྷ་བྱུང་བྱུང་།” ཁྱེས་གསུངས་པ་ལྟར་རི་དབང་གྱི་རྒྱལ་པོ་དང་འདྲ་
 བའི་ཆོས་རབ་ཏུ་རྣམ་འབྱེད་གྱི་སོ་སོར་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་ལྷག་མཐོང་ལ་བདག་ཏུ་ལྟ་
 བ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་ངན་གྱི་པས་གྱི་ཚོལ་བས་སྒྲུལ་བར་མི་འགྱུར་བ་གསུངས་སོ། ཞི་ལྷག་
 གཉིས་གྱི་གོ་རིམ་ངེས་ཚུལ་ཡང་རྒྱལ་སྤྱི་ཆེན་པོ་ཞི་བ་ལྷས་སྐྱོད་འཇུག་ཏུ།²⁸

ཞི་གནས་རབ་ཏུ་ལྟན་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས།།

ཉོན་མོངས་རྣམ་པར་འཛོམས་པར་ཤེས་བྱས་ནས།།

ཐོག་མར་ཞི་གནས་བཅའ་བྱ་.....།།

ཁྱེས་པ་ལྟར་ཐོག་མར་ཞི་གནས་བསྐྱབས་ནས། དེའི་རྒྱུ་ཕྱེད་ལ་བརྟེན་ཏེ་ལྷག་
 མཐོང་བསྐྱོམ་དགོས་པ་ཡིན་ཏེ། ཞི་གནས་ནི་ཐབས་སམ་རྒྱུར་གསུངས་སོ། ཉན་ཐོས་གྱི་
 ས་ལས་ཀྱང་ཞི་གནས་ལ་བརྟེན་ནས་ལྷག་མཐོང་སྐྱོམ་དགོས་པ་གསུངས་པ་དང་། དབྱུ་མ་
 སྟོང་པོ་དང་སྐྱོད་འཇུག་དང་སྐྱོམ་རིམ་གསུམ་ལ་སོགས་པར་སྟོན་ཏུ་ཞི་གནས་བཅའ་ནས་
 ཕྱིས་ལྷག་མཐོང་སྐྱོམ་དགོས་པར་གསུངས་སོ། ཁགན་ཡང་བྱིན་དུག་གི་ལྷ་བ་བསམ་
 གཉན་དང་དུག་བ་ཤེས་རབ་གྱི་རིམ་པ་ཡང་ལྷག་པ་ཉིང་འཛིན་གྱི་བསྐྱབ་པ་ལ་བརྟེན་
 ནས་ལྷག་བ་ཤེས་རབ་གྱི་བསྐྱབ་པ་སྐྱོད་པའི་རིམ་བའང་སྟོན་ལ་ཞི་གནས་བསྐྱབས། དེ་
 ནས་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམ་དགོས་པ་བརྟེན་པའི་ཆེད་ཡིན་པར་སྒྲུང་ངོ་།

27. Toh.127 རྟེན་གཤམ། མདོ་རྟེན། “ད” 20 བ 5

28. Toh.3871 རྟེན་བསྐྱེད། དབྱུ་མ། “ལ” 22 བ 2

མདོར་ན་ཞི་གནས་སྒྲོན་ལ་བསྐྱབས་ནས་སྤྱིས་ལྷག་མཐོང་བསྒྲོམ་ན་སེམས་ཡང་ཡང་
གཡོ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོན་ལྷག་ནས་བདག་མེད་པའི་དོན་སྤྱི་རྟོགས་པ་གསལ་ཞིང་མུར་
དུ་རྟོགས་ཐུབ་པ་ལ་སོགས་པའི་དགེ་ཚན་བྱུང་བར་ཅན་མང་ངོ་॥

ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་བསྐྱན་པ།

ནལ་འབྱོར་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཐོག་མར་བདེ་ཞི་མུར་དུ་འབྱུང་བར་འདོད་པས་སྒྲོམ་རིམ་
དང་མདོ་རྒྱན་ནས་བཤད་པའི་རྒྱ་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་ལ་བརྟེན་བར་བྱ་དགོས། སྒྲོམ་
རིམ་ན་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་དུག་གསུངས་ཏེ་མཐུན་པའི་ཡུལ་ན་གནས་པ་དང་། འདོད་པ་
ཚུང་བ་དང་། ཚོག་ཤེས་པ་དང་། བྱ་བ་མང་པོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་དང་། ཚུལ་བྱིས་རྣམ་
པར་དག་པ་དང་། འདོད་པ་ལ་སོགས་པའི་གཡེང་བ་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཡོངས་སུ་
སྤངས་པ་རྣམས་སོ། །མདོ་སྡེ་རྒྱན་ལས་ཀྱང་།²⁹

སྒྲོ་ལྷན་གང་དུ་སྐྱབ་པའི་ཡུལ།

ལེགས་པར་རྟེན་དང་གནས་བཟང་དང་།

ས་བཟང་བ་དང་གྲོགས་བཟང་དང་།

ནལ་འབྱོར་བདེ་བའི་ཡོན་ཏན་ལྷན་།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་མཐུན་པའི་ཡུལ་ན་གནས་པའི་ཁོངས་སུ་ཟས་གོས་རྟེན་སྐྱ་
བས་ལེགས་པར་རྟེན་པ་དང་། ཚེས་རྒྱན་སོགས་ཀྱི་འཆོ་བ་མེད་པས་གནས་བཟང་བ་དང་།
ནད་མི་བསྐྱེད་པས་ས་བཟང་བ་དང་། ལྷ་སྦྱོད་མཐུན་པས་གྲོགས་བཟང་བ་དང་། སྐྱེ་བོའི་
འདུ་འཛི་དང་སྐྱའི་ཆར་མ་མེད་པས་བདེ་བའི་ཡོ་བྱུང་དང་ལྷན་པ་ཡིན་རྟོ། །གཉིས་པ་ཟས་

29. ལེའུ། ༡༩ Toh.4020 རྟེན་བསྐྱན། སེམས་ཅམ། “ཐི” ༡༧ བ ༧

དང་གོས་སོགས་ལ་འདོད་པ་རྒྱུད་བ་དང་། དེ་དག་ངན་དོན་ཙམ་གྱི་ཚོགས་ཤེས་བ་དང་། ཉོ་
 ཚོང་སོགས་ཀྱི་བྱ་བ་མང་པོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་བ་དང་། སོ་ཐར་དང་བྱང་སྤོམ་གཉིས་ཀ་ལ་
 ཉེས་ལུང་མེད་པའི་རྩལ་བྲིམས་རྣམ་པར་དག་བ་དང་། འདོད་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཆེ་འདིའི་
 གསོད་འཆིང་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་དམིགས་དང་ངན་འགྲོར་འགྲོ་བ་སོགས་ཆེ་ཕྱི་མའི་
 ཉེས་དམིགས་དང་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་འཛིག་པའི་ཆོས་ཙན་མི་རྟག་པ་ཡིན་བ་སོགས་
 ཡིད་ལ་བྱས་ཏེ་དེ་དག་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་བ་ཡོངས་སུ་སྤངས་བ་རྣམས་སོ། །དེ་ལྟ་བུའི་
 ཆོས་དྲུག་པོ་འདི་རྟིང་ངེ་འཛིན་ཡང་དག་པ་གསར་དུ་སྦྱོ་བ་དང་སྦྱེས་ཟིན་པ་མི་ཉམས་པ་
 དང་གོང་འཕེལ་དུ་གཏོང་བ་ལ་པན་ཐོགས་ཆེའོ། །དམིགས་བསལ་གྱི་རྩལ་བྲིམས་རྣམ་
 དག་དང་འདོད་བ་ལ་ཉེས་དམིགས་སུ་ལྟ་བ་དང་མཐུན་པའི་ཡུལ་ན་གནས་བ་རྣམས་གཙོ་
 ཆེ་བའོ། །ཞི་ལྷག་གི་རྟིང་ངེ་འཛིན་ཞེ་ཐག་བ་ནས་སྦྱོམ་པར་འདོད་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཞི་
 གནས་ཀྱི་ཡན་ལག་གམ་ཚོགས་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ས་ནས་གསུངས་པའི་ཆོས་བརྒྱ་གསུམ་པོ་
 ལ་འབད་དགོས་པ་གཤམ་ཆེའོ།

ཞི་གནས་བསྦྱོམ་རྩལ།

ལུས་ཀྱི་སྦྱོད་ལམ་ཇི་འདྲ་བས་སྦྱོམ་དགོས་པ་དང་། སེམས་ཀྱི་དམིགས་བ་གཏོད་
 པའི་རྩལ་གྱི་རིམ་བ་གཉིས་ལས།

དང་པོ། ལུས་ཀྱི་སྦྱོད་ལམ་ཇི་འདྲ་བས་སྦྱོམ་དགོས་པ།

ཞི་གནས་སྦྱོམ་པའི་ཐོག་མར་ལུས་ཀྱི་ཀུན་སྦྱོད་བཞག་རྩལ་ཤེས་དགོས་པ་གཤམ་ཆེ།
 དེ་མ་ཤེས་ན་དམིགས་བ་གསལ་བར་འཛིན་མི་ཐུབ་པོ། དེས་ན་སྦྱོམ་རིམ་བར་ཐ་གཉིས་
 ལས་“སྣན་ཤིན་ཏུ་འཇམ་ཞིང་བདེ་བ་ལ་ལུས་ཀྱི་ཀུན་སྦྱོད་ཆོས་བརྒྱད་དང་ལྟན་པར་
 བྱའོ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། “ཀླང་བ་སྦྱིལ་ཁྱང་ངམ་སྦྱེད་སྦྱིལ་ཁྱང་དུ་གནས་ནས།

མིག་སྒྲུབ་ཐུང་སྒྲ་ཅེར་གཏད། ལུས་བྱང་པོར་བསྐྱང་། ཐུག་པ་མཉམ། ལྷ་ལྷ་བའི་ཚད་དུ་
བཞག་ སོ་མཆུ་རང་ལུགས་སུ་ཐ་མལ་བར་བཞག་ ལྷེ་ནི་ཡ་སེའི་བྱང་དུ་སྦྲར། དབུགས་
ཚོལ་བ་བྲལ་བར་རང་ལུགས་སུ་བཏང་བར་བྲུ་ཞེས་སོགས་གསུངས་སོ། །ལུས་བྱང་པོར་
བསྐྱང་བ་ནི་སྦྲུགས་པ་དང་གཉིད་མི་འབྱུང་བའི་དོན་”དུ་གསུངས་པའོ།³⁰

གཉིས་པ། སེམས་ཀྱི་དམིགས་པ་ལ་གཏོད་ཚུལ་གྱི་རིམ་པ།

སེམས་ཀྱི་དམིགས་པ་ལ་གཏོད་པའི་སྒྲོན་དུ་བྱ་བ་དང་། དམིགས་པ་ལ་གཏོད་པའི་
དུས་སུ་བྱ་བ་དང་། སེམས་གང་ལ་གཏད་པའི་དམི་ཏེན་བསྒྲུལ་རིམ། དམིགས་པ་ལ་
གཏད་པའི་འོག་དུ་ཇི་ལྟར་བྱ་བ་བཅས་བཞི་ལས། དང་པོ་ནི། སེམས་ཀྱི་དམིགས་པ་ལ་
གཏོད་པའི་སྒྲོན་དུ་ཇི་ལྟར་བྱ་བའི་རིམ་པ་ནི། ཏིང་ངེ་འཛིན་བསྒྲུལ་པ་ལ་མི་སྒྲོ་བའི་རྒྱལ་མ་
འགལ་རྒྱན་གཅོ་བོ་ནི་དེའི་མི་མཐུན་སྦྱགས་ལ་དགའ་བའི་ལེ་ལོ་ཡིན་ལ། དེ་མི་འགོག་ན་
ཏིང་ངེ་འཛིན་སྒྲུལ་པ་ལ་སྒྲོ་བ་མི་འཕེལ་བ་དང་ལན་ཅིག་སྒྲུལ་སྐབ་ཀྱང་རྒྱན་འབྱུང་མི་
སྐབ་སྐྱེ་སྐྱར་དུ་ཉམས་པར་འགྱུར་བས་ན་ཐོག་མར་ལེ་ལོ་འགོག་དགོས། དེས་ན་ལུས་
སེམས་དགའ་བདེས་རྒྱས་པའི་ཤིན་སྦྱངས་ཐོབ་ན་ཉིན་མཆོན་ཀུན་དུ་དགའ་བ་ལ་སྦྱོར་བ་ལ་
སྒྲོ་དུ་བ་མི་འབྱུང་བས་ལེ་ལོ་ཐོག་གོ་ ཤིན་སྦྱངས་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་བཙོན་འགྲུས་རྒྱན་
ལྷན་དུ་ཚོམ་པ་ལས་བྱུང་བས་ན་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་དོན་གཉེར་གྱི་འདུན་པ་བྲག་པོ་ཞིག་རྒྱན་
ལྷན་དུ་དགོས། དེ་ལ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་མཐོང་བའི་སྒྲོ་ནས་དད་པ་བཟན་པོ་དགོས་
པས་ཐོག་མར་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་སེམས་པའི་དད་པ་ཡང་དང་ཡང་དུ་བསྒྲུལ་པར་
བྱའོ། །དབུས་མཐའ་རྣམ་འབྱེད་ལས་ཀྱང་།³¹

30. ཐོག་གུངས་ ༡༠༢ ལྷ་ཆ་མཐོ་སྒྲོབ་དཔེ་སྒྲན། ༡༩༩༧

31. Toh.4021 རྩོ། བསྐྱར། སེམས་ཅམ། “མི” ༩༣ ན ༩

གནས་དང་དེ་ལ་གནས་པ་དང་།

ཐཱ་དང་འབྲས་བུ་ཉིད་ཏུ་ལོ།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། དེ་ལ་གནས་ནི་འདུན་པ་སྟེ་རྩོམ་པའི་གནས་སོ། །གནས་པ་ནི་
རྩོམ་པའམ་བརྩོན་འགྲུས་སོ། །འདུན་པའི་རྩོམ་པ་ཡིན་ཏེ་ལ་ཡིད་ཆེས་པའི་དང་པ་ཡིན་པ་
དང་། རྩོམ་པའི་འབྲས་བུ་ནི་གིན་ཏུ་སྦྱངས་པ་ལོ།

གནིས་པ་ནི། དམིགས་པ་ལ་གཏོད་པའི་དུས་སུ་བའི་རིམ་པ་ལ། སྦྱར་དམིགས་
པ་ལ་སྦྱོར་དང་བྱེ་བྲག་གནིས་སུ་གནས་པ་ལས། དང་པོ་དམིགས་པ་སྦྱོར་ལ་བཞི་སྟེ། བྱེ་
པའི་དམིགས་པ་དང་། སྦྱད་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བའི་དམིགས་པ་དང་། མཁས་པའི་དམིགས་
པ་དང་། ཉེན་མོངས་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བའི་དམིགས་པ་ལོ།

དང་པོ་བྱེ་བྲག་པའི་དམིགས་པ་ལ་བཞི་ཡོད་དེ། མི་དཔྱོད་པར་སེམས་འཛོག་པ་སྟེ་རྣམ་
པར་རྟོག་པ་མེད་པའི་གཟུགས་བརྟན་དང་། དཔྱོད་པའི་དམིགས་པ་སྟེ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་
ཡོད་པའི་གཟུགས་བརྟན། འདི་ཅེས་དུ་ཟེད་ཀྱི་འདི་ལས་གཞན་པ་མེད་དོ་ཞེས་པའི་ཇི་
སྟེད་པའི་དངོས་པོའི་མཐའ་དང་། འདི་ཁོ་ན་ལྟར་གནས་ཀྱི་གཞན་དུ་མི་གནས་སོ་ཞེས་
པའི་ཇི་སྟེད་པའི་དངོས་པོའི་མཐའ་དང་། དེའི་དོན་ལ་བསྟོམས་པས་གནས་འགྱུར་ཐོབ་པ་ནི་
དགོས་པ་ཡོངས་སུ་བྱུང་བ་དང་བཞི་ལོ།

གནིས་པ་སྦྱད་པ་རྣམ་སྦྱོང་གི་དམིགས་པ་ལ་ནི། ཆེ་སྟོན་མར་ཉེན་མོངས་དུག་གསུམ་
དང་ང་རྒྱལ་དང་རྣམ་རྟོག་གསུམ་ཆེད་སྦྱད་པའི་གཉེན་པོར་རིམ་པ་བཞིན། འདོད་ཆགས་ལ་
མི་སྦྱག་པ་དང་། ཞེ་སྦྱང་ལ་བྱམས་པ་དང་། གནི་སྦྱག་པ་རྟོན་འབྲེལ་དང་། ང་རྒྱལ་ལ་
ཁམས་ཀྱི་རབ་དབྱེ་དང་། རྣམ་རྟོག་ལ་དབྱུགས་རྩལ་སྦྱོམ་པའི་དམིགས་པ་རྣམ་པ་ལྟ་
བཤད་དོ།

གསུམ་པ་མཁས་པའི་དམིགས་པ་ནི། སྤང་ཁམས་སྟེ་མཆེད་གསུམ་དང་རྟེན་འབྲེལ་
ཡན་ལག་བརྩ་གཉིས་དང་དགེ་བ་ལས་རྣམ་སྤྲིན་ཡིད་དྲུ་འོང་བ་འབྱུང་བ་གནས་དང་། མི་
དགེ་བ་ལས་རྣམ་སྤྲིན་ཡིད་དྲུ་མི་འོང་བ་འབྱུང་བ་གནས་མིན་ལ་མཁས་པ་སྟེ་ལྟོ།
དམིགས་པ་འདི་ལྟས་གཙོ་བོ་སྤངས་པ་སྟོག་པར་བྱེད་དོ།

བཞི་པ་ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་སྦྱང་བ་ནི། ཉོན་མོངས་ཀྱི་ས་བོན་ཉམས་སྦྱང་པར་བྱེད་
པ་ཙམ་དང་ས་བོན་ཅད་ནས་སྦྱང་བ་གཉིས་ལ་བཞིན། དང་པོའི་དམིགས་པ་ནི་འདོད་པའི་
ས་ནས་ཅི་ཡང་མེད་པའི་སྟེ་མཆེད་ཀྱི་བར་གྱི་ས་འོག་མའི་རགས་པ་དང་གོང་མའི་ཞི་བ་
ལ་བཞིན་པ་དང་། གཉིས་པའི་དམིགས་པ་ནི་བདེན་བཞིའི་སྟངས་གི་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པ་
བརྩ་བྱག་ལ་བཞིན་དོ།

གཉིས་པ་བྱེ་བྲག་སྒྲོམ་པའི་རིམ་པ་དངོས་ནི། ཐོག་མར་སེམས་གང་ལ་འཛིན་པའི་
གཞི་དམིགས་རྟེན་དྲུ་འཛེལ་བ་ན་མ་དག་པ་ཀ་བྱམ་མམ་དག་པ་སྟོན་པའི་བྲིས་སྐྱུའམ་
ལྷགས་མ་ལེགས་པ་ཞིག་བཅའ་ནས་ཡང་ཡང་བལྟ་ཞིང་དེའི་མཚན་མ་བཟུང་ནས་ཡིད་
ཡུལ་དྲུ་འཆར་བ་ལ་གོམས་སུ་གཞུག་ཡང་ན་སྒྲ་མ་དམ་པས་བརྟ་སྦྱད་པ་ལྟར་དང་པོ་
ཐོས་པའི་དོན་བསམ་ཞིང་ཡིད་ངོར་འཆར་དྲུ་ཚུགས་ལ་དམིགས་རྟེན་བཅའ། དམིགས་
རྟེན་དེ་ཡང་བྲིས་སྐྱུ་དང་ལྷགས་མ་སོགས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཁོ་ན་མི་བྱ་བར་སངས་རྒྱས་དངོས་
ཀྱི་རྣམ་པ་ཅན་དྲུ་འཆར་བ་ལ་བསྐྱབ་པོ། །དེ་བཞིན་གསེགས་པའི་སྐྱུ་ཇི་འདྲ་བ་ཞིག་ལ་
དམིགས་པའི་རྟེན་བྱེད་ཅེ་ན། སྒྲོམ་རིམ་ཐ་མ་ལས།³² “དེ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པས་ཐོག་མར་
དེ་བཞིན་གསེགས་པའི་སྐྱུ་གཟུགས་ཇི་ལྟར་མཐོང་བ་དང་ཇི་ལྟར་ཐོས་པ་ལ་སེམས་
གཏད་དེ་བཞག་ནས་ཞི་གནས་བསྐྱབ་པར་བྱ་སྟེ། དེ་བཞིན་གསེགས་པའི་སྐྱུ་གཟུགས་དེ་

ཡང་གསེར་བཙོམ་བཞིན་དུ་སེར་ལ། མཚན་དང་དཔེ་བྱད་བཟང་པོས་བརྒྱན་པ། འཁོར་
 གྱི་དགྱིལ་འཁོར་གྱི་ནང་ན་བཞགས་ཤིང་ཐབས་སྒྲ་ཚོགས་གྱིས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཛད་
 པ་རྒྱན་དུ་ཡིད་ལ་བྱེད་པས། དེའི་ཡོན་ཏན་ལ་འདོད་པ་བསྐྱེད་ཅིང་བྱིང་བ་དང་ཤོད་པ་
 ཞི་བར་བྱས་ལ། ཇི་སྲིད་དུ་དེ་མདུན་དུ་བཞགས་པ་བཞིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་གྱུར་
 པ་དེ་སྲིད་དུ་བསམ་གཏན་བྱའོ” །ཞེས་གསུངས་སོ། ཉིང་དེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་
 ལས་ཀྱང་།³³

སྐུ་ལྷས་དག་ནི་གསེར་གྱི་མདོག་འདྲ་བས།
 འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་ཀུན་ནས་རབ་དུ་མཛེས།
 དམིགས་པ་འདི་ལ་གང་གིས་སེམས་འཕྲག་པ།
 བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ནི་མཉམ་གཞག་ཡིན།

ཅེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་ལ་དམིགས་རྟེན་བྱ་དགོས་སོ།

ཁ་ཅིག་སྐུ་གཟུགས་མདུན་དུ་བཞག་པ་ལ་མིག་གིས་བཟུས་ནས་ཉར་སྒྲོམ་བྱེད་པ་ནི་
 ཐིན་དུ་མི་རིགས་ཏེ་སློབ་དཔོན་ཡི་ཤེས་སྡེས་ཉིང་དེ་འཛིན་དབང་ཤེས་ལ་མི་སྐྱབ་གྱི། ཡིད་
 ཤེས་ལ་སྐྱབ་པ་ཡིན་པས་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་དངོས་གྱི་དམིགས་པ་ནི་ཡིད་ཤེས་གྱི་དངོས་
 ཡུལ་ཡིན་པས་དེ་ལ་སེམས་གཟུང་དགོས་པའི་སྤྱིར་ཞེས་གསུངས་ཏེ་བཀག་གོ།

སྐུའི་ཆ་ལ་སྤྲ་རགས་གཉིས་ལས་ཀྱང་དང་པོ་རགས་པ་ལ་དམིགས་ནས་དེ་ལ་བརྟན་
 པ་ན་བྱིས་སྤྲ་བ་ལ་དམིགས་དགོས། དེ་ཡང་དམིགས་པ་འདྲ་མིན་མང་པོ་མི་སློབ་རབ་གཅིག་
 རང་སྒྲོམ་དགོས་གྱི། དམིགས་པ་མི་འདྲ་བ་མང་པོར་སློབ་ཞིན་གནས་ཏེ་ཉིང་དེ་འཛིན་

33. Toh.127 ཐཱ་བཱ་ཏི། བཀའ་མདོ་ཐཱ་བཱ་ཏི། “ད” ༡༢ བ ༥

བསྐྱོམས་ན་ཞི་གནས་འགྲུབ་པའི་གེགས་ཆེན་པོར་གྱུར་ཏེ་སློབ་དཔོན་དཔལ་ལོ་སྟོན།³⁴

དམིགས་པ་གཅིག་ལ་བརྟན་ཚུལ་དུ།

ཡིད་ཀྱི་བསམ་པ་བརྟན་བར་བྱ།

དམིགས་པ་མང་པོ་རྒྱད་པ་ལས།

ཡིད་ནི་ཉེན་མོངས་འབྱུག་པར་འགྱུར། ཞེས་དང་།

ལམ་སྟོན་ལས་ཀྱང་།³⁵

དམིགས་པ་གང་རུང་གཅིག་ལ་ཡང་།

ཡིད་ནི་དགོ་ལ་གཞག་པར་བྱ།

ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་སྟོར་བཞག་དགོས་པ་སྙམ་མོ།

གསུམ་པ་ནི། སེམས་གང་ལ་གཏད་པའི་དམིགས་རྟེན་བསྐྱོམ་རིམ། ཐོག་མར་
སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐུ་ལྟ་བུ་ཞིག་དམིགས་རྟེན་དུ་བྱེད་པ་ཡིན་ན་སྟོན་པའི་དབྱ་དང་ཐུག་
གཉིས་དང་སྐྱའི་ཁོག་གཞན་དང་ཞབས་གཉིས་རིམ་པ་བཞིན་དུ་ལན་འགའ་བྱང་གསལ་
གདབ། དེའི་མཐར་སྐྱའི་སྐྱེ་ཡིད་ལ་བྱས་པ་ན་ཡིད་ངོར་ཡན་ལག་རགས་པ་རྣམས་ཆ་བྱེད་
ཅམ་འཆར་ཐུབ་པ་བྱུང་ན། དེ་ཅམ་གྱིས་ཆོག་ཤེས་བྱས་ནས་དེ་ལ་སེམས་གཞུང་དགོས།
དམིགས་པ་ཆེར་མི་གསལ་ཡང་ཆ་བྱེད་ཅམ་སེམས་ལ་གཞུང་ཐུབ་ན་ཉིང་འཛིན་མུར་དུ་
རྟེན་ཅིང་། དེ་ནས་རིམ་གྱིས་གསལ་བ་ལ་བརྩོན་ན་གསལ་ཆ་བདེ་ལྷག་དུ་འགྲུབ་པའོ་
ཞེས་སློབ་དཔོན་ཡེ་ཤེས་སྡེས་བཞེད་པའོ།

34. བ་པོ་ལ་དུ་བྱིན་པ་བསྐྱས་པ། Toh.3944 གྲེ། བསྟན། དབྱ་མ། “ཁི” ༢༢༧ ར་༩

35. Toh.3947 གྲེ། བསྟན། དབྱ་མ། “ཁི” ༢༣༠ ར་༩

བཞི་བ་ནི། དམིགས་པ་ལ་གཏོད་པའི་འོག་ཏུ་ཇི་ལྟར་བྱ་བའི་རིམ་ལ། དམིགས་པ་
ལ་གཏོད་པའི་འོག་ཏུ་ཉེས་པ་ལྡེའི་ཡ་གྲུལ་བྱིང་གོད་གཉིས་བྱུང་བའི་དུས་སུ་དེའི་རྒྱ་
དབང་པོའི་སྒོ་མ་བསྐྱངས་པ་དང་། ཟས་གྱི་ཚོད་མ་ཟེན་པ་དང་། ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་སྟངས་ལ་མི་
ཉལ་བའི་སྒྲོར་བ་ལ་མི་བཙོན་བ་དང་། ཤེས་བཞིན་མ་ཡིན་པར་གནས་པ་རྣམས་བྱིང་གོད་
གཉིས་ཀའི་རྒྱ་ཐུན་མོང་བ་དང་། གཉིད་ཆེ་བ་དང་། སེམས་དམིགས་པ་འཛིན་པ་ལ་ཉ་
ཅང་ཐོད་པ་དང་། ཞི་ལྷག་ཆ་མ་མཉམ་པར་ཞི་གནས་བསྟེན་དུགས་པ་དང་། སེམས་ལྷན་
བ་ལྟར་འདུག་པ་དང་། དམིགས་པ་ལ་གཏོད་པར་མི་དགའ་བ་རྣམས་བྱིང་བའི་རྒྱ་དང་།
སེམས་དམིགས་པ་ལ་ཉ་ཅང་དམ་དུགས་པ་དང་། བཙོན་པ་ལ་གོམས་པར་མ་བྱས་པ་
དང་། ཉེ་དུ་ལ་རྟོག་པ་སོགས་ཀྱིས་སེམས་རྣམ་པར་གཡེངས་པ་རྣམས་གོད་པའི་རྒྱ་ཡིན་
པས་དེ་དག་ངོས་གཟུང་བར་བྱས་ནས་དེ་མི་འབྱུང་བའི་སྤྱིར་གཉེན་པོ་བསྟེན་ཚུལ་དང་།
བྱིང་གོད་བྲལ་བའི་དུས་སུ་ཇི་ལྟར་བྱ་ཚུལ་དང་། དེ་ལ་བརྟེན་ནས་སེམས་འཛིག་ལ། ལྷན་
དུ་འཛིག་ལ། སྒྲན་ཏེ་འཛིག་ལ། ཉེ་བར་འཛིག་ལ། དུལ་བར་བྱེད་ལ། ཞི་བར་བྱེད་ལ། རྣམ་
པར་ཞི་བར་བྱེད་ལ། ཅེ་གཅིག་ཏུ་བྱེད་ལ། མཉམ་པར་འཛིག་པ་སྟེ་སེམས་གནས་དགུ་སྟེ་
བའི་ཚུལ་དང་། དེ་དག་ཐོས་པ་དང་བསམ་པ་དང་བྲན་པ་དང་ཤེས་བཞིན་དང་། བཙོན་
འགྲུས་དང་། འདྲིས་པའི་སྒྲོ་བས་དུག་གིས་སྟེ་བའི་ཚུལ་དང་། བསྐྱེད་ཏེ་འཇུག་པ་དང་།
འཆད་ཅིང་འཇུག་པ་དང་། ཆད་པ་མེད་པར་འཇུག་པ་དང་། ཚོལ་བ་མེད་པར་འཇུག་པའི་
ཡིད་བྱེད་བཞིས་བསྐྱེད་ཚུལ་རྣམས་ལེགས་པར་ཤེས་པའི་སྒོ་ནས་དམིགས་ཡུལ་སྒོ་མ་བྱལ་
ན་བསྒོ་བྱའི་ཉིང་དེ་འཛིན་གང་ཡིན་པ་བདེ་སྒྲག་ཏུ་འགྱུར་བོ།

ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་མི་མཐུན་པའི་སྤྱོད་པ་འགོག་ཚུལ།

སྤྱིར་ཉིང་དེ་འཛིན་ལ་མི་མཐུན་པའི་སྤྱོད་པ་དུ་མ་མཆིས་མོད་ཀྱང་དེ་དག་ལས་ཉེས་
པ་ལྡེ་ལ་གཉེན་པོ་འདུ་བྱེད་བརྒྱུད་བསྟེན་ཚུལ་ཇི་ལྟར་ཡིན་ཞེ་ན། དང་པོ་ཉེས་པ་ལྡེ་ནི།

དབྱས་མཐའ་ལས།³⁶

ཉེས་པ་ལྡ་སྤྱོད་འདྲ་བརྒྱད།
 བསྟེན་པའི་རྒྱ་ལས་བྱང་བ་ལོ།
 ལེ་ལོ་དང་ནི་གདམས་ངག་རྣམས།
 བཟླ་དང་བྱིང་དང་ཚོད་པ་དང་།
 འདྲ་མི་བྱེད་དང་འདྲ་བྱེད་དེ།
 འདི་དག་ཉེས་པ་ལྡར་འདོད་དོ།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྡར་སྤྱོད་པའི་ཆེ་ན་ལེ་ལོའི་ཉེས་པ་ཡིན་ཏེ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་མི་སྤྱོད་
 བས་སོ། །དེ་ལ་འང་རིགས་གསུམ་སྟེ་གཉིད་སོགས་སྟོམས་ལས་དང་། བྱ་བ་ངན་པ་ལ་
 ཞེན་པ་དང་། སྦྱིད་ལྷག་པ་རྣམས་སོ། །ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་བརྩོན་པའི་ཆེ་གདམས་ངག་བཟླ་དང་
 བའི་ཉེས་པ་སྟེ་དམིགས་པ་བཟླ་དང་སེམས་མཉམ་པར་འཛོག་མི་རྩས་པས་སོ། །

མཉམ་པར་བཞག་པ་ལ་བྱིང་ཚོད་ཀྱི་ཉེས་པ་སྟེ་དེ་གཉིས་ཀྱི་སེམས་ལས་རུང་མེད་
 པར་བྱེད་དོ། །བྱིང་ཚོད་བྱང་པའི་ཆེ་མི་ཚོལ་བའམ་འདྲ་མི་བྱེད་བ་སྟེ་དེས་དེ་གཉིས་ཞི་བར་
 མི་བྱེད་པས་སོ། །བྱིང་ཚོད་དང་བྲལ་ཆེ་འདྲ་བྱེད་པ་སྟེ་དེས་བྟང་སྟོམས་ལ་མི་གནས་
 པས་སོ། །འདིར་བྱིང་ཚོད་གཉིས་གཅིག་ཏུ་བྱས་ན་ལྡ་དང་། སོ་སོར་བྱེ་ན་བྱག་ཏུ་འང་སྟོམ་
 རིམ་ལས་གསུངས་སོ། །

ཉེས་པ་ལྡའི་གཉེན་པོ་འདྲ་བྱེད་བརྒྱད་ནི་རི་སྐད་དུ། དབྱས་མཐའ་ལས།³⁷

གནས་དང་དེ་ལ་གནས་པ་དང་།

36. ལེའུ་ ར ཏེ་ Toh.4021 ཟླ། བསྟེན། སེམས་ཚམ། “ཡི” ར ༢ ༢

37. ལེའུ་ ར ཏེ་ Toh.4021 ཟླ། བསྟེན། སེམས་ཚམ། “ཡི” ར ༢ ༢

ཐུང་འབྲས་བྱ་ཉིད་ལོ།
 དམིགས་པ་བཟླ་པར་མ་གྱུར་དང་།
 བྱང་དང་ཚོད་པ་རྟོགས་པ་དང་།
 དེ་སྤྱང་མཛོན་པར་འདུ་བྱེད་དང་།
 ཞི་ཆེ་ནལ་དུ་འཕྱག་པ་ལོ།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་འདུན་པ་དང་ཚུལ་བ་དང་ཐུང་པ་དང་འབྲས་བྱ་དེས་བྱངས་
 པའི་ཐོན་དུ་སྦྱངས་པ་བཞིན་ཉེས་པ་དང་པོ་ལོ་ལོ་འགོག་པར་བྱེད་དོ། །བཟླ་པའི་གཉེན་
 པོ་གདམས་ངག་མི་བཟླ་པར་བྱེད་པའི་ཉིང་རེ་འཛིན་ཡིན། དེའང་བྱུང་པར་གསུམ་དང་
 ལྟན་པ་ལོ། བྱིང་ཚོད་བྱང་མ་བྱང་རྟོག་ཅིག་བྱང་ན་དམིགས་པ་ལྟ་སྦྱངས་སྦྱོང་ལམ་སོགས་
 གྱིས་སེལ་བའི་ཐབས་ལ་འབད་བ་དང་། བྱིང་ཚོད་ཀྱི་གཉེན་པོ་སོགས་འདུ་མི་བྱེད་པ་ལ་
 ཚུལ་སེམས་གྱིས་འདུ་བྱེད་པ་དང་བསམ་གཏན་ལ་སྦྱོན་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་འཕྱག་
 པའི་ཆེ་ཚུལ་བས་འདུ་བྱེད་ན་འདུ་མི་བྱེད་པའི་ལྟ་བར་བཏང་སྟོམས་ལ་བསྐྱབ་པར་བྱའོ།

ལྟག་མཐོང་བསྟོམ་ཚུལ།

ལྟག་མཐོང་བསྟོམ་པ་ལ། སྦྱོས་བྱ་དམ་པ་ལ་བརྟེན་པ་དང་། དེ་ལས་ཚོས་ཐོས་པ་
 བཅུལ་བ་དང་། ཚུལ་བཞིན་དུ་སེམས་པ་སྟེ་ལྟག་མཐོང་གི་རྒྱ་ཚོགས་གསུམ་སྟོམ་རིམ་བར་
 པར་ཇི་ལྟར་གསུངས་པ་ལྟར་བྱ་དགོས། དེ་ཡང་གསུང་རབ་ཀྱི་དགོངས་དོན་བྲིན་ཅི་མ་
 ལོག་པ་མཁྱེན་པའི་ཆད་ལྟན་མཁས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་དྲི་མ་མེད་པའི་གཞུང་ལུགས་ལ་
 ཐོས་བསམ་གྱི་སྟོན་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པའི་ལྟ་བ་སྦྱེད་པ་ནི། ལྟག་མཐོང་གི་རྒྱ་ཚོགས་
 མེད་དུ་མི་རུང་བ་ཡིན་ཏེ། ཡིན་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་བྱ་ཐག་ཆད་པའི་ལྟ་བ་མེད་ན་ཇི་ལྟ་བ་
 རྟོགས་པའི་ལྟག་མཐོང་གི་རྟོག་པ་སྦྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ།

དེ་འདྲ་བའི་ལྷ་བ་དེ་ཡང་དྲུག་དོན་ལ་མི་རྟོན་ངེས་དོན་ལ་རྟོན་པ་ཞིག་གིས་བཅའ་
 དགོས་པས་དྲུང་ངེས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཤེས་ནས་ངེས་དོན་དེ་ཁོ་ན་ནིང་ཀྱི་ལྷ་བ་གཏན་ལ་
 འབེབས་དགོས་སོ། དེ་ནིང་བསྐྱེམ་པ་ལ་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། ཇི་ལྷ་བ་ལ་དམིགས་པའི་
 ལྷག་མཐོང་བསྐྱེམ་ཚུལ་དང་། ཇི་སྟེང་པ་ལ་དམིགས་པའི་ལྷག་མཐོང་བསྐྱེམ་ཚུལ་གཉིས་
 སོ། ། འདི་གཉིས་ནི་དགོངས་འབྲེལ་ལས་གསུངས་པའི་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་། རབ་ཏུ་
 རྣམ་པར་འབྱེད་པ་གཉིས་ལ་ཟེར་རོ། དང་པོ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ནི། ཇི་སྟེང་པ་ལ་དམིགས་
 པ་སྟེ་ཕུང་པོ་ཁམས་སྟེ་མཆེད་གསུངས་སོ་སོར་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་། རབ་ཏུ་རྣམ་པར་
 འབྱེད་པ་ནི། ཇི་ལྷ་བ་ལ་དམིགས་པ་སྟེ་ཚོས་དང་གང་ཟག་གི་བདག་མེད་པ་གཉིས་
 རྟོགས་པ་ལ་བཟོད་དོ།

དེ་གཉིས་ལས་ཕྱི་མ་ཇི་ལྷ་བ་ལ་དམིགས་པའི་ལྷག་མཐོང་བསྐྱེམ་ཚུལ་ཇི་ལྷ་ར་ཡིན་
 ཞེ་ན། གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་ཕུ་ཐག་ཚོད་པའི་ལྷ་བ་མེད་ན་ལྷག་མཐོང་གི་རྟོགས་པ་སྟེ་
 བ་མི་སྲིད་པས་ན་ལྷ་བ་དེ་དྲུང་ངེས་ཀྱི་སྟོན་སྲུང་པར་འབྱེད་ཤེས་པར་བྱས་ནས་ངེས་
 དོན་གསུང་རབ་ཟེར་མའི་དོན་ཁོང་དུ་ཆུད་དགོས། དེ་ཡང་ཆོད་མར་འགྱུར་བའི་ཤིང་ཉི་
 སྟོལ་འབྱེད་རྣམ་གཉིས་ཀྱི་རིང་ལུགས་ལ་བརྟེན་ནས་ཟབ་མོ་སྟོང་པ་ནིང་རྟོགས་པའི་ལྷ་
 བ་བཅའ་བའི་ཇེས་སུ་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་རིག་པའི་རྣམ་གྲངས་མཐའ་ཡས་པའི་སྟོ་
 རས་བརྟགས་ཤིང་དཔྱོད་པར་བྱེད་པའི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ལེགས་པར་དབྱེད་
 རས་སྟོང་བའི་བདག་མེད་པའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ལྷག་མཐོང་སྟོམ་པ་ནི། ཇི་ལྷ་བ་ལ་དམིགས་
 པའི་ལྷག་མཐོང་བསྐྱེམ་ཚུལ་ཡིན་སོ།

ཇི་སྟེང་པ་ལ་དམིགས་པའི་ལྷག་མཐོང་བསྐྱེམ་ཚུལ་ནི། ཉོན་མོངས་མངོན་གྲུང་སྟོང་
 བའི་ཞི་རགས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་སྟོམ་པ་མ་ཟད། ཤེར་ཕྱིན་མན་ངག་ཏུ་བཤད་པ་ལྷ་ར་
 ཁམས་བཙུག་གི་མཚན་ནིང་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་སོགས་ཇི་སྟེང་པའི་དོན་རྣམས་རྣམ་

བར་ཕྱེ་ནས་སྒྲོམ་པའི་ལྷག་མཐོང་ནི་ཇི་སྟེད་པས་དམིགས་པའི་ལྷག་མཐོང་བསྒྲོམ་ཚུལ་
ཡིན་ནོ།

སྦྱར་ན་ལྷག་མཐོང་ལ་དགོངས་འབྲེལ་ནས་གསུངས་པ་ལྟར་ངོ་བོ་ནིད་བཞིའི་ལྷག་
མཐོང་དུ་བྲགས་པ་དང་སྒྲོ་གསུམ་གྱི་ལྷག་མཐོང་དང་འཆོལ་བ་དུག་གི་ལྷག་མཐོང་བཅས་
ཁག་གསུམ་ཙམ་མཆིས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་བསྟུ་ན་ཇི་ལྟ་བ་དང་ཇི་སྟེད་པ་ལ་དམིགས་
པའི་ལྷག་མཐོང་གཉིས་སུ་བསྟུས་སོ།

ཞི་ལྷག་ཟུང་དུ་འབྲེལ་ཚུལ།

ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཟུང་དུ་འབྲེལ་ཚུལ་ལ་གསུམ་སྟེ། ཟུང་འབྲེལ་ལ་སྟོབ་ཚུལ།
གང་གི་ཆོ་ཟུང་དུ་འབྲེལ་ཚུལ། ཟུང་དུ་འབྲེལ་བའི་མཐར་ཐུག་གི་འབྲས་བུ།

དང་པོ་ཞི་ལྷག་ཟུང་འབྲེལ་ལ་སྟོབ་ཚུལ་ནི། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཟུང་འབྲེལ་དུ་
སྟོབ་ཚུལ་ལ་དབྱེ་མ་པའི་སྟོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་སོ་སོའི་བཞེད་པ་ཐ་དད་པས་སྟེད་
ཚུལ་ཐ་དད་པར་བཤད་ཀྱང་བསྟེད་བྱ་ཞི་ལྷག་ཟུང་དུ་འབྲེལ་པར་མཐུན་ནོ། ཉེ་ཡང་དང་པོ་
སྟོབ་དཔོན་ལེགས་ལྷན་འབྲེད་ཀྱི་དགོངས་ཚུལ་ལྟར་ན་མི་སྦྱག་པ་དང་བུམས་པ་ལ་སོགས་
བར་དམིགས་པའི་ཞི་གནས་བསྟེད་ནས་དེའི་འོག་དུ་རིག་པས་རྣམ་པར་དབྱེད་པའི་མཐུ་
ལས་བྱུང་བའི་ལྷག་མཐོང་བསྟེད་པར་བཤད། སྟོབ་དཔོན་ཞི་བ་ལྷས་ཐོག་མར་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་
སེམས་སྟོམ་པའི་ཞི་གནས་བསྟེད་ནས་དེའི་འོག་དུ་སྟོང་བ་ནིད་ལ་དམིགས་པའི་ལྷག་
མཐོང་གི་ཤེས་པ་བསྟེད་པར་བཤད། སྟོབ་དཔོན་ཀམལ་གྱི་ལས་སྟོམ་རིམ་བར་བར་དང་པོར་
བྱབ་པའི་སྦྱུ་ལ་སོགས་པ་ལ་དམིགས་པའི་ཞི་གནས་བསྟེད་ནས་ཞི་གནས་ཀྱི་དམིགས་པ་
དེ་ནིད་ཀྱི་རང་བཞིན་རྣམ་པར་དབྱེད་པའི་སྒོ་ནས་ལྷག་མཐོང་སྦྱབ་པ་གསུངས། སྟོབ་དཔོན་
ལྷ་བ་བྲགས་པས་དེ་ཁོ་ན་ནིད་དཔྱོད་པའི་ལྟ་བ་ལ་བརྟེན་ནས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་

ལྷོ་བ་པར་མཛད་དོ། །དེ་ནམས་ཀྱི་དགོངས་ཚུལ་མ་ནོར་ཞིང་ནམ་པར་དག་པ་ཡིན་ནོ།

གཉིས་པ་གང་གི་ཚེ་བྱང་དུ་འཇུག་པ།

ཞི་ལྷག་གཉིས་གང་གི་ཚེ་བྱང་དུ་འཇུག་ཅེ་ན། དེ་ལ་བཤད་ཚུལ་ཁག་འགའ་ཤས་གནས་པ་ལས་ཡོངས་སུ་བསྟོམས་ཏེ་བཛྲོད་ན་གཉིས་ཏེ། དང་པོ་བྱང་ཆུབ་ལམ་རིམ་འབྲིང་བ་ལྟར་ན།³⁸ “སྟོམ་བྱུང་གི་རྟོགས་པ་ཐོབ་པའི་རྗེས་སུ་ཞི་གནས་ལ་བརྟེན་ནས་དབྱེད་སྟོམ་བྱས་པའི་མཐུས་རིམ་ལ་དམིགས་པའི་ཆོས་རབ་ཏུ་ནམ་འབྲེད་ཀྱི་ལྷག་མཐོང་དང་། རི་ལྷ་བ་ལ་ཅེ་གཅིག་ཏུ་བརྟེན་པར་གནས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཞི་གནས་གཉིས་མཚུངས་ལྟར་དུ་འཇུག་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་ཞི་ལྷག་གཉིས་འདྲེས་པ་སྟེ་མཉམ་པར་འཇུག་པ་སྟེ་བྱང་དུ་འབྲེལ་བ་ཡིན་ནོ།” །རི་སྐད་དུ། ཉན་ཐོས་ཀྱི་ས་ལས།³⁹ “དེ་ལ་རི་ཅམ་གྱིས་ན་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་འདྲེས་པར་གྱུར་ཅིང་མཉམ་པར་བྱང་དུ་འཇུག་པ་དང་། གང་གིས་ན་བྱང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་ཞེས་བྱ་ཞེ་ན། སྟུས་པ། སེམས་གནས་པ་ནམ་པ་དག་པོ་དག་ལ། འདི་ལྷ་སྟེ། མཉམ་པར་གཞག་པའི་ནམ་པ་དག་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིང་དེ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་དེ་ལ་བརྟེན་ནས་ལྷག་པའི་ཤེས་རབ་ཆོས་ནམ་པར་འབྲེད་པ་ལ་རབ་ཏུ་བརྩོན་པར་བྱེད་དོ། །དེའི་ཚེ་ནི་ཆོས་ནམ་པར་འབྲེད་པ་དེའི་ལམ་རང་གི་རང་གིས་འཇུག་པ་དང་ཚོལ་བ་མེད་པར་འཇུག་པར་འགྱུར་ཞིང་། ཞི་གནས་ཀྱི་ལམ་རིམ་ལ་བཞིན་དུ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པས། ལྷག་མཐོང་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་། ཡོངས་སུ་བྱང་བ་དང་། ཞི་གནས་ཀྱི་རྗེས་སུ་སོང་བ་དང་། ཉམས་བདེ་བས་ཡོངས་སུ་ཟེན་པར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེའི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གཉིས་

38. རི་ཚོང་ཁ་པའི་གསུང་འབུམ། “རི” ཤོག་གངས་ 320 མཚོ་སྔོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐུམ། 1982

39. Toh.4036 རྟེན་པསྟན། སེམས་ཅམ། “རི” 1982 བ ༧

འདྲེས་པར་གྱུར་ཅིང་མཉམ་པར་བྱུང་དུ་འབྱུག་པ་དང་། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བྱུང་དུ་
འབྲེལ་བར་འབྱུག་པའི་ལམ་ཞེས་བྱའོ།” སྒྲོམ་རིམ་ཐ་མ་ལས་ཀྱང་།⁴⁰ “ཅི་སྟེ་གང་གི་ཆེ་
བྱིང་བ་དང་མོད་པ་ལས་དབེན་པའི་ཕྱིར་མཉམ་པར་བཞུགས་ཤིང་རང་གི་རང་གིས་འབྱུག་
པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཆེ་ཚོལ་བ་སྟོད་པས་བཏང་
སྟོམས་སུ་བྱས་ཏེ། དེའི་ཆེ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བྱུང་དུ་འབྲེལ་བའི་ལམ་གྱུ་བ་པ་ཡིན་
པར་རིག་པར་བྱའོ།” ཞེས་དང་། ཤེར་ཕྱིན་མན་ངག་ལས་ཀྱང་།⁴¹ “དེའི་རྗེས་ལ་ཉིང་རེ་
འཛིན་གྱི་སྦྱང་ཡུལ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་དེ་ཉིད་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་གཞུགས་
བརྟན་དང་། དེ་ལ་དམིགས་པའི་སེམས་དེ་ཉིད་བར་མེད་ཅིང་། བར་ཆད་མེད་པར་ཡིད་ལ་
བྱེད་པའི་རྒྱུ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་དེ་དག་ཉིད་བྱུང་དུ་འབྲེལ་བར་འབྱུག་པའི་ལམ་
སྟེ།” ཞེས་གསུངས་སོ།།

གཉིས་པ་འཇམ་མཐོན་ཀོང་སྤུལ་ཞབས་ཀྱི་དགོངས་ཚུལ་ལྟར་ནི་ལྷག་བྱུང་འབྲེལ་གྱི་
མཆམས་ནི། ཇི་སྐད་དུ་ཤེས་བྱ་ཀུན་བྱུང་མཛོད་ལས་།⁴² “ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་
གཉིས་གང་གི་ཆེ་བྱུང་དུ་འབྱུག་པ་ཡིན་ཞེ་ན། མཆན་མ་དང་བཅས་པའི་ཞི་གནས་དང་
ལྷག་མཐོང་སྒྲོམ་པའི་ཆེ་ཞི་གནས་གཞུགས་བརྟན་ལ་དམིགས་པའི་སེམས་རྟོག་མེད་ཆོས་
རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྲེད་པའི་ལྷག་མཐོང་རྟོགས་པ་གཉིས་ཀ་རང་གི་རང་གིས་མཉམ་ཏུ་
འབྱུག་པ་ནི་དེ་ཉིད་ཀྱི་བྱུང་འབྱུག་ཡིན་ལ། འདིར་ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཞི་གནས་དང་
རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ལྷག་མཐོང་གཉིས་རྣམ་ཐོབ་པ་ན། དེ་གཉིས་ངོ་བོ་གཅིག་ཏུ་གནས་

40. Toh.3917 གྲེ་བཞུན། དབྱ་མ། “གི” reབ ༡

41. Toh.4078 གྲེ་བཞུན། སེམས་ཅམ། “ཉི” ༡༣༣ བ ༣

42. སྐད་ཆ། ཤོག་གུངས་ ༡༣༣ མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུན། ༡༩༤༧

པས་བྱང་དུ་འཇུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ། སྒོ་མ་རིམ་དང་པོ་ལས།⁴³ “གང་གི་ཆེ་ཆོས་
ཐམས་ཅད་དོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་དམིགས་པ་ལ་བྱིང་བ་དང་ཤོད་པ་ལ་སོགས་པ་དང་བྲལ་
ཞིང་། མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་ཤེས་པ་འཇུག་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཁྲི་གནས་དང་
ལྷག་མཐོང་བྱང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལས་ཚོགས་པ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་གསུངས་སོ།

བཞི་པ་ནི་ལྷག་བྱང་འབྲེལ་གྱི་འབྲས་བྱ།

ནི་ལྷག་བྱང་འབྲེལ་གྱི་ཉིང་འཛིན་ནི་ཡང་དག་པའི་ཉིང་འཛིན་ཡིན་ཏེ། སྒོ་བ་
དཔོན་གཉིས་སུ་མེད་པའི་དོ་རྗེས་མཛོད་པའི་ལྷ་བ་ངན་སེལ་ཞེས་བྱ་བ་ལས།⁴⁴ “ཉིང་འཛིན་
ལ་ལེགས་མཉམ་འཛོག་ །ཀུན་དུ་མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ཡིས། བཀའ་པས་ཚོགས་
པའི་བྱང་ཆུབ་བསྐྱབ།” ཞེས་གསུངས་པས་ནི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བྱང་དུ་འབྲེལ་བར་
འཇུག་པའི་ལས་ནི་ཉིང་འཛིན་ལ་ལེགས་པར་མཉམ་པར་འཛོག་པ་ཡིན། དེ་ཉིད་མཐར་ཐུན་
པ་ལས་སྤྲིང་ཞིའི་འཆིང་བ་ལས་གྲོལ་བའི་ཚོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏེ།
དགོངས་འབྲེལ་ལས།⁴⁵

སྒྲེ་བ་པོ་ཡིས་ལྷག་མཐོང་དང་།

ནི་གནས་པོ་མས་པར་བྱས་ནས་ནི།

གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཆིང་བ་དང་།

མཆོན་མའི་འཆིང་ལས་རྣམ་གྲོལ་འགྱུར།

43. Toh.3915 རྩེ། བཟུན། དབྱ་མ། “ཀྱི” ༣༧ བ ༩

44. Toh.2231 རྩེ། རྒྱུད་འབྲེལ། “མི” ༩ བ ༢

45. Toh.106 རྩེ། བཀའ། མདོ་རྩེ། “ཅ” ༩ བ ༢

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཆིང་བ་དང་མཚན་མའི་འཆིང་བ་མཐའ་
དག་ལས་གྲོལ་བར་འགྱུར་བ་གསུངས་སོ།།

གཞུང་ཚན་དང་པོའི་མཛད་པ་པོ་སྟོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོའི་རྣམ་ཐར།

སྦྱར་སྟོབ་དཔོན་སྟོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོའི་རྣམ་པར་ཐར་པར་ཡོངས་སུ་རྫོགས་
པ་ནི་རྒྱ་བོད་ཀྱི་ཆོས་འབྱུང་འགར་ཡང་མི་གསལ་ནའང་། རྣམ་ཐར་གྱི་ཆ་ཤས་ཙམ་རྟེན་
པ་དང་ཞར་དུ་འཁོད་པ་ཁག་ལས་ཅུང་ཟད་བདུས་ཏེ་བཟོད་པར་བྱ་སྟེ། དེའང་སྟོབ་དཔོན་
འདི་ནི་མདོ་ཡུགས་གཉིས་ཀར་མཁས་པར་བྲགས་པ་ཞིག་སྟེ། ཁོང་ནི་བོད་ལ་དེ་ཙམ་གྱི་
བྲགས་ཆེ་བ་མ་ཡིན་ཀྱང་བོད་དུ་བསྟན་པ་ཕྱི་དར་གྱི་སྐབས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་
བསྟེན་ལྟར་བྱུང་བ་རྣམས་དག་ཐེར་མཛད་པ་དང་། སྤར་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་ཡང་དག་པ་སྤ་
བརྟན་འཆུགས་པར་བཀྲིན་གྱིན་དུ་ཆེ་བའི་བཀའ་གདམས་པའི་སྟོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཐོ་ཐོ་ཐོ་
དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཀྱིས་ཡུགས་དང་པ་རོལ་དུ་སྦྱིན་པ་གང་ནས་གསན་པའི་རྟག་དུ་
བསྟེན་པའི་བླ་མ་བཞིའི་ཡ་གྲུལ་ཞིག་ཡིན། བཀའ་གདམས་པ་ཆོས་སྤུངས་ཡུགས་དང་
པར་སྦྱིན་གསན་པའི་བླ་མ་བརྒྱད་གསལ་ཏེ། ཇི་སྟན་དུ་བཀའ་གདམས་པ་ཆོས་ལས།⁴⁶

འགྲོ་མགོན་ཐུ་སྦྱུབ་ཉིད་དང་འཕགས་པ་ལྟ།

མ་ནི་ཙུ་ཏེ་ལོ་ཡོ་གི་བ།

ཙུ་ཏེ་པ་ལ་མཐུ་སྟེ་བྱ་བ།

པོ་རྟེ་བྱ་བ་སྟེ་མ་སྟེ་བ།

ཡུགས་དང་པ་རོལ་སྦྱིན་པ་སྦྱིན་མཛད་པའི།

དྲིན་ཅན་བླ་མ་བརྒྱད་ལ་བྲག་འཆལ་ལོ།

46. བཀའ་གདམས་པ་ཆོས། ཤོག་ 51, 52, 522 མཚོ་སྦྱོན་མི་རིགས་དཔེ་སྟླ། 1980

ཞེས་གསལ་བ་དང་། སློབ་དཔོན་འདི་ནི་ཁ་ཆེ་ཡུལ་དུ་དུས་རབས་བརྒྱ་པའི་ནང་བྱོན།
 སྤྱིས་རྒྱལ་རྒྱ་ལ་ཕེབས། དུས་ཞབས་བ་ཆེ་བ་དང་། རྒྱ་རོ་པའི་སློབ་མའི་ཚུལ་དུ་ཞུགས།
 རྒྱལ་རྒྱའི་ཆོས་གཞི་མཛད་ཅིང་རྒྱལ་རྒྱ་བ་ཞེས་པའི་མཚན་ཀྱང་སྟགས། རྗེ་ཙོང་ཁ་བ་ཆེན་པོ་
 ལ་སོགས་པས་ཀྱང་གནས་བརྟན་བྱང་བཟང་ཞེས་རྟེན་དགེ་སྦྱང་ཡིན་ལ་སྤྱིས་རྒྱལ་རྒྱའི་
 གཙུག་ལག་ཁང་གི་གནས་གཞི་མཛད་ཅིང་། རྗེ་བོའི་སྤྱོད་མ་ཡིན་པ་སོགས་ཞལ་གྱིས་
 བཞེད། བོད་ན་དེ་ཙམ་གྲགས་ཆེ་བ་མེད། གནས་བརྟན་དེ་ཉིད་ཉེས་ལྷུང་གྲ་རགས་ལ་ཤིན་
 ཏུ་འཛེམས་ཤིང་བསྐྱབ་པའི་གནས་རྣམས་ཚུལ་བཞིན་དུ་སྤྱང་བ་དང་། གནས་བརྟན་གྱི་
 སྐད་དོད་ལེགས་སྦྱར་དུ་བྱང་རྒྱ་ཡིན་པས་དེ་ཉིད་རབ་བྱུང་མ་གཏོགས་པ་ལ་ཐོབ་དུ་མེད་
 པས་དོན་གྱིས་རྟོགས་རྒྱས་བ་དང་། བྱད་པར་དུ་རྩོམ་ལས་སྦྱོན་དཀའ་འགྲེལ་དུ་སྦྱེས་
 བུ་ཆུང་འབྲིང་གི་བསྐྱབ་པའི་སྐབས་སོ་ཐར་དང་བྱང་སེམས། ཞི་ལྷག་གི་བསྐྱབ་པ་ལ་སྦྱོབ་
 ཚུལ་གྱི་བྱངས་པལ་ཆེ་བ་གནས་བརྟན་བྱང་བཟང་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་སྦྱོམ་བ་ཉི་ཤུ་
 པའི་དཀའ་འགྲེལ་དང་ཉིང་འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་གཉིས་ནས་བྱངས་མང་དུ་བཞེས་པ་
 ལས་བྱང་སེམས་ལ་སྦྱོ་སྦྱོང་ཚུལ་ལ་མཁས་པའི་གནས་བརྟན་ཆེ་བ་ཞིག་ཡིན་པ་རྟོགས་
 རྒྱས་སོ།།

དུས་སྤྱིས་གྱི་རྗེའི་ལྷན་དུ་དུས་འཁོར་གྱི་གཞུང་སྦྱར་མཁན་གྱི་བྱང་བོ་རྟེན་འདི་ཉིད་མ་
 ཡིན་པ་ངེས་ཏེ། དུས་འཁོར་གྱི་སྦྱོར་མཁུན་པ་ཆེ་པའི་སློབ་དཔོན་འདི་འདྲ་ཞིག་ཡིན་ཆེ་རྗེ་
 བོ་རྗེ་ལའང་དུས་འཁོར་གྱི་མན་ངག་ཅུང་ཟད་ཐོབ་དགོས་པ་ལས་རྗེ་བོའི་གཞུང་གང་
 དུ་འད་དུས་འཁོར་གྱི་གཞུང་སྦྱོར་གསལ་ཁ་རྒྱར་ཙམ་ཡང་མི་གསལ་ཞིང་། བྱད་པར་དུ་
 དུས་འཁོར་གྱི་གཞུང་ཐོག་མར་གྱི་རྗེའི་སྐབས་སུ་བོད་དུ་བྱུང་བ་ཡོངས་གྲགས་ཡིན་ཞིང་
 རྗེ་བོ་རྗེའི་དུས་སུ་བྱུང་བའི་ལོ་རྒྱུས་མེད་པ་དང་། རྗེ་བོའི་སྤྱོད་མ་ཡིན་པ་ཞིག་སྤྱིས་བོད་དུ་
 ལན་གསུམ་ཙམ་བྱོན་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཡང་མེད་དོ།།

གནས་བརྟན་བྱང་བཟང་དེ་ཉིད་ཇོ་བོ་མེད་ཀྱི་ལྷ་མ་ཡིན་པ་བཀའ་གདམས་པའི་གཞུང་དུ་
མར་གསལ་ཞིང་། བྱད་པར་དུ་བཀའ་གདམས་མ་ཆོས་དང་ལམ་རིམ་སྤྱོད་ཀྱི་ཆོས་
འབྱུང་མཁས་པའི་དགའ་སྟོན་⁴⁷ རྣམས་སུ་གསལ། ཇོ་བོ་མེད་ལམ་སྟོན་གྱི་དཀའ་འབྲེལ་
ལས་ཀྱང་།⁴⁸

འཕགས་པ་སྤྱོད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་བདུན་ཅི་དེས།
ཡུལ་དེ་བཟུང་གསལ་ན་བྱ་དང་།
ཞི་བའི་ལྷ་དང་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོའི་བར།
ཆོས་པར་གྱུར་པ་བདག་ལའང་རུང་ཞིག་འཐོར། ཞེས་དང་།

བདག་གི་སྤྱོད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་བརྟན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ་ཞེས་ལན་གཅིག་དང་གཉིས་ཅམ་མ་ཡིན་
པར་ལན་དུ་མར་ལུང་འདྲན་བྱངས་སུ་བྱངས་པ་གསལ་ལོ།

སྟོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོའི་སྤྱོད་ཀྱི་ལམ་མཐུག་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ལྷ་མ་སྤྱོད་ཀྱི་བཀའ་
གདམས་མ་ཆོས་ལས།⁴⁹

འགྲོ་མགོན་སྤྱོད་ཀྱི་ཆོས་དང་འཕགས་པ་ལྟ།
མ་ཉི་ཅི་ལ་ཉེ་ལོ་ཡོ་གི་བ།
ཅ་ཉི་བ་ལ་མཐུག་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་།
བོ་ཉི་བྱང་སྤྱོད་ཀྱི་བ།

47. བཀའ་གདམས་མ་ཆོས། རྟོག་གྲངས་ 320, 322 | ཡོངས་འཛིན་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མཚན་གྱིས་
མཛད་པའི་ལམ་རིམ་སྤྱོད་རྣམས་ཐར་ རྟོག་གྲངས་ 107 | ཆོས་འབྱུང་མཁས་པའི་དགའ་
སྟོན། སྟོན་ཆ། རྟོག་གྲངས་ 350 |

48. Toh.3948 ལྷོ་བཟུམ་ དབུ་མ། “ཞི” རྟོག་གྲངས་ 22036, 22040 བ ༨

49. བཀའ་གདམས་མ་ཆོས། རྟོག་ 34, 320, 322 མཚོ་སྟོན་མི་རིགས་དཔེ་སྟུང་། 1990

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ན་མཚུགས་ལྷན་ཡི་རྒྱུ་ལྟར་བཅས་གསལ་བས་སྒྲ་
བརྒྱད་ཀྱི་རིམ་པ་ཡིན་པ་སྟེ་མོ།

མདོར་ན་རྩ་ཐོག་སྒྲ་མ་བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོ་འདི་ནི་ཁ་ཆེ་བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོ་ཞུ་བ་དེ་ཉིད་
རང་ཡིན་ནམ་སྟེ་མོ། །འདི་ཉིད་ཕྱིས་སུ་རྣལ་རྒྱུར་ལེབས་སྟེ་མཁན་པོ་མཛད། དེས་ན་
དུས་ཕྱིས་དུས་འཁོར་སྐྱེད་དང་མཁན་གྱི་སྒྲོ་བ་དཔོན་དཔལ་བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོ་དང་རྩ་
ཐོག་སྒྲ་མ་བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོ་གཉིས་མཚན་མཚུངས་ཀྱང་དོན་ལ་གང་ཟག་གཅིག་ལྟ་བུ་
མི་སྒྲུང་ངོ་། །སྒྲོ་བ་དཔོན་འདིས་མཛད་པའི་གཞུང་སྟེ་དགོ་བསྟན་འབྱུང་དུ་བཞུགས་པ་
ཁག་ནི།

Toh.2458 རྣལ་འབྱོར་གྱི་མཚན་ཉིད་བདེན་པ།

Toh.3852 ཡེ་ཤེས་སྒྲིང་པོ་ཀུན་ལས་བདུས་པ་ཞེས་བའི་བཤད་སྒྲུར།

Toh.3924 དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བུ་བ།

Toh.3967 བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་སྒྲོ་བ་པའི་ཆོག་

Toh.4083 བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་སྒྲོ་བ་པ་ནི་ཤུ་པའི་དཀའ་འགྲེལ།

གཞུང་འདི་རྣམས་ལ་སྒྲོ་བ་གཉེར་བུ་དགོས་པ་གལ་ཆེ་བ་སྒྲུང་ངོ་།

སྒྲོ་བ་དཔོན་པོ་ལྷན་ལྷན་ཞེས་པ་པོད་ལ་ལན་གསུམ་ཙམ་བྱོན་པར་གྲགས་པ་འདི་གྱི་རྩ་
ལོ་རྒྱ་བ་རྒྱ་པའི་འདྲ་ཟེར་གྱིས་རབ་བྱུང་གི་ཐོག་མ་མེ་ཡོས་ལོར་སྐྱེད་དང་མ་དཔལ་
དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་སྟེང་པོ་རྒྱན་སོགས་གཞུང་འགའ་ཤས་བསྒྲུར་ནས་དབང་བཤད་མན་
ངག་གི་སྒྲོ་བ་བཏོད་པ་ཕྱིས་ཁྲོམ་ལོ་རྒྱ་བ་ལ་སོགས་པར་བརྒྱད་པ་གྱི་རྩའི་ལུགས་ཞེས་
གྲགས། འདི་ཉིད་རྟེན་དགོ་བསྟན་ཡིན་ཞིང་འཇམ་དཔལ་གྱི་ཞལ་མདོན་སུམ་དུ་གཟིགས།

མཛེན་བཤེས་ཀྱི་སྐབ་པ་མཛེན་པས་མཛེན་རེ་རེ་ལ་ཉིང་ངེ་འཛིན་རེ་རེ་འབྱུངས་པར་
བྲགས།

དེ་བཞིན་དུ། རྩེ་བཙུན་ཏུར་རྒྱལ་ལྷོ་ལོ་ཆོས་འབྱུང་ལས་རྩི་སྐད་དུ།⁵⁰ “དུས་
ཞབས་རྒྱུང་བའི་སློབ་མ་རྣམས་། མཛེན་དངོས་པོ་རྩི་བྱུང་རྣམས་ཞེས་བྱ་བའི་གནས་གཞིའི་
བདག་པོ་མཛེན། ལས་གཞི་གང་སྐབ་ཀྱང་རྒྱུང་གི་རྣལ་འབྱོར་ཁོ་ནས་འབྱུང་བོ། །དེ་ལ་
སློབ་མ་ཁ་ཆེའི་སྐབ་མགོན་པོ་བོད་དུ་ལན་གསུམ་བྱེད་”ཞེས་གསུངས་སོ།།

གཞན་ཡང་དེ་བསྟན་ལས་རྩི་སྐད་དུ།⁵¹ “དེས་དུས་འཁོར་བ་ཆེན་པོ་ལ། དེ་ལ་སློབ་
མ་གཉིས་ཏེ་བོ་རྩི་བྱུང་དང་སྐད་བྱུང་པོ། །བོ་རྩི་བྱུང་ལ་སློབ་མ་གསུམ་སྟེ། སྐབ་མ་ཡུལ་དང་
ཅ་མི་བ་ཆེན་པོ་དང་ཡུལ་རྩི་བྱུང་པོ།” ཞེས་གསལ་ཡང་བོད་སྐད་ཆོས་འབྱུང་⁵²དུ་གསལ་
བ་ལྟར་ན། སློབ་མ་དུས་ཞབས་པ་རྒྱུང་བ་སྤྱི་བྱུང་དང་དེའི་སྤྱི་བྱུང་རྒྱུང་བ་ཐང་པོ་དང་
དེའི་སློབ་མ་ཁ་ཆེའི་པཎ་ཆེན་སྐབ་མགོན་པོ་སྐགས་ཀྱི་སྐོལ་འཛིན་མཐར་བྱེད་པའི་རྣལ་
འབྱོར་བ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཡིན་ཞེས་གསལ།

ཡང་ཁ་ཅིག་གིས་ཅི་ལུ་བརྩེད་ཤས་ལར་སེམས་འགྲེལ་འཛོལ་དུ་བྱོན་པས་ལམ་ཁར་
རིགས་ལྡན་གྱི་སྐུལ་པས་རྩི་སྐད་པ་བྱུང་སྟེ་དུས་འཁོར་དབང་རྒྱུད་མན་དག་དང་བཅས་པ་
མཐར་དག་གནང་ཞིང་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས། དེའི་སློབ་མ་པུ་ཡུལ་སྟེ་སློབ་དཔོན་བཅོད་
སྟོམས་བའམ་དུས་ཞབས་པ་ཆེན་པོ་ཅི་ལུ་བ་རྒྱུང་བར་བྲགས་པ་འཇམ་དཔལ་དོ་རྩིས་
གསན། རིགས་ལྡན་སྐུལ་པས་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས་ནས་བྱུང་བ་བརྩེས་ཏེ་ཤས་ལར་དངོས་

50. གསུང་འབྱུང་། བོད། “ཁ” ཐོག་གུངས་ 72

51. ཐོག་གུངས་ 400 མི་རིགས་དཔེ་སྐད་། 704

52. ཐོག་སྐོ་ 72 ཐོག་གུངས་ 64

སུ་བྱོན་ནས་དབང་རྒྱུད་མན་ངག་རྫོགས་པར་ནོས། སྤྲུང་འཕགས་ཡུལ་དུ་ཐེབས་ནས་
འཆད་སྤེལ་མཛད་པས་ན་རྩོམ་དང་རྒྱལ་རྒྱུ་སོགས་སློབ་མ་མང་དུ་འཕེལ་བ་ལས་
ཡང་ཅེར་སོན་པ་སློབ་དཔོན་ཨ་ལྷ་རྩེ་པ། མི་ཐུང་བོ་ནི། ལྷ་ལྡན་གསུམ་ལ་དུས་ཞབས་པ་
རྒྱུད་བ་ཞེས་སོ་སོར་གྲགས། མི་ཐུང་བོ་ནི་སློབ་མ་ཁ་ཆེ་བཅའེ་བླ་བ་མགོན་པོ་ལ། ཞེས་
སོགས་སློབ་དཔོན་འདིའི་མཆན་གཅིག་པའི་སློབ་དཔོན་མང་དུ་བྱོན་འདུག་པས་འབྲུག་
གཞི་ཆེན་རེ་ཞིག་རྒྱས་པར་མི་སློབ་སོ།

སློབ་དཔོན་བྱང་རྒྱུབ་བཟང་པོས་མཛད་པའི་ཉིང་འཛིན་ཚོགས་

ལེའུ་ཆེ་བ་བཟོད་པ།

ད་ལྟའི་བོད་ཀྱི་བཀའ་བསྟན་དཀར་ཆག་མ་ལགས་ཀྱི་ནང་དུ་ཉིང་འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་
ལེའུ་ཞེས་པའི་མཆན་གཅིག་པའི་གཞུང་ཁག་མི་འདྲ་བ་གསུམ་ཅམ་མཛུགས་ལོད་ཀྱང་
རྫོགས་མཛད་པའི་ཉིང་འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ་གཞུང་ཚད་ཆོགས་བཅད་
བཅུ་གཅིག་གི་བདག་ཉིད་ཅན་དེ་གཞུང་རྒྱུད་ལ་དོན་ཟབ་པ་འདི་ཉིད་འདི་གའི་སྐུ་ཆའི་
གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་ནས་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྐྱར་གསོ་དང་ཉིན་སྐད་དུ་ཕབ་བསྐྱར་སོགས་
བྱས་ཟིན་ཏེ་དཔར་དུ་འདྲ་བསྐྱུན་ཟིན། འདི་ལས་གཞན་སློབ་དཔོན་བྱང་རྒྱུབ་བཟང་པོས་
མཛད་པའི་ཉིང་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་པའི་གཞུང་འདི་ནི་སྤྱི་ལོ་བཅུ་གྲག་བཅུ་
གཅིག་པའི་ནང་བྱོན་པའི་བོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྒྱ་གར་གྱི་པཱི་ཏྲ་མི་
ཅུ་ལས་ཞུས་ཏེ་ལེགས་སྦྱར་ནས་བོད་སྐད་དུ་ཕབ་བསྐྱར་མཛད།

གཞུང་འདིའི་མཛད་པ་པོ་སློབ་དཔོན་བྱང་རྒྱུབ་བཟང་པོ་ཞུ་བ་འདི་ནི་རང་རེ་ཁ་བ་
རིས་པ་རྣམས་ལ་བཀྱིན་སྤྲུལ་གྱི་ཆེ་བའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་རྫོགས་མེད་མཛད་ཡོ་
ཤེས་ཞབས་ལ་རྟག་དུ་བསྟེན་པའི་སྤྲུལ་མ་བཞིའི་ཡ་གྲུལ་གཙོ་བོ་ཞིག་ཡིན། སློབ་དཔོན་བྱང་

ཐུབ་བཟང་པོས་ལེགས་སྒྲུབ་དུ་བྱ་གཞུང་མང་པོ་མཛད་ཡོད་ཀྱང་ད་ལྟ་བོད་སྐད་དུ་འགྲུབ་
 བ་གཞུང་ཁག་ལྔ་ཙམ་ལས་མངལ་རྒྱ་མེད། དེ་དག་ལས་ཉིང་འཛིན་ཆོག་གི་ལེའུ་ནི་
 མདོ་སྒྲགས་བྱང་འབྲེལ་དུ་བརྩམས་པའི་གཞུང་ཉ་ཅང་གལ་ཆེ་བ་ཙམ་དུ་མ་ཟད། གཞུང་
 རྒྱས་བསྐྱུས་འཆམ་བ། ཆོག་དོན་བཟང་ལ་གོ་བདེ་བ། མདོ་སྒྲགས་གཉིས་དང་བསྐྱན་
 བཙུམ་དུ་མའི་ལུང་འདྲེན་བྱངས་སུ་བཞེས་བ། གཞུང་གི་ངོ་བོ་ཆོག་ལྷག་དུ་གནས་ཀྱང་
 ལུང་འདྲེན་པལ་མོ་ཆེ་ཆོག་པཅད་དུ་བཞུགས་པས་སྤེལ་མའི་ཚུ་ལྟ་བུར་འགྱུར་བས་
 ཡིད་འཕྲོག་བ། གཞུང་ཡོངས་ཚོགས་ཀྱི་དོན་ཡན་ལག་རྣམ་པ་དགུར་བསྐྱུས་ཏེ་བསྐྱན་པས་
 ཐོས་བསམ་བྱ་སྒྲུབ། ལྷག་པར་དུ་ངོ་བོ་ཆེ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་གཞུང་འདི་ཉིད་ལ་གཅིགས་ཆེན་
 པོ་མཛད་དེ་ལམ་སྐོན་དཀའ་འབྲེལ་དུ་ཡང་ནས་ཡང་དུ་བྱངས་སུ་བཞེས་པས་གལ་ཆེ་བ་
 སོགས་བྱུང་ཆོས་དུ་མ་མངལ། ཇི་སྐད་དུ།⁵³

དེ་ཕྱིར་ཉིང་འཛིན་ཆོག་ལེའུ་ལས།
 གསུངས་པའི་ཡན་ལག་ལ་ལེགས་གནས།
 དམིགས་པ་གང་རུང་གཅིག་ལ་ཡང་།
 ཡིད་ནི་དགེ་ལ་གཞག་པར་བྱ།

ཞེས་ཅུ་བར་བཞོད་པ་སྤྲང་ངོ་། །གཞན་ཡང་དེའི་དཀའ་འབྲེལ་ལས། “སྒྲ་མ་དབལ་
 བྱང་ཐུབ་བཟང་པོའི་ཞལ་ནས་ནི་འདི་སྐད་དུ།⁵⁴

ཞེས་རབ་པ་ལོལ་ཕྱིན་སྐངས་པའི།
 སྤྱིན་པའི་ལོལ་ཕྱིན་ལ་སོགས།

53. བྱང་ཐུབ་ལམ་གྱི་སྐོན་མ། Toh.3947 ཟླ། བསྐྱམ། དབྱ་མ། “ཁི” ༢༠༠ ན ༡

54. Toh.3948 ཟླ། བསྐྱམ། དབྱ་མ། “ཁི” ༢༧ ན ༢

དགེ་བའི་ཚོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་དག།

ཀྱུ་ལ་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཐབས་སུ་བཤད།”

ཅེས་སྒྲ་མའི་གསུང་དོན་མ་ཉིད་ལམ་སྟོན་གྱི་ཙ་བར་བཞོད་པ་རྩ་བོ་རྩེ་ཉིད་ཀྱིས་
གསུངས་སོ།

དེ་ལྟར་ཡོངས་སུ་དབྱེད་བ་ན། བྱང་ཆུབ་ལམ་སྟོན་གྱི་གཞི་གང་ལ་བྱེད་པའི་གཞུང་ནི་
སྤྱིར་མདོ་སྔགས་ཀྱི་གཞུང་དུ་མ་མཆིས་མེད་ཀྱང་། གཞུང་གི་ལྟ་སྟོན་གྱི་དགོངས་པའི་ཐིན་
མཚམས་དང་མན་ངག་པལ་ཆེ་བ་སྟོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ་དང་སྒྲ་མ་གསེར་གླིང་པ་
གཉིས་ཀྱི་དགོངས་ཚུལ་ཉིད་བཞོད་པ་ལྟ་བུ་སྤང་སྟེ་ལམ་སྟོན་དཀའ་འགྲེལ་འདི་ཉིད་
ལས།⁵⁵ འདིར་སྒྲ་མ་དམ་པ་གསེར་གླིང་པ་དང་སྒྲ་མ་དམ་པ་རྩེ་བཅུན་དཔལ་བྱང་ཆུབ་
བཟང་པོའི་ཞལ་རིན་པོ་ཆེ་བུམ་པ་ལྟ་བུ་ནས། བདུད་ཅི་ལྟ་བུ་དང་སྤྱང་ཅི་ལྟ་བུའི་མན་ངག་
གི་སྟོན་ལམ་སྟོན་དེ་ཉིད་འཆད་པར་བྱའོ་ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ཡང་དེ་ཉིད་ལས།⁵⁶

སྒྲ་མ་རྣམས་ཀྱི་བསྟན་པ་ཡི།

ཡང་དག་ཐབས་ནི་བསྟན་པར་བྱ།

ཞེས་པའི་དོན་དཀའ་འགྲེལ་ཐད་དུ་འང་།⁵⁷ “དེ་ལ་སྒྲ་མ་རྣམས་ནི་རྩེ་བཅུན་དཔལ་
བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ་དང་། རྩེ་བཅུན་སྤྲུལ་རྟེན་ལ་སོགས་པའོ། །ཡང་དག་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ་
ནི་གསུམ་ལ་སྦྱབས་སུ་འགྲོ་བ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་རྣམ་པ་གཉིས་དང་། མདོན་པར་
ཤེས་པ་བསྐྱེད་ནས་གཞན་དོན་བྱེད་པར་ཅན་བྱ་བའི་ཐབས་དང་། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་

55. Toh.3948 གྲེ། བསྟན། དབྱ་མ། “ཁི” ༢༧༡ བ ༢

56. Toh.3947 གྲེ། བསྟན། དབྱ་མ། “ཁི” ༢༣༤ བ ༢

57 Toh.3948 གྲེ། བསྟན། དབྱ་མ། “ཁི” ༢༧༢ བ ༤

ཆུང་དུ་འབྲེལ་བའི་ཚོགས་གཉིས་བསགས་པའི་ཐབས་དང་། བདག་དང་གཞན་དོན་སྤྱོད་
དུ་ཚོགས་པར་འབྱུང་བའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆེན་པོ་གསང་སྤགས་ཀྱི་ལུགས་ཀྱིས་བྱམ་མོང་
མ་ཡིན་པའི་ཚོགས་གཉིས་བསགས་པའི་ཐབས་རྣམས་སོ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ལམ་
སྟོན་གྱི་གཞུང་དོན་ཕལ་མོ་ཆེ་སྤྱོད་མ་འདི་གཉིས་ཀྱི་གསུང་བྱངས་སུ་མཛད་དེ་བཀོད་པ་
ཡིན་པ་གསུངས་སོ། །གཞན་ཡང་དེར་མ་ཟད་ལམ་སྟོན་དེ་ཉིད་དུ།⁵⁸

ཇི་ལྟར་གདབ་གཤོག་མ་སྟེས་པའི།

བྱ་ནི་མཁའ་ལ་འཕུར་མི་རུས།

དེ་བཞིན་མངོན་ཤེས་སྟོབས་བྲལ་བས།

སེམས་ཅན་དོན་བྱེད་རུས་པ་མིན།

ཞེས་གསུངས་པའི་ཐད་དུ་འང་ལམ་སྟོན་དཀའ་འབྲེལ་ལས།⁵⁹ “འདི་ལྟར་ཚོགས་
པའི་བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོ་ནི་ཚོགས་རྣམ་པ་གཉིས་ལ་རག་ལས། ཚོགས་རྣམ་པ་གཉིས་ཀྱང་
གཞན་གྱི་དོན་ལ་རག་ལས། དེ་ཡང་མངོན་པར་ཤེས་པ་ལ་རག་ལས། མངོན་པར་ཤེས་པ་
ཡང་ཞི་གནས་ལ་རག་ལས། ཞི་གནས་ཀྱང་ཆུལ་བྱིམས་ལ་རག་ལས་པས་དང་པོ་ཆུལ་
བྱིམས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་གྱི་ཆེན་པོ་བྱེད་པར་
མངོན་པར་ཤེས་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་དགོས་པ་དང་དེའི་སྟོན་དུ་ཞི་གནས་དང་དེ་ལ་ཆུལ་བྱིམས་
ཡང་དག་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་དགོས་པ་བསྟན་པའི་དགོངས་ཆུལ་རྣམས་སྟོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་
བཟང་པོའི་ཉིང་རེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་པའི་གཞུང་འདི་ཉིད་དུ་འང་གསལ་ལོ།
གཞན་ཡང་ལམ་སྟོན་དུ་བསྟན་པའི་སེམས་བསྐྱེད་དང་སྟོམ་པའི་སྟོར་དང་། ཞི་ལྷག་དང་
སྟོང་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་གཞག་རྣམས་དང་། གསང་སྤགས་ཀྱི་རྣམ་གཞག་ཕལ་ཆེ་བའི་སྟོར་སྤྱོད་

58. Toh.3947 གྲེ་བསྟན། དབུ་མ། “ཁི” 232 བ 4

59. Toh.3948 གྲེ་བསྟན། དབུ་མ། “ཁི” 232 བ 5

མ་བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོ་འདི་ཉིད་ཀྱི་གཞུང་རྣམས་ཁྲུངས་སུ་བཤོད་དེ་མཛད་པའོ། །དེར་མ་
 ཟད་ལམ་སྦྱོན་དཀའ་འགྲེལ་དུ་སྒྲུ་མས་དང་། སྒྲུ་མའི་ཞལ་ནས་དང་། བདག་གི་སྒྲུ་མ་རྩེ་
 བཅུན་དཔལ་བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོ་དང་། སྒྲུ་མ་དཔལ་བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོའི་ཞལ་ནས་དང་
 ཞེས་སོགས་སྒྲུ་མ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་དང་། སྒྲུ་མ་བ་ཉི་
 སྤུ་པའི་འགྲེལ་པ་སོགས་གཞུང་གི་མཆན་དངོས་སུ་སྦྱོས་ཏེ་བཤོད་པ་དང་མཆན་མ་བཤོད་
 པ་ཅི་རིགས་བྱངས་བ་མང་ངོ་།

སྒྲུ་མ་དཔོན་བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོས་མཛད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ ཚོགས་ཀྱི་ལེའུའི་བསྐྱུས་དོན།

འདི་ལྟ་བུའི་གཞུང་འདི་བསྐྱར་འགྱུར་གྱི་ཆོས་ཚན་རྣམས་ལས་གང་དུ་མཇལ་རྒྱ་ཡོད་
 ཅེ་ན་དབྱ་མའི་སྤེ་ཆན་གྱི་ཁོངས་སུ་མཇལ་རྒྱ་ཡོད། འགྱུར་སྤྲུག་ནི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་
 རྒྱལ་སེམས་དཔར་བྱས་འདུག་པས་མདོ་སྤེའི་སྤེ་སྦྱོད་ཀྱི་ཁོངས་སུ་གཏོང་བ་མཚོན་པའོ།

གཞུང་གི་མཆོད་བཟོད་ནི་སངས་རྒྱས་སྦྱི་དང་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔར་རྣམས་ལ་བྱས་
 པ་དང་། མདོ་སྤེལ་དང་ཤེར་སྤྱིན་གྱི་གཞུང་རྣམས་ཁྲུངས་སུ་སྒྲུངས་ཏེ་གཞུང་འཤོད་པའི་
 བརྩམ་པར་དམ་བཅའ་བ་བསྐྱར་ཏོ།

དེའི་འོག་ཏུ་ཆོག་བར་བརྩུ་དགུ་ཅན་གྱི་ཆོག་སྟོག་སྤེད་དང་གཉིས་ཀྱིས་གཞུང་དེ་ཉིད་
 བརྩམས་པའི་དགོས་པ་ཁྲུང་བར་ཅན་ཞིག་ཀྱང་བསྐྱར་ཏེ། དེར་སངས་སྦྱི་པོ་པལ་ཆེ་བ་ནི་
 བྱང་གོལ་གྱི་ལམ་སྤྱིན་ཅི་མ་འོག་པར་བསྐྱར་པའི་སྟོན་པའི་གསུང་རྣམས་དོན་དུ་མི་གཉིས་
 ཏེ་འཛིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་པལ་བར་ཞུགས་པར་དགའ་བ་དང་། བཅུན་པ་རྣམས་ཀྱང་དོན་རྒྱུང་
 བ་བྱ་བ་རྒྱུང་བ་སྟོབ་པ་ཐོས་བསམ་དང་སྟོང་བ་བསམ་གཏན་ལ་མ་གཞིལ་བར་བྲིམ་པ་ལྟ་
 བུའི་སྦྱོད་རྒྱལ་བསྐྱུངས་པས་སྟོབ་དཔོན་སྤྲུགས་པས་པའི་རྒྱལ་བསྐྱར། དེ་བས་ན་སྦྱི་པོ་སྦྱི་

ལ་གཞུང་འདི་ཡིས་དེ་ཙམ་གྱི་ཕན་བའི་རེ་བ་མེད་ཀྱང་རང་དང་སྐལ་བ་མཉམ་པ་འགའ་
 ཞིག་ལ་ཅུང་ཟད་ཕན་བའི་རེ་བ་དང་། རང་ཉིད་ཀྱི་སྤར་གསན་བསམ་སྤན་བྱ་བྱས་པ་
 རྣམས་སྤར་བྱགས་དྲན་གསོ་ཐུར་བཅམས་པ་ཡིན་ཞེས་གསུངས་སོ། །དོན་འདི་ལྟ་བུ་སྤོན་
 སྤོབ་དཔོན་ཆོས་ཀྱི་གྲགས་པས་མཛད་པའི་ཆད་མ་རྣམས་འབྲེལ་གྱི་དབྱར་ཡང་གསལ་ལོ། །

དེའི་འོག་ཏུ་བསྟན་བཅོས་འདིའི་གཞུང་དོན་ཡོངས་ཇོགས་ཡན་ལག་རྣམས་པ་དགུར་
 བསྟར་བ་བསྟན་ཏོ། སྤང་བར་བྱ་བ་དང་། སྤོན་དུ་འགྲོ་བ་དང་། སྤོག་བར་བྱ་བ་དང་། གདུང་
 བ་བཅད་བ་དང་། ཡིད་འབྱུང་བར་བྱ་བ་དང་། ཡོན་ཏན་ཇེས་སུ་དྲན་བར་བྱ་བ་དང་།
 བཙོན་བར་བྱ་བ་དང་། འབྲེལ་བར་བྱ་བ་དང་། གནས་པའི་ཐབས་བསྟན་བ་རྣམས་སོ། །

དེ་དག་ལས་ཐོག་མར་སྤང་བར་བྱ་བ་བསྟན་པའི་སྐབས་སུ་སྤང་བར་བྱ་བ་དངོས་
 བདུད་དང་བདུད་གྱི་ལས་གཉིས་དང་། དེ་གཉིས་ཀྱི་ངོས་འཛིན་དང་དེའི་འཁོར་འཛིག་རྟེན་
 སྤྱོད་བ་བཞི་དང་བདུད་གྱི་རིགས་ཇི་ཡོད་རྣམས་བསྟན་ཏོ། །དང་པོ་བདུད་ནི་འདོད་པའི་ལྟ་
 སྤྱོད་ཅན་ཅུང་མ་བསྐྱེད་ཐུང་བ་ཅན་སྤྱི་པོ་ན་མེ་ཏོག་གི་མདའ་ལྟ་ཡོད་པ་ཅན་དུ་ངོས་
 འཛིན་པ་དང་། མདའ་ལྟའི་བྱེད་ལས་རྣམས་རིམ་བཞིན་བསྟན་ཏེ་དེས་མངོན་མཐོ་དང་
 ངེས་ལེགས་སྦྱབ་པ་ལ་ཉམས་པར་བྱེད་པ་བསྟན་ཏོ། །འཁོར་འཛིག་རྟེན་སྤྱོད་བ་བཞིའི་
 ངོས་འཛིན་དང་དེའི་བྱེད་ལས་བསྟན་པ་ན་ལས་བསྟོམ་པ་རྣམས་ལ་བར་ཆད་ཇི་ལྟར་བྱེད་
 ཚུལ་བསྟན། བདུད་གྱི་རིགས་ལ་ཡིད་དྲགས་ཀྱི་རིགས་སུ་མ་ཅུ་ཅུ་གྲག་ཡོད་པ་རྣམས་
 ཀྱིས་བསམ་གཏན་སྟོམ་པ་དག་ལ་བར་ཆད་ཇི་ལྟར་བྱེད་ཚུལ་འཛིག་རྟེན་གསུམ་ལས་
 རྣམས་བར་ཚུལ་བའི་རྟོག་པའི་ལུང་ཁྲངས་སུ་དྲངས་ཏེ་བསྟན་ཏོ། །དེ་ལྟ་བུའི་བདུད་ལས་
 ཀྱི་བར་ཆད་རྣམས་གང་ཟག་སུ་ལ་འབྱུང་ཚུལ་གྱི་ངོས་འཛིན་དང་བདུད་ལས་དེ་ཉིད་ངོས་
 འཛིན་རྩབ་པར་བྱེད་དགོས་པ་དང་མ་གྲུས་པའི་ཉེས་དམིགས་དབྱེད་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་
 པའི་རྒྱུད་གྱི་ལུང་ཁྲངས་སུ་དྲངས་པ་གསལ། དེ་ལྟ་བུའི་བདུད་ལས་རྣམས་ཐབས་གང་

གིས་བསྐྱོག་པར་རྒྱུད་དོ་མི་ཅེ་མེད་ནང་ནས་དོག་ཐམས་ཅད་སྤང་བྱུང་བསྟན་པ་བཞིན་བྱ་
དགོས་པ་དང་། གཞན་ཡང་བདུད་ལས་བསྐྱོག་པའི་ཐབས་འཕགས་པ་བྱ་ངན་མེད་འབྱེན་
གྱིས་ཞུས་པའི་མདོ་དང་མེད་གོ་ལུང་བསྟན་གྱི་མདོར་བསྟན་པ་ལྟར་ཉམས་སུ་ལེན་དགོས་
པ་བསྟན་དོ།

ཡན་ལག་གཉིས་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བར་བྱ་བ་སྟེ། འདིར་གོང་དུ་བསྟན་པའི་བདུད་ལས་
དེ་རྣམས་ཐོས་པའི་རང་བཞིན་ཤེས་རབ་གྱིས་བསྐྱོག་ནས་ཀྱང་ཐོས་པ་མེད་པར་ཤེས་རབ་
མི་སྦྱེ་བས། ཐོས་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་དགོས་པས་དེ་ཉིད་དེའི་འོག་དུ་བསྟན་དོ། ཡན་ལག་དེ་
ཉིད་ཀྱི་དབྱར་ཐོས་པའི་ཡོན་ཏན་རྣམས་གང་ཡིན་གཞུང་ཞིག་ལས་ལུང་བྱངས་ཏེ་བསྟན་
པ་དང་། དེར་ཐོས་པས་ཤེས་རབ་རྒྱས་པར་བྱེད་པ་དང་བསམ་པ་དང་སྟོམ་པ་ལ་སྦྱོར་བ་
བྱས་ནས་སྤྲ་མེད་ཚོགས་བྱང་དུ་འབྲིད་པར་བྱེད་པ་བསྟན་དོ། །ཚུལ་དེ་བཞིན་དུ་ཐོག་མར་
ཐོས་པ་ལ་ཞུགས་ན་དགོས་པ་དགེ་ཚན་བྱུང་པར་ཅན་ཇི་ཡོད་དང་། ཐོས་པ་སྦྱངས་ནས་
ཤེས་རབ་སྦྱེས་ཏེ། རྣམ་མཁྲེན་གྱི་གོ་འཕང་འཐོབ་པར་འགྱུར་བ་སོགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་
བསྟན་པར་སངས་རྒྱས་པལ་པོ་ཆེ་དང་དགོན་མཚོག་སྟོན་མེད་མྱོང་པོ་བཀོད་པ་སོགས་
ཐོག་ཆེན་གྱི་གཞུང་ཁག་དང་ཉན་ཐོས་ཀྱི་སོ་ཐར་གྱི་མདོའི་ལུང་བྱངས་ཀྱང་བྱངས་ཏེ་ཐར་
ལམ་སྦྱུབ་པར་ཐོས་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་དགོས་པ་མེད་དུ་མི་རུང་བ་བསྟན་དོ།

ཡན་ལག་གསུམ་པ་སྟོན་པར་བྱ་བ་སྟེ། དེའི་ནང་ཐོས་པ་མང་དུ་བྱས་ཀྱང་མངོན་
བར་ཤེས་པ་མ་སྦྱེས་པར་ཆོས་སྦྱབ་པར་སྟོན་པར་བྱ་བ་བསྟན་དོ། །དེ་ཅི་ཡི་ཕྱིར་ཞེ་ན། ཐོས་
པ་ཅམ་སྦྱངས་ཏེ་ཆོས་སྦྱབ་པར་འཕུག་ན་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱ་བ་ཉུང་བས་སྟོན་པར་བྱའོ་
ཞེས་གསུངས་སོ། །འདི་ན་ཐོས་པ་ལེགས་པར་སྦྱངས་ནས་བྱ་བ་གང་ཙམ་དགོས་ཤིང་།
ཐོས་པ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྗེས་སུ་སེམས་ཅན་མང་པོ་ལ་པན་པའི་སྤྱད་དང་མངོན་
པར་ཤེས་པ་རྒྱུད་ལ་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་གནས་དབེན་པ་ངེས་པར་བསྟེན་དགོས་པ་སོགས་ཀྱི་

ལུང་ཁྲངས་མདོ་པལ་མོ་ཆེ་དངོས་སུ་བྲངས་ནས་ཞར་ལ་དགོན་མཆོག་སྒྲོན་མེ་དང་བྲག་
 གུལ་ཅན་གྱིས་ཁྲུས་པའི་མདོའི་མཚན་རྣམས་ཀྱང་བྲངས། དཔེན་པ་མ་བསྟེན་ཅིང་མཛོན་
 བེས་ཀྱང་རྒྱུད་ལ་མ་སྦྱེས་པར་ཐོས་པ་ཅམ་གྱིས་ཆོས་འཆད་ན་དེ་ལ་ཉེས་དམིགས་ཇི་
 ཡོད་སྐོར་འཕགས་པ་ལྷག་པའི་བསམ་པ་བསྐྱལ་བའི་མདོར་གསལ་བ་སོགས་བསྟན་ནོ།

ཡན་ལག་བཞི་པ་འདི་ལ་གདུང་བ་བཅད་པ་ཞེས་པའི་ནང་སྤར་ཇི་ལྟར་ཐོས་པའི་ཆོས་
 རྣམས་གཞན་ལ་བསྟན་པར་བསྒྲོག་ནས་ཐོས་པའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དོན་བསམ་པ་འཕམ་
 ཉམས་སུ་སྤང་དགོས་པ་བསྟན། སྤང་བམས་སྦྱེ་མཆེད་སོགས་དང་བཅུ་ལྷག་རིག་པའི་
 གནས་ལྟ་ལ་སོགས་པ་རིག་པའི་གནས་མཐའ་དག་རྟོགས་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་
 འཆིང་བ་རྣམས་ལས་གྲོལ་བའི་སྤང་དུ་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དོན་ཉམས་སུ་སྤངས་ཏེ། ལུས་ལ་
 ཆ་གྲང་གི་གདུང་བ་ཅི་བྱུང་ཡང་དེ་དག་བཟོད་པའི་སྒོ་ནས་གོམས་པ་ལ་ཞུགས་དགོས་པ་
 བསྟན། ཆོས་ཐོས་ནས་གོམས་པ་ལ་མི་ཞུགས་ན་དེ་ལ་ཉེས་པ་ཇི་ཡོད་འཕགས་པ་སྤོང་བོ་
 བཀོད་པའི་མདོའི་དཔེ་དོན་དང་བཅས་པ་མདོར་བསྐྱས་ཤིག་བསྟན་ནས་རྒྱས་པ་མདོ་འདི་
 ཉིད་གཟིགས་དགོས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་སེམས་མཉམ་པར་འཛོག་པའི་གནས་
 སྐབས་སུ་གདམས་ངག་རྣམས་ཀྱིས་ཆོས་པར་བྱ་དགོས་ཤིང་། དེ་དག་ལ་གོམས་པ་བྱང་
 བ་ན་ཡིད་ལ་སོམ་ཉི་སོགས་འབྱུང་ཆེ་སྤྱི་མ་ལ་ཞུ་ཞིང་སྤར་བསྒྲོམ་དགོས་པ་དང་། སྤྱི་མ་
 ལ་མ་ཞུ་བའི་ཉེས་པ་ཇི་ཡོད་རྣམས་དོན་མཛོད་དང་བདེ་མཆོག་གི་མའི་རྒྱུད་ཀྱི་ལུང་
 ཁྲངས་བྲངས་པར་གསལ། སྤྱི་མ་ལ་ཡང་ཡང་བསྟེན་ནས་བསྒྲོམ་ན་འབྲས་བུ་མཐའ་དག་
 སྤར་བའི་སྐོར་རྒྱུད་དོན་ཇི་གཙུག་རྟོར་དང་དབྱང་བཟངས་ཀྱིས་ཁྲུས་པའི་རྒྱུད་དང་ཆོས་
 མཛོན་པ་མཛོད་སོགས་ཁྲངས་སུ་མཛོད་པའི་སྒོ་ནས་བསྟན་ནོ།

ཡན་ལག་ལྔ་པ་ཡིད་འབྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ལ། གོང་དུ་སྒྲོམ་གྱི་ཕན་ཡོན་དང་ཉེས་
 དམིགས་བསྟན་ནས་འདིར་ཡིད་འབྱུང་བའི་ཡན་ལག་ཅིའི་ཕྱིར་བསྟན་ཞེ་ན། སྒྲོམ་གྱི་ཕན་

ཡོན་དང་ཉེས་དམིགས་རྣམས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ཤེས་པའི་རྗེས་སུ་དབེན་བ་བསྟེན་ཏེ་སྒྲོམ་ལ་
 ཞུགས་ཀྱང་། འཁོར་བ་ལ་བཅོས་མ་མ་ཡིན་པའི་ངེས་འབྱུང་གྲགས་དྲག་ཅིག་མ་བསྟེན་
 པར་སྒྲོམ་བ་ལ་ཞུགས་ན་ཐར་བ་ལྟ་ཅི་མངོན་མཐོ་ཙམ་ཞིག་ཀྱང་འཐོབ་པར་མི་འགྱུར་
 བས་ཐོག་མར་འཁོར་བ་ལ་ཡིད་འབྱུང་ངམ་ངེས་འབྱུང་བསྟེན་དགོས་བ་བསྟན། དེ་ཡང་
 རྒྱལ་སྤྱི་ཆེན་པོ་ཞི་བ་ལྟས་སྟོན་འཕྲག་ཏུ་ངེས་འབྱུང་གི་སྒྲོར་ཇི་ལྟར་བཤད་བ་བཞིན་
 འདིར་ཡང་ནང་སེམས་ཅན་གྱི་འཛིག་རྟེན་ལ་ཆགས་བ་ཇི་ལྟར་སྟོང་ཚུལ་ཐོག་མར་བསྟན་
 ནས། དེའི་འོག་ཏུ་བྱི་རྩེད་སོགས་ཀྱི་འཛིག་རྟེན་ལ་སྟེད་བ་སྟོང་ཚུལ་དང་སྟོད་བ་ལ་རང་
 བཞིན་གྱི་ཆགས་བ་སྟོང་ཚུལ་བཅས་ས་བཅད་གསུམ་གྱིས་སྒྲོ་ནས་བསྟན་ཏོ། ཐོག་མར་
 ནང་སེམས་ཅན་གྱི་འཛིག་རྟེན་ལ་ཆགས་བ་ཇི་ལྟར་སྟོང་ཚུལ་བསྟན་བ་ན་དབྱང་བཟངས་
 གྱིས་ཞུས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་ལུང་ཁྲུངས་སུ་བཞེས་ཏེ། གཉེན་ལ་མངོན་པར་དགའ་བའི་དབང་
 གིས་ཞི་གནས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་སྒྲུབ་པར་མི་འགྱུར་བས་ན་ཐོག་མར་གཉེན་ལ་མངོན་པར་
 དགའ་བའི་ཆགས་བ་དང་། དགྲལ་སྤང་བའི་མངོན་པར་ཞེན་བ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ་མན་ཚུན་
 བརྟན་བ་མེད་ཅིང་འགྱུར་བ་ཅན་ཡིན་བ་གསུངས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཉེན་རྣམས་ཆེ་རབས་
 གཞན་དུ་དགྲར་འགྱུར་བས་རིམ་བཞིན་འཁོར་ཞིང་འགྱུར་བ་ཅན་ཡིན་བ་བཤེས་སྤྲིངས་ཀྱི་
 ལུང་ཁྲུངས་སུ་བཞེས། དེ་ནས་རང་ཉིད་བདེ་ཞིང་ནད་མེད་བ་དང་ལང་ཚོ་ལ་ཆགས་བ་
 རྣམས་ལའང་མི་རྟག་པའི་མདོའི་ལུང་ཁྲུངས་སུ་བཞེས་ཏེ་ནད་མེད་དང་ལང་ཚོ་རྣམས་
 རྟག་ཏུ་གནས་བ་མེད་ཅིང་མི་རྟག་བ་ཡིན་པའི་ཉེས་དམིགས་བསྟན་ཏེ་དེ་ལ་ཆགས་བ་
 སྟོང་དགོས་བ་བསྟན།

འདིའི་འོག་ཏུ་བྱི་རྩེད་སོགས་ཀྱི་འཛིག་རྟེན་ལ་སྟེད་བ་སྟོང་བ་བསྟན་ཞིང་དེར་རྟེད་བ་
 དང་བཀྱར་སྟེ་དང་བྲགས་བ་ལ་ལྟག་པར་ཆགས་ན་འཆི་བའི་འོག་ཏུ་འཛིགས་བ་ཆེན་པོ་
 སྟེ་སྟེ་དཔུལ་བ་སོགས་ངན་སོང་གསུམ་དུ་ལྷུང་བ་སོགས་ཀྱི་ཉེས་དམིགས་རྒྱལ་སྤྱི་ཞི་

བ་ལྟེ་སྤྱོད་འཇུག་གི་གཞུང་ཁྲུང་ས་སྤྱོད་ཀྱི་བསྟན་ཏོ། །དེ་ནས་ལྷག་པའི་བསམ་པ་
བསྐྱུལ་བའི་མདོར་རྟེན་པ་དང་བཀུར་སྒྲིལ་ཆགས་པའི་ཉེས་པ་མང་པོ་ཡོད་པའི་ཁྲུང་ས་
ཀྱང་བསྟན། དེའི་འོག་ཏུ་སྤྱོད་པ་དང་ཡང་སྤྱོད་པ་ལའང་ཆགས་པ་མི་རིགས་པ་དང་དེ་དག་
ལ་ཆགས་ན་ཆགས་པ་པོ་ཉིད་འཁོར་བའི་གནས་སྤྱོད་འབྱུངས་ཏེ་འཁོར་བའི་གནས་ལས་
སྤྱོད་པར་མི་འགྱུར་བར་བསྟན་ཏོ།

སྤྱོད་པ་ལ་རང་བཞིན་གྱིས་ཆགས་པ་མི་རིགས་པ་བསྟན་པ་ལ་དབྱེད་བཟངས་གྱིས་
ཞུས་པའི་རྒྱུད་གྱི་ལུང་ཁྲུང་ས་སྤྱོད་བཞེས་ཏེ། སྤྱོད་པའི་ངོ་མོན་གྱིས་ལ་གནས་པ་བཤད་དེ།
འདི་ཉིད་གཅན་གཟན་འཛིགས་པ་ཅན་སྟག་དང་། སྤྱུལ་དང་། བསྐྱུལ་བར་བྱེད་པའི་མེ་དང་
འདྲ་བའི་དཔེར་གསུངས་ཏེ། ཁྱིམ་གྱི་གནས་འདི་ཉིད་སྤྱངས་ནས་དཔེན་པར་ཞུགས་དགོས་
པར་བསྟན། སྤྱོད་པ་འདི་ལ་གནས་པའི་མི་པལ་མོ་ཆེ་དང་སྟོག་ཆགས་རྣམས་དང་འཛིག་
རྟེན་པའི་བྱ་བ་པལ་བ་རྣམས་ལ་སྟོ་ཡི་ཆགས་པ་སྤྱངས་ཏེ་འདོད་ཆགས་ཤས་ཆེ་རྣམས་
ཀེང་རུས་དང་། ཞེ་སྤང་ཤས་ཆེ་རྣམས་བྱམས་སྤྱོད་ཏེ་དང་། གཉི་ཟུག་ཤས་ཆེ་རྣམས་རྟེན་
འབྲེལ་གྱི་དམིགས་པ་བསྟོམས་པའི་སྟོ་ནས་འཛིག་རྟེན་ལ་ཆགས་པའི་སྟོ་སྤང་དགོས་པར་
བསྟན་ཏོ། །མདོར་ན་ཐོག་མར་དབྱ་གཉིན་ལ་མཐའ་གཅིག་ཏུ་རིས་སྤྱོད་བཅད་ནས་ཆགས་
སྤང་སྟེ་བ་བཀག་ནས་འཁོར་བའི་སྟོགས་ལ་སྟོ་གཏད་ཐུབ་པ་གང་ཡང་མེད་ཚུལ་སེམས་
པའི་སྟོ་ནས་སྟོ་བ་བསྟེད་དགོས་པ་དང་། ཁྲུང་པར་དུ་ཆགས་སྤང་ནི་ཉེས་པའི་འབྱུང་གནས་
ཏེ་ཁྱིམ་གྱི་གནས་ལ་སྟོ་ཞེ་ཐག་པ་ནས་ཡིད་འབྱུང་བ་བསྟེད་དེ་དཔེན་པ་སྟོམས་ཏེ། ཐར་བ་
དང་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་བརྩོན་དགོས་པ་བསྟན་ཏོ།

ཡན་ལག་དྲུག་པར་གོང་དུ་བསྟན་པའི་ཉིང་འཛིན་གྱི་མི་མཐུན་པའི་སྟོགས་རྣམས་
སྤངས་ཏེ་ཉིང་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་རྗེས་སྤྱོད་དགོས་པ་བསྟན། ཉིང་འཛིན་སྟོམ་
ཐུབ་ན་ཆེ་འདི་སྤྱི་གཉིས་ཀ་ལ་པན་པའི་ཡོན་ཏན་རྣམས་པ་གཉིས་བྱུང་བ་བཤད་ཅིང་། དང་

པོ་ཆེ་འདི་ལྟ་བུ་ལ་མཚོན་ན་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་བདེ་བར་གནས་པ་དང་། དཀར་
 སྟོགས་ཀྱི་ལྟ་རྣམས་དགའ་བ་དང་། རོན་ཉུང་བ་དང་ཆེ་རིང་བ་སོགས་ཡོན་ཏན་རྣམས་བ་
 བཅོམ་ཅམ་དང་། ཆོ་བྱི་མར་རང་གང་དུ་འདོད་པའི་ཞིང་དུ་སྟེ། བ། རན་སོང་གསུམ་དང་མི་
 ཁོས་བ་བརྒྱད་ཀྱི་གནས་སུ་མི་ལྟུང་བ་དང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་བུལ་བར་མི་འགྱུར་
 བ་དང་། དབང་པོ་རྣེས་སོགས་སུ་སྟེ་བའི་ཡོན་ཏན་རྣམས་བ་བརྒྱད་བསྟན་ནོ། །དེའི་འོག་དུ་
 སྟོན་སྤངས་བསྟན་བའི་ཕན་ཡོན་རྣམས་བ་གཉིས་བསྟན་ནོ། ཆོ་བསྤང་བ་དང་། ལྷའི་གནས་
 སུ་ཆེ་འདི་ཉིད་ལ་བཞོད་བ་སོགས་བསྟན་ནོ། །དེ་ནས་ཉིང་འཛིན་བསྟོམ་བྱའི་ཡུལ་གྱི་
 རགས་འཚལ་དབེན་པའི་ཁྱད་ཆོས་བསྟན་ནོ། རགས་འཚལ་དབེན་པར་བསྟོམ་ལ་ཞུགས་
 ན་ལུས་སེམས་བདེ་བའི་ཚུལ་དང་། དེ་ལ་གནས་པའི་བྱ་རི་དྲགས་སོགས་ཀྱི་སྟན་ཅིང་
 འཛེབས་པའི་སྐྱད་སྟན་དང་། རགས་འཚལ་དང་ཆུ་སྐྱུང་སོགས་ཀྱིས་ཉོན་མོངས་དུག་
 གསུམ་ལྡང་བར་མི་བྱེད་བ་སོགས་ཀྱི་ཁྱད་ཆོས་སྟོབ་དཔོན་ཅན་གོ་མིས་མཛད་པའི་སྟོབ་
 མ་ལ་སྤྲིངས་པ་དང་རྒྱལ་སྤྲུལ་ཞི་བ་ལྟས་མཛད་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྟོད་པ་ལ་
 འཇུག་པ་བྱངས་སུ་མཛད། འདི་ནི་ཉིང་འཛིན་གྱི་གྲོགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཁྱད་པར་དང་
 གནས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཁྱད་པར་གཉིས་སུ་བསྟུས་ནི་བསྟན། གཞན་ཡང་ཉིང་འཛིན་
 བསྟོམ་པའི་ཕན་ཡོན་ཆེས་མང་དུ་གཟིགས་འདོད་ན་ཉིང་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་སོགས་
 སུ་རྒྱས་པར་གསལ་བ་བསྟན་ནོ།

ཡོན་ལག་བདུན་པ་ནི་བརྩོན་པར་བྱ་བ་ཡིན་ལ། འདིར་གོང་དུ་ཉིང་འཛིན་གྱི་ཕན་
 ཡོན་དང་བསྟོམ་བྱའི་ཡུལ་གྱི་ཁྱད་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་སྟོབ་འཕེལ་བའི་གང་ཟག་རྣམས་སྟོབ་
 དཔོན་ལྷ་སྟུབ་ཀྱི་བསེམ་སྤྲིངས་དང་། སྟོབ་དཔོན་ཅན་གོ་མིའི་སྟོབ་མ་ལ་སྤྲིངས་པ་དང་།
 རྒྱལ་སྤྲུལ་ཆེན་པོ་ཞི་བ་ལྟའི་སྟོད་འཇུག་དང་། སྟོབ་དཔོན་ངག་གི་དབང་རྒྱུག་གུགས་པའི་
 ཡན་ལག་བདུན་པ་དང་། བྱུང་ཆེན་སར་ཉའི་དོན་མཛོད་རྣམས་སུ་འཆི་བ་མི་ཉུག་པ། རམ་

འཆི་ངེས་མེད། ཆེ་མི་རྟག་པ་དང་དལ་འབྱོར་རྟེན་དཀའ་བ་སོགས་བསྟན་པ་དག་ཡིད་ལ་
བྱས་ཏེ་དོན་མེད་དུ་དུས་མི་འདའ་བར་སྒོ་ཅི་གཅིག་དུ་སྐྱབ་པ་ལ་བརྩོན་པ་ཆེན་པོས་
བསྐྱེམས་ཏེ་གཞིལ་དགོས་པ་བསྟན་ཏོ།

ཡན་ལག་བརྒྱད་པ་འབྲེལ་བར་བྱ་བ་ཞེས་བའི་ནང་། གོང་དུ་བསྟན་པའི་དོན་རྣམས་
ཡིད་ལ་བྱེད་པའི་གང་ཟག་གིས་བརྩོན་པ་ཆེན་པོས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ཡན་
ལག་གཉིས་རེ་རེ་བ་མི་སྒྲིམ་པར་བྱང་འབྲེལ་དུ་སྒྲིམ་དགོས་པ་བསྟན་ཏོ། ཞི་ལྷག་གཉིས་
ཀ་བྱང་འབྲེལ་དུ་སྒྲིམ་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་ནི། དཔེར་ན་མཚན་མོ་ལྷེ་བ་རིས་བཟ་བའི་དོན་
དུ་མར་མེ་སྐར་བ་ན་མར་མེ་ཤིན་དུ་གསལ་བ་དང་རྒྱང་གིས་མི་གཡོ་བ་གཉིས་ཀ་དང་ལྷན་
ན་ལྷེ་བ་རིས་ཀྱི་རི་མོ་དག་ཤིན་དུ་གསལ་བ་མཐོང་བྱལ་ལ། མར་མེ་མི་གསལ་ཞིང་རྒྱང་
གིས་བསྐྱེད་ན་ལྷེ་བ་རིས་ཀྱི་རི་མོ་དག་གསལ་བར་མི་མཐོང་བ་དང་མཐོང་བ་ལ་བགོགས་
བྱེད་པ་བཞིན་དུ། ཟབ་མའི་དོན་རྟོགས་པ་ལའང་དེ་ཁོ་ན་ནིང་གི་དོན་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་
ངེས་པའི་ཤེས་རབ་དང་སེམས་དམིགས་པ་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་དུ་གནས་པའི་མི་
གཡོ་བ་གཉིས་ཀ་དང་ལྷན་ན་དེ་ཁོ་ན་ནིང་གསལ་བར་མཐོང་གི། སེམས་གཞན་དུ་
གཡེངས་བ་འགོག་པའི་མི་རྟོག་པའི་ཉིང་དེ་འཛིན་ཞི་གནས་ཡོད་ཀྱང་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དེ་
ཁོ་ན་ནིང་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་ལྷག་མཐོང་མེད་ན། དེ་ཁོ་ན་ནིང་རྟོགས་པའི་མིག་དང་
བྲལ་བས་ཞི་གནས་ཀྱི་ཉིང་དེ་འཛིན་ལ་ཇི་ཅམ་གོམས་ཀྱང་ཡིན་ལྷགས་རྟོགས་པ་མི་
སྲིད་ལ། ཡང་བདག་མེད་རྟོགས་པའི་དེ་ཁོ་ན་ནིང་ཁོང་དུ་རྒྱུད་པའི་ལྷ་བ་ཡོད་ཀྱང་སེམས་
ཅི་གཅིག་དུ་བརྟན་པར་གནས་པའི་ཉིང་དེ་འཛིན་དང་བྲལ་ན། རང་དབང་མེད་པར་གཡོ་
བའི་རྣམ་རྟོག་གི་རྒྱུད་གིས་གཡེངས་ཏེ་དེ་ཁོ་ན་ནིང་གི་དོན་གསལ་བར་མི་མཐོང་བས་ཞི་
ལྷག་གཉིས་དགོས་པ་ཡིན་ནོ། །མདོར་ན་ཞི་གནས་མི་བརྟན་ན་ལྷག་མཐོང་མི་བརྟན་པ་
དང་། ལྷག་མཐོང་མི་བརྟན་ན་སྐྱབ་པའི་དུ་བ་མ་ལུས་པ་སྤང་མི་རྒྱས་པ་དེས་ན་སྦྱོང་

འཕྱག་དང་། འཕགས་པ་བྱི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པའི་མདོ་དང་། གཡམོ་མེད་མདོ། སྤྲོད་པོ་བཏོད་པའི་མདོ་སོགས་ཀྱི་ལུང་བྲངས་ཏེ་དེ་གཉིས་བྱང་འབྲེལ་དུ་སྒྲོམ་ན་དགོ་ཚན་ཆེ་བ་དང་མི་སྒྲོམ་ན་དེ་ལ་སྒྲིན་ཇི་ཡོད་ནམས་བསྟན་རྟོ།།

དེ་ནས་སྤྲོད་བ་ཉིད་ཁོ་ན་སྤྲོད་དུ་སྒྲོམ་ན་ཚོགས་པར་གསུངས་པའི་མདོའི་དགོངས་པ་ལ་ལན་དང་སྤྲོད་ཉིད་འབའ་ཞིག་སྒྲོམ་བ་ནམས་ཀྱང་ལྷའི་སྐུ་ལྟ་དུ་བསྒྲོམ་དགོས་པ་དང་སྤྲོད་ཉིད་ཀྱི་སྤྲོད་པོ་སྤྲོད་ཇི་སྤྲོད་དུ་འགྲོ་དགོས་པ་སོགས་ཀྱང་བསྟན་རྟོ།། །དེའི་འོག་དུ་ནམ་སྤྲོད་མཛོན་བྱང་གི་རྒྱུད་ཀྱི་ལུང་བྲངས་ཏེ་སྤྲོད་ཉིད་འབའ་ཞིག་བསྒྲོམ་པའི་ཚོགས་བ་ཡོད་པའང་བསྟན་རྟོ།།

ཡན་ལག་དགུ་བ་གནས་པའི་ཐབས་ཞེས་པར། གོང་དུ་བསྟན་པའི་ཡན་ལག་བརྒྱད་པོ་དེ་དག་དང་ལྟན་པའི་གང་ཟག་གིས་དངོས་སུ་ཞི་གནས་ཀྱི་ལམ་ལ་ཞུགས་རྟེ། གནས་དང་། ཁ་ཟས་སྤྲོད་ལམ། གོས་དང་གྲོགས་ཇེས་སུ་མཐུན་པའི་སྒྲོ་ནས་སེམས་མཉམ་པར་བཞག་དགོས་པ་བསྟན་རྟོ།། །དང་པོ་གནས་ལྟ་བུ་ལ་མཚོན་ན་འཕགས་པ་དབྱང་བཟངས་ཀྱི་རྒྱུད་ལས་གསུངས་པ་ལྟར་སྤོན་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་པ་ནམས་ཀྱི་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས་པའི་གནས་བྱང་པར་ཅན་དང་ནགས་ཚལ་ལྟ་བུ་དཔེན་པ་གཅན་ཟན་ལ་སོགས་པ་མེད་ཅིང་སྤྲོས་བྱ་མི་རྒྱ་པའི་གནས་བསྟེན་དགོས་པ་བསྟན།

གཉིས་པ་ཁ་ཟས་ཇེས་སུ་མཐུན་པ་ནི། ཁ་ཟས་ལ་ཆགས་མི་རིགས་པ་དང་ཚོད་ཟིན་པ་དང་། ལུས་ཀྱི་སྤྲོ་བས་དང་འཚམ་པ་སྤྲོད་དགོས་པའང་བཤེས་པའི་སྤྲིངས་ཡིག་གི་ལུང་བྲངས་སུ་བཏོད་ཡོད། ཁ་ཟས་ལ་ཤིན་དུ་ཆགས་ཤིང་སྤྲོད་ན་དེ་ལ་ཉེས་པ་ཇི་ཡོད་ཀྱང་འཕགས་པ་གང་པོས་ཞུས་པ་དང་དབྱང་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པའི་རྒྱུད་བྲངས་སུ་བྲངས་ཏེ་བསྟན། མཉམ་པར་བཞག་པའི་ནལ་འབྱོར་གང་ཞིག་ལུས་སྤྲོ་བ་དང་རྒྱུད་པ་ནམས་ལ་བསྐྱང་གནས་བསྟེན་མི་དགོས་པ་སྤོན་པ་བཅོམ་ལྟན་འདས་ཀྱིས་རབ་དུ་གྲུབ་པར་བྱེད་

པའི་རྒྱུད་ལས་གསུངས་ཡོད་པ་དང་། ལུས་ལ་ནད་སློན་མེད་པ་དང་བདེ་བ་རྣམས་བསྐྱུང་བར་གནས་དགོས་པ་བཙམ་ཐུན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་ཞེས་དབྱེད་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་བྱངས་སུ་བྱེད་དོ།

གསུམ་པ་གྲོགས་མེས་སུ་མཐུན་པ་ནི། བྱུང་ན་རང་གཅིག་ཕྱ་དཔེན་པར་གནས་དགོས་པ་དང་། གཉིས་ཙམ་གནས་ན་མཉམ་པར་བཞག་པ་ལ་སློན་ཞུགས་པའི་ཉེས་དམིགས་བྱངས་སུ་བྱངས་ཏེ་བསྟན། ཡང་དབྱེད་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་ལུང་བྱངས་ཏེ་མཉམ་པར་བཞག་པ་ལ་བཙོན་བ་རྣམས་རང་ཁོ་ན་དཔེན་པར་མ་གནས་པར་གྲོགས་མེས་སུ་མཐུན་པ་ཞིག་དགོས་པ་དང་། གྲོགས་གཅིག་གི་ལྟན་དུ་མེད་ན་ཤིང་ཏ་འཁོར་ལོ་གཅིག་པ་བཞིན་བསྟོད་མི་ཐུབ་པས་ན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་བའི་སློན་བསྟན་རྟོ། །དེ་ཡང་གྲོགས་བཟང་པོ་སྟེ་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་ལྷན་ཤིང་ལྷ་བ་མཚུངས་པའི་གྲོགས་ནི་མེས་སུ་མཐུན་པའི་གྲོགས་ཡིན་པས། དབྱེད་བཟངས་ཀྱི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པའི་ཡོན་ཏན་ཇི་འདྲ་བསྟན་པ་རྣམས་ཚང་དགོས་པ་དང་དེང་སང་འདི་ལྟ་བུའི་ཡོན་ཏན་ཚང་བ་མེད་ན་འང་དེའི་བྱེད་དང་བཞི་ཆ་གཅིག་དང་བརྒྱད་ཆ་ཅན་ཞིག་ཡོད་ན་འང་གྲོགས་ལ་བསྟན་དགོས་པ་བསྟན་རྟོ། །མདོར་ན་མེས་སུ་མཐུན་པའི་གྲོགས་གཅིག་ངེས་པར་བསྟན་དགོས་པ་འང་བསྟན་རྟོ།

གོས་མེས་སུ་མཐུན་པ་ནི། གོས་ཇི་འདྲ་དགོས་སམ་སྙམ་ན་དབྱེད་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པའི་རྒྱུད་ལས་བསྟན་པ་ལྟར་གཞི་བཟོ་བ་ཐུབ་ཙམ་དང་། ཆོགས་དང་བཙམ་ཤིང་ཆགས་པ་སྟེད་བྱེད་ཀྱི་གོས་དང་གནས་མལ་བསྟན་མི་རུང་ཞིང་། ཤིང་ལོ་དང་། གསོ་མ་དང་། ཟར་མའི་ཤིང་གུན་ལྟ་བུ་ལས་གྲུབ་པ་ཆོགས་མེད་པ་དང་། རྟེན་སྤྱི་བའི་གོས་ལ་བསྟན་དགོས་པ་བསྟན་རྟོ།

བཞི་པ་རྩེས་སུ་མཐུན་པའི་སྤྱོད་ལམ་ལ་གསུམ་དུ་བསྟན་ནི། ལེགས་པར་གནས་པ་
དང་། སྦྱག་བསྐུལ་གཞོན་པ་དང་། བྱད་པར་དུ་འགྲོ་བའོ།

ལེགས་པར་གནས་པ་ཞེས་པ་ནི་དུས་དང་གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ་སེམས་ལ་ཁྱོ་
བ་དང་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་གཡེངས་བ་ལ་སོགས་པའི་ཉོན་མོངས་པའི་དབང་དུ་མི་འགྱུར་
བར་སྤང་ཞིང་སྦྱོབ་དགོས་པ་སོགས་སྤྱོད་འཇུག་དང་ལྷན་ཅིག་སྦྱེས་བྱ་བ་ཀྱི་གཞུང་ལས་
ལུང་འདྲན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་དོ།

སྦྱག་བསྐུལ་གཞོན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་སྤྱོད་ལམ་ནི། ཚོགས་ལམ་དང་སྤྱོར་ལམ་གྱི་ལམ་
སོགས་གང་རུང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དེས་ཚུ་གང་དང་བཞེས་སྒྲོམ་གྱི་སྦྱག་བསྐུལ་གྱིས་སེམས་
མི་གཡེངས་བར་བཟོད་དགོས་པ་རྣམས་སྤྱོད་འཇུག་དང་དབྱང་བཟངས་དང་འཇིག་རྟེན་
གསུམ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་དང་གསང་བ་འདུས་པ་ལ་སོགས་པའི་གཞུང་དུ་བསྟན་པ་
ལྟར་སྦྱོབ་དགོས་པ་བསྟན་ནི།

བྱད་པར་དུ་འགྲོ་བའི་སྤྱོད་ལམ་ནི། སེམས་མཉམ་པར་མ་བཞག་པའི་གནས་སྐབས་
སུ་བྱ་བ་གཞན་ཐེར་ཐུན་གྱི་མདོ་བསྐྱགས་པ་དང་། ཚེ་ཚོ་གདབ་པ་དང་། བསྒྲོར་བ་བྱ་བ་
སོགས་གྱིས་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་བསགས་དགོས་པ་བསྟན།

དེ་ལས་དེ་ལྟ་བུའི་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་ཐོབ་པ་ནས་མཚན་བཅས་དང་མཚན་མེད་
གང་རུང་ལ་སེམས་མཉམ་པར་བཞག་དགོས་པ་བསྟན། མཉམ་པར་བཞག་པ་པོ་དེས་
ཐོག་མར་དབུས་མཐའ་ནས་བསྟན་པའི་ལེ་ལོ་དང་། གང་མས་ངག་བརྗེད་པ། བྱིང་ཚོད། འདུ་
མི་བྱེད་དང་། འདུ་བྱེད་བཅས་ཉེས་པ་ལྟ་ཤེས་པའི་སྒོ་ནས་ཉེས་པ་ལྟའི་གཉེན་པོར་འདུ་
བྱེད་བརྒྱུད་ཀྱང་བསྟེན་དགོས་པ་བསྟན་ནི། དང་པོ་ལེ་ལོ་སྒོར་བྱེད་ལ། འདུན་པ། ཚུལ་པ།
དང་པ། ཐིན་ཏུ་སྦྱངས་པ་དང་བཞི། དྲན་པས་གདམས་ངག་བརྗེད་པའི་གཉེན་པོ་བྱས་པ་
དང་། ཤེས་བཞིན་གྱིས་བྱིང་ཚོད་ཀྱི་གཉེན་པོ་དང་། སེམས་པས་འདུ་མི་བྱེད་པའི་གཉེན་པོ་

དང་བཏང་སྒྲུལ་སྤྱི་ཤིང་ཞོད་མེད་པའི་དུས་སུ་གཉེན་པོ་ལ་ཏུ་ཅང་རྩོལ་བའི་གཉེན་
པོ་བྱེད་དོ།

དེའི་འོག་ཏུ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ལ་ཇི་ལྟར་འཕྲུག་པའི་ཡན་ལག་བསྟན། དང་པོ་
ཞི་གནས་ལ་གཉིས་ཏེ། ཁ་ནང་དུ་བལྟས་པས་ཐོབ་པ་དང་། ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པ་ལ་
དམིགས་པ། ཁ་ནང་དུ་བལྟས་པས་ཐོབ་པའང་གཉིས་ཏེ། ལུས་ལ་དམིགས་པ་དང་།
ལུས་ལ་བརྟེན་པ་ལ་དམིགས་པ་གཉིས་སོ། །དང་པོ་ལུས་ལ་དམིགས་པ་ལའང་གསུམ་
སྟེ། ལུས་ཉིད་ལྟ་དང་། ཀེར་རུས་དང་། དུག་མཚན་ལ་དམིགས་པའོ། །གཉིས་པ་ལུས་ལ་
བརྟེན་པ་ལ་ལྟ་སྟེ། དབྱགས། མཚན་མ་ཕྱ་མོ། ཐིག་ལེ། འོད་ཟེར། དགའ་བདེ་ལ་དམིགས་
པ་རྣམས་སུ་བཤད་དོ། །ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པས་དམིགས་པ་ལའང་གཉིས་ཏེ། སྐྱེ་དང་གསུང་
དང་ཡིག་འབྲུ་ལ་དམིགས་པའོ།

དེའི་འོག་ཏུ་ཞི་གནས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ལྷག་མཐོང་དང་ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བུ་ཞི་ལྷག་
རྒྱང་འབྲེལ་ཡིན་པ་བསྟན། ཞི་ལྷག་རྒྱང་འབྲེལ་ལ་བརྟེན་ནས་ཚས་རྣམས་ཀྱི་གནས་
ལུགས་མཐར་ཐུག་མཐོང་བ་བསྟན། ཞི་ལྷག་རྒྱང་འབྲེལ་གྱི་སྐྱབས་འདིར་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་
དམིགས་པ་དང་རྒྱལ་ཇི་ལྟར་གནས་པའི་སྐྱོར་ལ་རྣལ་འབྱོར་སྟོན་པ་དང་དབྱ་མ་པའི་བར་
ཁྱད་པར་ཡོད་པ་རྣམས་འདིར་རྒྱ་ཆེར་སི་སྟོས་ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་ནས་ཞི་གནས་ལ་མཚན་བཅས་ཞི་གནས་དང་མཚན་མེད་ཞི་གནས་གཉིས་ཡོད་
པ་དང་མཚན་བཅས་ཞི་གནས་མདུན་དུ་མ་བྱས་པར་མཚན་མེད་ཞི་གནས་རྒྱང་པ་སྟོམ་
པས་ཀྱང་ལྷག་མཐོང་སྟེ་བ་འཕགས་པ་འོད་སྤངས་ཀྱིས་ཞུས་པའི་མདོའི་ལུང་དྲངས་ཏེ་
བསྟན་དོ།

དེའི་འོག་ཏུ་རང་གཞན་གཉིས་ཀར་བསྟོ་སྟོན་ཞིག་བཞོད་པའི་ནང་གཞུང་འདི་ནི་རང་
གི་སྤྱི་མཐོང་མན་ངག་ལྟར་བཞོད་པ་ཡིན་པས། འདི་ལས་དགེ་ཚོགས་ཇི་སྟེད་ཅིག་བསྟན་པ་

ནམས་སྤྱི་འགྲོ་སྤྱིའི་ཆགས་སྤང་སྤོངས་གསུམ་གྱི་གདུང་བ་ནམས་དང་མི་ཤེས་པའི་སྤྲན་
 པ་བསལ་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་སྤྱེས་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ནིད་ཀྱི་དོན་ངེ་ལྟ་བུ་བཞེན་དོགས་ཐུབ་
 པའི་སྤྲན་ལམ་འདེབས་ཤིང་། དེ་དང་ཆབས་ཅིག་བདག་ཀྱང་ནམ་པར་གཡེང་བའི་རྒྱུད་ལྟ་
 བུའི་ནམ་པར་དོག་པའི་སྤྲན་པ་རབ་ཏུ་ཞི་ནས་སྤྲ་དུ་ཐུབ་དབང་ནམས་དང་སྤྱོད་ལུ་ལ་
 གཅིག་ལ་ལྟ་བར་ཤོག་ཅེས་སྤྲན་ལམ་འདེབས་སོ།།

གཞུང་གི་མཐུག་བྱང་དུ་གཞུང་མཛད་པ་པོ་སློབ་དཔོན་བྱང་ཚུབ་བཟང་པོའི་མཚན་
 གསལ། གཞུང་འདི་ནི་བོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུ་བ་ཚོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་
 ལྷོ་ཅན་ལས་གཞུང་དོན་ཞུས་ཏེ་ལེགས་སྤྲོད་ནས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་
 ལ་ཐབ་པའི་ཞེས་གསལ་དོ།།

དྲིང་ངེ་འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་གཞུང་ཚན་གཉིས་པའི་མཛད་པ་པོ་

སློབ་དཔོན་ནག་པོ་ཞབས་ཀྱི་ནམ་ཐར།

སློབ་དཔོན་ནག་པོ་ཞབས་ནི་སྤྲན་གྲགས་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བའི་སློབ་དཔོན་ཞིག་ཡིན་ལ། དེ་
 ལ་བྱུང་ཆེན་ནག་པོ་སྤྱོད་པ་དང་། ཀུའམ་ལྷ། སྤྱོད་པ་བ། ནག་པོ་དོ་མེའི་ཞབས། ཀྱིཏྱ་བརྗེ་ཏ།
 ནག་པོ་དམ་ཚིག་དོ་མེ། ནག་པོ་ཞབས་སོགས་མཚན་འབོད་ཚུལ་མང་ངོ་། བྱུང་ཆེན་ནག་
 པོ་སྤྱོད་པ་ཞེས་པ་ནི་སྤྱི་གཟུགས་ནག་ཅིང་སྤྱོད་པ་ལ་གཤེགས་ཤིང་བྱུང་ཆེན་གྱི་བཞིའི་ལ་
 བྱུང་ལོན་པས་དེ་ལྟར་བཞེད་དོ། ཀུའམ་ལྷ་འམ་ཀུའམ་ཞེས་པའི་མཚན་དོན་ནི། ཁ་ཅིག་སྤྲན་
 མཚན་རིང་བ་ལ་བཞེད་པ་དང་འགའ་ཞིག་གིས་ཀུའམ་ཀུའམ་མང་ལ་སྤྱིའི་ཁོངས་སུ་
 བལྟམས་པས་དེ་ལྟར་ཟེར་ཞེས་མཚན་ཐོགས་ཚུལ་མང་ངོ་།།

སྒོན་གྱི་གར་དུ་བྱོན་པའི་སྒོ་བ་དཔོན་ནག་པོ་ཞེས་པའི་མཚན་ཅན་གྱི་སྒོ་བ་དཔོན་གསུམ་དང་། ཡང་འགའ་ཞིག་གིས་ཐ་དད་མིན་པར་གཅིག་ཉིད་ཡིན་པར་འདོད་ཚུལ་བཅས་མཁས་པ་ཁག་གིས་བཞེད་པ་མི་མཐུན་པ་མང་བ་ལྟར། དེ་དག་གི་སྒོར་མདོར་བསྟུས་ཏེ་བཟོད་པ་ལ།

སྒོ་བ་དཔོན་ནག་པོ་སྒྱུད་པ་ནི།⁶⁰ མག་རྩའི་རྒྱལ་བརྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལྟའི་སྒྱུར་སྤྱི་ལོ་བརྒྱ་དྲུག་(༧༡༠ - ༧༡༧)ནང་བྱོན་པ་དེ་ནི་གྲུབ་ཆེན་གྱ་བཞིའི་ཡ་གྲུལ་གཅིག་ཡིན། དེ་ནི་རྒྱལ་པོ་ལྟའི་སྒྱུར་གིས་བཞེད་ས་པའི་སོ་མཐུན་གཙུག་ལག་ཁང་གི་དགེ་སྒྲོང་ཡིན། སྒོ་བ་དཔོན་གྱི་འབྲུངས་ལུལ་ལ་དོས་འཛིན་ཚུལ་མི་འདྲ་བ་ཁག་གསུམ་སྒྲུང་སྟེ། དེ་ཡང་ཁ་ཅིག་གིས་ཏྲུང་སྤེ། འགའ་ཞིག་གིས་ནི་མེའུལ་ནག་དང་། ཡང་ལ་ལས་ཀླུ་ཀར་འབྲུངས་པ་བཅས་བཟོད་ཚུལ་ཐ་དད་ཡོད། རིགས་ནི་བྲམ་ཟེའི་རིགས་ཡིན། བྲིས་གྲུབ་ཆེན་རྣམས་ནི་པའི་ཞབས་ལ་གཏུགས་ནས་གསང་སྟགས་ཀྱི་སྒོ་མ་བ་དང་དབང་བསྐྱར་ནས་བྱིན་གྱིས་བསྐྱབས་ཏེ་སྒྱུད་པ་ལ་གཤེགས། གཤིན་ཏེ་གཤེད་ཀྱི་གདམས་ངག་ཀྱང་གསན། ལྷ་མ་དེ་ཉིད་ལས་དབྱེས་པ་དོ་རྗེའི་གདམས་ངག་གསན་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བསྐྱབས་པ་མཛད་པས་དཀྱིལ་འཁོར་ཞལ་མཛོན་སུ་དུ་གཟིགས་ཤིང་དངོས་གྲུབ་དབག་དུ་མེད་པ་ཐོབ།

ནག་པོ་སྒྱུད་པ་རྒྱུད་པ་ནི།⁶¹ སྒོ་བ་དཔོན་ནག་པོ་སྒྱུད་པ་པའི་རྗེས་སུ་འབྲུངས་ཤིང་། བདེ་མཚོག་དབྱེས་དོར། གཤིན་ཏེ་གཤེད་གསུམ་ལ་མཁས་པར་སྐྱབས་ནས་རྣམས་དང་ཉེ་བའི་གནས་ཞིག་དུ་བདེ་མཚོག་བསྐྱོམས་པས་མཁའ་འགྲོས་ལུང་བསྟན་ཐོབ། སྤྱི་ཆོ་

60. ལྷ་གར་པཎ་ཆེན་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར། དེ་བ་ ༡ གོག་ ༧༧༢ ལྷ་ས་དཔེ་མཛོད་ཁང་། ༡༩༡༢
དེ་བ་སྒྲོན། གོག་གུངས་ ༧༩༩, ༧༧༩, ༨༠༠ སི་ཁྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྱད། ༡༩༧༧

61. ལྷ་གར་པཎ་ཆེན་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར། དེ་བ་ ༡ གོག་གུངས་ ༧༩༩ །
དེ་བ་སྒྲོན། གོག་གུངས་ ༨༧༩ སི་ཁྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྱད། ༡༩༧༧

ཟིང་བར་བཞུགས་པས་ཀྱ་གར་གྱི་རྒྱལ་པོ་རྩམ་པུལ་འི་(༧༧༠ - ༧༧༠) རྩམ་གྱི་དུས་སུ་འང་
བཞུགས་པར་གྲགས་སོ།

ནག་པོ་དམ་ཚིག་དོ་རྩེ་ནི།⁶² ཀྱ་གར་གྱི་རྒྱལ་པོ་མནི་པུལ་འི་(༧༧༧ - ༧༠༣༧) སྐྱ་ཆེ་
སྤང་ཅམ་དང་བོད་དུ་བསྐྱེད་བ་སྤྱི་དར་འགོ་བཙུམས་པའི་སྐབས་སུ་བྱོན། ཁོང་ནི་སློབ་
དཔོན་སངས་རྒྱལ་ཡེ་ཤེས་ཞབས་ཀྱི་བརྒྱུད་འཛིན་ཡིན། སློབ་དཔོན་སངས་རྒྱལ་ཡེ་ཤེས་
ཞབས་ནི་ནག་པོ་སྤྱོད་བ་རྒྱུད་པའི་སྐྱ་ཆེ་སྤང་ཅམ་དུ་བྱོན་པར་གྲགས། དབྱེས་པ་དོ་རྩེ་འི་
དཀྱིལ་འཁོར་མངོན་སུམ་དུ་ཞལ་གཟིགས་ཤིང་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་མཐའ་ཡས་པ་ལ་
མངའ་བཞུགས། རྒྱལ་རྒྱའི་མཁས་པ་སློ་དུག་ལས་གཅིག་ཡིན་པར་འདོད།

དེ་ལྟར་འགའ་ཞིག་གིས་གོང་ཞུས་སློབ་དཔོན་གྱི་མཆོན་རྩམས་སློབ་དཔོན་ནག་པོའི་
མཆོན་གྱི་རྩམ་གྲངས་ཡིན་པས་སློབ་དཔོན་ནག་པོ་གཅིག་ཉིད་བྱུང་བར་འདོད་པ་ཡོད་
ཀྱང་འདིར་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་འི་གཞུང་གཉིས་པ་འདིའི་མཛད་པ་པོ་ནི་སྤྱི་མ་
ནག་པོ་དམ་ཚིག་དོ་རྩེ་ཞུ་བ་སྤྱི་ལོ་བརྒྱ་ཡུག་བཅུ་པའི་མཇུག་དང་བཅུ་གཅིག་པའི་འགོར་
རྒྱལ་པོ་སྤྱོད་ཆེན་རྩམ་མནི་པུལ་དང་ཅུ་པུལ་⁶³གཉིས་ཀྱི་སྐུ་དུས་སུ་བྱུང་བ་དེ་ཉིད་ཡིན་
ནམ་སྙམ་སྟེ། དེ་དང་ལྷན་དུ་གཞུང་སྐྱུར་མཁན་གྱི་ལོ་ལྔ་བ་ཆོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱང་བརྒྱ་
ཡུག་བཅུ་གཅིག་པའི་ནང་བྱོན་པ་དང་། གཞན་ཡང་ཁོང་དང་དུས་མཉམ་དུ་བྱོན་པའི་བོད་
ཀྱི་ལོ་ལྔ་བ་རྒྱལ་བྱིམས་རྒྱལ་བ་དང་འགོས་བྱུག་པ་ལྟ་བུས་བཅས་ཀྱི་ལྷན་དུ་སློབ་

62. ཀྱ་གར་པམ་ཆེན་རྩམས་ཀྱི་རྩམ་ཐར། དེ་བ་ ༡ ཤོག་ ༧༧༡ རྩམ་དཔེ་མཛོད་ཁང་། ༡༩༧༣ །

དེ་བ་སྤྱོད་ཤོག་གྲངས་ ༡༠༡༧ སི་ཁྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྟེན། ༡༩༧༧

63 འོ་ཆོགས་རྩམས་ཁང་དཀར་རྒྱལ་བྱིམས་སྐལ་བཟང་གིས་མཛད་པའི་རྒྱ་གར་གྱི་ནང་པའི་གསང་
སྐགས་ཀྱི་ལྟ་གྲུབ་ཀྱི་ཆོས་འབྱུང་། ཤོག་གྲངས་ ༢༡༠ - ༢༡༡ གངས་སྤོངས་ནང་རིག་མཐུན་
ཆོགས་དཔེ་སྟེན། ༡༩༩༧

དཔོན་ནག་པོས་མདོ་ལྷགས་ཀྱི་གཞུང་མང་དག་ཅིག་བསྐྱར་ཞུས་གནང་ཡོད། ཅིག་པོས་
གྲུབ་ཆེན་ནག་པོ་སྤྱད་པའི་ཞབས་ནི་རྒྱ་གར་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལྟའི་སྤྱོད་གི་སྤྱོད་ཅིང་ལ་བྱོན་པའི་
གྲུབ་ཆེན་རྒྱལ་ནུང་འདི་སྤྱོད་པ་ཡིན་པས་ལོ་རྩ་བ་འགོས་ཁྲག་བ་ལྟ་བཙས་དང་ཚུལ་
ཁྲིམས་རྒྱལ་བ་དང་ཆོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་སོགས་ཀྱི་ཞབས་ཀྱིས་མ་ལོན་བ་དུས་ཀྱི་བར་ཐག་
ལས་རྟོགས་ཐུབ།

སྤྱིར་སྤྱོད་དུས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྲབ་པའི་གྲུབ་པ་ལ་མངའ་བརྟེན་པའི་སྤྱོད་བྱ་དམ་པ་
རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཆའི་ཆད་ཇི་ཙམ་བཞགས་བ་དང་འགྲོ་བའི་དོན་ཇི་སྤྱོད་ཅིག་མཛད་ཚུལ་ལ་
མཐའ་ཅིག་དུ་ཁ་མཆོན་བཅད་དགའ། འོན་ཀྱང་གོང་དུ་ཉིང་འཛིན་ཆོགས་ཀྱི་ལེའུའི་
གཞུང་གཉིས་པའི་མཛད་པ་པོ་ནི་སྤྱོད་དཔོན་ནག་པོ་དམ་ཆོག་དོ་ཇི་ཉིང་ཡིན་ནམ་སྤྱོད་པ་
འདི་ནི་ཕྱིས་བྱུང་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་བཏོད་པའི་རྒྱ་གར་གྱི་སྤྱོད་དཔོན་རྣམས་བྱོན་ཚུལ་
ཀྱི་རེའུ་མིག་བཏོད་པ་རྣམས་གཞིགས་བཏོད་པ་ཙམ་མོ།

སྤྱོད་དཔོན་ནག་པོ་བ་དང་ནག་པོ་ཞབས་ཀྱིས་མཛད་པའི་གཞུང་

སྤྱི་དགོ་བསྐྱར་འགྱུར་དུ་བཞགས་པའི་མཆོན་བྱང་ཁག་ནི།

Toh.1187 རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་དགྲེས་པའི་དོ་ཇི་ཞེས་བྱ་བ་སྤྱོད་མ་བཏག་པ་
གཉིས་པའི་དཀའ་འགྲེལ་དུན་པའི་འགྱུར་གནས་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.1195 འཕགས་པ་མཁའ་འགྲོ་མ་དོ་ཇི་གྱར་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་
ཆེན་པོའི་བཏག་པ་དང་པོའི་རྒྱལ་པོའི་བཤད་སྤྱད།

Toh.1252 དཔལ་དགྲེས་པ་དོ་ཇི་དཔའ་བོ་གཅིག་པའི་སྤྱོད་པའི་ཐབས།

- Toh.1253 དགེས་པའི་རྩོམ་སྤྱོད་པའི་ཐབས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསལ་བར་བྱེད་པ་
ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1254 དཔལ་དགེས་པའི་རྩོམ་གཞུང་འགྲེལ་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཆོ་ག།
- Toh.1255 སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་ག།
- Toh.1256 དགེས་པ་རྩོམ་སྤྱོད་སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་ག།
- Toh.1257 རབ་གནས་ཀྱི་ཆོ་གའི་ཚུལ་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1258 ཚོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་མཆོད་པའི་རིས་པ།
- Toh.1259 མཆོད་རྟེན་གྱི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1260 གཤེན་གྱི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1300 འབྲུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཏོར་མའི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1447 དཔལ་བདེ་མཆོག་འཁོར་ལོའི་སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་ག།
- Toh.1451 རིས་པ་བཞི་པ།
- Toh.1452 རིས་པ་བཞིའི་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1453 ཡི་གེ་བདུན་པའི་སྤྱོད་ཐབས།
- Toh.1460 སྡོམ་པ་བཤད་པ།
- Toh.1537 དཔལ་བདེ་མཆོག་འཁོར་ལོའི་སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་ག།
- Toh.1637 སྦྱིའི་ཆོས་སྦྱོང་།
- Toh.1638 རིགས་ལྔ་མཁའ་འགྲོའི་བསྟོད་པ།

- Toh.1639 དཔལ་ཉེ་རྩ་ཀ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ལ་བསྟོན་པ།
- Toh.1640 བདུན་ཚོགས་ཀྱི་ཚོ་ག
- Toh.1819 དཔལ་གསང་བ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཚོ་ག
- Toh.1820 རྩ་མེ་མེས་དབང་མཆོད་པའི་ཚོ་ག
- Toh.1821 གཏོར་མའི་ཚོ་ག
- Toh.1822 རབ་དུ་གནས་པའི་ཚོ་གའི་རིམ་པ།
- Toh.1954 གཤིན་རྩེ་གཤེད་རོ་སྟེག་གི་ཚོ་ག་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1955 ཚོགས་ཀྱི་འཁོར་ལའི་ཚོ་ག་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1956 གཤིན་རྩེ་གཤེད་ནག་པོའི་ཞི་བའི་སྒྲིན་སྟེག་གི་ཚོ་ག་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.1957 ཡི་དྲགས་ཐམས་ཅད་རྩེ་མེས་བཅེངས་པ།
- Toh.2087 འཕྲ་བ་དཔལ་གཤིན་རྩེ་ཚོ་བདག་ནག་པོ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.2088 བྱས་ཀྱི་ཚོ་ག་སྒྲིབ་བ་སྟོང་ཞིང་བར་ཆོད་བསལ་བ།
- Toh.2089 དཔལ་གཤིན་རྩེ་ཚོ་བདག་ནག་པོའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཚོ་ག
- Toh.2189 གསང་བའི་བདག་པོ་ལག་ན་རྩེ་མོས་སྒྲིན་པོ་ཅན་གྱི་སྒྲུབ་ཐབས།
- Toh.2282 ཚོགས་སུ་བཅད་པ་ལྷ་པ་ཞེས་བྱ་བ།
- Toh.2291 རྩེ་མེའི་སྒྲ།
- Toh.2437 འབྲེལ་མེད་གྱི་ལྷ་བ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.2492 ཚོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་ཚོ་ག

Toh.3720 ཐེག་པ་ཆེན་པོ་བསྐྱུས་པའི་སྒྲོན་མ།

Toh.3858 དབྱ་མ་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.3920 ལུས་ཡོངས་སུ་དབྱུད་པའི་བསྒྲོམ་པའི་རིམ་པ།

Toh.3925 ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ།

སྒྲོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ནག་པོ་ཞབས་ཀྱིས་མཛད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་

ཚོགས་ཀྱི་ལེའུའི་བསྐྱུས་དོན།

ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་པའི་གཞུང་ཚན་གཉིས་པ་འདི་ནི་སྒྲོབ་དཔོན་ནག་པོ་ཞབས་ཀྱིས་མཛད་ཅིང་ལོ་རྒྱུ་བ་ཚོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ལེགས་སྦྱར་ནས་བོད་སྐད་དུ་ཐབ་བསྒྱུར་མཛད་པའི་གཞུང་ཚན་ཞིག་གོ།

གཞུང་འདི་ནི་དེ་གྱིས་བཛྲོད་བྱ་བསྐྱུས་པ་གསུམ་ལས་བསྐྱུས་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དོན་བསྐྱར། འགྱུར་བྱ་གྲུང་སངས་རྒྱུས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ལ་བྱས་འདུག་པས་ཇོད་བྱེད་སྡེ་སྡོད་གསུམ་ལས་མདོ་སྡེའི་སྡེ་སྡོད་ཀྱི་ཁོངས་སུ་གཏོགས་སོ།

གཞུང་འདི་ནི་དེ་གྱི་ནང་བཤད་བྱ་གཙོ་བོ་ནི་སྒྱེ་འགྲོ་སྒྱེ་དང་། ལྷག་པར་དུ་ཐར་པ་དོན་གཉེར་གྱི་གང་ཟག་རྣམས་མི་ལུས་རིན་པོ་ཆེ་ཐོབ་པ་དོན་ཡོད་པར་བྱ་བྱིར་བཟང་སྤྱད་ཀྱི་སྤྱོད་ཚུལ་ལ་ཇི་ལྟར་བསྐྱུས་ཚུལ་བསྐྱར་པའི་གཞུང་ཚན་ལ་དོན་ཟབ་ཅིང་སྤང་བདེ་བའི་གཞུང་ཡིད་འཕྲོག་པ་ཞིག་དུ་སྤྱང་། གཞུང་ཡོངས་ཇོགས་ཀྱི་བཛྲོད་བྱ་གཙོ་བོ་ཡན་ལག་རྣམས་བདུན་དང་ཁ་སྐོང་གི་ཡན་ལག་གཅིག་བཅས་བརྒྱད་དུ་བསྐྱུས་པ་ཞིག་ལགས།

གཞུང་བཅད་ལྷན་སྒྲིལ་མ་གསུམ་ལས་ལྷན་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་གནས། གཞུང་གི་
རང་བཞིན་རྩོམ་གཞི་ཐོག་མའི་ཡན་ལག་བདུན་གནས་པའི་སོ་སོའི་ནང་གདམས་ངག་མི་
འདྲ་བ་བདུན་བདུན་དང་། ཁ་སྐོང་གི་ཡན་ལག་གཅིག་གི་ནང་གདམས་ངག་རྣམས་པ་བཞི་
བཞུགས་སོ།

ཡན་ལག་བདུན་པོ་ནི་ཐོན་དུ་འགྲོ་བ་དང་། ཡ་རབས་ཀྱི་སྤྱོད་ཚུལ་ལས་མི་ཉམས་པ་
དང་། བར་ཆད་སྤངས་པ། གཞེན་བསྐྱུལ་བདེ་བ་པ། གཏུང་བ་བཅད་པ། མངོན་དུ་འགྱུར་པ།
ལུས་བསྐྱང་ཞིང་གཞོད་པ་བསལ་བའི་ཡན་ལག་སྟེ་བདུན་ནོ།

ཡན་ལག་དང་པོའི་ནང་རང་ཉིད་མཆོག་གསུམ་ལ་དད་པ་བརྟན་པ་དང་། ལམ་གྱི་རྩ་
བ་བཤེས་གཉེན་བསྟེན་ཏེ་དེའི་ཡོན་ཏན་མཐའ་དག་བྲུངས་ཏེ་དེ་ཉིད་ལ་གུས་པ་དང་།
གདམས་ངག་ལ་བརྩོན་དགོས་པ་སོགས་བསྟན།

ཡན་ལག་གཉིས་པའི་ནང་འཛིག་རྟེན་པའི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བས་མི་གོས་པ་དང་རང་ཉིད་
ཡ་རབས་ཀྱི་སྤྱོད་ཚུལ་ལས་མི་ཉམས་པར་བྱ་བྱིར་གཞན་སྤྱོད་མི་བརྟག་པ་མ་ཟད་དེའི་
ཉིས་པ་མི་བཟླ་བ་དང་། རང་ཉིད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ལ་སྦྱོར་སེམས་བསྐྱེད་མི་རུང་བ་དང་། རོ་
ཆ་ཤེས་པ་དང་ཁྲལ་ཡོད་པ་དང་ལྷན་དགོས་པ། རོ་དགའ་དང་གསར་འགྲོགས་མེད་ཅིང་
རྟག་དུ་བྱུངས་ཐུབ་པར་གནས་དགོས་པ་རྣམས་བསྟན་ཏོ།

ཡན་ལག་གསུམ་པའི་ནང་ཉིང་འཛིན་བསྟོམ་པ་ལ་བར་ཆད་བྱེད་པའི་རྒྱ་གཙོ་པོ་
རྣམས་ནི་འདོད་རྒྱུང་ཆོག་ཤེས་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་པས། ཟས་གོས་སོགས་མང་པོ་ལ་ཆགས་
པ་མེད་པའི་འདོད་པ་རྒྱུང་བ་དང་། ཟས་གོས་སོགས་རན་པ་ཙམ་སྤྱོད་དེ་ཆོག་ཤེས་བྱེད་
དགོས། གལ་ཏེ་འདོད་རྒྱུང་ཆོག་ཤེས་ལེགས་པ་ཞིག་མེད་ན། འདོད་ཡོན་ལ་སོགས་པར་
ཆཏནས་ནོར་རྩས་གསོག་སྤངས་ལ་གཡེངས་ཏེ་ཉིང་འཛིན་བསྟོམ་པ་ལ་སྤྱོད་པ་མི་བསྐྱེད།

དོན་མེད་གྱི་གཏམ་དང་བྱ་བ་པ་ལ་པ་ལ་སོགས་པའི་འདྲ་འཛིན་སྤངས་ན། དོན་མེད་གྱི་བྱ་བྱེད་དང་། གཏམ་སོགས་ཀྱིས་དྲུས་འདས་ཏེ་ཉིང་འཛིན་སྤོམ་པ་ལ་བར་ཆད་འགྱུར་རོ། དེ་བས་ན་རྣམ་གཤམ་མེད་པའི་དོན་ཆེན། བྱ་བ་ཉུང་བྱ་བྱེད་ན་བསམ་གཏན་སྐྱེད་པ་ལ་གོགས་སྤྱ་འགྱུར་བས་འདོད་ཚུང་ཆོག་ཤེས་ངང་གིས་བྱུང་། ཡང་ཉིང་འཛིན་སྤོམ་པ་ལ་མི་སྦྱོ་ཞིང་གཞུག་པར་མི་འདོད་པའི་རྒྱའི་གཙོ་བོ་ནི་ལེ་ལོ་ཡིན་པས་དེ་སྤོང་དགོས་པ་དང་། དེ་སྤོང་བར་ཤིན་སྤངས་བསྟེན་པའི་སྤོ་ནས་སྤོང་དགོས་པ་སོགས་བསྟན། མདོར་ན་ཡན་ལག་འདིར་བྱི་འདྲ་འཛིན་དང་ནང་རྣམ་གཤམ་གཉིས་ཀྱི་སྤོང་དགོས་པ་ལྟ་བུ་བསྟན།

ཡན་ལག་བཞི་པས་གཙོ་བོ་བྱི་ནང་གི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྟག་བརྟན་མེད་པ་དང་ཐམས་ཅད་སྐྱབ་བསྐྱལ་སྐྱེད་བྱེད་གྱི་རྒྱ་ཡིན་པ་དང་། རང་ནམ་འཆི་ངེས་པ་མེད་ཅིང་བསགས་སྤང་གི་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རང་འཆི་བའི་འོག་ཏུ་པན་པ་མེད་པ་དང་། རང་ཉིན་རེ་བཞིན་གས་ཤིང་ཤུད་པར་འགྱུར་པ་སོགས་ཤེས་པའི་སྤོ་ནས་རྟག་བརྟན་མེད་པའི་འཁོར་བ་འདི་ལ་ངེས་འགྱུར་གྱགས་དྲག་ཅིག་བསྐྱེད་པར་བྱས་ཏེ། མི་ལུས་རིན་པོ་ཆེ་ཐོབ་པ་དོན་ཡོད་པ་དང་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་བསྟན་པའི་ཆོས་རྣམས་རྩལ་བཞིན་སྐྱབ་པ་ལ་ཞུགས་སྐབ་ན་ཅི་མ་རུང་སྟམ་པ་རྣམས་བསྟན་ཏོ།

ཡན་ལག་ལྔ་པས་གཙོ་བོ་བྱི་རྟེན་སོགས་ལ་སྤེད་པ་དང་། རང་སེམས་ཅན་གྱི་འཇིག་རྟེན་ལ་ཆགས་པའི་བསམ་བ་གཉིས་སྤང་དགོས་པ་བསྟན། སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་མདོ་སྐགས་ཀྱི་གསུང་རབ་རྣམས་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བས་རང་གི་སྦྱོབ་ཀྱང་རྟོགས་པར་དཀའ་བ་དང་སྦྱོབ་ཐབས་བྱས་ཀྱང་སྤོངས་པ་དང་ལེ་ལོས་ཤེས་པར་མི་འགྱུར་བ་དང་ཆེ་ཟད་པར་འགྱུར་བ་དང་། འཇིག་རྟེན་སྟན་མོང་བའི་རིག་པའི་གནས་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་སེམས་ཅན་ལ་དེ་ཙམ་གྱི་ཕན་པ་སྐྱབ་མི་བྱུང་སྟེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་མགྲག་བར་དཀའ་བ་དང་། བྱི་ནང་གི་དངོས་པོ་རྣམས་ནི་སྤྱི་མ་དང་མི་ལམ་ལྟ་བུ་ཡིན་པས་སྤོང་བོ་མེད་པའི་

སྒྲོ་ནས་ཐུན་དུ་དབྱེད་དེ། རང་གི་ཆགས་སྟེང་སྒྲོངས་གསུམ་གྱིས་གདུང་བ་དག་བཅད་
དགོས་པ་བསྟན་ནོ།

ཡན་ལག་དྲུག་པས་དངོས་པོ་དང་འདྲ་འཛི་ལ་ཆགས་སྟེང་སྒྲོངས་པའི་འདུན་པ་སྟོན་
དུ་སོང་བའི་རྗེས་སུ་རེ་དྲོགས་འཛིགས་གསུམ་སྒྲོངས་ཤིང་དབེན་པ་བསྟེན་ཏེ་ལྷ་མཉེས་པ་
དང་ཉེ་བ་དང་ལྷ་མཛོན་དུ་བྱ་བ་གསུམ་ལ་བཙོན་དགོས་པ་དང་། དབེན་པ་བསྟེན་པའི་
སྐབས་སུ་སེམས་དཔའ་ཞིང་རྒྱལ་པོ་དེ་ཆེ་བ་དང་རྟགས་མཚན་ལེགས་ཉེས་ཇི་བྱང་ཡང་སྒྲོ་
མ་གཡེངས་པར་རང་གི་བསྐྱབ་བྱའི་དོན་མ་གྲུབ་ཀྱི་བར་དུ་སྟོག་གི་ཕྱིར་ཡང་མི་གཏོང་
བའི་དམ་བཅའ་བརྟན་པོ་ཞིག་སྒྲུང་དགོས་པ་བསྟན་ནོ།

ཡན་ལག་བདུན་པས་དབེན་པ་བསྐྱིམ་པའི་དུས་སུ་ལུས་སེམས་གཉིས་ཀ་གཅེས་
པས་སྒྲུང་དགོས་པ་བསྟན་ཞིང་། བྱེད་པར་དུ་ལུས་བསྐྱང་བར་ཟས་གོས་སོགས་འཚམ་པ་
དང་། གནས་བདེ་ཞིང་བཟང་བ་དང་། ལུས་སེམས་ལ་ངལ་དུབ་མང་དུ་མི་བྱ་བ་དང་། ནམ་
སྟེང་དང་ཉིན་སྟེང་དང་ཟས་ལ་སྒྲོད་པའི་སྐབས་སུ་དམིགས་པ་ལ་འབད་བཙོན་བྱ་མི་རུང་
བ་དང་། ལུས་སེམས་ངལ་དུབ་སྐབས་སྒྲོ་བ་བསང་བ་དང་དམིགས་པ་སྒྲར་གསོ་ཕྱིར་བྲ་
མའི་མན་ངག་དུན་པའི་སྒྲོ་ནས་ལུས་བསྐྱང་ཞིང་གཞོད་པ་བསལ་དགོས་པ་བསྟན་ནོ།

ཁ་སྐོང་ཡན་ལག་གཅིག་ནི། དབེན་པར་ཉིང་རེ་འཛིན་སྐྱབ་པའི་དུས་སུ་སེམས་
རྒྱགས་ཤིང་དགེ་བ་ལ་སྒྲོ་བ་ཞུས་པ་བྱུང་ཆོ། རང་གི་རང་ལ་གཞིན་སྐྱལ་བཏབ་ཏེ་དམིགས་
པ་སྐྱིམ་དགོས་པ་དང་ལུས་ལ་གཞོད་པ་དང་སེམས་ལ་རྣམ་རྟོག་སོཾ་བྱུང་ན་རང་གི་
རྟོགས་པའི་ཉམས་དང་མདོ་དང་རྒྱུད་ཀྱི་མན་ངག་གིས་བཅས་དགོས་པ་སོགས་དང་།
སེམས་ཅན་གྱི་ཉོན་མོངས་དང་རྣམ་རྟོག་འདྲ་མིན་རྣམས་ལ་གཉེན་པའི་སྒྲོར་མདོ་སྟེ་རྒྱས་
པ་རྣམས་ལས་ཤེས་དགོས་པ་རྣམས་ཁ་སྐོང་བའམ་གཞུང་དོན་ཡོངས་རྫོགས་ཀྱི་བསྐྱས་
དོན་ལྷ་བྱར་བསྟན་ནོ། །མཐར་འགྱུར་བྱུང་དུ་གཞུང་དེ་ཉིད་ཀྱི་མཛད་པ་པོ་སྒྲོབ་དཔོན་གྱི་ཕྱོ་
པ་དང་བོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུ་བ་དག་སྒྲོང་ཆོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བསྐྱར་བའི་གསལ་ཁ་བསྟན་ནོ།

གཞུང་ཆོན་གཉིས་ཀྱི་སྤྱར་བྱེད་ལོ་རྒྱ་བ་ཆོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱི་རྣམ་ཐར།

ལོ་རྒྱ་བ་ཆོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡབ་ཡུམ་གྱི་མཆོན་དང་འབྲུངས་ཡུལ་གསལ་ཁ་མེད་
ནའང་སྤྱི་ལོའི་དུས་རབས་བཅུ་གཅིག་པའི་འགོ་འཛུགས་ཅམ་ལ་སྤྱི་འབྲུངས་པའི་སྤྲན་
གྲགས་ཆེ་བའི་ལོ་རྒྱ་བ་ཆེན་པོ་ཞིག་གོ། ཁོང་གིས་ཐོག་མར་བོད་ནས་མདོ་སྤྲགས་རིག་
གནས་དང་བཅས་པར་གསན་བསམ་དཔྱིས་སྤྲན་བ་གནང་ཞིང་། དེ་ནས་ཁ་ཆེ་གསྐྱེར་དང་།
བལ་ཡུལ་དང་། རྒྱ་གར་སོགས་སུ་མེདས་ཏེ་པར་བྱུང་མང་པོའི་ཞབས་ལ་གཏུགས་ནས་
མདོ་སྤྲགས་གཉིས་ཀྱིས་གཙོས་པའི་ལེགས་སྤྱར་བཅུ་སྟོད་པའི་གཞུང་ལུགས་དུ་མར་
སྤྱངས་པ་མཐར་སྤྲན་བ་མཛད། ལེགས་སྤྱར་གྱི་སྐད་ལ་བྱང་ཞིང་རྒྱབ་པར་མཛད་ནས་རྒྱ་
གཞུང་གི་གཞུང་ཆོན་བརྒྱ་ལྷག་མི་ལོང་བ་ཅམ་ལེགས་སྤྱར་ནས་བོད་སྐད་དུ་སྐབ་བསྐྱར་
གནང་སྟེ་རང་རེ་བོད་མི་རྣམས་ལ་བཀའ་དྲིན་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བར་གྱུར།

ལོ་རྒྱ་བ་དེ་ཉིད་དང་མཆོན་གཅིག་པའི་མ་ཆོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཅེས་བ་ཞི་བྱེད་སྤྱི་
བར་གསུམ་ལས་བར་པའི་བརྒྱད་པ་རྒྱས་པར་བྱེད་པོ་གཉིས་གཅིག་ཏུ་འབྲུལ་ནས་ལོ་རྒྱ་
བ་འདི་སྤྱི་ལོ་བརྒྱ་ལྷག་བཅུ་གཉིས་པའི་ནང་འབྲུངས་པར་འདོད་པ་ནི་བདེན་པ་མིན་ནོ།
ཡང་ཁ་ཅིག་རྟོག་ལོ་ཆེན་པོས་རྒྱད་སྒྲར་རྒྱུ་རྒྱུ་ཆུང་མཛད་པར་ཁོང་གི་སྟོབ་མ་གྱི་ཡུང་བ་སྟོ་
གྲོས་འབྲུང་གནས་དང་། ཞང་ཆེ་སྟོང་བ་ཆོས་ཀྱི་སྤྱུ་མས་ཀྱང་རྒྱུ་རེ་མཛད། དེ་གཉིས་
ལ་བརྟེན་ནས་ཞང་གི་སྟོབ་མ་ཉང་བུན་པ་ཆོས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་འབྲེལ་བ་མཛད་ཅེས་
གསུངས་པས་ན་ཞང་གི་སྟོབ་མ་ཡིན་པ་གསུངས་ཤིང་འདི་ཡང་མཆོན་མཆུངས་ཀྱང་དོན་
ལ་ལོ་རྒྱ་བ་འདི་ཉིད་ཡིན་ཆོད་མི་འདུག།

ལོ་རྒྱ་བ་འདིས་རྒྱ་གར་གྱི་སྟོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་སུམ་ཐུང་དང་། འུ་ལྷ་རམས་དང་།
ཀྲི་ལུ་ཡུ་ཡུ་དང་། ཨུ་ལུ་ཡུ་ཡུ་དང་། སྤུ་ལུ་ཡུ་ཡུ་དང་། ཨུ་ལུ་ཡུ་ཡུ་དང་། རྒྱ་ལུ་ཡུ་ཡུ་དང་།
དུ་མདོ་སྤྲགས་གཉིས་དང་ཤེར་བྱིན་དབྱེ་མ་སྤྱིངས་ཡིག་སྤྲན་མོང་བ་ལུགས་ཀྱི་བསྐྱར་

བཅས་སོགས་ཀྱི་གཞུང་གི་ཆོས་ཚན་གྱི་བདུན་ཅུ་བསྟར་ཡོད་པ་ནམས་ལས་གྲགས་ཆེ་
བ་འགའ་ཞིག་ནི།

Toh.643 འཕགས་པ་བྱམས་པས་དམ་བཅས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཞུང་ས།

Toh.747 འབྱུང་པོ་འདུལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ།

Toh.1192 དཔལ་དགེས་པའི་དོ་རྩེའི་དཀར་འབྲེལ་དོ་རྩེའི་ཆོག་བདུ་བ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.1345 གསང་ཆེན་དགའ་བའི་ཐིག་ལེ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.1431 དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་དབང་གི་བྱ་བ་མདོར་བསྟུས་པ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.1496 སྟོད་པའི་སྟུ།

Toh.1861 རྩེ་བཙུན་འཕགས་པ་གཞོད་འཛིན་རྒྱུ་དབང་གི་སྐྱབ་པའི་ཐབས།

Toh.1919 དཔལ་གཤིན་རྩེ་དགྲ་ནག་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་དཀར་འབྲེལ་
རིན་པོ་ཆའི་སྟོན་མ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.1931 དཔལ་གཤིན་རྩེ་གཤེད་དགྲ་ནག་པོའི་སྐྱབ་ཐབས། འཁོར་ལོའི་དོན་
རྒྱས་པར་བཤད་པ་དང་བཅས་པ།

Toh.1935 གཤིན་རྩེ་གཤེད་དགྲ་ནག་པོའི་སྐྱབ་པའི་ཐབས་ཀུམ་ཁ་ཁྱུད་ཁ་བྱེ་བ་ཞེས་
བྱ་བ།

Toh.1962 ནག་པོ་ཞལ་གསུམ་སྐྱབ་དུག་པའི་སྐྱབ་ཐབས།

Toh.1963 འོ་མའི་སྐྱབ་པའི་ཐབས།

Toh.1970 དཔལ་དོ་རྩེ་འཛིགས་བྱེད་རྒྱུད་ཀྱི་དཀར་འབྲེལ།

Toh.2490 དཔལ་གསང་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྟེའི་ཆོ་གའི་སྟོང་པོ་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.2545 འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་མཚན་ཡང་དག་པར་བཤིང་བའི་དགྱིལ་
འཁོར་གྱི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.2625 འཕགས་པ་ངན་སོང་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྦྱོང་བ་གཟི་བུ་གྱི་
རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཆོ་ག་ཞིབ་མའི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་བ།

Toh.3689 འཕགས་མ་སྒྲོལ་མའི་སྐྱབ་ཐབས།

Toh.3712 ཐེག་པ་གསུམ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.3763 མརྒྱལ་གྱི་ཆོ་ག།

Toh.3796 ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་དུ་བྱིན་པའི་མན་ངག་གི་བསྟན་བཅོས་མངོན་པར་
རྟོགས་པའི་རྒྱན་གྱི་ཆོག་ལེའུར་བྱས་པའི་འགྲེལ་བཤད་ཆོག་རབ་དུ་
གསལ་བ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.3851 ཡེ་ཤེས་སྣང་པོ་ཀུན་ལས་བདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.3852 ཡེ་ཤེས་སྣང་པོ་ཀུན་ལས་བདུས་པའི་བཤད་སྟར།

Toh.3924 ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.3925 ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ།

Toh.4192 སྒྲོབ་མ་ལ་སྤྲིངས་པའི་འགྲེལ་བ།

Toh.4332 ཆོགས་སུ་བཅད་པ་བརྒྱ་བ།

འདི་རྣམས་མཚོན་དོན་ཅམ་དུ་བཀོད་པ་ཡིན་ནོ།

ཞེས་ཉམས་ཞིབ་པ་ཆེ་རིང་སྒྲོལ་དཀར་གྱིས་བྲི་ལོ་ ༢༠༠༧ ལྷ་ ༢ ཆོས་ ༡ ཉིན་བྲིས་པ་
དགེ་བའི་རྒྱར་འགྱུར་ཅིག ། །

आचार्यबोधिभद्र-कृष्णपाद-विरचितौ
समाधिसम्भारपरिवर्तौ

སྤྱོད་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོ་དང་ནག་པོ་ཐབས་ཀྱིས་མཛད་པའི།

ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚཱས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བའི་

གཞུང་ཚན་གཉིས།

རང་གི་སེམས་ནི་བདུད་ཅེས་གསུངས།
རང་གི་སེམས་ཉིད་བགེགས་ཡིན་ནོ།
རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས།
བགེགས་ཀྱན་རྣམ་པར་རྟོག་ལས་འབྱུང་།

(དེ་མེ་ཅེ་མེ་ལྷུང་། ༢༠༥ བ ༢)

भारतीय (संस्कृत) भाषायाम् - समाधिसम्भारपरिवर्तनाम् ।
(भोटभाषायाम् - तिङ्ङेज्जिन ग्यि छोगस् क्यि लेउ शेस् व्य व ।)

नमः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः ।

नत्वा मुनीन्द्रान् खलु पुत्रयुक्तान्
यावद्भवं संस्थितिशालिनश्च ।
आख्यायते पारमिमन्त्रयोश्च
सूत्रानुगोऽयं हि समाधिभारः ॥

प्रायो लोकस्त्विदानीं गृहनियमनगो मारपाशातिबद्धः
तृष्णाबन्धादिबद्धः स्मरपटुविहितैर्लोकपालैश्चतुर्भिः ।
भूयिष्ठं भिक्षवोऽपि स्मरयुगजगतीपालकानामधीनाः
पुण्यापुण्याविवेका गृहिसमचरणा दुष्प्रपाता विशीलाः ॥
त्यक्तस्वर्गास्ततः स्वस्मृतिकरणकृते नान्यलाभाशयेदम्
कश्चिद् वा मे सभागो रमत इह सुधीर्वाक्यमेतच्छृणोतु ॥

अत्र समाधिसम्भाराङ्गानि नवधा प्रहेय-पूर्वङ्गम-निवृत्ति-तापच्छेद-
चित्तसंवेग-गुणानुस्मृति-वीर्य-संबन्ध-स्थित्युपायाख्यानि ।

[प्रहेयाङ्गानि]

तत्र प्रहेयं तु मारकर्म - तत्र को मारः, किञ्च तत्कर्म ? मारस्तुकामदेव
इति पापः, (अस्य) भार्या पद्ममालिनी, परिवारश्चत्वारो लोकपालाः, मारकुलं
प्रेतसहिता ये केचित् ।

तेषाम् कर्म, सभार्यस्य तस्य कामदेवस्य मूर्ध्नि पञ्चपुष्प-बाणाः सन्ति,
तद्यथा-उन्मादन-मोहन-संमोहन-मूर्च्छन-निश्चेतनाख्याः । तस्य तेषां पुष्पाणां
तत्प्रहारघातेषु पञ्चक्लेशेषु योऽधिमात्रस्तद्घातमात्रेण प्रज्वलति, तद्वशीभूतो
मोक्षाभ्युदयतो हीयते ।

तस्य परिवारश्चतुर्लोकपालाः, तद्यथा-कलह-विक्षेप-अभ्यासङ्ग-
संज्ञाविपर्ययकराः । तत्मारकर्माणि तु नानाविधानि । यथा-तत्कलहकारिमारो
मार्गभावनायां कलहं विवादं विग्रहं च प्रवेश्य, तत्प्रत्ययबलात् सिध्यति । तेन

विक्षेपकारिणा मारेण मार्गभावनायां स्त्यानमिद्धप्रवृद्धिः, धर्मश्रवणेऽपि निद्राप्रयोगः, कस्मिंश्चिद् विक्षेपोऽवस्थाप्यते, तेनाभ्यासक्तमारेण प्रायो गार्हस्थ्येऽन्तरायः—दानकाले उपस्थिते पुत्रस्य पुत्र्याः भार्याया आत्मनश्च को भोग इत्यनेन स्वमांसच्छेदवत् संज्ञोपसंहारः । संज्ञाविपर्यस्तश्च यो मारस्तेन प्रायः प्रव्रज्यापक्षो दूष्यते । एवं प्रव्रज्याचित्तोपस्थितौ मैथुनसुख-भोजनपानसुख-स्वजनकाय-गीतनृत्यादिस्मरणेन रागः, तस्य स्वजनेन वञ्चन-प्रलोभन-तर्जन-ग्रहेण तस्य निःसरणे विघ्नः । प्रव्रजितेष्वपि स्त्रीलिङ्गमनसिकार-पूर्वपरिहास-क्रीडास्मरण-वाणिज्यकृषिकर्म-स्वसंबन्धविश्वस्तमानसस्य चित्तोत्पादे स्वप्ने स्त्रीकल्पकस्य तस्य राग-बीजोत्पादो नानाप्रकारेणापि प्रव्रज्यायाः प्रपातयन् तस्य ब्रह्मचर्यं मलिनमपि करोति । इमे चत्वारोऽपि जम्बूद्वीपिनां पीडनार्थं क्रूरनागान् प्रेरयन्ति । असुरान् प्रेरयन्तः शस्यं विनाशयन्ति । धार्मिकमनुष्याणां प्राणान् हरन्तः काये नाना रोगान् विसर्जयन्ति । चतूराजभिरधर्मावचरेभ्यो दण्डप्रदानवद् इमे हि धार्मिकान् दण्डयन्ति ।

मारकुलप्रेताः—एतानि षट्त्रिंशत्प्रेतकुलानि एककुलत्वेन गण्यन्ते । तेषां मारकर्माणि तु-ध्यातृषु स्वप्ने भयोत्पादनम्, बुद्धकायलक्षणव्यञ्जनधारणेनोप-देशान्तरायः, ध्याने समाहिते सति महाप्रणादगर्जनमिति । समासतो मारमारकुलपर्यापन्नेषु सर्वसंप्रस्थितेषु रागोत्पादेन भयोत्पादेन वा अन्तरायाः । तद्यथा—**त्रैलोक्यविजयमहाकल्परजः** उक्तम् —

कृच्छ्रव्रतं गृहीतस्य सिद्धौ मारकुलं तथा ।

देव्यश्च कामरूपिण्यः परकायेऽपि तादृशम् ॥

रूपैर्नानाप्रकारैश्च घ्नन्ति वै संवृतेन्द्रियम् । इति ।

अत्र व्रतग्रहणमुपलक्षणम्, समस्तचित्तकर्माण्यपि ता उपघ्नन्ति ।

तानि तादृङ्मारकर्माणि कुत उत्पद्यन्ते इति चेत्, शुद्धाशयेन सम्यग्वीर्यवति उत्पद्यन्ते । यथा **आर्यमञ्जुश्रीविकुर्वाणपरिवर्त (नाममहायान-सूत्र)** उक्तम्—
“मञ्जुश्रीः ! बोधिसत्त्वानां मारकर्म कुत्र उद्भूतमवगन्तव्यम्? मञ्जुश्रीरुवाच—
देवपुत्र! बोधिसत्त्वानां मारकर्म वीर्यवति उद्भूतमवगन्तव्यम् । तत् कस्य हेतोः? अनभियुक्ते किं मारेण? तस्यैव मारभूतत्वाद् ।” इति ।

1. इदमुद्धरणम् उक्तनामके ग्रन्थे न प्राप्यते, किन्तु क्रोधविजयकल्पगुह्यतन्त्रम् इति नामके ग्रन्थे (तोहोक्-६०४ ‘फ’ पृष्ठे २८७.१.३ तमे) ।

एवं मारकर्म, ज्ञानेन तन्निवारणम् । यथा—आर्यदेवपुत्ररत्नोत्तम-
परिपृच्छायामुक्तम्—“यदा तादृशो मारकर्माधिगमः तदाऽनवद्योभवति ।
केषाञ्चिन्मारकर्मणां तादृशी विनिवृत्तिस्तु निरवद्या” इति । तदनिवृत्तिस्तु
विमोक्षानवाप्तिरेव ।

यथा—आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामुक्तम्—

पुण्यान्यशेषाणि हिनस्ति विघ्नो
निष्पद्यते तेन नृणां न मन्त्रम् ।
चन्द्रो यथा मेघविमुक्तवत् स्यात्
विघ्नाद् विमुक्तश्च विभाति तद्वत् ॥ इति ।

अत्र विघ्नोऽपि द्विधा, संबोधि-विनाशार्थ-प्रयोजको देवपुत्रमारः,
तदन्यश्च-यथा—आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामुक्तम्—

बलीच्छया क्रीडितुमिच्छया वा
'वधाय देहे प्रवणः प्रवेश ॥ इति ।

अत्र तौ द्वौ निवारयितव्यौ । केनोपायेन निवारणीयाविति चेत्-यथा-
आर्यवज्रशेखर (महागुह्ययोगतन्त्र) उक्तम्—

स्वचित्तं मार इत्युक्तं स्वचित्तं विघ्न एव च ।
त्याज्याः सर्वे विकल्पा हि सर्वे विघ्ना विकल्पजाः ॥ इति ॥

अन्येऽपि मारकर्म-निवर्तनोपायास्तु आर्याशोकदत्तपरिपृच्छातः, आर्य-
सिंहव्याकरणाच्च ज्ञातव्याः । इमानि हि प्रहेयाङ्गानि ।

[पूर्वङ्गमाङ्गानि]

येन श्रवणस्वभावेन प्रज्ञा नोत्पादिता तेन मारकर्म निवर्तयितुं न शक्यते,
चित्तसमाधानेऽप्यशक्तत्वात् प्रथमं श्रवणमेव पुरस्कृत्यते ।

यथा—

प्रज्ञायाः स्फुरणं श्रुत्या चिन्तया चोभये सति ।
भावनायां ततो योगस्ततः सिद्धिरनुत्तरा ॥ इत्युक्तम् ।

आर्यबोधिसत्त्वदशनिर्देशव्यवस्थानपरिवर्तेऽप्युक्तम्—

“हे जिनपुत्र ! स आदिकर्मिको बोधिसत्त्वः प्रथममेव स्वाध्यायाय अध्येषणीयः, बहुश्रुतो विविक्तस्थानं प्रेषणीयः ।” इति । तादृशोऽर्थ आर्य-
उग्रपरिपृच्छायां आर्यरत्नदीपेऽपि चोक्तः ।

तथैव आर्यगण्डव्यूहेऽप्युक्तम्—

शुश्रूषां प्रथमं गुरूपवसनं क्षान्तिं च कुर्वन्नसौ
धर्मं प्रेक्ष्य तथा स्वभावरहितं सम्प्राप्य ध्यानं तथा ।
ज्ञात्वा सौगतभावमेव जगतां तृष्णाकुलान् तर्पयेत्
शीघ्रं हीदृशधर्मतां परिचरन् लाभी भवेत् सौगतम् ॥ इति ।

तथा आर्यश्रावकप्रातिमोक्षसूत्रेऽप्युक्तम्—

सुखो हि वासश्च बहुश्रुतानां
वनेषु निर्वापितयौवनानाम् । इति ।

अतः श्रुत(मयी) प्रज्ञा एव अर्थसाधने पूर्वङ्गमा । इमानि हि पूर्वङ्गमाङ्गानि ।

[निवृत्यङ्गानि]

तथा श्रुतवतः तस्य बोधिसत्त्वस्य धर्मकथने प्रवेशो निषिध्यते, अभिज्ञाम् अप्राप्तस्य बहुश्रुतिमात्रेण परानुग्रहो जिनेन नोपदिष्टः । अत एव आर्यबोधिसत्त्व-
दशनिर्देशव्यवस्थान-परिवर्त उक्तम्—“स आदिकर्मिको बोधिसत्त्वः प्रथमं
स्वाध्यायाय अध्येषणीयः । बहुश्रुतो विविक्तस्थानं प्रेषणीयः । प्रविविक्तीभूय
कल्याणमित्रभावाय पर्यध्येषणीयः । कल्याणमित्रिभूय सुवचस्कत्वाय पर्यध्येषणीयः ।

1. तोहोकूसूचीपत्रेऽस्य ग्रन्थस्य संख्या १४५ अस्ति, तन्नाम च—‘आर्यरत्नोत्कानामधारणी-
महायानसूत्रमिति प्राप्यते ।

2. सूत्रमिदं प्रकाशितम्, किन्तु तन्नायमंशो न प्राप्यते ।

3. उत्तरार्धोऽयं श्लोकस्य, पूर्णभोटानुवादस्य संस्कृतरूपम् एवं प्राप्यते—

सुखो हि वासः कृतनिश्चयानां जितेन्द्रियाणां च बहुश्रुतानाम् ।

शान्तेष्वरण्येषु जरां गतानां वनेषु निर्वापितयौवनानाम् ॥ १३ ॥ The

Indian Historical Quarterly (Vol.xxix 1-4) The Prātimokṣa-Sūtra, page-166

by-Dr. Anukul Chandra Banerjee.

सुवचस्कीभूय कालज्ञतायै पर्यध्येषणीयः । कालज्ञीभूय अभयाय पर्यध्येषणीयः । अभयीभूय अर्थज्ञतायै पर्यध्येषणीयः । अर्थज्ञीभूय धर्मानुसरणाय पर्यध्येषणीयः । धर्मानुसारीभूय अमोहत्वाय अध्येषणीयः । अमोहीभूय धर्मव्यवस्थापनाय पर्यध्येषणीयः । तत्कस्य हेतोः ? ततोऽप्यधिकं सर्वसत्त्वानां महाकरुणापूर्वक-प्रणेतार्य, यत्स्थाने श्रुतमपि तस्य स्वप्रयोगार्थम् न चात्मनः परप्रत्ययार्थम् । हे जिनपुत्राः ! इयं हि आदिकर्मिकबोधिसत्त्वव्यवस्था ।” इति । अयमेवार्थ आर्य-उग्रपरिपृच्छायां रत्नदीपेऽपि चोक्तः ।

परञ्च आर्याध्याशयसंचोदन-(महायान)-सूत्रेऽपि—

साध्यच्युतात्माऽद्य करोतु किं वै
बालो विषीदत्यथ मृत्युकाले । इत्यादि ।

बहुश्रुतेन विविक्तमनुपास्य धर्मभाणने विविधप्रकारका दोषा उक्ताः, तत्र विस्तरेण द्रष्टव्याः । अतो बहुश्रुतः सः श्रुतमात्रः तस्मात् धर्मभाणनात् निवृत्य अभिज्ञां प्राप्य, पुनः जगदर्थं कुर्यात् । इमानि निवृत्यङ्गानि ।

[तापच्छेदाङ्गानि]

तथा धर्मभाणनान् निवृत्तः त्यक्तप्रपञ्चः स एवं विचारयति-अद्यापि स्वयं स्कन्धे कौशल्यमपि न पर्यादत्तं, धात्वायतनेष्वपि कौशल्यं न पर्यादत्तम् । तत्र कौशल्याभावात् मोक्षोऽपि न प्राप्यते ।

यथा¹—

विद्यास्थाने पञ्चविधे योगमकृत्वा
सर्वज्ञत्वं नैति कथञ्चित्परमार्थः ।
इत्यन्येषां निग्रहणानुग्रहणाय
स्वाज्ञार्थं वा तत्र करोत्येव स योगम् ॥

इत्युक्तत्वात् विचारणीयम् । परञ्च शिष्य-प्रशिष्यसम्बन्ध-लाभ-सत्कार-कीर्ति-शब्द-गाथासुखेभ्य इच्छोद्भवः । स तु अवश्यं वारयितव्यः, धर्मं श्रुत्वा भावनया अव्युत्पन्नस्तु कदापि न संस्तूयते ।

यथा आर्यगण्डव्यूह उक्तम्—

सम्बुद्धशासनं चेदं श्रुतमात्रं न सिध्यति ।
यथा कश्चिन् महौघेण दुर्बलो नीयते बलात् ॥
तृषा च म्रियते यद्वत् तथा धर्मोऽप्यभावितः । इति ।

अपि चोक्तम्—

महासिन्धौ यथा नावी सर्वाश्चोत्तारयञ्जनान् ।
स्वयं नश्यति तन्मध्ये तथा धर्मोऽप्यभावितः ॥

इत्यादि। भावनया अव्युत्पत्ति-दोषाः संबहुला उपदिष्टाः, विस्तरेण तत एव ज्ञातव्याः। अत एव यावत् चित्तसमाधाने समर्थः तावत् अववादमात्रेण तृप्तः, सद्यश्चित्त-शील-संभवेऽपि गुरुं पृष्ट्वा भावयेत् । सप्तविधप्रमाण-चतुर्विधव्याकरण-सप्तविधाभिधर्म-योगचर्याभूमीत्यादि-निमित्तेन मनो न संतापयेत्, यथा परमार्थयुक्तौ¹ देशितम्—

गुर-उवएसैं अभिअ-रसु धर्वहि ण पीअउ जेहि ।
(गुरूपदेशोऽमृतरसो धाव्यते न पीयते यैः ।)
बहु सत्थत्थ-मरुत्थलिहिं तिसिए मरिअउ तेहि ॥
(बहुशास्त्रार्थमरुस्थलीषु तृष्ण्या म्रियते तैः॥) इति ।

अप्रमेयकल्पम् आयासं कुर्वतामपि ते व्यवहारोपयोगा न क्षीयन्ते, किन्त्वायुष्यपर्यादानं भवत्येव ।

अत एव उत्तरसंख्ये²ऽप्युक्तम्—

क्षीयन्ते धातवस्तेषां भ्रमणाद् बाह्ययोगिनाम् ।
अतो बाह्यं निराकृत्य स्थातव्यं योगिनीनये ॥ इति ॥

-
1. सरहपादस्य दोहाकोष-ग्रन्थे (तोहोकू-२२२४), २७ तमे पृष्ठे श्लोकः-५६, मेट्रोपोलितन, स० १९३८ ई० ।
 2. अभिसमयमञ्जरी-शुभाकरगुप्त-विरचिता दु० बौ० ग्र० शो० यो०, ग्रन्थ ११, पृ० १७, तिब्बती संस्थान, सन्-१९९३ ।

तथैव परमार्थयुक्ता¹वपि उक्तम्—

देस भमइ हव्वासैं लइजे ।

(देशं भ्रमति अभ्यासेन गृहीतः ।)

सहज ण बुज्झइ पापें गाहिजे ॥

(सहजं न बोधति पापगृहीतः ।)

स्कन्ध-धातु-आयतन-कौशल्येऽपि योगबलं युगपदेव सम्भवति, न तु तेषां क्रमशः शिक्षणात् ।

यथा—आर्यवज्रोष्णीषेऽप्युक्तम्—

ज्ञानं प्रजायते तस्माज् ज्ञायते श्रवणं विना ॥ इति ॥

आर्यसुबाहुपरिपृच्छा(नामतन्त्रे)ऽप्युक्तम्—

आदेयवाक्ये कुशलो मनस्वी

काव्येषु लेखेषु तथा प्रवीणः ॥ इति ॥

एतेऽपि योगबलाद् जायन्ते, न तु क्रमेण शिक्षावस्थानात् । अभिधर्म-
(कोशे²)ऽप्युक्तम्—

सास्ववश्च क्षयज्ञाने । इति ।

लाभ-सत्कार-कामसंतापाः चित्तसंवेगाङ्गाज्ज्ञेयाः । इमानि हि तापच्छेदाङ्गानि ।

[चित्तसंवेगाङ्गानि]

सर्वशः संसारे चित्तसंवेगस्य भावनया व्यन्तीकरणाय अशक्यत्वात् तत्र चित्तसंवेगो भावनीयः ।

यथा बोधिसत्त्वचर्यावतार³ उक्तम्—

शमथः प्रथमं गवेषणीयः

स च लोके निरपेक्षयाभिरत्या । इति ।

1. सरहपादस्य दोहाकोश-ग्रन्थे (तोहोकू-२२२४), २९ तमे पृष्ठे श्लोकः-६३, मेट्रोपोलितन, सन् १९३८ ई० ।

2. अभिधर्मकोश-ग्रन्थे ७/२६, १०७९ तमे पृष्ठे, बौद्धभारती १९८७ ई० ।

3. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-८/४, ७२ तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।

अत्र मित्राभिनन्दनात् शत्रुदूषणाच्च रागः । नैरुज्य-यौवनाद्यासक्ति-
स्वाभाविक भवराग-लाभ-सत्कार-कीर्ति-शब्दगाथा-रागांश्च विवर्जयेत् ।

यथा आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामुक्तम्—

शत्रुः कदाचिद् भविताऽपि मित्रम्
मित्रं च तद्वत् रिपुतां प्रयातु ।
कश्चित्तथापि प्रभवेद्धि मध्यः
मध्यः स एवाऽपि रिपुत्वमीयात् ॥
तथैव विज्ञाय च मित्रभावं
न रज्यते बुद्धिमता कदाचित् ।
निवार्य मित्रे मुदिताविकल्पान्
यथासुखं तत् कुशले स्थितं स्यात् ॥ इति ॥

आर्यनागार्जुनेनाप्युक्तम्—

मित्रत्वेन तु शत्रुः पुत्रत्वेन पिताऽम्बा च भार्यात्वेन ।
जायन्ते संसारे न निश्चितं किमपि परिवर्तनेनैवम् ॥ इति ।

अतएव मित्रे शत्रौ च रागः परिवर्जनीयः ।

तद्वत्—

नित्यो न नीरुङ् नहि यौवनं च
नित्यं न दीर्घायुरथो समृद्धिः ।

इत्युक्तत्वात् तत्रापि रागः परिवर्जनीयः । लाभसत्कारकीर्तिशब्दगाथासु चापि रागो
वर्जनीयः ।

यथा—बोधिसत्त्वचर्यावतार^१ उक्तम्—

लाभी च सत्कृतश्चाहमिच्छन्ति बहवश्च माम् ।
इति मर्त्यस्य सम्प्राप्तान्मरणाज्जायते भयम् ॥ इति ॥

1. सुहृल्लेखः (भोटपाठः) श्लोक-संख्या- ६६ ।

2. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-८/१७, ७४ तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।

पुनश्च तत्रैव¹ उक्तम्—

बहवो लाभिनोऽभूवन् बहवश्च यशस्विनः ।
सह लाभयशोभिस्ते न ज्ञाताः क्व गता इमे ॥
मामेवान्ये जुगुप्सन्ति किं प्रहृष्याम्यहं स्तुतः ।
मामेवान्ये प्रशंसन्ति किं विषीदामि निन्दितः ॥

पुनस्तत्रैव² उक्तम्—

निन्दन्त्यलाभिनं सत्त्वमवध्यायन्ति लाभिनम् ।
प्रकृत्या दुःखसंवासैः कथं तैर्जायते रतिः ॥ इति ।

अन्यच्च आर्याध्याशयसंचोदन(नाम महायान)सूत्रे लाभसत्कारदोषा
संबहुलम् उपदिष्टत्वात् ततो ज्ञेयाः । अत्र शिष्य-प्रशिष्यादिषु रागो न करुणात्मकः?
कथं तत्प्रहाणं युक्तमिति चेत् ? न, अनवस्था करुणा निन्द्यते, अभिज्ञानेऽप्राप्ते
शिष्यपरिपाको न शक्यते, अपितु स्वबन्धनम् ।

यथा—बोधिसत्त्वचर्यावतारे³ तत्रैवोक्तम्—

नानाधिमुक्तिकाः सत्त्वा जिनैरपि न तोषिताः ।
किं पुनर्मादुशैरज्ञैस्तस्मात् किं लोकचिन्तया ॥ इति ।

पुनस्तत्रैव⁴—

न पश्यति यथाभूतं संवेगादवहीयते ।
दह्यते तेन शोकेन प्रियसंगमकाङ्क्षया ॥
तच्चिन्तया मुधा याति ह्रस्वमायुर्मुहुर्मुहुः ।
अशाश्वतेन धर्मेण धर्मो भ्रश्यति शाश्वतः ॥ इति ।

-
1. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-८/२०-२१, ७४ तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।
 2. तत्रैव -८/२३, ७५ तमे पृष्ठे ।
 3. तत्रैव -८/२२, ७४ तमे पृष्ठे ।
 4. तत्रैव -८/७-८, ७२ तमे पृष्ठे ।

अतएव शिष्येत्यादीनां विद्याफलेन संबन्धः, लौकिकस्य व्यावहारिकः सम्बन्धः, उभयत्र कृपया एव वैराग्ये विवेके च स्थातव्यम् । भवे स्वभावतो रागोऽपि वर्जनीयः । यथा—आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामुक्तम्—

शार्दूलनागाग्निसमं हि लोकं
ध्यात्वा परित्यज्य विविक्ततुष्टः ।
स्त्रीलक्षणं वा नरलक्षणं वा
भैषज्यनागोऽपरीक्षणं वा ॥

शस्त्राश्चकाव्यादिपरीक्षणं वा
दुःशास्त्रशिक्षाध्ययनं च जह्यात् ॥ इति ।

पुनस्तत्रैव—

हस्त्यश्चकौलेयककुक्कुटानां
कापिञ्जलीतिरिचक्रकानां ।
पुंस्त्रीसुताबालकछागमेषा-
दीनां विवादो न हि दर्शनीयः ॥
स्वातन्त्र्य-सेवा-विषयस्य वार्ताः
संग्राममल्लप्रमदाकथाश्च ।
ऐतिह्य-प्राहेलिकपूर्ववृत्तं
वेश्याकथाः रागकथाः न कुर्यात् ॥

मन्त्री तु गुह्येषु जपेषु युक्तो वर्षासु मासत्रयमेककः स्यात् । इति ।

पुनस्तत्रैव—

कर्माश्रयः स्वामि-विहीनता च
निर्नाथनिष्ठौ जनुषोऽन्वयश्च ।
देहान्तरालत्वमनुप्रसारः
तस्यानुसारं ह्यशुभं शुभं हि ॥
आजीविका-मित्र-वियोजनानि
बीभत्ससंयोजन-कामतापाः ।
दुर्व्याधिजन्मान्तजराभिपीडाः
लोकात् प्रयातेऽपि न सन्ति नेति ॥

शीतोष्णक्षुद्दंश-परिक्लमादि
कुत्रापि यातेऽपि च दुःखमेव ।
चित्तेऽभिरम्ये विषये हि जाते
तैस्तैर्विकल्पैश्च निवारितव्यम् ॥

रागाधिको मांसममेध्यमेद-
श्चर्माणि कङ्कालमवेक्ष्य जह्यात् ।
द्वेषं च मैत्रीकरुणाम्बुसेकान्
मोहं प्रतीत्योद्भवमार्गतश्च ॥ इति ॥

बहुलोकदोषान् प्रतिपाद्य आर्यनागार्जुनेनाऽप्युक्तम्—

इत्थं सर्वमनित्यं निर्नाथात्मशरण्यनिकेतम् ।
राजन् ! कदलीव जगत् निःसारं चित्तं ततो न तव युज्यात् ॥ इति ।

अन्यच्च बोधिसत्त्वचर्यावतार-सप्तकुमारिकावदान-सुहृल्लेख-शिष्य-
लेखादीन् ग्रन्थान् आलम्ब्य, भवे स्वाभाविकं रागं वर्जयेत् । इमानि चित्त-
संवेगाङ्गानि ।

[गुणानुस्मृत्यङ्गानि]

एवम् विपक्षं त्यक्त्वा समाधिगुणाः स्मर्तव्याः । ततोऽत्र गुणास्तु द्विधा-
दृष्टधर्मानुभवाः, तदन्ये च । कथमिति चेत्—

कायसुखासिका, वाक्सुखासिका, चित्तसुखासिका, धर्मपालानन्दाः,
तदमोघमनुष्यकायावासिः, शास्तृमातापितृगुरुकृतज्ञता, मानुषेतरानिघातः, अल्परो-
गत्वं, दीर्घायुष्यं, मृत्युकालेऽविप्रतिसारः, कौशलप्राशस्त्यं, अन्न-पान-शयनासन-
रोगप्रत्ययौषधि-वस्त्रसुखलाभः, क्लेशकर्म-विघातश्च, इत्येते प्रथमाः गुणाः ।

यत्र इष्टबुद्धक्षेत्रोत्पादः, त्र्यपायप्रहाणम्, अक्षणावशेषपरिहारः, स्त्रीत्वेना-
नुत्पादः, तीक्ष्णेन्द्रियत्वं, त्रिरत्न-वियोगाभावः, तत्रापि समाधिरतिः, अभिसंबोधि-
भावश्च इति द्वितीयाः गुणाः ।

स्ववदाते आयुरधिष्ठाने सुरालये अस्मिन्नेव जीवने गमनम् इति । इदमेवार्थं
बुद्धवा चन्द्रगोमी! स्वशिष्यमुक्तवान्—

आसन्नपीनशशिमण्डलमण्डनासु
विश्रान्तवारिगुरुवारिदमेखलासु ।
निःसङ्गमासु गिरिशृङ्गवनस्थलीषु
धन्या नयन्त्यनिलचञ्चलशीलमायुः ॥

किं सा रतिर्भवति नन्दनभूमिकासु
दिव्याङ्गनाजघनपृष्ठशिलातलासु ।
या मुग्धमुग्धहरिणीगणसेवितासु
निःसङ्गचारसुभगासु वनस्थलीषु ॥

दिव्याङ्गनापरिमलाविलवेणिभिन्न-
सन्तानकस्तबकहासविडम्बिनीषु ।

किं सा रतिः सुरसरित्सु विविक्तारम्य-
तीरासु या शुचिजलासु वने नदीषु ॥

विशालाः शैलानां विरतजनसम्पातसुभगा
गुहागाढाभोगा हरितवनलेखापरिकराः ।

सरित्तीरासन्ना मुरजमधुरैर्निर्झरस्वरै-
र्न गम्याः क्लेशाग्नेर्वयमिति वदन्तीव पथिकान् । इति ॥

आचार्य-शान्तिदेवेनाप्युक्तम्—

नावध्यायन्ति तरवो न चाराध्याः प्रयत्नतः ।
कदा तैः सुखसंवासैः सह वासो भवेन्मम ॥

1. चन्द्रगोमिविरचितः 'शिष्यलेख' ग्रन्थोऽद्यावधि न प्रकाशितः । शर्मण्यदेशीय विदुषा आचार्य-
मिशेलहानमहाभागेन सम्पादितोऽयं ग्रन्थः प्रकाशितो भविष्यति । तस्यैव हस्तलेखाच्छ्लोका
अत्र साभारं गृहीताः, श्लोक संख्या :- ६८-७१ ।
2. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-८/२६-३०, ७५ तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।

शून्यदेवकुले स्थित्वा वृक्षमूले गुहासु वा ।
 कदानपेक्षो यास्यामि पृष्ठतोऽनवलोकयन् ॥
 अममेषु प्रदेशेषु विस्तीर्णेषु स्वभावतः ।
 स्वच्छन्दचार्यनिलयो विहरिष्याम्यहं कदा ॥
 मृत्पात्रमात्रविभवश्चौरासम्भोगचीवरः ।
 निर्भयो विहरिष्यामि कदा कायमगोपयन् ॥
 कायभूमिं निजां गत्वा कङ्कालैरपरैः सह ।
 स्वकायं तुलयिष्यामि कदा शातनधर्मिणम् ॥ इति ॥

एवम् आर्यचन्द्रप्रदीपादिसूत्रेभ्यः समाध्यनुशंसा विस्तरेण ज्ञेया । इमानि तु
 गुणानुस्मरणेन उत्साहाङ्गानि ।

[वीर्याङ्गानि]

एवं गुणान् दृष्ट्वा उत्साहितः सः प्रतिपक्षमनसिकारे उत्सहेत । यथा—
 बोधिसत्त्वचर्यावतार^१ उक्तवत्—

एवं क्षमो भजेद् वीर्यं वीर्यं बोधिर्यतः स्थिता ।
 न हि वीर्यं विना पुण्यं यथा वायुं विना गतिः ॥ इति ॥

एवं मया प्रयासेन इष्टार्थे अनर्जिते सति, एतज्जन्मनश्चञ्चलत्वात् चित्तस्य स्थिरीकरणे
 चिरस्थिरीकरणे वा असामर्थ्यत्वात् क्षणमात्रमपि तन्द्रा न करणीया, एवं
 मनसिकरोति । एनमेवार्थं चित्ते निधाय आर्यनागार्जुनेन^२—

आयुर्बाधाबहुलं पवनोत्थवारिबुद्बुदादप्यनित्यम् ।
 आश्चर्यं क्षण एषः श्वासोच्छ्वासस्वापजागरामध्ये ॥

अपि च^३—

वस्त्रे शीर्षे वाऽग्नौ सहसा लग्नेऽपि विहाय तत्रिवृत्तिम् ।
 अपुनर्भवाय यतते, तस्मान्महत्तरं प्रयोजनं नान्यत् ॥

-
1. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-७/१, ६१ तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।
 2. सुहृल्लेखः (भोटपाठः) ५५ ।
 3. तत्रैव ॥ १०३ ॥

इति राज्ञे शालिवाहनाय अववादः कृतः ।

भदन्तश्चन्द्रगोमी^१ अपि स्वशिष्याय एवमुपादिशत्—

अत्यन्तदुर्लभमुपेत्य मनुष्यभावं
यद्वाञ्छितं तदभिवाञ्छितमेव कुर्यात् ।
चण्डानिलाकुलितदीपशिखाचलस्य
न ह्यायुषः क्षणमपि स्थितिनिश्चयोऽस्ति ॥
श्वः कार्यमेतदिदमद्य परं मुहूर्ताद्
एतत्क्षणादिति जनेन विचिन्त्यमाने ।
तिर्यग्निरीक्षणपिशङ्गितकालदण्डः
शङ्के हसत्यसहनः कुपितः कृतान्तः ॥

आयाति फुल्लकुसुमः कुसुमागमोऽयम्
एषा शशाङ्कतिलका शरदागतेति ।
सर्वः प्रहृष्यति जनो न पुनर्ममैतद्
आयुः प्रहीणमिति याति परं विषादम् ॥ इति ।

आचार्यशान्तिदेवपादैरप्युक्तम्—

कृताकृतापरीक्षोऽयं मृत्युर्विश्रम्भघातकः ।
स्वस्थास्वस्थैरविश्वास आकस्मिकमहाशनिः ॥ इति ।

तथैव श्रीवागीश्वरकीर्तिपादैरप्युक्तम्—

अद्य श्वश्च करोमि भिन्नमितरत् तस्मात् करोमीति च
न ज्ञात्वा वितथं चलात्मकभवं विश्रम्भपर्येषणो ।
लोको मृत्युमुखं प्रयाति तरणिर्यद्वद्धि नक्रीमुखं
कार्यं चाप्यसमाप्य याति विषयक्षीरोर्मिमध्ये तथा ॥ इति ।

१. चन्द्रगोमिविरचितः 'शिष्यलेख' ग्रन्थोऽद्यावधि न प्रकाशितः। शर्मण्यदेशीयविदुषा आचार्यमिशेलहान-महाभागेन सम्पादितोऽयं ग्रन्थः प्रकाशितो भविष्यति । तस्यैव हस्तलेखाच्छ्लोकाः अत्र साभारं गृहीताः । श्लोक संख्या ६५-६७ ।

२. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-२/३४, ११ तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।

तथैव आचार्यसरहपादैर^१प्युपदिष्टम्—

पूर्वेद्युरद्यापि तथोत्तरेद्युर्जीवोऽर्थसम्पत्तिसमाभिलाषी ।
जानाति नो भद्रमुखाः! यथैव ह्यम्भः स्रवच्चाञ्जलितः सुपूर्णात् ॥ इति ।

इमानि प्रतिपक्षमनसिकारात् वीर्याङ्गानि ।

[सम्बन्धाङ्गानि]

तथा तेन अतिवीर्येण अङ्गद्वयं युगनह्यते—तच्च शमथ-विपश्यने उपाय-प्रज्ञे च, तत् कस्य हेतोः ? शमथस्थैर्यरहिता विपश्यना दृढं न प्रतिष्ठते, प्रदीपवायुवत् । विपश्यना-रहितः शमथस्तु आवरणजालानि अशेषेण शोधयितुं न शक्नोति, यथा रूप्यारूप्यादिशमथेन पुनर्भवः ।

अत एव बोधिसत्त्वचर्यावतार^२ उक्तम्—

शमथेन विपश्यनासुयुक्तः
कुरुते क्लेशविनाशमित्यवेत्य ।

शमथः प्रथमं गवेषणीयः
स च लोके निरपेक्षयाभिरत्या ॥ इति ।

तथैव प्रज्ञोपायावपि । कथमिति चेत् ? द्विविधकाय-निष्पत्तये आवरणद्वय-प्रहाणाय च । अत एव आर्यविमलकीर्तिनिर्देश(सूत्रे)^३, आर्यगयाशीर्षसूत्रे चोक्तम्

1. गहुलसांकृत्यायनमहाभागैः हिन्दीभाषायाम् एतादृशी छाया दत्ता—

कल आज और कल, अर्थ सम्पत्ति पुरुष चाहै ।

रे मुख धारिणी जलपूर्ण अंजलि छरे जैसे संवेदै ॥

सरहपादस्य दोहाकोश-गीति-ग्रन्थे (तोहोकू-२२२४), ५५ तमे पृष्ठे, (बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् पटना, सन् १९५१ ई० ।)

2. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-८/४, ७२ तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।

3. भिक्षुपासादिकः - विमलकीर्तिनिर्देशसूत्रम् (के० उ० ति० शि० सं० सारनाथ, वाराणसी, सन् १९८१ ई०) परिच्छेद-४, पृ० ११६ । एतादृशः पाठः प्राप्यते— “उपायेनानुद्दिष्टा प्रज्ञा हि बन्धनम् । उपायेन निष्ठितप्रज्ञा मुक्तिः । प्रज्ञानुद्दिष्टोपायो बन्धनम् । प्रज्ञया निष्ठितोपायो मुक्तिः ।”

अयं वाक्यांशः प्रथमभावनाक्रमेऽपि आशिकरूपेण उद्धृतः प्राप्यते— “प्रज्ञारहित उपाय उपायरहिता च प्रज्ञा बोधिसत्त्वानां बन्धनम् ।” (के० उ० ति० शि० सं० सारनाथ, वाराणसी, सन् १९८५ ई०) पृष्ठे १७१ तमे, ।

“उपायरहिता प्रज्ञा बन्धनम्, प्रज्ञारहित उपायोऽपि बन्धनम् ।” इति । तथैव आर्यगण्डव्यूह(सूत्रे) उक्तम्—“प्रणिधानानभिनिरवृत्तित्वाद् धर्मज्ञानावबोधोऽनभिनिरवृत्तिमारः ।” दशमारेषु एकः । कस्माद्देतोः शून्यताया एव न तेषां निर्वृतिरिति चेन्न, फलस्य तु हेत्वनुसरणत्वाद् । अत एव आर्यगण्डव्यूह(सूत्रे) उक्तम्—

वादिश्रेष्ठस्य नैकस्माद् धर्मात्कस्मात् समुद्भवः ।

समुत्पन्नं च यन्नास्ति तद्वत्तन्न जनिष्यते ॥ इति ।

तथैव आर्यवज्रपञ्जरेऽपि

शून्यता यद्युपायश्चेद् बुद्धत्वं न भवेत्तदा ।

हेतोः फलेतराभावादुपायो न हि शून्यता ॥ इति ॥

तर्हि कस्माद्देतोः आगमेषु शून्यतैव भावनायै अलं प्रोक्ता ? येषां आत्मदृष्ट्यादेः शून्यता-विरुद्धावतारः, तेभ्यः शून्यतामाहात्म्यं निर्दिश्यते ।

यथा च आर्यवज्रपञ्जरे तत्रैवोक्तम्—

दर्शनेषु तु मिथ्यानामात्मदृष्टि-गवेषिणाम् ।

आत्मग्राह-निवृत्यर्थं जिनैः शून्यं निदर्शितम् ॥

अतो मण्डल-चक्रेति सुखोपायस्य संवरः ।

बुद्धाहंकार-योगेन बुद्धत्वमचिरं भवेत् ॥

एवं न केवलं शून्यता सेव्या, अपितु देवकायो भावनीयः । इति । अत एव संबोधिप्रपूरणाय शून्यतां करुणासारं भावयेत्, न केवलां शून्यताम् । आगमेषु अयमभिप्रायः, यथा मण्डलसमर्पणात् षट्पारमिताप्राप्तिनिर्देशस्तथा, अत आगमे यथारुतं न गृह्यते, अपितु शून्यताभ्यासपरिनिष्पत्तेः सर्वं कुशलं कर्म स्वभावेन उत्पद्यते, प्रथमं सत्त्वार्थाय शून्यताप्रवेशे सति श्रावक इव शान्तिरेव न भवति; यावत् शून्यता दृढीयते तावत् सत्त्वेषु तथानवबोधेषु करुणा उत्पद्यते ।

अन्यच्च द्वितीयभावनाक्रमेऽपि— “उपायेन अपरिगृहीता प्रज्ञा हि बन्धनम् । उपायेन परिगृहीता प्रज्ञा मुक्तिः । प्रज्ञयापरिगृहीतोपायो बन्धनम् । प्रज्ञया गृहीतोपायः मुक्तिः” इति ।

(के० उ० ति० शि० सं० सारनाथ, वाराणसी, सन् १९८५ ई०) पृष्ठे २१७ तमे ।

1. अस्य ग्रन्थस्य पूर्णं नाम—आर्यडाकिनीवज्रपञ्जरमहातन्त्रराजकल्पनाम्, इति । (तो० सू० ४१९)

यथा आर्यनागार्जुनपादैरुक्तम्—

एवं योगी यदा कुर्यात् शून्यताभावनामिमाम् ।
तदा बुद्धिः परार्थे स्यादनुरक्ता न संशयः ॥ इति ॥

अन्यच्च¹—

धर्मनैरात्म्यवेत्ता हि निःस्वभावस्य भावनात् ।
विपर्याससमुत्पन्नक्लेशवृत्तिं तु संत्यजेत् ॥

इति मध्यमकालंकारोक्तयुक्तया तस्य क्लेशाः प्रहीयन्ते, येन करुणाया अप्रहाणेऽपि क्लेशशमनम्, तत्र लौकिकलोकोत्तरा गुणा अनाभोगं सिध्यन्ति । अतो हेतोः श्रेष्ठत्वात् तन्मात्रत्वाच्च गुणाधिक्योद्भवश्चिन्त्यते ।

आर्यवैरोचनाभिसम्बोधावुक्तम्—

सनिमित्तेन सनिमिता सिद्धिरिष्टा जिनैर्वैरैः ।
सदाऽनिमित्ते स्थित्वा वा³ सनिमित्तं प्रसाध्यते ॥
तस्मात् सर्वप्रकारेण निर्निमित्तं निषेव्यते ।

इत्यादि । शून्यतामात्रेण तुष्टिरुक्तैव । इमानि तु सम्बन्धाङ्गानि ।

[स्थित्युपायाङ्गानि]

एवम् अष्टाङ्गमयेन तेन स्थानम् अनुकूलं, भोजनं, ईर्यापथं च अनुकूलं, वस्त्रं, मित्रं चानुकूलं कृत्वा चित्तं समाधेयम् । तत्रानुकूलं स्थानम् आर्यसुबाहु-परिपृच्छायामुक्तम्—

प्रत्येकबुद्धाः सुगताश्च जाताः
पूर्वे जिनाश्चाप्यभवंश्च यत्र ।
स्थानं हि पुण्यं च मनोरमं यद्
सुरासुराद्यैश्च प्रणम्य पूज्यम् ॥

1. मध्यमकालंकारः (भोटपाठः) - ८३ तमः श्लोकः ।
2. उक्तग्रन्थस्य संस्कृतमूलं न प्राप्यते, किन्तु उक्तोद्धरणम् गुह्यसमाजतन्त्रदीपोद्योतनटीका-षट्कोटि-व्याख्यायाम् प्राप्यते, काशी-प्रसाद-जायसवाल-अनुशीलन-संस्था, पाटलिपुत्रम्, पुष्ठे-११९, १९८४ तमे ख्रीष्टीये । अत्र उद्धृता अंशाः संशोध्य एव दीयन्ते । षट्कोटि-व्याख्यायाः पाठः पूर्णतो न समञ्जसः ।
3. पाठान्तरः-वै, वा-पाठे भोटपाठानुसारी समीचीनश्च । वै-पाठेऽसङ्गतः ॥

यत्पोषधैः संवरधारिभिश्च
 सेव्यं तु तद्धयात्मविशोधनाय ।
 तादृङ् न लब्धं पुनरन्यदेव
 नद्यापगाश्चापि सरित्प्रवाहाः ॥

पद्मोत्पलालङ्कृतपल्वलानि
 लोकैरतीवैव सुदुश्चराणि ।
 आस्वादनीयाच्छमहाजलानि
 घोरैर्ग्रहैश्चाप्यनवस्थितानि ॥

पुष्पैः फलैश्चापि पवित्रितानि
 नानानगा पर्वतकुञ्जविष्टा ।
 भूमिश्च शय्यासनसंपवित्रा
 या व्याघ्रशार्दूलकसिंहहीना ॥

निष्कण्टका शान्त-मनोहरा च
 लोकस्य सिद्धिस्थलतः प्रसिद्धा ।
 वल्मीरजश्वभ्रककेशलोमैर्
 अङ्गारभेलूषरभिः प्रहीणा ॥

सम्मार्ज्य भूमिं वसतिं विधाय
 चोष्णत्वदाढ्याय हि तां लिपेत ।
 प्राचीप्रतीच्युत्तरद्वाः प्रशस्ताः
 द्वारं ह्यपाच्यां न कदापि कुर्यात् ॥ इति ।

इदम् अनुकूलस्थानम् ।

भोजनेऽप्यनुरक्तो मात्रज्ञश्च यथा शरीरबलानुकूलं तथा भुङ्क्ते; अत एव
 आर्यनागार्जुनपादैरुक्तम्—

विहाय रागद्वेषौ सेवेत नैव गर्वदर्पवर्णेभ्यः ।
 भोजनमौषधवत्स्यात् शरीरधारणमात्रहेतवे युक्तम् ॥ इति ॥

आसङ्गदोषः, यथा आर्यपूर्णपरिपृच्छायामुक्तम्—

स्वादौ रसेऽभिसक्तौ चेद् दोषान्नैवानुदर्शनात् ।
गृह्णातीव ज्ञषं मारश्छिद्रं प्राप्याङ्कुशेन वै ॥ इति ॥

तथैव-आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामप्युक्तम्—

यद्वद्व्रणापोषनिवर्तनाय
भैषज्यदानं हि यथातुरेभ्यः ।
तद्वत्क्षुधादुःखनिवर्तनाय
भोज्यं जिनेनेह च भोक्तुमुक्तम् ॥

मार्गश्रमात् कैरपि यानकाले
क्षुत्तर्षतापान्निजपुत्रमांसम् ।
भुक्तं तथा चित्तविहीनयोगी
हिंसामदार्थं नहि भक्षयेत् ॥

उच्चैरनाभोगमलं प्रवृत्त्या
नीचैस्तथाल्पेन तुला प्रयाति ।
मध्येन साम्यं च क्षणं यथैति
देही तथाऽऽहारमपि प्रयुज्यात् ॥

जीर्णं गृहं नैतु विनाशमस्मात्
स्तम्भे स्थिरे स्थापयतीव लोकः ।
स्थित्यर्थमेवं हि शरीरयन्त्र-
धुर्यक्षतुल्यं ह्यशनं भुनक्तु ॥

अन्नात् प्रतिष्ठा खलु कामधातोर्-
एकान्तधर्मो हि जिनेन सूक्तः ।
देहस्तु रम्भोपम एव गम्यो
चित्तं न भोज्यादिषु रञ्जितव्यम् ॥ इति ॥

तथैव, शरीरसम्बाधदर्शनात् सर्वैरपि योगिभिरुपवासो न करणीयः ।

यथा-आर्यसुसिद्धिकरे बोधाय उक्तम्—

क्लमथीभावदोषत्वाद् उपवासो विनिन्द्यते । इति ।

यदि शरीरं निष्कलमथं दृश्यते, शरीरलाघवार्थं सर्वैरपि योगिभिरुपवासितव्यम् ।

यथा-आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामुक्तम्—

पुत्रोपवासो वपुषो विशुध्यै
यद्यप्यनुक्तं सुगतैः कदापि ।
देहोऽशुचिस्त्वक्पलरक्तमज्जा-
मस्तिष्कगुल्मान्त्रयकृद्वसाभिः ॥

पित्तेन शुक्रेण कफेन विष्टा-
सिङ्घाणमूत्रास्थितनूरूहैश्च ।
कर्णाक्षिनासामुखतश्च पायो-
र्लिङ्गस्य तावन्नवछिद्रतश्च ॥

नानामलानि व्रणतोऽशुचीनि
धाराप्रवाहेण सदोद्भवन्ति ।
तस्माद्धि सर्वाङ्गसमूह एष
भूवारिवाय्वग्निनभःसमेतः ॥

कर्मानुसारं हि यथाशरीरे
सर्वावतीरूपमये स्थिताश्च ।
विण्मूत्रसिङ्घाणकश्लेष्मखेटा-
स्तेषां क्षयार्थं ह्युपवास उक्तः ॥

कायो मनुष्यस्य मलक्षयाद्धि
स्वस्यार्थसिद्धयै तु सुखेन याति ॥ इति ॥

मित्रं तु स्यादेव न, अथवाऽनुकूलं सेवेत, यथा-भगवता तत्तत्सूत्रेषूक्तम्—

अनेकेषु विवादः स्याद् कथासङ्गो द्वयोर्भवेत् ।
एकाकिनैव स्थातव्यं कुमार्या वलयं यथा ॥ इति ॥

अनुरूपं तु आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामुक्तम्—

एकेन चक्रेण रश्मिः कदापि
साश्चोऽपि मार्गे न यथा प्रयाति ।

मित्रेण हीनस्तु तथैव देही
संसाधकः प्राप्स्यति नैव सिद्धिम् ॥

धीमान् सुरूपः स महाधिशुद्धः
श्लाघ्यः कुलैर्धर्मपरायणश्च ।
सुप्रातिभश्शूर-जितेन्द्रियश्च
दाता कृपालुश्च प्रियंवदश्च ॥

क्षुत्तृक्लमायाससहस्तथापि
नो पूजको ब्रह्मसुरेतरेषाम् ।
आभोगचातुर्यकृतज्ञताकश्
श्राद्धस्त्रिरत्ने खलु मित्रमस्ति ॥

एवं ह्यशेषैश्च गुणैरुपेतः
काले कलौ चातिसुदुर्लभत्वात् ।
अर्थैश्चतुर्थैरथवाष्टमांशै-
र्मन्त्री गुणैर्मित्रमिदं श्रयेत् ॥ इति ॥

अत्र तु प्रपञ्चच्छेतुः निष्प्रपञ्चस्य वशिनश्च मित्रस्य अभावे, अनुकूलं वाऽपि
मित्रं कुर्यात् ।

तथैव यावद् दुःखपरित्राणं तावद्, वस्त्रं श्रयेत्, किन्तु सकृच्छ्रं-
अध्यवसानमापन्नञ्च वस्त्रं शयनं च न सेवेत् ।

यथोक्तमार्यसुबाहुपरिपृच्छायाम्—

चूडाधरैस्तत्र विमुण्ड्य केशान्
धार्यं विरज्यैव हि धातुरागैः ।
वस्त्रं सितं चाप्यथ वृक्षपर्णं
भङ्गातसी-वल्कल-चीरकं वा ॥ इति ॥

पुन आर्यसुसिद्धिकर उक्तम्—

मन्त्रजापी गृही दक्षो रक्तं वस्त्रं न धारयेत् । इति ।

एते सुलभाः, शृंगारस्यैव निषेधार्थाः । अनुकूला ईर्यापथास्तु त्रयः-
सुसंस्थितः, दुःखविक्रमः विशेषगामिता च । तत्र सुसंस्थितस्तु यथावत्तदीर्या-

पथस्थितस्यापि चित्ते क्षत्यनुत्पादः । यथा—आर्यगण्डव्यूह (सूत्रे) “सर्वो हि बोधिचित्तघातकः कुशलमूलारम्भो मारकर्म ।” इत्युक्तम् ।

बोधिसत्त्वचर्यावतारे^१ऽप्युक्तम्—

चित्तरक्षाव्रतं मुक्त्वा बहुभिः किं मम व्रतैः ॥ इति ।

पुनस्तत्रैव^२—

लाभा नश्यन्तु मे कामं सत्कारः कायजीवितम् ।

नश्यत्वन्यच्च कुशलं मा तु चित्तं कदाचन ॥ इति ।

अतः सर्वकालावस्थासु अपि चित्तानुत्पीडक ईर्यापथे चरेत् । अत एव आचार्यडोम्बिपादै^३रुक्तम्—

छात्रः स्याच्छात्रचर्यः स्याद्

ब्राह्मणः शुचिरेव च ।

सदा शुचिचर्या कर्तव्या (सदा चर्या शुचिः कार्या)

न कार्यं चित्तबाधनम् ॥ इति ॥

दुःखपराक्रमस्तु मार्गमनसिकारेण शीतोष्णक्षुत्तृडाद्यशेषदुःखैरक्षोभः ।
बोधिसत्त्वचर्यावतारे^४ यथोक्तम्—

स्वजीविकामात्रनिबद्धचित्ताः

कैवर्त-चाण्डाल-कृषीवलाद्याः ।

शीतातपादिव्यसनं सहन्ते

जगद्धितार्थं न कथं सहेयम् ॥ इति ।

तथैव आर्यमुबाहुपरिपृच्छायामप्युक्तम्—

कामेष्वसक्तो वह देहकष्टम् । इति ।

1. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-५/१८, ३० तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।
2. तत्रैव -५/२२, ३० तमे पृष्ठे ।
3. सहजसिद्धिः-डोम्बीहेरुकपादः, ३:२ गुह्यादि-अष्टसिद्धि-संग्रहः । के० उ० ति० शि० सं०, सारनाथ, १९८७ ई० ।
4. बोधिचर्यावतार-ग्रन्थे-४/४०, २६ तमे पृष्ठे, बुद्धविहार, लखनऊ, सन् १९८३ ई० ।

तथैव आर्यत्रैलोक्यविजय (महाकल्परारे)^१ उक्तम्—

प्राप्यते त्रिविधा सिद्धिः कायक्लेशविशोधनात् ।

तथैव श्रीगुह्यसमाजेऽपि

इच्छन्तिकमहादुःखैर्निजं दुःखं प्रशामयेत् ।

इत्युक्तत्वाद् दुःखफलसहाः प्रमुदिता इव सेवन्ताम्, न तु चित्तशील-
कातराः । अत आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामुक्तम्—

दैवं सुखं चापि विभूतयश्चा-

प्यायुर्बलं रूपसमृद्धयश्च ।

एकत्र सर्वं हि तपोबलेन

सौभाग्यतेजोबहुवित्त्वमेधाः ॥ इति ॥

विशेषगामितेर्यापथस्तु असति समाधाने सः प्रज्ञापारमितापाठसाच्छ-
करणपरिक्रमादिपुण्यसंभारान् समादरेण कुर्यात् ।

यथा च आर्यक्रोधराजषण्मुखतन्त्र उक्तम्—

भगवन्मातृकां व्युत्थः प्रज्ञापारमितां पठेत् । इति ।

आर्यसुबाहुपरिपृच्छायामुक्तम्—

शुचौ विविक्ते पृथिवीप्रदेशे

मृदाऽथवा बालुकया हि कार्यम् ।

प्रतीत्यसारं सुगतस्य चैत्यम्

कुर्यात् सदा पापविशोधनाय ॥ इति ॥

तथैव आर्यत्रैलोक्यविजयकल्पेऽप्युक्तम्—

चैत्यकर्मसु कौशल्यं सद्धर्मस्यापि वाचनम् ।

सदा चान्याल्पपुण्यानि गृहीत्वैतानि कानिचिद् ॥

-
1. इदमुद्धरणम् उक्तनामके ग्रन्थे न प्राप्यते, किन्तु 'क्रोधविजय'-नामके ग्रन्थे (Toh.No.-604 'फ' १७ तमे पृष्ठे) ।
 2. इदमुद्धरणमुक्तनामके ग्रन्थे न प्राप्यते, किन्तु 'क्रोधविजयकल्पगुह्यतन्त्राख्ये' ग्रन्थे (तोहोकू-६०४, 'ब' पृष्ठे १२.२.३ तमे) ।

सदा प्रपित्सुः संसिद्धिं सत्त्वेभ्यः परिणामयेत् ॥ इति ॥

अतो यावच्चित्तेऽनुपद्रुतपुण्यज्ञानसंभाराः सविक्षेपाः सत्त्वहितेच्छया अत्यादरेण प्रारम्यन्ते । त्रिविधेयम् अनुकूलचर्या ।

एवं तेन प्राप्तसंभारेण चतुर्विधेर्यापथे यथासुखं स्थातव्यम्, सनिमित्ते-
ऽनिमित्ते वा योगे चित्तं समाधेयम् । तथा समाहितचित्तेन तेन पञ्चदोषप्रहाणाय अष्टौ
प्रहाणसंस्काराः सेवनीयाः । तत्र पञ्चदोषा मध्यान्तविभागकारिका¹मुक्ताः—

कौसीद्यमववादस्य सम्मोषो लय उद्धवः ।

असंस्कारोऽथ संस्कारः पञ्च दोषा इमे मताः ॥ इति ॥

तेषाम् प्रतिपक्षा अष्टौ प्रहाणसंस्कारा अपि तत्रैवोक्ताः²—

आश्रयोऽथाश्रितस्तस्य निमित्तं फलमेव च ।

आलम्बनेऽसम्मोषो लयौद्धत्यानुबुद्ध्यना ॥

तदपायाभिसंस्कारः शान्तौ प्रशठवाहिता । इति ।

एवम् परिपूर्णाङ्गेन तेन भाव्यमानयोः शमथविपश्यनयोः, अत्र स शमथो
द्विधा-अन्तर्मुखप्रवृत्तिप्राप्तः, बहिर्मुखप्रवृत्त्यालम्बनश्च । तत्र अन्तर्मुखप्रवृत्तिरपि
द्विधाकायालम्बना कायाश्रयालम्बना च । तत्र कायालम्बनाऽपि त्रिविधाकाय एव
देवाकारालम्बना कङ्कालाद्यशुभालम्बना खट्वाङ्गादिनिमित्तविशेषालम्बना च ।
कायाश्रयालम्बनापि पञ्चधा । श्वासालम्बना, सूक्ष्मनिमित्तालम्बना, तिलकालम्बना
प्रभाङ्गालम्बना, प्रीतिसुखालम्बना च ।

बहिर्मुखालम्बनापि द्विविधा-विशिष्टा साधारणा च । तत्र विशिष्टापि
द्विविधा-कायालम्बना वागालम्बना च । एतास्तु शमथावताराङ्गानि । कथं
भावनीयाः? अत्र न उच्यन्ते, ग्रन्थविस्तरभयात् । सद्गुर्वनुभूतोपदेशाश्रययोग्यत्वाद्
भावनोपदेशस्य वर्णस्थितस्य दुर्विज्ञेयत्वाच्च विस्तरेण शमथविपश्यना-
देशनायामुक्तम् । शमथफलं विपश्यना, विपश्यनाफलं तु शमथविपश्यना-
युगनद्धम् । कस्यचिद् वस्तुनोऽनवस्थितत्वाद् वस्त्वभावविशेषो दृश्यते । तस्मिन्नेव
काले एकाग्रीभूतं चित्तम् अनेकालम्बनानि प्रधाव्य प्रशान्तं तिष्ठति । एवम् अस्यां

1. मध्यान्तविभागकारिका ४/४, पृ०-१९९, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, १९७१ ई० ।

2. तत्रैव - ४/५१/२ ।

शमथविपश्यनायुगनद्धावस्थायाम्, यज्ज्ञानालम्बनं ज्ञान एव विधिवद् प्रतिष्ठितं, योगाचार-शमथविपश्यनयोः, अस्मन्माध्यमिकानाञ्च शमथविपश्यन-योर्युगलसम्बन्धे केचिद् भेदाः, मम बुद्धिः विस्तरितुं क्षमा तथापि अत्र उपादानोपायमात्रं प्रकाशितुकामा, न च सिद्धान्तनिर्णेतुकामा । आर्यनागार्जुनादि-प्रकाशितत्वात् किञ्चिदपि केनचिदपि अवक्तव्यत्वात् न विस्तरप्रपञ्चः । इदानीम् अपरं त्विदं वक्तव्यम्, किं सनिमित्तशमथेऽग्रतोऽकृते विपश्यनाया उत्पादो युज्यते? इति चेत्, स तु युज्यत एव, अनिमित्तशमथ-प्रत्यवेक्षणाज्ञानत एव अनिमित्त-विपश्यना-निर्विकल्पकज्ञानप्रादुर्भावः । तथा च आर्यकाश्यपपरिपृच्छाया'मुक्तम्—

वह्निस्तु काष्ठद्वयघर्षजातो
जातेन तेनैव स एव दग्धः ।
प्रज्ञेन्द्रियं चापि तथैव भूत्वा
प्रज्वालयेत् तच्च तदेव जातम् ॥ इति॥

प्रत्यवेक्षणाज्ञानं तु न शमथः, विविधप्रकारेण आलम्ब्यत इति चेत् तथा सति तु शमथोऽपि न शमथः, बहूनां क्षणानां बह्वंशत उपलभ्यमानत्वात् । अन्यच्च, शमथतो विपश्यनायामवतारेऽपि कथं प्रत्यवेक्षणाज्ञान-सन्धिर्न क्रियते ? तत्र क्रियते, कस्मिंश्चिन्मात्रे । तत्रास्यक्रमोऽपि काय एव परीक्षणेन सिध्यति ।

आर्यनागार्जुनपादेनोक्तम्—

लोको विकल्पतो भूतो विकल्पश्चित्तसंभवः ।
चित्तं वै जायते कायात्तस्मात् कायं विचारयेत् ॥ इति॥

आर्यनागार्जुनपादैरप्युक्तम्—

विना कायं हि विज्ञानं नास्तीति खलु जानताम् । इति ।

1. अयं श्लोक आर्यकाश्यपपरिपृच्छायां भोटभाषायां तु विद्यामानोस्ति, किन्तु संस्कृतग्रन्थेऽयं श्लोको न प्राप्यते, संस्कृतेऽयं विलुप्त एव इति मन्ये । अन्यत्र आचार्य स्थिरमतिना कृतायां मध्यान्तविभागटीकायां पञ्चमे परिच्छेदे एतादृशो विषयो गद्यरूपेण प्राप्तो भवति, तद्यथा— काष्ठद्वयादनग्निः लक्षणादग्निर्जायते, जातश्च तदेव काष्ठद्वयं दहति, एवमसम्यक्त्वलक्षणाया यथाभूतप्रत्यवेक्षायाः सम्यक्त्वलक्षणमार्यं प्रज्ञेन्द्रियं जायते । जातञ्च तामेव भूतप्रत्यवेक्षां विभावयति । इत्येतदत्र साधर्म्यम् । न चासम्यक्त्वलक्षणापि भूतप्रत्यवेक्षा मिथ्यात्वलक्षणा, सम्यक्त्वानुकूल्यात् । (P.183 Motilal Banarsidass-1971)

सूत्रेऽपि—

“विज्ञानं तु शरीरादनतिक्रमम्” इति ।

अतः सर्वधर्माः चित्ते समाहिताः, चित्तं काये समाहितम्, कायो धर्मधातौ उपयोक्तव्यः। अयम् अववादः । अथवा कायवाक्चित्तानि पृथक् पृथक् आलम्बनीयानि, अयमववादस्तु बुद्धानुस्मृतेर्ज्ञेयः । अतः सनिमित्त-शमथाश्रयेण तु अनिमित्तशमथालम्बनतो विषयनोत्पादस्य अयं पक्षः प्रशस्यः, तस्य स्थितिर्दृढा, केवलेन शमथेन क्लेशाक्रमणनिवृत्तिः, फलानुरूपहेतुत्वात् ।

अत्रोपदेशत इदं स्वगुरोर्विलिख्य तद्वृद्धपुण्यविधुनिर्मलरश्मिभिस्तु ।
अज्ञानतैमिरहतेर्भवतापशान्तेः प्रज्ञाक्षितथ्यविषयाः स्फुटतां प्रयान्तु ॥

विक्षेपवायुशमनात् तमसां निवृत्तेरेकं मुनीन्द्रविषयं तरसाऽहमीक्षे ।

॥ आचार्यबोधिभद्रकृतः समाधिसम्भारपरिवर्तो नाम समाप्तः ॥

भारतीयोपाध्यायवीर्यचन्द्रेण परामृश्य भोटदेशीय-लोकचक्षुषा भिक्षुणा धर्मप्रज्ञेन (छोस् क्यी शेस् रब) अनूद्य संशोध्य च निष्ठापितः ॥



भारतीय (संस्कृत)भाषायाम्-समाधिसम्भारपरिवर्तनाम् ।
भोट-भाषायाम्-तिङ्ङेऽज्जिन गिय छोगस् किय लेउ शेस् व्य व ।

नमः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः ।

[सप्तपूर्वङ्गमाङ्गानि]

प्रथमं नरदेहरत्नं व्यर्थं न स्यात्, तस्मात् प्राप्तनरदेहसार्थकताकामेन पुद्गलेन आदौ सप्तपूर्वङ्गमाङ्गसमन्वितेन भवितव्यम् । मूलं श्रद्धावत्त्वं, प्रत्ययः कल्याणमित्रसेवनं तद्गुणग्रहणं च, सादरत्वम्, विश्वासो निसंशयत्वं च, वीर्यवत्त्वं, सर्वत्र खेदसहिष्णुमनस्कता तथा सर्वत्र मानप्रहाणम् इत्येतानि तु सप्तपूर्वङ्गमाङ्गानि ।

[आर्यतावृत्तानपायीनि सप्ताङ्गानि]

सर्वदा सर्वथा परदोषानवेक्षणं दोषानाख्यानञ्च, स्वगुणमन्यनानुत्पादः, लज्जापत्रपाकामप्रवृत्तिभ्य आत्मरक्षणम्, त्रिविधसंवरप्रतिपत्तिचर्या, चाटु-नवा-संगोच्चदृष्टीः परित्यज्य सदा निरिन्द्रियावस्थानं, देश-कालावस्थाभिः परचरित-मात्राज्ञानद्वारा नियोजनम्, परावमाननां प्रहाय अनधिकक्षेप इति । इमानि तु लोकावद्यानुपलिसानि आर्यतावृत्तानपायीनि सप्ताङ्गानि ।

[सप्तान्तराय-प्रहाणाङ्गानि]

सदाल्पेच्छता संतुष्टिश्च, अत्यभिनिवेशासक्त्यधिग्रहणप्रहाणं, तन्द्रा-लस्य-प्रहाणं, अतिप्रसंगेऽपि ज्ञातव्यता, महार्थासम्पादक-कथाकार्यादिप्रहाणम् अ-प्रवृत्तिश्च, अयोनिशोमनसिकारप्रहाणं, यत्प्रतिपक्ष-गामिसेवाज्ञानम्, एतानि तु सप्तान्तरायप्रहाणाङ्गानि ।

[सप्तप्रेरकाङ्गानि]

मनुष्यदेहप्राप्ति-बुद्धधर्मचर्या-प्रतिपत्ति-दुर्लभताविचारः, तादृक्प्रतिपत्ति-महार्थताविचारः, लौकिक-कार्यकारिणां तु नियतव्यर्थताज्ञानम्, परपीडायाः स्वप्रतिपक्षसेवया ज्ञानम्, अहम् तु सदा मारमुष्टौ स्थितः सन् शीघ्रं मरिष्य इति सततचिन्तनम्, सञ्चितं सर्वं तु अवश्यम् अवशिष्यत इति ज्ञानम्, स्ववलीपलिता-दीनां सदा परीक्षा निर्वेदश्च । इमानि तु स्वात्मप्रेरकाङ्गानि सप्त ।

[सप्तविधानि तापच्छेदकाङ्गानि]

बुद्धज्ञानं तु गम्भीरोदारं, वचन-सूत्राणि च बहुसंख्यानि, अहं तु दुर्मतिमूढोऽतिकौसीद्यः सर्वं भाषितुं ज्ञातुं चासमर्थः, मम जीवनक्षयो भविष्यतीति विचारः, शब्दाक्षरानुसंवर्णित-देशनाज्ञानेनानेन न परजयो न वोपकारः, अतिदुराराध्या मनुष्या इति विचारः, स्वपरसिद्धान्तेषु रागं द्वेषं च द्विकं परित्यज्य अनपवादः, भ्रातृबन्धुमित्रादयस्तु नूनं मार्गमिलितातिथय इवेति विचारः, एषां लौकिकलाभ-सत्कार-प्रशंसा-निन्दादीनां तु निश्चितमेव वञ्चनाभावेन ज्ञानम्, लौकिकोपलब्धीच्छा-तृष्णा-लाभ-यशोऽभिमान-मन्यनादीनां एषां तु निश्चितमेव अग्नि-विष-महाशस्त्रवत् ज्ञानम्, ऐतेषां बाह्याध्यात्मिक-वस्तूनां मायावत् स्वप्नवद् वा सततं परीक्षा इति। एतानि तु सप्तविधानि तापच्छेदकाङ्गानि।

[सप्ताभिमुखाङ्गानि]

संसर्गसुखं त्यक्त्वा विविक्तस्थितिः, तत्रापि यथास्वग्रन्थवद् देवाराधने देवोपासने, देवाभिमुख्ये चेति त्रिविधेषु वीर्येण तीव्रायासः, तत्रापि आशां, शङ्कां, कामं, भयं च त्यक्त्वा स्थितिः, महाकरुणामयत्वम्, शूरवीरचित्तद्वारा आयूह-निर्यूहविगतेन मया एतत्साधनद्वारा यावदभीष्टार्थसिद्धिपर्यन्तं शरीरप्राणार्थेऽपि एनं न त्यक्ष्यामि इति प्रतिज्ञासाधनम्, तत्रापि कस्मिंश्चिदपि स्वप्नादिलक्षणे भूतेऽपि हर्षविषादमकुर्वन् अपरवादः, तत्रापि देवस्वप्नलक्षणादि तु अववादतो ज्ञानम् अनवमन्यना च इमानि शीघ्रं पुरुषार्थान् साधयित्वा अभिमुखकारकाणि च सप्ताङ्गानि।

[कायरक्षकाणि बाधा-निवारकाणि च सप्ताङ्गानि]

एतादृक्पुद्गलशरीरस्य अतिदुर्लभत्वात् प्रधानत्वाच्च कायो रक्षितव्य इति वस्त्रभोजनौषधादीनां यथानुरूपचर्या, मनुष्यामनुष्य-बाधारक्षणम्, समतलपवित्र-निरुपद्रवाश्रयः, कायचित्तक्लमथश्रान्तिकार्यनिवृत्तिः, अर्धरात्रौ, मध्याह्ने, भोजने-जीर्यमाणे, काये रोगधातूत्पादकाले आलम्बनेऽनुद्यमः, कायचित्तक्लमथश्रान्ति काले खेदं प्रणुद्य पुनरालम्बनप्रबोधनम् अववादाज्ज्ञेयता, सदा ईर्यापथयोगिनः कायसमाधानम्। एतानि तु कायरक्षकाणि बाधानिवारकाणि च सप्ताङ्गानि।

[चतुर्विधानि आक्षेपकानि पूरकाणि वाऽङ्गानि]

तथास्थितिखेदे पुण्यतन्द्रिते क्रियाकर्तृविकल्पोत्पाद आत्मनाऽऽत्मानं चोदयन् प्रतिपक्षोत्पादनम्, काय आकस्मिकबाधोद्गमे ज्ञानविशेषवैषम्यभावे च स्वानुभवाववादाभ्यां प्रतीकारः, अन्यविद्वत्परिपृच्छा वा, सत्यपि राजवचने स्वसामर्थ्ये च, परार्थावलोकने सति च, चतुर्विधकर्मणस्तु वज्रोष्णीष-तन्त्रतोऽववादेभ्यश्च ज्ञानम्। क्लेशभेदानां सत्त्वविकल्पभेदयोश्च प्रतिपक्षभेदानां विस्तृतसूत्रतो ज्ञानम्, इमानि चतुर्विधानि क्षेपणानि पूरकाणि वाऽङ्गानि ।

॥ आचार्य-कृष्णपादकृतः समाधिसम्भारपरिवर्तः समाप्तः ॥

भारतीयोपाध्यायेन कृष्णपादेन स्वयं तथा महासंशोधकानुवादकेन धर्मप्रज्ञेन (छोस् क्वि शेस् रब) च अनूद्य संशोध्य च निर्णीतः।



སྒྲོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོས་མཛད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ།

༄༅། །ཁྱེ་གར་སྐད་དུ། སམྐྱི་སྐྱར་པ་རི་མན་ལྷ་མ།

བོད་སྐད་དུ། ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ།

སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཆོལ་ལོ།

སྲིད་པ་ཇི་སྲིད་བར་དུ་བཞུགས་པ་ཡི།

བྱབ་དབང་སྲས་བཅས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆོལ་ཏེ།

གསང་སྤགས་མདོ་སྡེ་པ་རོལ་ཕྱིན་པ་ཡི།

མདོ་སྡེའི་རྗེས་འགྲོ་ཏིང་འཛིན་ཚོགས་ལེའུ་བཟོད།

དེར་སངས་སྡེ་བོ་པལ་ཆེར་བདུད་ཀྱི་ལྷགས་ཀྱས་བཟུང་སྡེ་བྲིས་གྱི་

བཙོན་ར་དམ་པོར་བཅུག།

བདུད་ཀྱི་འཛིག་རྟེན་སྒྲོང་བཞིས་གྲིམས་པས་བསྐྱངས་ཤིང་སྡེ་སྤགས་

འཆིང་བས་རིབ་དུ་དམ་པོར་བཙུངས།

1. སྐྱར་པ་རི་མན་གསེར། བེ། ལྷ། སམྐྱར་པ་རི་མན་ཙོ།

2. གྱི་བེར་མ་གསལ།

3. ཡིན། གསེར།

4. ཀྲང་པ་ཆ་སྡོམ་པའི་ཕྱིར་ "ཏིང་ངེ་འཛིན་" ཞེས་པར་ཏིང་འཛིན་ཞེས་བཞག་པ་ཡིན།

5. མཚོག་ལྷ།

6. གཟུང་གསེར། ལྷ།

7. གྲིམས་པས་བསྐྱངས་ཤིང་སྡེ་ཙོ། གྲིམས་པས་སྐྱངས་ཤིག་གསེར། ལྷ།

8. འཆིང་བར་བེ།

སྒྲིབ་བཙོན་དག་ཀྱང་ཕལ་ཆེར་བདུད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་སྒྲིབ་བཞིའི་དབང་དུ་
བྱུང་ཅིང་དགེ་སྤྲིན་¹གི།

གནས་དང་ཚུལ་སྤངས་བྱིས་པ་རྣམས་དང་སྒྲིབ་མཚུངས་ངན་འགྲོའི་གཡང་
སར་མངོན་སྤྱོད་མཐོ་རིས་སྤངས།²

དེའི་ཕྱིར་³འདི་ནི་བདག་ཉིད་བྱིར་བྱས་ཀྱི་གཞན་ལ་ཕན་པའི་རེ་བ་
ཡོད་མ་ཡིན།

འོན་ཀྱང་བདག་དང་སྐལ་མཉམ་⁴ལ་ལ་གནས་འདིར་དགའ་ན་ཡང་དག་
རྟོགས་པས་སྤྲོ་འདི་ཉོན།

དེ་ལ་ཉིང་རེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་རྣམ་པ་དགུ་ཞེ། སྤང་བར་བྱ་བ་
དང་། སྒྲིབ་དུ་འགྲོ་བ་དང་། སྒྲིག་པར་བྱ་བ་དང་། གཏུང་བ་བཅད་བ་དང་། ཡིད་
འབྱུང་བར་བྱ་བ་དང་། ཡོན་ཏན་རྗེས་སྤྲོད་བར་བྱ་བ་དང་། བཙོན་པར་བྱ་བ་དང་།
འབྲེལ་པར་བྱ་བ་དང་། གནས་པའི་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ་རྣམས་སོ།

དང་པོ། སྤང་བར་བྱ་བའི་ཡན་ལག་

དེ་ལ་སྤང་བར་བྱ་བ་ནི་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ། །དེ་ལ་བདུད་ནི་གང་། དེའི་ལས་ནི་

1. དགེ་སྤྲིན་ ལྷ་ ཅུ།
2. ཐོ་རིས་སྤངས། གསེར། ལྷ། ཐོ་རིས་སྤང་། ལྷ། མཐོ་རིས་སྤང་། ཅུ།
3. དེ་ཕྱིར་ ལྷ། ཅུ།
4. མ་དཔེར་ “སྐལ་བ་དང་མཉམ་པ་”ཞེས་གསལ་ཡང་ཆོག་རྒྱུ་ཕྱིར་སྐལ་མཉམ་ཞེས་གོང་འཁོད་
ལྟར་བསྐྱུས་ཏེ་བཞག་པ་ཡིན།
5. དེ་ལས་ གསེར། ལྷ། ལྷ།

གང་ཞེ་ན། བདུད་ནི་འདོད་བའི་ལྷ་སྒྲིག་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་¹ཚུང་མ་བསྐྱའི་བྲེད་བ་ཅན་དང་།
འཁོར་འཇིག་རྟེན་སྦྱང་བ་བཞི་དང་། བདུད་གྱི་རིགས་གྱི་ཡི་དྲགས་དང་བཅས་བ་གང་
ཡིན་བཤོ།

དེ་དག་གི་ལས་ཅི་འདོད་བའི་ལྷ་དེ་ཚུང་མ་དང་བཅས་བའི་སྦྱོ་བོ་ན་མེ་རྟོག་གི་
མདའ་ལྷ་ཡོད་བ་ནི། འདི་ལྷ་སྒྲེ་དྲེགས་བར་བྲེད་བ་དང་། རྫོངས་བར་བྲེད་བ་དང་།
ཀུན་དུ་རྫོངས་བར་བྲེད་བ་དང་། བརྒྱལ་བར་བྲེད་བ་དང་། སེམས་མེད་བར་བྲེད་བ་
ཞེས་བྱ་བ་²རྣམས་སོ། དེའི་མེ་རྟོག་དེ་དག་བསྐྱུན་བ་དེ་ཕོག་བ་ལས་ཉོན་མོངས་བ་ལྷ་
གང་ཤས་ཆེ་བ་དེ་ལ་ཕོག་བ་ཁོ་ནས་³རབ་དུ་འབར་བར་གྱུར་⁴རྟེ། དེའི་དབང་དུ་སོང་
ཞིང་ཐར་བ་དང་མཛོན་བར་མཐོ་བ་ལས་ཉམས་བར་འགྱུར་རོ།

དེའི་འཁོར་འཇིག་རྟེན་སྦྱང་བ་བཞི་ནི་འདི་ལྷ་སྒྲེ་⁵ འཐབ་བར་བྲེད་བ་དང་།
གཡེང་བར་བྲེད་བ་དང་། ལྷག་བར་རབ་དུ་ཆགས་⁶བ་དང་། འདུ་ཤེས་ལོག་བ་ཞེས་
བྱའོ། བདུད་དེ་དག་གི་ལས་ཅི་ཐ་དད་བ་སྟེ།⁸ འདི་ལྷར་འཐབ་བར་བྲེད་བའི་བདུད་དེས་

1. ཞེས་བྱ་བའི་ བཤ།

2. ཞེས་བ་ གསེར། བཤ། ལྷ།

3. དེ་ལ་ཕོག་བ་ཁོ་ནར་ སྟེ། དེ་ལ་དེས་ཕོག་བ་ཁོ་ནས་ ལྷ། དེ་ལ་དེས་ཕོག་བ་ཁོ་ནར་ ཅོ།

4. འགྱུར་ བཤ།

5. འཁོར་ གསེར། སྟེ། ལྷ་བར་རྣམས་སུ་མ་གསལ།

6. འདི་ལྷ་སྒྲེ་ བེ་ཅིང་དུ་མི་སྦྱང་།

7. འཆགས་ གསེར། ལྷ།

8. ཐ་དད་དེ་ བཤ།

ནི་ལམ་བསྐྱོམ་པ་དག་འཐབ་པ་དང་། ཚྱོད་པ་དང་། འབྲེད་པ་ལ་འཕྲུག་ཅིང་དེའི་སྒྲིབ་
 འབད་པས་བསྐྱབ་པོ། །གཡེང་བར་བྱེད་པའི་བདུད་དེས་ནི་ལམ་བསྐྱོམ་པ་དག་གཉིད་
 དང་སྒྲུགས་པ་རབ་དྲུ་འཕེལ་བའམ། ཆོས་ཉན་པ་དག་ཀྱང་གཉིད་ལ་རབ་དྲུ་སྒྲོར་
 བའམ། །ཁ་ཅིག་རབ་དྲུ་གཡེང་བར་བྱེད་པར་ཡང་གནས་སོ། །ལྷག་པར་རབ་དྲུ་
 ཆགས་པའི་བདུད་དེས་ནི་ཕལ་ཆེར་བྱིས་ན་³གནས་པ་ལ་བར་དུ་གཙོད་དེ། སྒྲིན་པའི་
 དུས་ཉེ་བར་གནས་པ་ན། བྱ་དང་བྱ་མོ་དང་། རྩུང་མ་དང་བདག་ཉིད་ཡོངས་ཅི་སྒྲུབ་
 ཅེས་དེ་རང་གི་ཤ་ལ་གཙོད་པ་སྒྲུམ་བྱེད་པའི་འདུ་ཤེས་ཉེ་བར་བསྐྱབ་པོ། །འདུ་ཤེས་
 འོག་པའི་བདུད་གང་ཡིན་པ་དེས་ནི་ཕལ་ཆེར་རབ་དྲུ་བྱུང་བའི་སྒྲུགས་སུན་འབྱིན་པར་
 བྱེད་པ་སྟེ་⁴ འདི་ལྟར་རབ་དྲུ་འབྱུང་བའི་སེམས་ཉེ་བར་གནས་པ་ན་⁵ འབྲིག་པའི་
 བདེ་བ་དང་། བཟའ་བ་དང་། བདུང་བའི་བདེ་བ་དང་། རང་གི་སྒྲེ་བོའི་ཆོགས་དང་།
 སྒྲུ་དང་གར་⁷ལ་སོགས་པ་དྲན་པས་ཆགས་པ་དང་། དེའི་རང་གི་སྒྲེ་བོས་སྒྲུ་⁸བ་དང་།
 འབྲིད་པ་དང་། བསྐྱེགས་པ་དང་། བརྩུང་པས་⁹དེའི་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བར་ཆད་བྱེད་

-
1. ལྷག་པོ་ བེ་ ཙོ།
 2. གཡེང་བར་ཡང་བྱེད་པར་ གསེར། ཙོ།
 3. བྱིས་ལ་ གསེར། སྒྲ།
 4. སུན་འབྱིན་པར་བྱེད་པ་སྟེ་ སྒྲེ། སུན་འབྱིན་པར་བྱེད་དེ་ བེ།
 5. རབ་དྲུ་བྱུང་ སྟེ། སྒྲ། ཙོ། གསེར།
 6. གནས་ན་ བེ།
 7. ལྷག་ གསེར། སྒྲ། ཙོ།
 8. སྒྲེ་བོས་བསྒྲུ་ གསེར། སྒྲེ་བོས་སྒྲུ་ བེ། སྒྲེ་བོས་བསྒྲུ་ སྒྲ།
 9. གཟུང་བས་ བེ།

དུ་འཇུག་གོ། རབ་དུ་བྱུང་བ་དག་ལ་ཡང་བྱད་མེད་གྱི་མཚན་མ་དག་ཡིད་ལ་བྱེད་བ་དང་།
 གྲོན་བགད་¹བ་དང་། ཅེས་བ་དག་དྲན་བར་བྱེད་བ་དང་། ཚོང་དང་ཞིང་ལས་དང་།
 རང་གི་འབྲེལ་བ་དང་ཡིད་གཙུགས་²བར་བྱ་བའི་སེམས་བསྐྱེད་ཅིང་། མི་ལམ་ན་བྱད་
 མེད་དུ་སྒྲུལ་ཅིང་དེས་ཆགས་བ་དང་། ས་བོན་འབྱུང་བར་བྱེད་ལ་³ སྒྲ་ཚོགས་གྱིས་
 ཀྱང་རབ་དུ་བྱུང་བ་ལས་འབེབས་གིང་། དེ་དག་གི་⁴ཚངས་བར་སྦྱོད་བ་དྲི་མ་ཅན་དུ་
 ཡང་བྱེད་དོ། །འདི་དག་བཞི་ཆར་⁵ཡང་འཛིན་བྱའི་གླིང་བ་རྣམས་སྒྲུག་བསྒྲུལ་བར་བྱ་
 བའི་ཕྱིར་སྒྲ་མ་རུངས་བ་རྣམས་⁶བསྒྲུལ་ལ། ལྷ་མ་ཡིན་དག་བསྒྲུལ་ཞིང་ལོ་ཏོག་མ་
 རུངས་བ་⁷བྱེད། མི་ཚོས་དང་ལྷན་བའི་སྲོག་འཕྲོག་ཅིང་⁸ ལུས་ལ་ནད་སྒྲ་ཚོགས་
 གཏོང་བར་བྱེད་དེ། ཇི་ལྟར་⁹རྒྱལ་པོ་བཞི་པོ་དག་ཚོས་མ་ཡིན་བ་ལ་སྦྱོད་བ་¹⁰དག་ལ་
 ཆད་བ་སྦྱིན་བ་ལྟར་འདི་དག་ནི་ཚོས་དང་ལྷན་བ་རྣམས་ལ་ཆད་བ་སྦྱིན་ནོ།¹¹

1. མཛོན་བགད་ བོ།

2. བཙུགས་ གཤེར། ལྷ།

3. བྱེད་བ་ལ་ གཤེར། ལྷ།

4. དེའི་ གཤེར། ལྷ།

5. དེ་དག་བཞི་ཆར་ ལྷ། འདི་དག་བཞི་ཆར་ བོ།

6. ལྷ་མ་རུངས་བ་དག་ གཤེར། བོ། ལྷ། ཅོ།

7. མ་རུངས་བར་ བོ།

8. ཅིང་ བེར་མ་གསལ།

9. འདི་ལྟར་ བོ།

10. ཚོས་མ་ཡིན་བ་སྦྱིན་བ་ བོ།

11. སྦྱིན་པའོ། བོ།

བདུད་ཀྱི་རིགས་ཀྱི་ཡི་དྲགས་ནི་ཡི་དྲགས་ཀྱི་རིགས་སུ་མ་ཅུ་ཅ་དྲུག་¹ལས་འདི་
 དག་རིགས་གཅིག་དུ་བགྱང་བ་²ཡིན་ཏེ། དེ་དག་གི་བདུད་ཀྱི་ལས་ནི་བསམ་གཏན་པ་
 དག་ལ་³མི་ལམ་དུ་འཛིགས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་⁴། སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆན་དང་དཔེ་བྱད་
 ཀྱིས་སྐྱས་པ་ཉེ་བར་སྟོན་པས་བར་དུ་གཅོད། བསམ་གཏན་ལ་མཉམ་བར་བཞག་⁵པ་
 ན་སྐྱེ་ཆེན་པོ་སྒྲོགས་པར་བྱེད་དོ། །མདོར་བསྡུ་ན་⁷བདུད་དང་བདུད་ཀྱི་རིགས་སུ་
 གཏོགས་པ་རྣམས་ནི་ཡང་དག་པར་ཞུགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཆགས་པ་བསྐྱེད་བའམ་⁸
 འཛིགས་པ་བསྐྱེད་པས་བར་དུ་གཅོད་དེ། དེ་ལྟར་ཡང་འཛིག་རྟེན་གསུམ་ལས་རྣམས་
 རྒྱལ་བའི་རྟོག་པ་⁹ལས་¹⁰།

མི་བཟང་¹¹བརྟུལ་ཞུགས་བཟུང་བ་ཡི་¹²།

1. གསུམ་ཅུ་ཅ་དྲུག་ གསེར།
2. འགྲང་བ་ གསེར། ལྷ་ འགྲངས་ ལ།
3. བསམ་གཏན་པ་དག་ ལ།
4. འཛིགས་པ་ལ་བསྐྱེད་པར་བྱེད་ གསེར། ལྷ་ སྐྱེད་པར་བྱེད་དེ་ ལ།
5. ཉེ་བར་སྟོན་ རྟེ།
6. མཉམ་བར་གཞག་ གསེར། རྟེ། ལྷ་ ཅོ།
7. མདོར་ན་ གསེར། ལྷ་ ཅོ།
8. སྐྱེད་བའམ་ ལ།
9. རྟོགས་པ་ ལ།
10. ལྷ་འདྲེན་འདི་གོང་འཁོད་གཞུང་དེར་མ་གསལ་ནའང་ཁོ་པོ་རྣམས་པར་རྒྱལ་བའི་རྟོག་པ་གསལ་བའི་
 རྒྱུད་དུ་གསལ། Toh.604 རྟེ། འཁྱུང་། “པ” 242ན3
11. མི་བཟང་ རྟེ། མི་བཟང་ གསེར། ལ།
12. བཟུང་ཡིས་ ལ།

སྐྱབ་¹པ་ལ་ནི་བདུད་ཀྱི་རིགས། |
 ལྷ་མོ་འདོད་པའི་གཟུགས་དག་དང་། |
 དེ་བཞིན་གཞན་གྱི་ལུས་སུ་ཡང་། |
 རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་དག་གིས། |
 དབང་པོ་བསྐྱམས་ལ་འཆོ་²བར་བྱེད། |

ཅེས་གསུངས་ཏེ་³། འདིར་བརྟུལ་ཞུགས་བཟུང་བ་ནི་ཉེ་བར་མཆོན་པ་སྟེ། སེམས་ལས་
 སུ་རུང་བ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དེ་དག་ཉེ་བར་⁴འཆོ་བར་བྱེད་དོ།

དེ་ལྟ་བུའི་བདུད་ཀྱི་ལས་དེ་དག་སུ་ཞིག་ལས་⁵འབྱུང་ཞེ་ན། བསམ་པ་དག་པས་
 ཡང་དག་པར་བརྩོན་པ་དག་ལས་⁶འབྱུང་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་རྣམ་
 པར་འབྲུལ་པ་ལས་⁷གསུངས་པ། "འཇམ་དཔལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་རྣམས་ཀྱི་
 བདུད་ཀྱི་ལས་ཅི་ལས་འབྱུང་བར་རིག་པར་བྱ། འཇམ་དཔལ་གྱིས་སྦྱས་པ། ལྷའི་བྱ་
 བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་རྣམས་ཀྱི་བདུད་ཀྱི་ལས་ནི་བརྩོན་འགྲུས་ལས་འབྱུང་བར་རིག་
 པར་བྱ་སྟེ་⁸། དེ་ཅིའི་ཕྱར་ཞེ་ན། མི་བརྩོན་པ་ལ་ནི་བདུད་ཀྱིས་ཅི་ཞིག་བྱ་སྟེ། དེ་ཉིད་

-
1. བསྐྱབ་ བཤ།
 2. འཆོ་ གསེར། ཟླ་ སྤྱ། བཤ།
 3. ཅེས་གསུངས་སྟེ་ གསེར། ཟླ།
 4. དེ་དག་དེ་ལྟར་ བཤ། དེ་དག་ཉེ་བར་འཆོ་ ཅོ།
 5. སུ་ཞིག་ལ་ བཤ།
 6. ཡང་དག་བརྩོན་པ་དག་ལ་ བཤ།
 7. Toh.97 ཟླ་ བཀའ། མདོ་སྟེ། "ཁ" ༢༧༢ བ༧
 8. རིག་པར་བྱའོ། གསེར། སྤྱ།

བདུད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ" ཞེས་སོ། ཉེ་ལྷོར་བདུད་ཀྱི་ལས་ཤེས་པས་དེ་བརྒྱུག་པར་བྱ་
 གྱུ། ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་ལྷའི་བྱ་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གིས་ཞུས་པ་ལས་²གསུངས་པ།
 "གང་གི་ཆེ་བདུད་ཀྱི་ལས་རྟོགས་³པ་དེ་ལྷ་བྱ་ནི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མེད་པ་ཡིན་ནོ། གང་
 ཡང་བདུད་ཀྱི་ལས་རྟོགས་བརྒྱུག་པ་དེ་ལྷ་བྱ་ནི་དབྱུས་⁴མེད་པ་ཡིན་ནོ།" ཞེས་སོ། ཉེ་
 མ་བརྒྱུག་པ་⁵ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་མི་ཐོབ་⁶པ་ཁོ་ན་གྱུ། ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་དབྱུང་
 བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པ་ལས་⁷གསུངས་པའི།

བགེགས་ཀྱིས་བསོད་ནམས་མ་ལུས་ཟད་པར་བྱེད། །

དེ་བས་མི་ལ་གསང་སྤྲུགས་འགྲུབ་མི་བྱེད། །

ཇི་ལྷོར་རྒྱ་བ་སྤྱིན་ལས་རྣམ་པོལ་ལྟར། །

དེ་བཞིན་བགེགས་ལས་པོལ་བ་རྣམ་པར་གསལ། །

ཞེས་ཉེ་འདྲིར་བགེགས་ཀྱང་གཉིས་ཉེ། རྟོགས་པའི་བྱུང་ཆུབ་གཞིག་⁸པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་

1. རིན་ཆེན་མཆོག་ བེ།

2. བཀའ་འགྱུར་དཀར་ཆག་གི་ཁྲོད་དུ་མདོ་འདི་རྟེན་སོན་མ་བྱུང་ཡང་མདོའི་ལུ་ཕོགས་སུ་ཡོད་སྟེ།

3. གང་གི་ཆེ་བདུད་ཀྱི་ལས་རྟོག་པ་ གསེར། གྱུ། ཅོ། གང་གིས་ཆེ་བདུད་ཀྱི་ལས་རྟོག་པ་ གྱུ།

4. དེ་ལྷ་བྱ་ནི་དབྱུས་ གྱུ། དེ་ལྷ་བྱ་ནི་དབྱུས་ གསེར། གྱུ། ཅོ།

5. དེ་མ་བརྒྱུག་པར་ གསེར། གྱུ། ཅོ།

6. མི་འཐོབ་ བེ།

7. འཕགས་པ་དབྱུང་བཟང་གིས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས་ བེ།

8. ལེབ་པ་ སྟོག་? Toh.805 གྱུ། བཀའ་ཀྱུང་། "ཐ" ༡༣ ན་༩

9. གཞིབ་ བེ།

སྒྲིང་བ་ལྟའི་བྱའི་བདུད་དང་། དེ་ལས་¹གཞན་པ་ནི་ཇི་སྒྲིང་། འཕགས་པ་དབྱང་
བཟངས་གྱིས་²ཞུས་པ་ལས་³

གཏོར་མ་འདོད་པའམ་⁴ཅུད་མོ་བྱེད་འདོད་པའམ། །

གསལ་⁵བའི་དོན་དུ་ལུས་ལ་འབབ་ཅིང་འཇུག །

ཅེས་ཏེ། འདིར་⁶དེ་གཉིས་ཀ་བསྒྲོག་པར་བྱའོ། །ཐབས་གང་གིས་བསྒྲོག་པར་བྱ་ཞེ་ན།
ཇི་སྒྲིང་དུ། འཕགས་པ་དོ་ཇེ་ཅེ་མོ་ལས་⁷གསུངས་པ།

རང་གི་སེམས་ནི་བདུད་ཅེས་གསུངས། །

རང་གི་སེམས་ཉིད་བགེགས་ཡིན་ནོ། །

རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་⁸། །

བགེགས་ཀྱན་རྣམ་པར་རྟོག་⁹ལས་འབྱུང་། །ཞེས་པའོ།

1. དེ་ལས་ གྲུ་ ཙོ།

2. དབྱང་བཟངས་གྱིས་ བེ། དབྱང་བཟངས་གྱི་ གསེར།

3. ལེན་ ༡༡ Toh.805 གྲུ་ བཀའ། གྲུ། "མ" ༡༥༠ ཟེ

4. འདོད་པའང་ བེ།

5. བསལ་ གསེར།

6. འདི་ལྟར་ བེ།

7. Toh.480 གྲུ་ བཀའ། གྲུ། "ཉ" ༢༠༥ བ ༢ འབྱུར་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན་པ་ནི།
རང་སེམས་བདུད་ཅེས་བྱ་བར་བཤད། །བགེགས་ཉིད་ཀྱང་ནི་རང་གི་སེམས། །
རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་བསལ། །རྣམ་རྟོག་ལས་ནི་བགེགས་རྣམས་འབྱུང་། །

8. སྤང་ བེ།

9. རྣམ་པར་རྟོགས་ གསེར།

གཞན་ཡང་བདུད་གྱི་ལས་བརྒྱུག་པའི་ཐབས་ནི། འཕགས་པ་སྤྲ་ངན་མེད་གྱིས་¹
བྱིན་པས་ཞུས་པ་²དང་། འཕགས་པ་སེང་གེ་ལུང་བསྟན་པ་³ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། །འདི་
ནི་སྤང་བར་བྱ་བའི་ཡན་ལག་གོ།

གཉིས་པ། སྤྲ་དུ་འགྲོ་བའི་ཡན་ལག

གང་གིས་ཐོས་པའི་རང་བཞིན་གྱིས་⁴ཤེས་རབ་མ་སྦྱེས་པ་དེས་ནི་བདུད་གྱི་
ལས་བརྒྱུག་པར་མི་རྒྱས་ཤིང་སེམས་མཉམ་པར་འཛོལ་པར་ཡང་མི་རྒྱས་པས་ན། དང་
པོར་ཐོས་པ་ནི་དེ་སྤྲ་དུ་བྱ་སྟེ། ཇི་སྤྲ་དུ།

1. འཕགས་པ་སྤྲ་ངན་མེད་གྱི་ བ།

2. Toh.76 གྲེ། བཀའ། དཀོན་བརྟེན། "ཅ" 224 བ - 200 བ།

3. Toh.209 གྲེ། བཀའ། མདོ་གྲེ། "ཆ" 222 བ - 224 བ།

Toh.67 གྲེ། བཀའ། དཀོན་བརྟེན། "ཅ" 64 ན - 220 བ།

འཕྲ་བ་སེལ་ལུང་བསྟན་པ་ཞེས་བྱའི་མདོ་མ་རྟེན་ཀྱང་བྱམས་པའི་སེལ་སྒྲ་ཆེན་པོ་ཞེས་པ་དང་འཕྲ་
བ་སེལ་སྒྲ་བསྟར་པ་ཞེས་བྱ་བ་གཉིས་འདུག་པས་མདོ་དེ་གཉིས་གང་རུང་ཞིག་ཡིན་ནས་སྟུམ།

4. ཐོས་པ་བྱ་བའི་རང་བཞིན་གྱི་ བ།

5. བྱས་སྟེ། གསེར།

6. ལུང་འདི་རྟེན་སྟོན་མ་གྱིང་འོན་ཀྱང་ལུང་འདིའི་དོན་མཚུངས་པར་སྟོན་པའི་གཞུང་ཡོད་དེ། འཕྲ་བ་
དགོངས་པ་དེས་པར་འབྲེལ་བ་(གྲེ། བཀའ། མདོ། "ཅ" 20) ལས། ལྷག་མཐོང་ནི་ཐོས་པ་དང་
བསམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ལྷ་བ་རྣམས་པར་དག་པའི་རྒྱ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། ཞེས་དང་། ཡང་འཕྲ་བ་
སྟེད་མེད་གྱི་བྱས་ཞུས་པ་(གྲེ། བཀའ། མདོ། "ན" 22) ལས། ཐོས་པ་དང་ལྷན་བར་ནི་ཤེས་རབ་འབྱུང་
བར་འགྱུར་རོ། ཤེས་རབ་དང་ལྷན་པ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རབ་དུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ། ཞེས་གསལ།

ཤེས་རབ་རྒྱལ་བྱེད་པ་ནི་ཐོས་པ་སྟེ། |

བསམ་པ་དང་ནི་གཉིས་པོ་ཡོད་ཀྱང་ན། |

དེ་ནས་བསྒྲུབ་པ་ལ་ནི་སྦྱར་བ་¹སྟེ། |

དེ་ལས་དངོས་གྲུབ་སྤྲོད་མེད་པ་འཛོལ་²། |

ཅེས་བཤད་ལ། འཕགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དགོད་པ་བརྒྱ་བསྟན་པའི་
ལེའུ་ལས་³ཀྱང་⁴ "ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལས་དང་པོ་བ་དེ་ནི་ཐོག་
མ་ཉིད་དུ་ཁ་ཏོན་ལ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། ཁང་དུ་ཐོས་ནས་དཔེན་པར་གནས་པ་ལ་བསྐྱལ་
བར་བྱའོ།" ཞེས་གསུངས་ལ། དོན་དེ་ལྟར་འཕུལ་བ་དུག་ཤུལ་ཅན་གྱིས་ཞུས་པ་⁵དང་།
འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྟོན་མ་⁶ལས་ཀྱང་གསུངས་སོ། དེ་བཞིན་དུ་འཕགས་པ་སྤྱོད་
པོ་བཀོད་པ་ལས་⁷ཀྱང་།

-
1. སྦྱར་བ་ གསེར། སྟེ། ཙོ།
 2. སྤྲོད་མེད་པ་འཛོལ་ གསེར། སྟེ། ཙོ། སྟེ།
 3. Toh.44 སྟེ། བཀའ། སལ་ཆེན། "ཀ" ༢༧ ན ༢ འགྲུར་ཅུང་མི་མཐུན།
 4. "ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དགོད་པ་བརྒྱ་བསྟན་པའི་ལེའུ་ལས་ཀྱང་།"
གསེར་གྱིས་ནང་ཡིག་ཆོག་གསལ་བཤད་ཀྱི་གསལ། ཀྱང་ བེར་མི་སྤྱང་།
 5. Toh.63 སྟེ། བཀའ། དཀོན་བཙུགས་ "ཅ" ༢༧ ན ༢ - ༢༤ ན ༥
 6. Toh.145 སྟེ། བཀའ། མདོ་སྟེ། "བ" ༢༥ ན ༥ - ༤༢ ན ༢
 7. Toh.44 སྟེ། བཀའ། སལ་ཆེན། "ཀ" ༢༧ ན ༢ གཞུང་འདི་སྤྱོད་པོ་བཀོད་པའི་མདོ་ལས་ཞེས་
གསུངས་འདུག་ཀྱང་སྤྱོད་པོ་བཀོད་པའི་མདོར་མི་གསལ་ཞིང་སལ་ཆེན་གྱི་ཁོད་དུ་བཞུགས་པ་ལས་ཆེད་
སོན་བྱུང་།

ཐོག་མར་ཉན་འདོད་ཐུ་མ་བསྟེན་བཀུར་བཟོད་དང་དེས་¹བྱས་ཤིང་། །
 རང་བཞིན་མེད་པའི་ཆོས་ལ་རབ་རྟོག་བསམ་གཏན་ཆེད་བྱེད་པ། །
 བདེ་གཤེགས་ཉིད་ནི་རྟོགས་འགྱུར་འགྲོ་བ་རྣམས་སྒྲོམ་²སེམས་ཆོམ་བྱེད། །
 ཆོས་ཉིད་དེ་འདྲ་སྟོན་པ་མུར་དུ་བདེ་གཤེགས་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
 ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་འཕགས་པ་ཉན་ཐོས་ཀྱི་སོ་སོར་³ཐར་པའི་མདོ་ལས་⁴
 ཀྱང་།
 མང་དུ་ཐོས་པ་ནགས་ཀྱི་ནང་དག་ཏུ། །
 ལང་ཆོ་ཡོལ་བ་རྣམས་ཀྱི་གནས་པ་བདེ། །
 ཞེས་གསུངས་ཏེ།⁵ དེ་བས་ན་ཐོས་པའི་ཤེས་རབ་ཉིད་དོན་བསྐྱབ་པའི་ཐུན་དུ་འགྲོ་བའོ། །
 འདི་ནི་ཐུན་དུ་འགྲོ་བའི་ཡན་ལག་གོ། །
 གསུམ་པ། ཐུག་པར་བྱ་བའི་ཡན་ལག

དེ་ལྟར་ཐོས་པ་དང་ལྟན་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ཆོས་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པ་
 དགག་པར་བྱ་སྟེ། མངོན་པར་ཤེས་པ་མ་ཐོབ་⁷པར་མང་དུ་ཐོས་པ་ཙམ་གྱིས་གཞན་⁸

-
1. བཟོད་དང་དེ་ སྤྱི་གསེར།
 2. སྒྲོམ་གསེར། ཙྴ་ཤེ།
 3. སོ་སོ་གསེར། སྟེ། སྤྱི།
 4. Toh.2 སྟེ། བཀའ་འདུལ་ག་ “ཙ” 2 བ 2
 5. ཞེས་གསུངས་སྟེ། གསེར། སྟེ།
 6. ཡན་ལག་གསེར། སྤྱི།
 7. མ་ཐོས་གསེར། སྤྱི།
 8. གྱིས་ནི་གཞན་ཤེ།

ལ་ཕན་གདགས་པར་རྒྱལ་བས་མ་གསུངས་ཏེ། དེ་བས་ན་འཕགས་པ་བྱང་རྒྱལ་སེམས་
 དཔའི་¹རྣམ་པར་དགོད་པ་བཅུ་བསྟན་པའི་ལེའུ་ལས་ཀྱི། "བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའ་ལས་
 དང་པོ་བ་དེ་ནི་ཐོག་མ་ཉིད་ཁ་ཏོན་ལ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། ཁང་དུ་ཐོས་ནས་དཔེན་པར་
 གནས་པ་ལ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། རབ་དུ་དཔེན་པར་གྱུར་ནས་དགོ་བའི་བཤེས་གཉེན་དུ་
 གྱུར་པར་ཡོངས་སུ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། དགོ་བའི་བཤེས་སུ་གྱུར་ནས་²ང་ལོ་སྟོ་བདེ་བ་⁴
 ལ་ཡོངས་སུ་⁵བསྐྱལ་བར་བྱའོ། ང་ལོ་བདེ་བར་གྱུར་ནས་དུས་ཤེས་པ་ལ་ཡོངས་སུ་⁶
 བསྐྱལ་བར་བྱའོ། དུས་ཤེས་པར་གྱུར་ནས་མི་འཛིགས་པ་ལ་ཡོངས་སུ་བསྐྱལ་བར་
 བྱའོ། མི་འཛིགས་པར་གྱུར་ནས་དོན་⁷ཤེས་པ་ལ་ཡོངས་སུ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། རྟོན་ཤེས་
 པར་གྱུར་ནས་ཆོས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བ་ལ་ཡོངས་སུ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། ཆོས་ཀྱི་རྗེས་སུ་
 འབྲངས་པར་⁸གྱུར་ནས་སྤོངས་པ་མེད་པ་ལ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། སྤོངས་པ་མེད་པར་

-
1. བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའ་ ཟླ།
 2. Toh.44 ཟླ། བཀའ་ ཕལ་ཆེན། "ཀ" ༢༧ ན ༢ འགྱུར་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན།
 3. དགོ་བའི་བཤེས་གཉེན་དུ་གྱུར་ན་ བཤ།
 4. ལུང་འབྲེན་འདི་འདྲ་བ་ཞིག་དཀོན་མཆོག་སྟོན་མར་(ཟླ། བཀའ་ "ཨེ" ༡ ན) འཁོད་པ་དེར་ 'བཀའ་སྟོ་
 བདེ་བ་' ཞེས་སྒྲུང་ཡང་། གཞུང་འདིའི་པར་མ་ཚང་མའི་ནང་ 'ང་ལོ་བདེ་བ་' ཞེས་གསལ།
 5. ང་ལོ་བདེ་བ་ལ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། གསེར། ཙོ། ལྷ།
 6. དུས་ཤེས་པ་ལ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། གསེར། ཟླ། ཙོ། ལྷ།
 7. དུས་ བཤ།
 8. འབྲང་པར་ ཟླ། ཙོ། ལྷ། གསེར།

གྱུར་ནས་ཆོས་རྣམ་པར་དགོད་པ་ལ་ཡོངས་སུ་བསྐྱལ་བར་བྱའོ། །དེ་¹ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། དེ་
བས་ཀྱང་ཤས་ཆེར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་²སྤྱིང་ཇེ་ཆེན་པོ་སྤྲོན་དུ་འཛོག་³པར་བྱ་བ་
དང་། གནས་གང་ཐོས་ཀྱང་དེ་ལ་བདག་ཉིད་སྤྱོར་བར་བྱ་བ་དང་⁴། བདག་ཉིད་གཞན་
གྱི་དྲིང་འཛོག་པར་མི་འགྱུར་བར་⁵བྱ་བའི་ཕྱིར་ཏེ། གྲེ་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ་དག་འདི་ནི་⁶
ལས་དང་པོ་བའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་⁷རྣམ་པར་དགོད་པའོ། ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །
དོན་འདི་ཉིད་འཕགས་པ་དྲག་ཤུལ་ཅན་གྱིས་ཞུས་པ་དང་། དགོན་མཆོག་སྤྲོན་མ་⁸
ལས་ཀྱང་གསུངས་སོ། ། །གཞན་ཡང་འཕགས་པ་སྤྲག་བའི་བསམ་པ་བསྐྱལ་བའི་མདོ་
ལས་⁹ཀྱང་།

བདག་ནི་སྤྱིབ་ཉམས་དེ་ནི་¹⁰ཅི་བྱ་ཞེས། །

བྱིས་པ་འཆི་བའི་དུས་ན་མྱ་ངན་བྱེད། །

1. བེ་ཀིང་པར་མའི་ནང་"དེ"མ་གསལ།
2. ཐམས་ཅད་སྤྱིང་ཇེ་ཆེན་པོ་ གསེར། གླེ། སྤྲེ།
3. མཛོན་དུ་གཞག་ བཤ།
4. བྱ་བ་དག་ ཅོ།
5. བདག་དང་གཞན་གྱི་དྲིང་མི་འཛོག་པར་ གསེར། བདག་དང་གཞན་གྱི་དྲང་མི་འཛོག་པར་ གླེ། བདག་
དང་གཞན་གྱི་དྲིང་འཛོག་པར་མི་འགྱུར་བར་ སྤྲེ། ཅོ།
6. འདི་ན་ གླེ།
7. བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ ཅོ།
8. Toh.847 གླེ། བཀའ། "ཨོ" 3 བ 5 - རེབ་པ་
9. Toh.69 གླེ། བཀའ། དགོན་བརྟེན་གསལ། "ཅ" 1 རེབ་པ་3 འགྱུར་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན།
10. དང་ནི་ གསེར། གླེ། བཤ། སྤྲེ།

ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་མང་དུ་ཐོས་པ་དབེན་པ་མི་བསྐྱེན་པར་ཆོས་སྒྲིབ་པ་ལ་¹ཉེས་པ་
ནམས་པ་རབ་དུ་མང་པོ་གསུངས་པས་དེར་ཞིབ་དུ་བལྟའོ། །དེ་བས་ན་མང་དུ་ཐོས་པ་
དེས་ཐོས་པ་ཙམ་གྱིས་ཆོས་སྒྲིབ་པར་དེ་²ལས་ལྟོག་པར་བྱ་ཞིང་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་
ནས་གཟོད་³འགྲོ་བའི་དོན་བྱ་སྟེ། འདི་ནི་ལྟོག་པར་བྱ་བའི་ཡན་ལག་གོ།

བཞི་པ། གདུང་བ་བཅད་པའི་ཡན་ལག

དེ་ལྟར་ཆོས་སྒྲིབ་པ་ལས་ལྟོག་ཅིང་སྒྲོས་པ་སྤངས་པ་དེ་⁴འདི་སྒྲུལ་དུ། ད་དུང་⁵བདག་
གིས་སྤང་པོ་ལ་མཁས་པར་བྱ་བ་ཡང་ཡོངས་སུ་མ་གདུགས། ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ལ་
མཁས་པར་བྱ་བ་ཡང་ཡོངས་སུ་མ་གདུགས་སོ། །དེ་དག་ལ་⁶མཁས་པར་མ་གྱུར་པར་
ནི་ཐར་པ་ཡང་མི་འཛོལ་⁷སྟེ། ཇི་སྐད་དུ།⁸

1. སྒྲིབ་པ་ལས་ གསེར། རྟེན་ ཅོ།

2. ཐོས་པ་ཙམ་གྱིས་ཆོས་སྒྲིབ་པར་མི་བྱ་བར་དེ་ བོ། ཐོས་པ་དེས་ཐོས་པ་ཙམ་གྱིས་ཆོས་སྒྲིབ་པར་མི་བྱ་
བར་དེ་ ཅོ།

3. བཟོད་ བོ།

4. སྤངས་སྟེ། བོ།

5. ད་དུང་ བཅར་མི་སྒྲུང་།

6. དགོ་ལ་ གསེར།

7. མི་ཐོབ་ རྟེན་ སྒྲིབ་ ཅོ། གསེར།

8. མདོ་སྟེ་རྒྱན། ལེའུ་⁷² ཡོངས་སུ་འཆོལ་བའི་ལེའུ། Toh.4020 རྟེན་ བསྟན། སེམས་ཙམ།
"ཐི" 74 བཅུང་

རིག་པའི་གནས་ལྟ་དག་ལ་བརྩོན་པར་མ་བྱས་པར། །

འཕགས་མཆོག་གིས་ཀྱང་ཐམས་ཅད་¹མཁྱེན་ཉིད་མི་འགྱུར་ཏེ། །

དེ་བས་གཞན་དག་ཚར་བཅད་²ཇིས་སྤྱ་གཟུང་བྱིར་རམ། །

རང་ཉིད་³ཀྱན་ཤེས་བྱ་བྱིར་དེ་ལ་དེ་བརྩོན་བྱེད། །

ཅེས་བསྟན་པའི་བྱིར་ཞེས་སེམས་པ་དང་། གཞན་ཡང་སྒྲོབ་མ་དང་ཡང་སྒྲོབ་ཀྱི་འབྲེལ་
བ་⁴དང་། རྟེན་པ་དང་བཀུར་སྟེ་དང་གྲགས་པ་དང་སྒྲུ་དང་ཆོགས་སྤྱ་བཅད་པའི་བདེ་བ་
ལ་འདོད་པ་བྱུང་ན་དེ་ནི་ངེས་པར་བསྟོན་པར་བྱ་སྟེ། ཆོས་ཐོས་ནས་བསྟོམས་པས་⁵བྱུང་
བར་མི་བྱེད་པ་ནི་ཅིར་ཡང་མི་བསྟུགས་ཏེ། རི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་སྟོང་པོ་བཞུད་པ་
ལས་⁷གསུངས་པ།

ཡང་དག་སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་འདི། །

ཐོས་པ་ཅམ་གྱིས་མི་འགྱུབ་པོ། །

དཔེར་ན་ལ་ལ་ཆུ་ཁྱུང་གིས། །

སྒྲོབས་མེད་ནན་གྱིས་བྱིར་བ་དག །

1. འཕགས་མཆོག་ཅི་སེམས་ཐམས་ཅད་ བོ།

2. ཚར་གཅད་ བོ།

3. རང་གིས་ བོ། བོ། ཅོ།

4. ཡང་སྒྲོབ་ཀྱི་སྒྱུར་བ་ བོ། གཤེད། ལྟ། ཡང་སྒྲོབ་ཀྱི་སྒྱུར་བ་ ཅོ།

5. བསྟོམ་པ་ བོ།

6. བྱུང་བར་བྱས་པ་ནི་ གཤེད། ལྟ། བྱུང་བར་མ་བྱས་པར་ ཅོ།

7. Toh.44 བོ། བཀའ། སལ་ཆེན། "ཀ" ༢༧ བ ༢ འགྱུར་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན།

སྒྲོམ་ནས་¹ཤི་བར་གྱུར་བ་བཞིན། |
མ་བསྒྲོམས་ཚས་ཀྱང་དེ་བཞིན་ནོ། |ཞེས་བ་དང་།

ཡང་གསུངས་པ་²

དཔེར་ན་མཚོ་ཆེན་མཉན་བ་ཞིག |
སྤེལ་བ་ཐམས་ཅད་སྒྲོལ་བྱེད་ཀྱང་། |
བདག་ཉིད་³དེ་ནང་འཆི་འགྱུར་བ། |
མ་བསྒྲོམས་ཚས་ཀྱང་དེ་བཞིན་ནོ། |

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བསྒྲོམས་⁴པས་བྱང་བར་མི་བྱེད་པའི་སྒྲོན་རབ་ཏུ་མང་དུ་⁵བསྐྱན་
ཏེ་བྱུས་པར་དེ་ཉིད་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། |དེ་བས་ན་⁶ཇི་ཙམ་གྱིས་སེམས་མཉམ་པར་
འཛིག་པར་ནུས་བ་དེ་ཙམ་གྱིས་གདམས་ངག་ཁོ་ནས་⁷ཆོམ་པར་བྱས་ལ། |སེམས་ཀྱི་
ངང་རྩལ་འཕུལ་དུ་བྱུང་བ་ཡང་སྒྲོམ་ལ་ཞུ་ཞིང་བསྒྲོམ་པར་བྱའོ། |ཆོད་མ་རྣམ་པ་

-
1. སྒྲོམ་པས་ བཤེས།
 2. Toh.44 གྲེ། བཀའ། བལ་ཆེན། "ཀ" ༢༡༧ བཟ། འགྱུར་རྩེད་ཐད་མི་མཐུན།
 3. བདག་ཉིད་ བཤེས།
 4. སོགས་པས་བསྒྲོམས་ བཤེས། ལྷ། སོགས་པས་བསྒྲོམ་ བཤེས།
 5. མང་དུ་ བེར་མི་གསལ།
 6. དེ་བས་ བཤེས། གྲེ། ལྷ།
 7. ཁོ་ནས་ བཤེས། གྲེ། ལྷ། ཅོ།
 8. ལྷས་ཤིང་སྒྲོམ་པར་བྱ་ཡི་ བཤེས།

བདུན་¹དང་། བད་སྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་དང་། ཆོས་མངོན་པ་རྣམ་པ་བདུན་དང་། རྣལ་
འབྱོར་སྟོད་པའི་ས་ལ་སོགས་པའི་མཆན་མས་ཡིད་མི་གདུང་སྟེ། ཇི་སྟངས་དུ། དོན་དམ་
པའི་རིགས་པ་²ལས་³།

གང་ཞིག་སླ་མའི་མན་ངག་བདུད་ཅི་ཅི་⁴ །

གདུང་སེལ་བསེལ་⁵ལྷན་ངོ་མས་བར་མི་འབྱུང་བར་⁶ །

དེ་ནི་བསྟན་བཅོས་དོན་མང་ལྷ་ངམ་⁷གྱི། །

ཐང་ལ་སྟོམ་པས་གདུང་ས་ཏེ་ཤི་བར་ཟད། །

ཅེས་བཤད་དེ་བསྐྱལ་བ་དབག་ཏུ་མེད་པར་ངལ་བ་⁸བྱས་ཀྱང་། ཐ་སྟད་ཏེ་བར་སྦྱར་བ་
དེ་དག་ནི་མི་ཟད་⁹གྱི། ཆོ་ཡོངས་སུ་གདུགས་པ་ཁོ་ནར་འབྱུར་བར་¹⁰ཟད་དོ། ཏེ་
བས་ན་བདེ་མཆོག་གྱི་མ་ལས་¹¹ཀྱང་།

1. རྣམ་བདུན་ གཤམ། ལྟ།

2. རིག་པ་ ལྟ།

3. སློབ་དཔོན་མར་ཏས་མཛད་པའི་དོན་མཛོད་ཀྱི་ལྟ། མྱོག་ ༡༩ Toh.2224 གྲེ། བསྟན། ལྟ། "ཆེ"
ཡམ་ཡ འབྱུར་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན།

4. བདུད་ཅི་ཅི་ གཤམ། གྲེ། ལྟ།

5. གདུང་སེལ་གསུང་ གཤམ། ལྟ།

6. མི་འབྱུང་བ་ བེ།

7. ལྷ་ངམ་ ཅོ།

8. མེད་པར་ངལ་བར་ གཤམ། གྲེ། ལྟ། ཅོ། མེད་པ་ངལ་བ་ བེ།

9. སྦྱར་བདག་ནི་མི་བཟད་ བེ།

10. འབྱུར་བར་ བེར་མ་གསལ།

11. བདེ་མཆོག་གྱི་མར་འཆོལ་ཞིབ་བྱས་ཏེ་ཆེད་སོན་མ་བྱུང་ན་འང་ལྷ་ཆ་མཐོ་སྟོབ་དཔར་སྟན་མངོན་པར་

ནལ་འབྱོར་པ་ནི་ཕྱི་རོལ་འཁོར། །
 དེ་ཡི་ཁམས་ནམས་ཟད་པར་འགྱུར། །
 དེ་བས་ཕྱི་རོལ་ཀུན་སྤངས་ཏེ། །
 ནལ་འབྱོར་རོལ་པས་གནས་པར་བྱ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བཞིན་དུ། དོན་དམ་པའི་རིགས་པ་ལས་¹ ཀྱང་།

ཡུལ་ནམས་བགྲོད་ཅིང་གདུང་བས་ཉིན་བྱས་ཀྱང་། །

ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་མི་རྟེན་སྤྲིག་པས་འཛིན་³ ། ཅེས་བཤད་དོ། །

ཡུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ལ་མཁས་པར་ཡང་ནལ་འབྱོར་གྱི་⁴ མཐུས་དུས་གཅིག་
 ཉིད་ལ་འགྱུར་གྱི། དེ་དག་རིམ་བར་བསྐབས་པ་ལས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་
 པ་དོ་ཇི་གཙུག་ཏོར་⁵ ལས།⁶

རྟོགས་པའི་སྐྱེ་མའི་ནང་ཡུང་འབྱེན་གྱི་ཚུལ་དུ་འཁོད་པ་སྤྲང་། བོག་གུངས་ ༧༩ ཕྱི་ལོ་ ༡༩༩༩

1. སྐྱོབ་དཔོན་སར་ཏུས་མཛོད་པའི་དོན་མཛོད་ཀྱི་ཐཱ། མྟོག་ ༩༩ Toh. 2224 གྱི། བསྟན། ལྷན། "མེ" ཡེ་ ༣༧
2. ཡུལ་ནམས་འབྱོད་ གསེར། སྤ།
3. ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཆ་ཙམ་ཡང་མི་འདུང་། གཞུང་འདི་གའི་པར་མ་ཆོང་མར་འདི་ལྷར་གསལ་ནའང་སྤེ་
 བསྟན་ཀྱུང་ནང་བཞུགས་པའི་དོན་མཛོད་ཀྱི་ཐཱ་དང་། ཟུར་ཆག་སྐད་དུ་བཞུགས་པའི་གཞུང་ཕྱི་མོ་དེ་ཉིད་
 དང་། ལེགས་སྤྲར་ནམས་སུ་ "ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་མི་རྟེན་སྤྲིག་པས་འཛིན། " ཞེས་པའི་ཆིག་འདི་
 གསལ་ཞིང་འགྱུར་ཀྱང་བཟང་བས་གཞུང་འདི་འདྲུང་འོག་གི་མཆན་དུ་སློང་གོས་བྱང་།
4. ནལ་འབྱོར་གྱིས་ བཤ།
5. གཙུག་གཏོར་ གསེར། བཤ། སྤ།
6. བསམ་གཏན་གྱི་ཀྱུང་ཕྱི་མ་རིམ་པར་བྱེ་བ། Toh.808 གྱི། བཀའ། ལྷན། "མེ" ༣༣་ ༣༩

དེ་ལས་ཤེས་པ་སྒྲེ་བར་འགྱུར། །

མ་ཐོས་པ་ཡང་ཤེས་པར་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་ལ།

འཕགས་པ་དབྱང་བཟངས་གྱིས་ཞུས་པ་ལས་¹ །

ཆོག་ནི་གཟུང་² བར་འོས་ཤིང་ཡིད་གཞུངས་³ །

སྙན་དག་⁴ དང་ནི་བྱི་བ་རྣམས་ལ་མཁས། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

འདི་དག་གྱང་རྣལ་འབྱོར་གྱི་མཐུ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་གྱི། །རིམ་གྱིས་བསྐྱབ་པའི་གནས་

སྐབས་ལས་ནི་⁵ མ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་མངོན་པ་ལས་⁶ །

ཟད་པ་⁷ ཤེས་པ་ཟག་བཅས་གྱང་། །ཞེས་བསྟན་ནོ། །

ཆེད་པ་དང་བཀྱར་སྟེ་འདོད་པའི་གདུང་བ་ནི་ཡིད་འབྱུང་བའི་ཡན་ལག་ལས་ཤེས་པར་

བྱའོ། །འདི་ནི་གདུང་བ་བཅད་⁸ པའི་ཡན་ལག་གོ།

1. ལེའུ་ཅ Toh.805 གྱི་བཀའ། ལྷན། "མ" ༡༢ བ ༧ ཆོག་ཀྱང་གཉིས་པའི་ཆོག་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན་
བཞི། སྙན་དང་གས་དང་ནི་བྱི་བ་རྣམས་ལ་མཁས།

2. ཆོགས་ནི་གཟུང་ གྱི་ ཆོག་ནི་གཟུངས་ གྱི།

3. ཡིན་གཞུངས་ གྱི།

4. སྙན་དང་གས་ གསེར། གྱི། གྱི། ཅོ།

5. བསྐྱབ་པའི་གནས་སྐབས་ནི་ གསེར། གྱི། ཅོ། གྱི། བསྐྱབས་པའི་གནས་སྐབས་ལས་ནི་ གྱི།

6. སློབ་དཔོན་དབྱིག་གཉེན་གྱིས་མཛད་པའི་ཆོས་མངོན་པ་མཛོད་ཀྱི་ཙ་བ། གནས་པ་ གྱི། ༢༩
Toh.4089 གྱི་ བསྟན། མངོན་པ། "ཀྱ" ༢༢ བ ༧

7. ཟད་པར་ གསེར། གྱི།

8. གདུང་བ་གཅད་ གྱི།

ལྷ་བ། ཡིད་འབྱུང་བར་བྱ་བའི་ཡན་ལག

ནམ་པ་ཐམས་ཅད་དྲུ་འཁོར་བ་ལ་ཡིད་མ་བྱུང་བར་སྒྲོམ་¹བས་བྱང་བར་བྱེད་
 རྒྱས་བ་མ་ཡིན་པས། དེ་ལ་ཡིད་འབྱུང་བར་བྱ་སྟེ། རི་སྐད་དུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་
 སྦྱོད་བ་ལ་འཕྱག་བ་ལས་²བཤད་བ་³།

ཐོག་མར་ཞི་གནས་བཅའ་བྱ་དེ་ཡང་ནི། །

འཛིག་རྟེན་ཆགས་བ་མེད་ལ་མངོན་དགས་འབྱུབ་⁴། །

ཅེས་གསུངས་ཏེ། འདིར་གཉེན་ལ་མངོན་བར་དགའ་ཞིང་དབྱ་ལ་སྤང་བས་ཆགས་བ་
 དང་། ནད་མེད་བ་དང་ལང་ཚོ་ལ་སོགས་བ་ལ་ཆགས་བ་⁵དང་། རང་བཞིན་གྱིས་སྤྱིད་
 བ་ལ་ཆགས་བ་དང་། རྟེན་བ་དང་བཀྲར་སྟེ་དང་བྲགས་བ་དང་། རྒྱ་དང་ཆོགས་སྤྱ་
 བཅད་བ་ལ་ཆགས་བ་ནམས་ནམ་བར་སྤང་བར་བྱ་⁶སྟེ། རི་སྐད་དུ། འཕགས་བ་དབྱང་
 བཟངས་གྱིས་⁷ཞུས་བ་ལས་⁸གསུངས་པ།

1. ཡིད་མ་བྱུང་བར་བྱ་སྒྲོམས་ གསེར། ཡིད་མ་བྱུང་བར་བསྒྲོམས་ གྲུ་ ཅོ།
2. སྦྱོད་འཕྱག ལེའུ་² སྟོག་² Toh.3871 གྲུ་ བསྟན། དབྱ་མ། "ལ" 33 བ3
3. ལས་བཤད། གསེར། གྲུ།
4. མངོན་དགས་བྱུབ་ གསེར། གྲུ།
5. ལང་ཚོ་ལ་ཆགས་བ་ གསེར། གྲུ།
6. ནམས་སྤངས་བར་བྱ་ གསེར། གྲུ། ནམས་སྤང་བར་བྱ་ གྲུ་ ཅོ།
7. འཕགས་བ་དབྱང་བཟངས་གྱི་ གསེར། གྲུ།
8. ལེའུ་3 Toh.805 གྲུ་ བཀའ། གྲུ། "མ" 2232

རེ་ཞིག་གཅིག་¹ན་དགྲ་ཡང་མཛའ་བོར་འགྱུར། །
 མཛའ་བོ་ཡང་ནི་དགྲར་ཡང་འགྱུར་བ་ཉིད། །
 དེ་བཞིན་ཁ་ཅིག་ཀྱང་ནི་བར་མར་འགྱུར། །
 བར་མ་དེ་ཉིད་ཀྱང་ནི་དགྲ་བོར་འགྱུར། །
 དེ་བཞིན་མཛའ་བཤེས་འགྱུར་བར་རིག་ནས་ནི། །
 ལོ་གྲོས་ལྡན་པས་ནམ་ཡང་ཆགས་མི་བྱ། །
 གཉེན་ལ་དགའ་བའི་སེམས་ཀྱི་³རྣམ་རྟོག་དག །
 བརྒྱུག་ནས་དགེ་ལ་ཅི་བདེར་བཞག་བར་བྱ། །ཞེས་སོ།

འཕགས་པ་རྒྱལ་རྒྱུ་ནས་⁴ཀྱང་།

ཕ་ནི་བྱ་ཉིད་མ་ནི་རྩེང་མ་ཉིད། །
 སྒྲེ་བོ་དགྲར་གྱུར་བ་དག་བཤེས་ཉིད་དང་། །
 བརྒྱུག་པ་ཉིད་ཏུ་མཆིས་པས་དེ་⁵སྤྲད་དུ། །
 འཁོར་བ་དག་ལ་ངེས་པ་འགའ་མ་མཆིས། །ཞེས་བཤད་དོ།

དེ་བས་ན་གཉེན་དང་དགྲ་དག་ལ་ཆགས་པ་⁶ཡོངས་སུ་སྤང་ངོ་⁷

1. རེ་ཞིག་ཅིག་ བཤེས་

2. མཛའ་བོར་གྱུར། གསེར། ལྷ།

3. སེམས་ཀྱིས་ བཤེས་ ལྷ།

4. བཤེས་སྤྲིངས། ལྷོ་ཀ ༤༤ Toh.4182 སྒྲེ་བཟུན། ལྷོ་ཡིག "ངེ" ༥༢ བཟ

5. མཆི་བས་དེ་ བཤེས་

6. དགྲ་ལ་ཆགས་པ་ བཤེས་

7. སྤངས་ངོ་ གསེར།

དེ་བཞིན་དུ། བད་མེད་མི་ཏག་ལང་ཚོ་ཏག་མ་ཡིན། །

ཆེ་རིང་མི་ཏག་འབྱོར་བ་ཏག་མ་ཡིན། །

ཞེས་གསུངས་པས་དེ་དག་ལ་ཆགས་པ་ཡང་ཡོངས་སུ་སྤང་ངོ་། །

ཆེད་པ་དང་། བཀུར་སྟེ་དང་། བྲགས་པ་དང་སྤྱོད་དང་ཆོགས་སུ་བཅད་པ་ལ་
ཆགས་པ་ཡང་སྤང་སྟེ། ཇི་སྟེད་དུ། བྱང་རྒྱུ་མེས་པ་དཔེ་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པ་
ལས་འགས་སྤངས་པ།

བདག་ནི་ཆེད་མང་བཀུར་སྟེ་བྱས། །

བདག་ལ་མང་པོ་དག་འོ་ཞེས། །

འདི་འདྲའི་སྟེ་མས་པ་འཆང་འགྱུར་ན། །

འཆི་བའི་འོག་དུ་འཛིགས་པ་སྟེ། །ཞེས་བ་དང་།

ཡང་དེ་ནི་དེ་ལས་ཅི།

ཆེད་པ་དག་ནི་མང་བྱུང་ཞིང་། །

བྲགས་དང་སྟེན་པ་བྱུང་གྱུར་གྱང་། །

1. Toh.309 མི་ཏག་པ་བསྟན་པའི་མདོ། གྲུ་བཀུར་མདོ་སྟེ། "ས" ༡༡༧ བ་༢ ཆོག་ཀྱང་གཉིས་
པའི་འགྱུར་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན་པ་ནི། འབྱོར་པ་མི་ཏག་གྲོག་གྱང་ཏག་མ་ཡིན།

2. དེ་དག་ལ་ཡང་ཆགས་པ་ བ།

3. ལེའུ་ཤོག ༡༧ Toh.3871 གྲུ་བསྟན་ དབྱ་མ། "ལ" ༢༧ ན་༢

4. སྟེ་མས་པ་ཆང་འགྱུར་ན། གསེར། བསྟེ་མས་པ་འཆང་གྱུར་ན། བ།

5. འཛིགས་པ་སྟེ། བ།

6. སྤྱོད་འཇུག་ ལེའུ་ཤོག ༢༠ - ༢༡ Toh.3871 གྲུ་བསྟན་ དབྱ་མ། "ལ" ༢༧ ན་

7. གྱུར་ཡང་ གསེར། གྲུ་ སྟེ། སྟེ། སྟེ།

རྟེན་དང་གྲགས་པའི་ཚོགས་བཅས་ཏེ། |
 གང་དུ་འདོང་¹པའི་གཏོལ་མེད་དོ། |
 བདག་ལ་སྟོན་བ་གཞན་ཡོད་ན། |
 བསྟོན་པས་བདག་དགར་ཅི་ཞིག་ཡོད། |
 བདག་ལ་བསྟོན་བ་གཞན་ཡོད་ན། |
 སྟོན་པས་མི་དགར་ཅི་ཞིག་ཡོད། |ཅེས་བཤད་ལ།

ཡང་དེ་ཉིད་ལས་²

སེམས་ཅན་རྟེན་བ་མེད་ལ་སྟོན། |
 རྟེན་བ་ཅན་ལ་མི་སྟན་སྟེ། |
 རང་བཞིན་འགྲོགས་དཀའ་དེ་དག་གིས། |
 དགའ་བ་ཇི་ལྟར་སྟེ་བར་འབྱུར། |ཞེས་བཤད་དོ།

གཞན་ཡང་འཕགས་བ་ལྟག་པའི་བསམ་བ་བསྐྱལ་བའི་མདོ་ལས་³རྟེན་བ་དང་བཀུར་
 སྟེ་ཉིས་བ་རབ་དུ་མང་པོ་བསྟན་པས་དེ་ལས་ཤེས་བར་བྱའོ།

འདིར་སྟོབ་མ་དང་ཡང་སྟོབ་⁴ལ་སོགས་བ་ལ་ཆགས་བ་ནི་སྟོང་ཇི་ཉིད་བདག་ཉིད་
 མ་ཡིན་ནམ། ཇི་ལྟར་དེ་སྤང་བར་རིགས་ཤེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ་གནས་སྐབས་མ་ཡིན་པའི་

1. གང་དུ་འདོང་ བཞ། སྟེ།

2. སྟོན་འཕྲུག་ ལེའུ་ལྷོ་གླེང་ Toh.3871 གྲེ། བསྟན། དུ་མཉ། "ལ" ༣༧ ན ༩

3. Toh.69 གྲེ། བཀུར། དཀོན་བཅེགས། "ཅ" ༡༧༣ ན ༥

4. བཀུར་ལྟེ་ གསེར། གྲེ། སྟེ།

5. འདི་སྟོབ་མ་དང་ཡང་སྟོབ་ བཞ།

6. ཞེན་ གསེར། སྟེ།

སྟིང་ཇི་¹སྟྱང་བ་སྟེ། མངོན་བར་ཤེས་བ་མ་ཐོབ་བར་སྟོབ་མ་ཡོངས་སུ་སྟིན་བར་མི་རྟེས་
 ཀྱི་²རང་འཆིང་བར་ཟད་དོ། ཇི་སྟྱང་དུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་སྟྱོང་བ་ལ་འཇུག་བ་
 དེ་ཉིད་ལས་³གསུངས་བ་⁴།

སེམས་ཅན་མོས་བ་སྟོ་ཆོགས་བ་⁵། །
 རྒྱལ་བས་ཀྱང་ནི་མི་མག་ན། །
 བདག་འདྲ་ངན་བས་སྟོས་ཅི་དགོས། །
 དེ་བས་འཛིག་རྟེན་བསམ་བ་བཏང་། །ཞེས་སོ།

ཡང་དེ་ཉིད་ལས་⁶

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ཆགས་བྱས་ན། །
 ཡང་དག་ཉིད་ལ་⁷ཀྱན་ནས་སྟིག། །
 སྟོ་བའི་སེམས་ཀྱང་འཛིག་བར་བྱེད། །
 ཐ་མར་སྟུང་ན་⁸གདུང་བར་འབྱུང། །

-
1. སྟིང་ཇིས་ གསེར། སྟེ།
 2. མི་རྟེས་ཀྱིས་ སྟེ། གསེར།
 3. སྟྱོང་འཇུག་ ལེབ་༥ རྟོག་ཟེ ཏེ་H.3871 གྱེ་ བསྟན། དབྱ་མ། "ལ" ཟེ་ན་
 4. དེ་ཉིད་ལས་བཤད་བ་ བེ།
 5. སྟོ་ཆོགས་བས་ བེ།
 6. སྟྱོང་འཇུག་ ལེབ་༥ རྟོག་ཟེ ཏེ་H.3871 གྱེ་ བསྟན། དབྱ་མ། "ལ" ཟེ་བཟེ
 7. ཉིད་ལས་ གསེར། སྟེ།
 8. སྟྱོང་འཇུག་ཅི་བར་ ཐར་མར་སྟུང་ན་ ཞེས་འཁོད་འདུག།

དེ་ལ་སེམས་པ་འབའ་ཞིག་¹གིས། |

ཆེ་འདི་དོན་མེད་འདའ་བར་འགྱུར། |

རྟག་པ་མེད་པའི་མཛའ་བཤེས་²ཀྱིས། |

རྟག་པའི་ཆོས་ཀྱང་འཇིག་པར་འགྱུར། |ཞེས་བཤད་དོ།

དེ་བས་ན་སྒྲོབ་མ་ལ་སོགས་པ་རིག་པའི་འབྲས་བྱས་³འབྲེལ་བ་དང་། འཇིག་རྟེན་པའི་

མ་སྟོན་གྱི་⁴འབྲེལ་བ་གཉིས་ཀ་ལ་སྟོང་བཅེ་བ་⁵ཁོ་ནས་མ་ཆགས་པར་དབེན་པར་

གནས་པར་བྱའོ། |

སྟོན་པ་ལ་རང་བཞིན་གྱིས་ཆགས་པ་ཡང་སྤང་བར་བྱ་སྟེ།⁶ ཇི་སྟོན་དུ།

འཕགས་པ་དབྱང་བཟངས་གྱིས་⁷ཞུས་པ་ལས་⁸གསུངས་པ།

འཇིག་རྟེན་སྟག་དང་སྟུལ་དང་མེ་འདྲ་བར་⁹ |

བསམས་¹⁰ནས་སྤངས་ཏེ་དབེན་ལ་དགའ་བར་བྱ། |

1. འགའ་ཞིག་ བོ།

2. ཡེ་ཤེས་ བོ།

3. སོགས་པའི་འབྲས་བྱས་ གསེར། གྲུ་ ཅོ།

4. ཀྱིས་ བོ།

5. གཉི་ག་ལ་སྟོང་བཅེ་བ་ གྲུ་ ཅོ། གཉིས་ཀ་ལ་སྟོང་ཅེ་བ་ གྲུ།

6. སྤང་བར་བྱའོ། གསེར། གྲུ་ གྲུ་ ཅོ།

7. ཀྱི་ བོ།

8. ལེབ་ུ་ Toh.805 གྲུ་ བཀའ། གྲུ། "མ" ༡༢༢ བ ༩

9. མི་འདྲ་བ་ བོ། སྟག་དང་སྟུལ་དང་མེ་འདྲར་འཇིག་རྟེན་དག །གྲུ་ཅ་བར་གསལ།

10. བསམས་ གསེར། གྲུ་ སེམས་ བོ།

བྱད་མེད་མཚན་ཉིད་སྐྱེས་པའི་མཚན་ཉིད་དང་། །
 སྐྱན་དང་སྐྱང་ཆེན་བརྟག་པའམ་སྐར་མའི་དབྱད། །
 མཚོན་ཆ་བརྟག་པའམ་ན་དབྱད་རང་བཟོ་འམ། །
 བསྐྱན་བཅོས་ངན་པ་སློབ་ཅིང་སྟོག་པ་སྤང་། །ཞེས་སོ།

ཡང་དེ་ཉིད་ལས་།

སྐྱང་ཆེན་ན་དང་བྱ་གཞུག་གྱི་དང་། །
 བོང་མ་སྟེག་པ་བྱར་པ་སྐྱེས་པ་དང་། །
 བྱད་མེད་བྱ་མོ་བྱིས་པ་ར་ལྷག་སོགས། །
 འཐབ་མོ་འབྱེད་པ་བལྟ་བར་མི་བྱའོ། །
 ཡུལ་པའི་གཏམ་³དང་རང་དབང་བརྟན་པ་དང་། །
 དམག་དང་བྱད་དང་ན་རྩེད་གཏམ་དག་དང་། །
 སྐྱང་དང་མྱེད་དང་མྱོན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་གཏམ། །
 འདོད་ཆགས་⁴དང་ནི་སྤྲད་འཆོང་གཏམ་མི་བྱ། །

སྤགས་པ་གསང་སྤྲ་བརྒྱས་ལ་བརྩོན་པ་དང་།⁵ །

དབྱར་རྒྱ་གསུམ་ནི་གཅིག་བྱར་གནས་པར་བྱ། །ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

1. ལེའུ་ཨ་ Toh.805 གྱི་བཀའ་གྱི་ "མ" 732 བ་ཡ འབྱུར་མི་མཐུན།
2. བོང་མོ་གསེར། གྱི་སྤྱི་ཅོ།
3. ཡུལ་པའི་གཏམ་གསེར། གྱི་སྤྱི་
4. ཆགས་གཏམ་ལོ།
5. སྤགས་པ་སྤགས་བརྒྱས་ལ་ལ་བརྩོན་པ་དང་། གསེར། གྱི་

ཡང་¹དེ་ཉིད་ལས་²

ལས་ཀྱི་དབང་གྱུར་བདག་པོ་མེད་པ་དང་། །

མགོན་མེད་རྟེན་མེད་ཆོ་རབས་གཅིག་ནས་གཅིག །

ལུས་ཀྱི་ཁ་བརྒྱད་རྗེས་སུ་རབ་འགྲོ་བ། །

དེ་ཡི་རྗེས་སུ་དགེ་དང་མི་དགེ་འབྲང་། །

འཆོ་³དང་མཛའ་བཤེས་དང་ནི་རྣམ་པར་བྲལ་⁴། །

མི་སྤྱུག་པ་དང་བྲད་ཅིང་འདོད་པས་གཏུང་ས། །

རན་པ་སྤྱེ་ག་ན་འཆིའི་སྤྱུག་བསྐལ་ཅན། །

ཡུལ་རྣམས་ཀྱན་དུ་སོང་ནའང་མེད་པ་མིན་⁵། །

གསུང་ཆ་གྲང་བཞེས་དང་ངལ་ལ་སོགས། །

གང་དུ་སོང་ཡང་སྤྱུག་བསྐལ་ཉིད་ཡིན་པས། །

ཡུལ་ལ་མངོན་དགའི་སེམས་ནི་བྱང་བ་ན། །

རྣམ་རྟོག་དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་བརྗོག་པར་བྱ། །

1. དེ་ཡང་གསེར། ལྷ།

2. ལེའུ་³ Toh.805 གྲུ་བཀའ། ལྷ། "མ" ༡༢༡ བ ༩

3. མཆོ་གྲུ་ལྷ། ཆོལ་ལྷ། ཆུང་ཅ་བར་གསལ།

4. འབྲལ་ལྷ།

5. མེད་པ་ཡིན། གསེར།

འདོད་ཆགས་ཤས་ཆེ་མི་བཅང་ཤ་ཆོལ་དང་། །
 ལྷགས་པ་ཀའ་རུས་ལྷ་བས་¹རྣམ་པར་བསྐྱོབ། །
 བྱམས་དང་སྤྱིང་ཇེ་འི་²རྒྱས་གདབ་ཞེ་སྤང་དང་³། །
 བཀྲི་ལྷག་ལ་ནི་རྟེན་འབྲེལ་ལམ་གྱིས་སོ། ། ཞེས་སོ། །

འཕགས་པ་རྒྱལ་རྒྱུན་ས་⁴ཀྱང་། འཛིག་རྟེན་གྱི་ཉེས་པ་དུ་མ་བསྐྱུན་ནས།

དེ་ལྟར་འདི་ཀྱན་⁵མི་རྟག་བདག་མེད་དེ། །
 སྐྱབས་མེད་མགོན་མེད་གནས་མེད་⁶དེ་སྤྱད་དུ། །
 འཁོར་བ་རྒྱ་ཤིང་སྤྱིང་བོ་མེད་པ་ལ། །
 མི་མཆོག་བྲོད་གྱིས་⁷རྒྱགས་ནི་འབྱུང་བར་མཛོད། ། ཅེས་བཤད་དོ། །

གཞན་ཡང་བྱང་རྒྱུ་མེམས་དཔའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཕྱག་པ་⁸དང་། གཞོན་ལྷ་མ་བདུན་⁹ལ་

-
1. བགས་པ་ཀའ་རུས་ལྷ་བས་ བཤ། བགས་པ་ཀའ་རུས་ལྷ་བས་ གྲེ། ཙ།
 2. སྤྱིང་ཇེ་ གཞེར། གྲེ། ཙ། སྤྱ།
 3. ཞེ་སྤང་ལ་ བཤ།
 4. བཤེས་སྤྱིང་ས། སྤྱོད་ ༥༤ Toh.4182 གྲེ། བསྐྱུན། སྤྱིང་ཡིག་"ངེ" ༩༣ བ ༡
 5. ཇེ་ལྟར་འདི་ལྟར་ གཞེར། སྤྱ།
 6. གནས་མེད་ གཞེར་བྲིས་སྤྱ་མི་སྤྱང་།
 7. བྲོད་གྱི་ བཤ།
 8. Toh.3871 གྲེ། བསྐྱུན། དབྱ་མ། "ལ" ༡ བ -༩༣ རྒྱ
 9. གཞོན་ལྷ་བདུན་ གཞེར། སྤྱ།

གདམས་¹པ་དང་། བཤེས་པའི་སྤྱིང་ཡིག་²དང་། སྒྲོབ་མ་ལ་སྤྱིང་བ་³ལ་སོགས་པའི་
གཞུང་ལ་བཞེན་ཏེ། སྤྱིང་པ་ལ་རང་བཞིན་གྱིས་⁴ཆགས་པ་སྤང་བར་བྱའོ། །འདི་ནི་ཡིད་
འབྱུང་བར་བྱ་བའི་ཡན་ལག་གོ།

དྲུག་པ། ཡོན་ཏན་རྗེས་སུ་དྲན་བར་བྱ་བའི་ཡན་ལག

དེ་ལྟར་མི་མཐུན་པའི་སྤྱོད་སྤངས་ནས་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་དྲན་པར་
བྱ་སྟེ། དེ་ལ་འདིར་ཡོན་ཏན་ནི་གཉིས་ཏེ། མཐོང་བའི་ཆོས་ཉམས་⁵སུ་སྤྱོང་བར་
འགྱུར་བ་དང་། དེ་ལས་གཞན་པའོ།

རྗེས་ཁེ་ན། ལུས་བདེ་བར་གནས་བ་དང་། རག་བདེ་བར་གནས་བ་དང་།
སེམས་བདེ་བར་གནས་བ་དང་། ཆོས་སྤྱོང་བ་རྣམས་དགའ་བ་དང་། དེའི་མི་ལུས་
ཐོབ་པ་དོན་ཡོད་པ་དང་། ལྷན་པ་དང་པ་མ་དང་སྤྱི་མའི་དྲིན་བསབ་བ་⁷དང་། མི་མ་ཡིན་
པས་མི་ཚུགས་པ་དང་། ནད་རྩུང་བར་འགྱུར་བ་དང་། ཆོ་རིང་བར་འགྱུར་བ་དང་།
འཆི་བའི་དུས་སུ་འགྲོད་པ་མེད་པ་དང་། མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་⁸བསྐྱགས་པ་དང་།

1. Toh.4147 རྟེན་ བསྟན། འདུལ་བ། "སུ" ༢༧༧ བ - ༢༧༨ བ

2. Toh.4182 རྟེན་ བསྟན། སྤྱིང་ཡིག "ང" ༧༠ བ - ༧༦ བ

3. Toh.4183 རྟེན་ བསྟན། སྤྱིང་ཡིག "ང" ༧༦ བ - ༧༣ ན

4. རང་བཞིན་གྱི་ བོ།

5. ཆོས་ལ་ཉམས་ གསེར། སྟེ། ཅོ།

6. དེ་ཡི་ གསེར།

7. བསབ་པ་ གསེར། སྟེ། བསམས་པ་ ཅོ།

8. རྣམས་ཀྱི་ གསེར།

བཟའ་བ་དང་བདུང་བ་དང་གནས་མལ་དང་ནད་ཀྱི་རྒྱུ་ཅི་དང་གོས་རྒྱུ་སྒྲིབ་བའི་སྒྲིབ་
 ཏུ་རྒྱུ་བ་དང་། ཉན་མོངས་བ་དང་ལས་ལ་གཞོད་པ་¹བྱེད་པ་སྟེ། འདི་དག་ནི་དང་
 བའི་ཡོན་ཏན་ཡིན་ནོ།

གང་ཏུ་འདོད་པའི་²སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཏུ་སྐྱེ་བ་དང་། རན་སོང་གསུམ་སྤངས་
 བ་དང་། མི་ཁོམ་བ་³ལྷག་མ་སྤངས་བ་དང་། བྱད་མེད་ཏུ་མི་སྐྱེ་བ་དང་། དབང་བོ་རྩ་
 བ་དང་། དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་བྲལ་བར་མི་འགྱུར་བ་དང་། དེར་ཡང་ཉིང་འཛིན་
 ལ་དགའ་བ་དང་། མངོན་པར་རྫོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པར་འགྱུར་བ་སྟེ། འདི་ནི་
 ཡོན་ཏན་གཉིས་པའོ།

ཐིན་ཏུ་སྤངས་པས་ནི་ཆོ་བྱིན་གྱིས་བསྐྱབས་⁴པ་དང་། ལྷའི་གནས་སུ་ཆོ་འདི་
 ཉིད་ལ་བགྱོད་པ་ཞེས་བྱའོ། འོན་འདི་ཉིད་ལ་⁵བསམས་ཏེ། བཙུན་པ་རྒྱ་བས་རང་གི་
 སྒྲོབ་མའི་བྱིར། ⁶

རྒྱ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གསལ་བས་⁷ཉེ་བར་རྒྱན་བྱས་ཤིང་⁸།

-
1. གཞོད་པར་ བེ།
 2. གང་འདོད་པའི་ ཅོ། གསེར།
 3. མི་ཁོམ་པའི་ གསེར། ལྷ། ཅོ།
 4. བྱིན་གྱིས་བསྐྱབ་ གསེར། ལྷ།
 5. འདི་ཉིད་ལས་ གསེར། ལྷ། ཅོ།
 6. སྒྲོབ་སྤྱིང་། སྒྲོག་ ༤༤ ནས་ ༥༡ Toh.4183 གྱེ། བསྟན། སྤྱིང་ཡིག་ "ང" རྩ་ ༥
 7. གསལ་བར་ བེ།
 8. ཉེ་བར་བརྒྱན་བྱས་ཤིང་། བེ། ཉེ་བར་རྒྱན་བྱས་ཞིང་། གསེར། ལྷ།
 ཉེ་བར་བརྒྱན་བྱས་ཞིང་། གྱེ། ཅོ།

ཤེད་ཅིང་ས་ཆར་ཆེན་སྤྲིན་གྱིས་འབྲིགས་པར་¹འབྱུང་བྱུར་པའི། །

རི་ཅེ་ནགས་ཀྱི་མཐོང་ས་²དེར་ཆགས་པ་མེད་པར་³ཞི། །

སྤྱང་ལྟར་གཡོ་བའི་རང་བཞིན་ཆོ་གཏུགས་སྐལ་པ་ཆེ་⁴། །

ནགས་མཐོང་ས་⁵རི་དྲགས་རྒྱ་བའི་ཚོགས་ཀྱིས་བསྐྱེན་བྱས་པ། །

ཀུན་གནས་བཟང་པོ་⁶དེ་ན་སྤྱིད་པ་གང་ཡིན་པ། །

དེ་ཅི་དགའ་བའི་ནགས་ཆལ་ལྟ་མོའི་ཉམས་⁷པག་ཏུ། །

ཐེལ་གྱིས་ཐེབས་⁸པའི་རྩོམ་ཅན་ནའང་⁹ཡོད་འབྱུར་རམ། །

ནགས་སྤྱང་ཆུ་གཙང་ངོགས་བདེ་དཔེན་པར་སྤྱིད་པ་གང་། །

དེ་ཅི་ལྟ་ཡི་བྱ་མོ་¹⁰དེ་ཞིས་བྱག་པ་¹⁰ཡི། །

-
1. ཤེད་ཅིང་རིན་ཆེན་སྤྲིན་གྱིས་འབྲིགས་པས་ བཤ། ཤེད་ཅིང་ས་རིན་ཆེན་སྤྲིན་གྱིས་འབྲིགས་པར་ ཞེ།
 2. རགས་ཀྱི་མཐོང་ བཤ།
 3. དེར་ཆར་པ་མེད་པར་ གསེར། སྤྱ། ཅོ། དེར་ཆགས་པ་མེད་པ་ ཞེ།
 4. སྐལ་པ་ཆེ། བཤ། སྐལ་པ་ཆེ་ ཞེ། གསེར། ཅོ། ལྟ་དཔེའི་སློབ་སྤྱིད་ཅ་བའི་ནང་རི་ལྟར་གསལ་ལྟར་གོང་དུ་བཞོད་པ་ཡིན།
 5. མཐོང་ གསེར། སྤྱ།
 6. ཀུན་གནས་བཟང་པོ་ ཞེ། ཀུན་གནས་བཟང་པོ་ ཅོ། ལེགས་སྤྱར་མ་དཔེ།
 7. གནས་རྒྱལ་ལྟ་མོའི་ཉམས་ གསེར། རགས་ཆལ་ལྟ་མོའི་ཉམས་ བཤ།
 8. ཐེལ་གྱིས་ཐེབས་ ཞེ། ཐེལ་གྱིས་འབེབས་ བོད་འབྱུར་སློབ་སྤྱིད་ཅ་བར་གསལ།
 9. རྩོམ་ཅན་ནའང་ གསེར། རྩོམ་ཅན་ནའང་ ཞེ།
 10. བྱགས་པ་ བཤ།

ལན་བྱའི་རྒྱན་དུ་སྒྲགས་པ་རྒྱན་ལྷན་མེ་ཏོག་ཚུགས་། །

མཛེས་བས་ཟིལ་གཞོན་ལྷ་ཡི་རྒྱ་ལའང་ཡོད་འགྱུར་རམ། །

རི་སྐུལ་ཡངས་པ་སྐྱེ་བོ་ལང་ཡོང་མེད་པར་²རབ་བདེ་བ། །

ཉེས་སྦྱོད་རྒྱ་ཆེན་ཁོར་ཡུག་³ནགས་ཆལ་སྦྱོན་འབྱུངས་⁴སྤྱིང་བས་སྦྱིངས། །

རྒྱ་རོགས་སྣན་པ་བྱ་རྒྱའི་རྒྱན་སྤྱི་རྩ་ལྷན་སྣན་པ་ཡིས། །

བདག་ཅག་ཉན་མོངས་ཅན་གྱི་ཡུལ་མིན་འགྲོན་⁵ལ་སྦྱོགས་པ་བཞིན། །

ཞེས་བསྟན་ལ། སྦྱོབ་དཔོན་ཞི་བ་ལྷས་⁷ཀྱང་།

ནགས་ན་རི་དྲགས་བྱ་རྣམས་དང་། །

ཤིང་རྣམས་མི་སྣན་རྫོད་མི་བྱེད་མི་ །

འགྲོགས་ན་བདེ་བ་དེ་དག་དང་། །

ནམ་ཞིག་ལྷན་ཅིག་བདག་གནས་འགྱུར། །

1. མེད་ཏོག་ཚུགས་ གྱེ རྒྱན་ལྷན་མེ་ཏོག་ཚུགས་ ཅོ།

2. རི་སྐུལ་ཡངས་པ་.....མེད་པར་ གསེར། ལྷ། རི་སྐུལ་ཡངས་པ་.....མེད་པ་ བ།

3. ཉེས་སྦྱོད་རྒྱ་ཆེན་ཁོར་ཡུག་ བ། ལྷ། གསེར།

4. སྦྱོ་འབྱུངས་ བ།

5. ཡུལ་མ་ཡིན་ཞེས་འགྲོན་ གསེར། ལྷ། ཅོ། ཡུལ་མ་ཡིན་ཞེས་མགྲོན་ གྱེ།

6. ཞེས་པ་བསྟན་ལ་ གྱེ།

7. སྦྱོད་འབྱུག་ ལེའུ་ལྷོག་ ༡༩ ནས་ ༣༠ Toh.3871 གྱེ། བསྟན། དབྱུ་མ། "ལ" ༢༧ ལྷ

8. བཞིད་མི་བྱེད་ གསེར། ལྷ།

བྱུག་གསལ་ལྷ་ཁང་སྒྲོང་བ་འཕ། |
 སྒྲོན་གིང་¹བྱང་དུ་གནས་བཅས་ཏེ། |
 ནམ་ཞིག་སྒྱུབ་དུ་མི་ལྷ་ཞིང་། |
 ཆགས་བ་མེད་པར་འགྱུར་ཞིག་ག། |
 ས་སྒྲོགས་བདག་གིར་²བརྒྱང་མེད་པ། |
 རང་བཞིན་གྱིས་ནི་ཡངས་རྣམས་སྤ། |
 རང་དབང་སྒྲོད་ཅིང་ཆགས་མེད་པར། |
 ནམ་ཞིག་བདག་ནི་གནས་པར་འགྱུར། |
 ལྷང་བཟེད་ལ་སོགས་ནི་ཆེ་³དང་། |
 རྒྱན་⁴ལ་མི་མཁོའི་གོས་འཆང་ཞིང་། |
 ལྷས་འདི་སྤ་བ་མ་བྱས་ཀྱང་། |
 འཇིགས་མེད་⁶གནས་པར་ནམ་ཞིག་འགྱུར། |
 དུར་ཁྲོད་སོང་ནས་གཞན་དག་གི |
 རུས་གོང་⁷དག་དང་བདག་གི་ལྷས། |

-
1. སྒྲོན་ཞིང་ ལྷ།
 2. བདག་གིས་ གསེར། ལྷ།
 3. ཅིང་ཆེ་ གསེར། ལྷ།
 4. སྒྲོད་འཇུག་ལེགས་སྤར་མ་དཔེར་ རྒྱན་ ཞེས་གསལ།
 5. མཁོའི་ ལྷ།
 6. འཇིག་མེད་ གསེར། ལྷ། ལྷ། ཅོ།
 7. རུས་གོ་ གསེར། ལྷ།

འཛིག་¹པའི་ཚོས་ཅན་དག་ཏུ་ནི། |

ནམ་ཞིག་མགོ་སྒྲུམས་བྱེད་པར་འགྱུར། |ཞེས་བཤད་དོ།

དེ་བཞིན་དུ་འཕགས་པ་རྒྱ་བ་སྒྲོན་མ་²ལ་སོགས་པའི་མདོ་ནམས་ལས་ཏིང་ངེ་
འཛིན་གྱི་ཕན་ཡོན་རྒྱ་ཆེར་ཤེས་པར་བྱའོ། །འདི་ནི་ཡོན་ཏན་རྣམས་སུ་བྱན་པས་སྒྲོ་བའི་³
ཡན་ལག་གོ།

བདུན་པ། བརྩོན་པར་བྱ་བའི་ཡན་ལག

དེ་ལྟར་ཡོན་ཏན་མཐོང་ནས་སྒྲོ་བར་བྱུར་བ་དེས་གཉིན་པོ་ཡིད་ལ་བྱ་བས་རབ་
ཏུ་སྒྲོ་བར་བྱ་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ། བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་སྒྲོད་པ་ལ་འཇུག་པ་ལས་⁴

དེ་ལྟར་བཟོད་པས་བརྩོན་འགྲུས་བཅུ་མཉེན། |

འདི་ལྟར་བརྩོན་ལ་བྱང་རྒྱལ་གནས། |

རྒྱང་མེད་གཡོ་བ་མེད་བ་བཞིན། |

བསོད་ནམས་བརྩོན་འགྲུས་མེད་མི་འབྱུང་། |

ཞེས་བསྟན་པ་ལྟ་བུའོ། །འདི་ལྟར་བདག་གིས་རབ་ཏུ་བརྩོན་པས་འདོད་པའི་དོན་མ་
བསྐྱབས་ན། ཆོ་འདི་ནི་རབ་ཏུ་གཡོ་བ་ཡིན་པས་ཡིད་བརྟན་པར་བྱ་བའམ། ཇིང་དུ་

1. འཛིགས་ གསེར།

2. ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པའི་མདོ། Toh.127 གྲེ། བཀའ། "ད" ༡ བ་༡

3. སྒྲོས་པའི་ གསེར། གྲེ། སྒྲེ།

4. སྒྲོད་འཇུག་ ལེབ་ཏུ་ སྒྲོག་༡ Toh.3871 གྲེ། བསྟན། དབྱ་མ། "ལ" ༡ བ་༡

5. ཚུམ་ གསེར། སྒྲེ།

གནས་པར་¹བྱ་བའི་ནུས་པ་མེད་པས་སྐད་ཅིག་ཙམ་ཡང་གཡེལ་²བར་མི་བྱའོ་སྙམ་དུ་
 ཡིད་ལ་བྱ་སྟེ། རོན་འདི་ནིད་ཐུགས་ལ་བཞག་³ནས་འཕགས་པ་རྒྱག་རྒྱུ་ནི་ཞལ་སྔ་ནས་⁴
 ཆོ་འདི་གཞོད་མང་རྒྱུད་གིས་བཏབ་བ་ཡིས། |
 རུ་ཡི་རུ་བྱར་བས་ཀྱང་མི་རྟག་ན། |
 དབྱགས་འབྱུང་དབྱགས་རུབ་གཉིད་ཀྱིས་ལོག་བ་ལས་⁵། |
 སད་ཁོས་གང་ལགས་དེ་ནི་ངོ་མཚར་ཆེ། | ཞེས་བ་དང་།
 ཡང་།⁶ མགོ་འམ་གོས་ལ་སྒྲོ་བྱར་མེ་ཤོར་⁷ན། |
 དེ་དག་སྤྱིར་བསྒྲོག་⁸བགྱི་བ་བཏང་ནས་ཀྱང་། |
 ཡང་སྤྱིད་མེད་བར་བགྱི་སྤྱད་⁹འབད་འཆལ་ཏེ། |
 འདི་བས་ཆེས་མཆོག་¹⁰དགོས་པ་གཞན་མ་མཆིས། |

1. བྱ་བའི་ནུས་པར་གསེར་བྲིས་དང་སྙམ་པར་གཉིས་ཀྱི་ནང་མ་གསལ།
2. གཡེལ་ གྲེ། ཅོ།
3. གཞག་ གསེར། ལྟ།
4. བཤེས་སྤྱིད་སྤྱི་གྲྭ་༡༣ Toh. 4182 གྲེ། བསྟན། སྤྱིད་ཡིག་ "ངོ" ༧༢ ནང་
5. ལོག་བ་ལ་ གསེར། གྲེ། ལྟ།
6. བཤེས་སྤྱིད་སྤྱི་གྲྭ་༡༧ Toh.4182 གྲེ། བསྟན། སྤྱིད་ཡིག་ "ངོ" ༧༣ བཟ་
7. སྒྲོ་བྱར་མེ་ཤོར་ བེ། སྒྲོ་བྱར་མེད་ཡོང་ ལྟ།
8. སྒྲོག་ གསེར། ལྟ།
9. ཡང་སྤྱིད་པས་བགྱིད་སྤྱད་དུ་ བེ། ཅོ། ཡང་སྤྱིད་པས་བགྱིད་སྤྱད་དུ་ གྲེ། ཡང་སྤྱིད་མེད་པར་བགྱི་
 སྤྱད་ གསེར། ལྟ། བཤེས་སྤྱིད་སྤྱི་གྲྭ་ཙམ་པ་ལྟར་འཕགས་པ་མཛོད་སྟེ་གོང་དུ་བཞོད་པའོ།
10. ཆོ་མཆོག་ བེ།

ཞེས་རྒྱལ་པོ་མཐར་འགྲོ་ཞོན་གྱི་ཕྱིར་གདམས་པ་བྱས་སོ། །བཅུན་པ་ཟླ་བས་ཀྱང་

རང་གི་སློབ་མ་ལ་འདི་སྐད་དུ་³།

མི་ཡི་དངོས་པོ་ཤིན་དུ་རྩེད་དཀའ་རྩེད་གྱུར་⁴ནས། །

དོན་དུ་བརྒྱལ་པ་གང་ཡིན་དེ་ཉིད་བརྟན་དེ་བརྒྱབ་⁵། །

མར་མེ་མེ་ལྷེ་བྱགས་དྲག་རྒྱང་གིས་བསྐྱོད་པ་ལྟ་⁶ལྟ། །

ཆེ་ནི་སྐད་ཅིག་གནས་པའི་གདེང་ཡང་ཡོད་མ་ཡིན། །

འདི་ནི་སང་བྱ་འདི་ནི་ཐང་ཅིག་འོག་དུ་བྱ། །

འདི་ནི་དེད་རེ་བྱ་ཞེས་སྒྲེ་བོ་སེམས་པ་ན། །

གཤིན་རྗེ་པོ་ཅོན་ནག་ཐོགས་བྱར་གྱིས་ལྟ་བ་ཡིས་⁸། །

མིག་རྩ་དམར་བྲོས་མ་རངས་གད་མོས་རེ་སྟམ་⁹འདེབས། །

1. མཐར་འགྲོ་གཞོན་ གཤེར། ལྷ། ཅོ། ལྷ།

2. གདམས་པ་བྱའོ། གཤེར། ལྷ།

3. སློབ་དཔོན་ཅན་གྱི་མིས་མཛད་པའི་སློབ་སྒྲིང་། སྟོག་ ༩༦ ནས་ ༩༧ Toh.4183 ལྷ། བརྒྱན།
སྒྲིང་ཡིག་ "ང" ༡༠ ནམ

4. ཤིན་དུ་རྩེད་གྱུར་ གཤེར། ལྷ།

5. བརྒྱལ་པ་ གཤེར། ལྷ། ལྷ། ཅོ།

6. བསྐྱོད་པ་ལྟ་ལྟ། གཤེར། ལྷ།

7. འདི་ནི་དེད་རེ་བྱ་ གཤེར། ལྷ། ཅོ། ལྷ།

8. ལག་ཐོགས་བྱར་གྱིས་ལྟ་བ་ཡི་ ལ། ནག་ཐོགས་བྱར་གྱིས་ལྟ་བ་ཡི་ ལྷ།

9. གད་མོས་ར་སྟམ་ ལ།

སོ་ག་མེ་དོག་རྒྱས་པའི་དུས་འདི་འབྱུང་བར་འགྱུར། །

སྐབ་གསལ་བས་མཚོན་པའི་སྟོན་དུས་¹འདི་འབྱུང་ཞེས། །

སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་དགའ་འགྱུར་བདག་གི་ཆེ་འདི་ནི། །

ཟད་བར་འགྱུར་ཞེས་ཤིན་དུ་མི་དགར་འགྱུར་བ་མེད། །ཅེས་གདམས་སོ།

སྐབ་དཔོན་ཞི་བ་²ལྟའི་ཞལ་སྔ་ནས་³ཀྱང་།

ཡིད་བརྟན་མི་རུང་འཆི་བདག་འདི། །

བྱས་དང་མ་བྱས་མི་སྟོད་པས། །

ན་དང་མི་ན་ཀུན་གྱིས་ཀྱང་། །

སྟོ་བྱར་ཆེ་ལ་ཡིད་མི་བརྟན། །ཞེས་བཤད་དོ།

དེ་བཞིན་དུ། དཔལ་ངག་གི་དབང་བྱུག་གྲགས་པའི་ཞལ་སྔ་ནས་⁴ཀྱང་།

འདི་བྱ་ནང་པར་སྤར་ཡང་འདི་བྱ་དེ་ནས་གཞན་ཡང་འདི་བྱ་ཞེས། །

སྤྲིད་པ་གཡོ་བའི་རང་བཞིན་མ་ཤེས་དོན་མེད་ཡིད་བརྟན་འཆོལ་བྱེད་⁵པའི། །

1. སྟོན་དུས་ ལྷ།

2. ཞི་བའི་ ལྷ། ཅ།

3. སྟོད་འབྱུག་ ལེའུ་ཨ་ སྟོག་ཨ་ Toh.3871 ལྷ། བཞུན། དབྱ་ས། "ལ" ར་བ་ཅ

4. ཡན་ལག་བདུན་ལ། Toh.1888 ལྷ། "ཐི" ར་བ་ཅ འགྱུར་མི་མཐུན་པ་ནི། བདག་གིས་སང་
ནི་འདི་བྱ་གནང་ནི་འདི་དང་འདི་དག་གྲ། །བསམ་པ་དོན་མེད་རྟོག་འགྱུར་སྤྲིད་པ་མི་བརྟན་མི་ཉག་སྟེ།
།འགྲོ་བ་བྱ་བ་མཐར་མ་ཐུང་བས་ཡུལ་གྱི་རྒྱུར་ལྷ། །རྒྱ་སྤྲིན་ཁར་མཚུངས་འཆི་བའི་སྟོར་ནི་རབ་
དུ་ཞགས་པར་གྱུར། །

5. ཆོལ་བྱེད་ གཤམ་ལ། ལྷ། ལྷ།

ལྟར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་དང་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ལོ། ཉེ་¹ཅིད་ཕྱིར་ཞེ་ན། ཞི་
གནས་ཀྱིས་བརྟན་པོ་ཉིད་²མ་བྱས་པའི་ལྷག་མཐོང་ནི་བརྟན་པར་མི་གནས་ཏེ། མར་མེ་
དང་རླུང་³བཞིན་ནོ། །ལྷག་མཐོང་དང་བྲལ་པའི་ཞི་གནས་ཀྱིས་ནི། སྒྲིབ་པའི་བྱ་བ་
རྣམས་མ་ལུས་པར་བྱང་བར་མི་ནུས་ཏེ། ཇི་ལྟར་གཟུགས་དང་གཟུགས་མེད་⁴པ་ལ་
སོགས་པའི་ཞི་གནས་སྤར་འཁོར་བ་⁵ལྟ་བུའོ། ཉེ་བས་ན་བྱེད་ཐབས་མཛས་དཔའི་སྒྲིབ་
པ་ལ་འཕྲུག་པ་ལས་⁶

ཞི་གནས་རབ་དུ་ལྷན་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས། །

ཉོན་མོངས་རྣམ་པར་འཛོམས་པར་ཤེས་བྱས་ནས། །

ཐོག་མར་ཞི་གནས་བཙལ་བྱ་དེ་ཡང་ནི། །

འཇིག་རྟེན་ཆགས་པ་མེད་ལ་མངོན་དགས་འབྱུང་⁷། ཅེས་བཤད་དོ། །

དེ་བཞིན་དུ་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱང་སྟེ། ཇི་ལྟར་ཞེ་ན། སྒྲིབ་པ་གཉིས་
འབྱུང་པར་བྱ་བ་⁸ཡིན་པ་དང་། སྒྲིབ་པ་གཉིས་སྤར་བར་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྟེ། ཉེ་

1. 'དེ' གསེར། ཟླ་ ཅི་ནི་དང་སྤར་ཐང་པར་མ་རྣམས་སུ་མི་སྤང་།

2. ཞི་གནས་ཀྱི་བརྟན་པོ་ཉིད་དུ་ བོ།

3. མར་མེ་ལ་རླུང་ བོ། ཅོ།

4. ཇི་ལྟར་གཟུགས་མེད་ ཟླ། གསེར།

5. ལྟར་འཁོར་བ་ ཟླ། ཅོ།

6. སྒྲིབ་འཕྲུག་ ལེའུ་༥ སྒྲིག་༥ Toh.3871 ཟླ་ བཟུམ། དབྱུག་ "ལ" མཐུ་

7. འབྱུང་། གསེར། ཟླ།

8. བྱུང་པར་བྱུང་ གསེར། ཟླ།

9. བྱུང་པའི་ཕྱིར་རྟེ། གསེར།

བས་ན་¹འཕགས་བ་དྲི་མ་མེད་བར་གྲགས་བས་བསྟན་བ་²དང་། འཕགས་བ་གཡ་
མགོ་མིའི་³མདོ་ལས་⁴ "ཐབས་དང་བྲལ་བའི་ཤེས་རབ་ནི་འཆིང་བའོ། ཤེས་རབ་
དང་བྲལ་བའི་ཐབས་ཀྱང་འཆིང་བའོ།" ཞེས་གསུངས་སོ། རྟེན་བཞིན་དུ་འཕགས་
བ་སྤྲང་པོ་བཀོད་བ་ལས་⁵ "སྟོན་ལམ་མངོན་བར་མི་འགྲུབ་པའི་ཕྱིར་⁶ ཚོས་ཀྱི་ཡེ་
ཤེས་ཁོང་དུ་རྩྱད་བ་ནི་མངོན་བར་མི་འགྲུབ་པའི་བདུད་⁷འོ།" བདུད་བརྩུ་ལས་གཅིག་
དུ་གསུངས་སོ། ཅིའི་ཕྱིར་སྤྲང་བ་ཉིད་ཁོ་ནས་དེ་དག་མི་འགྲུབ་⁸ཅེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ།
འབྲས་བུ་¹⁰ནི་རྒྱའི་རྩེས་སུ་འབྲང་བའི་ཕྱིར་རོ། རྟེན་བས་ན་འཕགས་བ་སྤྲང་པོ་བཀོད་བ་
ལས་¹¹གསུངས་པ།

1. དེ་བས་ གསེར།
2. དྲི་མ་མེད་བ་གྲགས་བས་བསྟན་པའི་མདོ། Toh.176 གྲེ། བཀའ། "མ" ༢༠༡ བ༡
3. གཡ་གོ་མིའི་ བེ། སྟེ། གསེར།
4. Toh.109 གྲེ། བཀའ། "ཅ" ༢༤༩ བ༡ རོན་ཅམ་མ་གཏོགས་ཆོག་འདི་ཇི་མ་ཇི་བཞིན་མི་
གསལ་བས་དབྱེད་བར་བྱའོ།
5. འཆིང་བའི་ སྟེ།
6. འགྲུར་རྩྱད་ཟད་མི་མཐུན་བ་ནི། 'སྟོན་ལམ་མངོན་བར་མི་འགྲུབ་པས་ཚོས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཁོང་དུ་རྩྱད་པའི་
བདུད་འོ།' Toh.44 གྲེ། བཀའ། གཡ་ཆེན། "ག" ༢༥༩ བ༢
7. མི་འགྲུབ་པའི་རེ་ བེ།
8. བདུད་ གསེར། གྲེ།
9. མ་འགྲུབ་ བེ།
10. འབྲས་བུས་ བེ།
11. Toh.44 གྲེ། བཀའ། གཡ་ཆེན། "ཀ" ༢༥༤ བ་ལ་ འགྲུར་རྩྱད་ཟད་མི་མཐུན།

སྒྲིབ་པའི་མཚོག་ནི་གང་ཡང་རུང་། །
 ཚེས་གཅིག་གིས་ནི་བྱུང་བ་མེད། །
 གང་ཡང་བྱུང་བ་ཡོད་མ་ཡིན། །
 འབྱུང་བར་འབྱུར་བ་དེ་བཞིན་མེད། །ཅེས་སོ།།

དེ་བཞིན་དུ། འཕགས་པ་དོན་རྒྱུ་བ་ལས་²ཀྱང་།
 གལ་ཏེ་སྤྱོད་པ་ཐབས་ཡིན་ན། །
 དེ་ཆོ་སངས་རྒྱས་ཉིད་མི་འབྱུར། །
 ལྷ་ལས་འབྲས་བྱ་གཞན་མེད་ཕྱིར། །
 ཐབས་ནི་སྤྱོད་པ་ཉིད་མ་ཡིན། །ཞེས་གསུངས་སོ།།

འོ་ན་ཅི་འདྲི་ཕྱིར་ལུང་ལས་སྤྱོད་པ་ཉིད་འབའ་ཞིག་⁴བསྒྲོམས་པས་ཚོག་པར་

གསུངས་ཤེ་ན་⁵། འདི་ནི་བདག་ཏུ་ལྟ་བ་ལ་སོགས་པ་སྤྱོད་པ་ཉིད་⁶དང་འགལ་བར་

1. ཅོལ་ བ།

2. འཕགས་པ་མཁའ་འགྲོ་མ་དོན་རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུ་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་བདུག་ལ། Toh.419
 གྲེ། བཀའ། རྒྱུ། "ང" ༣༡ ནུ རྒྱུ་འབྲེལ། Toh.1196 ལེའུ་ ༢ གྲེ། བསྒྲུན། "ཅ" ༣༩ བ
 ༢ ད་ལྟ་བོད་སྐད་དུ་འཕགས་པ་དོན་རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བ་མཛའ་རྒྱ་མེད་ནའང་། དེའི་དགོངས་འབྲེལ་
 ཞིག་མཛའ་རྒྱ་འདུག་པ་དེའི་མཚན་ལ་"རྒྱུ་གྱི་རྒྱལ་པོ་མཁའ་འགྲོ་མ་དོན་རྒྱུ་བའི་དཀའ་འབྲེལ་དེ་ཁོ་
 ན་ཉིད་རྒྱས་པ་"ཞེས་གསལ་ཞིང་། འཕགས་པ་དོན་རྒྱུ་དང་འཕགས་པ་མཁའ་འགྲོ་མ་དོན་
 བྱུར་ཞེས་པའི་རྒྱུ་གཉིས་གཞུང་གཅིག་ལ་མཚན་ཅ་དང་ལྟ་བུ་སྤྱད་སྟེ་དོན་རྒྱུ་བའི་ཅ་ཆོགས་རྣམས་
 དེར་གསལ་ཞིང་ལེའུའི་ཆད་ཀྱང་མཚུངས་པར་སྤྱད་བས་སོ།།

3. དེའི་ཆོ་ གསེར། གྲེ།

4. སྤྱོད་པ་འབའ་ཞིག་ གསེར། གྲེ། ཅ། གྲེ།

5. བསྒྲོམ་པས་ཚོག་པར་གསུངས་ཞེ་ན་ གསེར། གྲེ།

6. སོགས་པ་ཉིད་ བ།

འབྲུག་པ་དེ་དག་གི་ཕྱིར་སྤྲོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆེ་བ་བསྟན་པ་སྟེ། དེ་ལྟར་ཡང་། འཕགས་པ་
རྩོམ་པ་ལྟ་བུ་དེ་ཉིད་ལས་ཀྱི།

ལྟ་བ་རྣམས་ལས་འོག་རྣམས་དང་། །
བདག་ཏུ་ལྟ་བ་ཚོལ་རྣམས་ཀྱིས་། །
བདག་ཏུ་འཛིན་པ་བསྟོན་པའི་ཕྱིར། །
ཀྱུ་ལ་བ་རྣམས་ཀྱིས་སྤྲོད་པ་བསྟན། །
དེ་ཕྱིར་དཀྱིལ་འཁོར་འཁོར་ལོ་ཞེས། །
ཐབས་བདེ་བ་ཡི་སྟོམ་པ་སྟེ། །
སངས་རྒྱས་ང་རྒྱལ་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། །
སངས་རྒྱས་ཉིད་ཡུན་མི་རིང་འགྱུར། །

-
1. རྩོམ་པ་ གསེར།
 2. འཕགས་པ་མཁའ་འགྲོམ་རྩོམ་གྱི་ཞེས་བའི་རྒྱུ། Toh.419 སྟེ། བཀའ་ལྟར་། "ང" མཇུག་
འགྱུར་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན་པ་ནི།
ལྟ་བ་རྣམས་ལ་འོག་རྣམས་དང་། ། བདག་ཏུ་ལྟ་བ་ཚོལ་རྣམས་ཀྱིས། །
བདག་ཞེས་བསམ་པ་བསྟོན་པའི་ཕྱིར། ། སྤྲོད་པར་རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱིས་གསུངས། །
དེ་ཕྱིར་དཀྱིལ་འཁོར་འཁོར་ལོ་ཞེས། ། ཐབས་ནི་བདེ་བའི་སྟོམ་པ་སྟེ། །
སངས་རྒྱས་ང་རྒྱལ་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། ། སངས་རྒྱས་ཉིད་ཏུ་སྤྲོད་པར་འགྱུར། །
རྒྱུ་འབྲེལ། Toh.1196 ལེན་ ༡ སྟེ། བསྟན། "ཅ" རེབ་ ༩
 3. ལྟ་བ་རྣམས་ལས་ གསེར། སྟེ།
 4. ཀྱི་ བོ།
 5. སངས་རྒྱས་པ་རྒྱལ་ སྟེ།
 6. ཡུན་ གསེར། སྟེ།

ཞེས་སྒྲིབ་པ་ཉིད་འབའ་ཞིག་མི་བསྟེན་གྱི་ལྟའི་སྒྲིབ་སྒྲོམ་པར་བྱའོ། ཞེས་གསུངས་སོ། །
 དེ་བས་ན་རྫོགས་པར་བྱུང་ཆུབ་བར་བྱ་བ་ལ་ནི་སྒྲིབ་པ་ཉིད་སྒྲིབ་མེད་པའི་སྒྲིབ་པ་ཅན་
 བསྒྲོམ་གྱི་སྒྲིབ་པ་ཉིད་འབའ་ཞིག་མ་ཡིན་ནོ། །ལྷུང་དག་ནི་དགོངས་པ་དང་ལྷན་པ་སྟེ་ཇི་
 ལྟར་མཐུལ་ཕྱུལ་བ་ལས། བ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་དུག་ཐོབ་པར་བསྟེན་པ་ལྟ་བུ་སྟེ་དེ་བས་
 ན་ལྷུང་ལ་སྒྲིབ་ཇི་བཞིན་པར་མི་གཟུང་སྟེ། འོན་ཀྱང་སྒྲིབ་པ་ཉིད་ལ་གོམས་པ་ཕྱུལ་དུ་

1. སྒྲིབ་ཉིད་སྒྲིབ་མེད་ཅན་

2. བོད་འགྲུར་ནམས་ཤུ་མཐུལ་ཞེས་ཡོད་ཀྱང་གོང་དུ་ལེགས་སྒྲུར་གྱི་བྲིས་ཚུལ་ལྟར་བཤད་དོ།

3. Toh.1933 གྲུ་བསྟན། "མི" ར་ལ་ལ་

དེ་སྒྲིབ་ལྟར་གྱི་སྒྲིབ་ཀྱིས་མཛོད། དེ་ཡི་སྟེང་དུ་གནས་པ་ཡི། །

ཤེས་རབ་པ་པོ་ལ་བྱིན་པ་སྟེ་གསལ། ཆོས་ལ་གསལ་པས་བསྟེན་པར་བྱ། །

Toh.2324 གྲུ་བསྟན། གྲུ་ "ཞི" ཅུན་ཅ

མཐུལ་ཕྱུལ་བའི་ཡོན་ཏན་ནི། མཐུལ་གཅིག་ཕྱུལ་དུ་ག་དང་ལྷན། བསྟེན་ནམས་ཆོགས་ནི་བསམ་མི་

ཐུབ། དེས་ན་དེ་ལ་བཙོན་པར་བྱ། གཅིག་ཕྱུལ་ཡོན་ཏན་དུ་ག་དང་ལྷན།

Toh.3760 གྲུ་བསྟན། གྲུ་ "ཚུ" ར་ལ་ལ་

དེ་ལྟར་ཕྱུལ་བའི་ཡོན་ཏན་ནི། བ་རོལ་བྱིན་པ་ལྟེ་རྫོགས་ལྟར་ཞིང་།

Toh.3763 གྲུ་བསྟན། གྲུ་ "ཚུ" ར་ལ་ལ་

ཐུབ་པའི་མཐུལ་ཕྱུལ་པ་ཡིས། བ་རོལ་བྱིན་པ་ལྟེ་དུག་ཐོབ། ཞེས་དང་། གཞན་ཡང་མཐུལ་གྱི་ཆོ་

གའི་གཞུང་ (Toh.1934, Toh.3761, Toh.3764, Toh.3767) བཅས་ཡོད། མདོར་ན་མཐུལ་

གྱི་ཆོ་གའི་གཞུང་མི་འདྲ་བ་ཁག་བརྒྱད་ཙམ་བོད་ཀྱི་སྟེ་དགེ་བསྟེན་འགྲུར་དཀར་ཆག་དུ་གསལ།

4. མི་བཟུང་དོ། བེ།

ཕྱིན་པ་ན་¹དགེ་བའི་ལས་ཐམས་ཅད་རང་གི་རང་གིས་²འབྱུང་སྟེ། དང་པོར་³སེམས་
ཅན་གྱི་དོན་གྱི་ཕྱིར། སྤྱང་པ་ཉིད་ལ་ཞུགས་པས་ན་⁴། ཉན་ཐོས་ལྟར་ཞི་བ་ཉིད་དུ་མི་
འགྱུར་ཏེ། ཇི་ཙམ་དུ་སྤྱང་པ་ཉིད་བརྟན་པ་⁵དེ་ཙམ་དུ་སེམས་ཅན་དེ་ལྟར་⁶མ་རྟོགས་པ་
ནམས་ལ་སྤྱང་ཇི་སྟེ་སྟེ། ཇི་སྤང་དུ། འཕགས་པ་རྒྱལ་རྒྱུན་འཛིན་ལ་སྤྱང་ནས་⁷བཤད་པ།

དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པ་ནམས་གྱིས། །
སྤྱང་ཉིད་འདི་ནི་བསྐྱོམ་⁸ཀྱས་ན། །
སྐྱོ་ནི་གཞན་དོན་ལ་དགའ་བར། །
འགྱུར་བ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པ་⁹མེད། །ཅེས་སོ། །

1. གོམས་པས་ཕུལ་དུ་ཕྱིན་པ་ནི་ བཅ།

2. རང་ལས་ གཤེར། གྲེ་ ཅོ་ ལྷ།

3. དང་པོ་ བཅ།

4. ཞུགས་པ་ནས་ གཤེར། གྲེ་ ལྷ། ཅོ་

5. བརྟན་པ་ བཅ།

6. དེ་ཙམ་ བཅ།

7. བྱང་རྒྱུ་སེམས་འབྲེལ་ རྟོག་པམ་ Toh.1800 གྲེ་ བཟུན། བྱུང། "ངེ" ལྟ་ན་ན་

དེ་ལྟར་སྤྱང་པ་ཉིད་འདི་ནི། །རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་བསྐྱོམ་ཀྱས་ན། །

གཞན་གྱི་དོན་ལ་ཆགས་པའི་སྟོ། །འབྱུང་བར་འགྱུར་བ་ཐེ་ཚོམ་མེད། །

ཇི་བཞིས་མཛད་བའི་དབྱ་མའི་མན་ངག་རིན་པོ་ཆའི་ཟ་མ་རྟོག་པ་བྱེ་བ་(དབྱ་མ་ "ཀྱི" བོག་བྱངས་

ལམ)ཞེས་པར་གཞུང་དོན་འདི་དང་མཚུངས་པ་ཞིག་ཀྱང་མཛལ་གྱི་ཡོད།

8. སྤྱང་པ་ཉིད་འདི་ནི་བསྐྱོམ་ གཤེར། གྲེ་ སྤྱང་པ་ཉིད་འདི་ནི་སྐྱོམ་ བཅ།

9. དཔོགས་པ་ བཅ།

གཞན་ཡང་¹། ཆོས་ལ་བདག་མེད་མཁས་པ་ནི། །

རང་བཞིན་མེད་ལ་གོམས་བྱས་པས། །

ཕྱིན་ཅི་ལོག་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །

ཉོན་མོངས་སྒྲིབ་པ་²མེད་པར་སྤོང་། །

ཞེས་དབྱ་མའི་རྒྱན་ལས་བཤད་པའི་རིགས་པས་དེའི་ཉོན་མོངས་པ་སྤོང་བར་འགྱུར་རྟེ།

གང་གིས་སྤོང་རྗེ་ཡང་མ་སྤངས་⁴ལ་ཉོན་མོངས་པ་ཡང་ཞི་བ་དེ་ལ་ནི་⁵འཇིག་རྟེན་པ་

དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་བའི་ཡོན་ཏན་རྣམས་ཆོགས་མེད་པར་འགྱུར་བར་འགྱུར་རྟེ།

དེ་བས་ན་རྒྱུའི་གཙོ་བོར་འགྱུར་བ་⁶དང་། དེ་འབའ་ཞིག་ལས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་མང་པོ་

འགྱུར་བ་ལ་དགོངས་རྟེ། འཕགས་པ་རྣམ་པར་སྤང་མཛད་མངོན་པར་རྫོགས་པར་བྱང་

རྒྱུ་བ་⁷ལས་⁸།

མཚན་མར་བཅས་པ་མཚན་བཅས་ཀྱིས་⁹། །

དངོས་གྲུབ་དམ་པ་རྒྱལ་བས་བཞེད་¹⁰། །

1. དབྱ་མ་རྒྱན། མྱོག་༥ Toh.3884 གྱེ་བཞུགས། དབྱ་མ། "མ" ར་ཅན་

2. བསྒྲིབ་པ་ གསེར། ལྷ། བསྒྲིབ་པ་ བཤ།

3. རིགས་པ་ཉོན་ གསེར། ལྷ། རིགས་པ་ཉོན་ གྱེ་ཙ། རིགས་པ་དེའི་ཉོན་ བཤ།

4. གང་གིས་སྤོང་རྗེ་ཡང་མ་སྤངས་ གྱེ། གང་གིས་སྤོང་རྗེ་ཡང་མ་སྤངས་ ཙ།

5. དེ་ལ་ བཤ།

6. གྱུར་བ་ བཤ།

7. མངོན་པར་བྱང་རྒྱུ་བ་ བཤ།

8. Toh.494 གྱེ། བཀའ། རྒྱུ། "མ" ར་ཅན་

9. བཅས་པས་མཚན་བཅས་ཀྱི། བཤ།

10. བཞེད་ ཙ།

གནས་གང་བསོད་ནམས་ལྷན་ཞིང་ཡིད་དགའ་¹བའི།
 ལྷ་དང་ལྷ་མིན་ལ་སོགས་སྤྱག་འཆལ་མཛོད།
 གསོ་སྦྱང་སྦྱོམ་པ་དང་ནི་ལྷན་པ་ཡིས།
 བདག་ཉིད་དག་པར་བྱ་སྦྱར་བསྟེན་བྱ་བ།
 དེ་ལྷ་བྱ་ནི་མ་རྟེན་གཞན་ཡང་ནི།
 རྒྱ་པོ་རྒྱ་ཁྱུང་འབབ་རྒྱ་ཡོད་པ་དང་།
 བསྐྱེད་ལས་ནི་བརྒྱན་པའི་མཚོ།
 སྦྱོ་པོ་ནམས་ནི་ཤིན་ཏུ་མི་རྒྱ་བ།
 དྲངས་ཤིང་ཞེས་པའི་རྒྱ་ནི་མང་བ་དང་།
 མི་བཟང་གདོན་ནམས་ཀྱང་ནི་མི་གནས་པ།
 མེ་ཏོག་འབྲས་བྱ་གཙང་མ་ཡོད་པ་དང་།
 སྤྲན་ལྡོངས་ལྡོན་ཤིང་སྤྲ་ཚོགས་དཀྱིགས་པ་དང་།
 ས་སྟངས་གནས་མལ་ཤིན་ཏུ་གཙང་བ་དང་།
 གང་ན་སྤྱག་གཟིག་³སེང་གེ་མེད་པ་དང་།
 ཡིད་འོང་མཉམ་ཞིང་ཆེར་མ་མེད་པ་དང་⁴།
 མི་ཡི་དངོས་བྱུང་གནས་སུ་བསྐྱགས་པ་ཡིན།

1. ལྷན་ཞིང་དགའ་ གསེར། ལྷ།

2. དང་ཞིང་ གསེར། ལྷ།

3. གཟིགས་ བེ།

4. དག་ ཅོ།

གྲོག་པོ་¹གྲོག་མཁར་ཐལ་བ་སྤྱ་གད་²དང་། །

ཉལ་ཉིལ་སོལ་བ་ཚྭ་སྤྱ་³ཆོག་སྒྲིག་བཅས་སྤང་⁴། །

དེར་ནི་ས་བཞོས་སྤྱངས་ནས་གནས་བཅིག་བདུ། །

དྲོལ་བཏན་ཞིང་⁶འཇིམ་པས་ཞལ་ཞལ་བྱ། །

ཤར་རམ་བྱང་ངམ་ཉུབ་ཏུ་སྤྱོད་གདོད་ཅིང་། །

སྤྱོད་སྤྱོགས་སྤྱི་ནི་ནམ་ཡང་སྤྱོད་མི་གདོད། །

ཅེས་གསུངས་ཏེ་⁸འདི་ནི་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་གནས་སོ། །

ཁ་ཟས་ཀྱང་རྗེས་སུ་ཆགས་བ་མེད་པ་དང་ཆོད་ཟིན་པ་དང་། ལུས་ཀྱི་སྤྱོད་བས་

དང་འཆམ་པ་དེ་ལྟར་བཟའ་སྟེ། དེ་བས་ན། འཕགས་པ་ལྷ་སྤྱབ་⁹ཀྱི་ཞལ་སྤྱ་ནས་¹⁰

ཁ་ཟས་སྤྱན་དང་འདྲ་བར་རིགས་པ་¹¹ཡིས། །

འདོད་ཆགས་ཞེ་སྤང་མེད་པར་བསྟེན་བཀྱིསྟེ། །

1. གྲོག་པོ་ གྲོག་པོ་

2. སྤྱ་གདོད་ གཤེར་ སྤྱ་ ཅོ་

3. ཚྭ་སྤྱ་ གཤེར་ སྤྱ་

4. སྤངས། གཤེར་ གྲོ་

5. བཅིག་སྤྱ་ གྲོ་ ཅོ་

6. བཏན་ཅིང་ གྲོ་

7. ཉུབ་ཏུ་ ཅོ་

8. གསུངས་སྟེ་ གཤེར་ གྲོ་

9. ལྷ་སྤྱབས་ གྲོ་

10. བཤེས་སྤྱོད་སྤྱ་ སྤྱོད་ ༣༥ Toh.4182 གྲོ་ བཤེས་ སྤྱོད་ཡིག་ "དེ་" ལེ་བཟུང་

11. རིགས་ གྲོ་

ཆུགས་ཕྱིར་མ་ལགས་བསྟེམས་¹པའི་ཕྱིར་མ་ལགས། །

འཆག་ཕྱིར་མ་ལགས་ལུས་གནས་འབའ་ཞིག་ཕྱིར། ། ཞེས་བཤད་དོ།

ཆགས་བར་གྱུར་པའི་ཉེས་བ་ནི། ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་བ་གང་པོས་ཞུས་བ་
ལས་²གསུངས་པ།

ཞེས་པའི་རྩ་ལ་ཞེན་ཅིང་ཆགས། །

སྒྲིན་རྣམས་མཐོང་བར་མ་གྱུར་བས། །

བདུད་ཀྱིས་སྐགས་ནི་རྟེན་འགྱུར་ཏེ། །

མཆིལ་བས་བཟུང་བའི་ཉ་བཞིན་ནོ། ། ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་བཞིན་དུ། འཕགས་བ་དབྱང་བཟངས་ཀྱིས་³ཞུས་བ་ལས་⁴ཀྱང་།

དཔེར་ན་མ་ཡི་⁵གསོ་དང་བསལ་བའི་ཕྱིར་⁶། །

ནད་བ་དག་ལ་སྒྲིན་ནི་སྒྲིན་བ་ལྟར། །

དེ་བཞིན་འདིར་ཡང་བཀའ་བའི་སྐྱག་བསྐྱལ་དག། །

བསལ་ཕྱིར་⁷རྒྱལ་བས་ཁ་ཟས་བཟའ་བར་གསུངས།

1. ཟླམས་ གསེར། སྟེ། སྟེ། ཅོ།

2. ད་ལྟའི་བཀའ་འགྱུར་གྱི་ཁོད་དུ་བཞུགས་པའི་འཕགས་བ་གང་པོས་ཞུས་པའི་མདོར་འཆོལ་ཞིབ་བྱས་
ཀྱང་ལུང་འདི་རྟེན་སོན་མ་བྱུང་།

3. ཀྱི་ གསེར།

4. ལེའུ་མ་ Toh.805 སྟེ། བཀའ་ལྟར། "མ" ༡༢༠ བ ༩

5. མ་ནི་ སྟེ།

6. གསལ་བའི་ཕྱིར། གསེར།

7. གསལ་ཕྱིར་ གསེར།

ལ་ལ་ལམ་གྱིས་¹དུ་བ་ཅིང་འགྲོ་བའི་ཚོ།
 བཀའ་སྒྲོམ་གདུངས་པས་²རང་གི་བྱ་ཡི་ཤ།
 ཟ་བ་བཞིན་དུ་ནལ་འབྱོར་སེམས་དམན་ཞིང་།
 འཆོ་དང་རྒྱགས་ཐུར་བཟའ་བར་མི་བྱའོ།
 མང་དུ་བྱུགས་པས་ཚོལ་མེད་མཐོ་བ་དང་³།
 དེ་བཞིན་ཉུང་དུས་སྤང་ནི་དམའ་འབྱུར་ལ།
 རན་པས་སྤྲད་ཅིག་མཉམ་པར་འགྲོ་བ་ལྟར།
 ལུས་ཅན་ཁ་ཟས་དེ་ལྟར་བཟའ་བར་བྱ།
 དཔེར་ན་ཁང་རྩིང་⁴མི་ཞིག་བྱ་བའི་ཕྱིར།
 མི་ཡིས་⁵ཀ་བ་བཟང་པོ་འཛུགས་པ་ལྟར།
 དེ་བཞིན་ལུས་ཀྱི་འབྲུལ་འཁོར་གནས་པ་དང་།
 བྱིང་ཉི་མེག་སྤྲད་བཞིན་དུ་ཁ་ཟས་བཟའ།
 འདོད་པའི་ཁམས་ནི་ཁ་ཟས་ཀྱིས་གནས་ཞེས་⁶།
 ལྷལ་བས་ཆོས་གཅིག་དུ་ནི་བཀའ་སྒྲུལ་པས་⁷།

-
1. ལམ་གྱི་ གསེར། ལྷ།
 2. གདུང་བས་ བེ།
 3. མཐོ་བ་ལ་ གསེར། རྩ། ལྷ། ཅོ།
 4. ཁང་བརྩིང་ གསེར། བེ། ཁང་བརྩིང་ ལྷ།
 5. མི་ཡི་ བེ།
 6. གནས་ཤེས། བེ།
 7. ལྷལ་བ། གསེར། རྩ། ལྷ། ཅོ།

ལུས་ནི་ཆུ་ཤིང་བཞིན་དུ་རིག་བྱ་སྟེ། །

སེམས་ནི་བཟང་བདུང་¹སོགས་ལ་ཆགས་མི་བྱ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བཞིན་དུ་ལུས་ཀྱི་ཉམས་དམའ་བ་ལྟ་ན་²རྣལ་འབྱོར་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་

ཀྱང་བསྐྱར་³བར་གནས་པར་མི་བྱ་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་རབ་དུ་བྱུབ་པར་བྱེད་

པ་ལས་⁴བྱང་ཆུབ་དུ་⁵གསུངས་པ།

དུབ་པར་གྱུར་⁶པའི་སྒྲིན་ཡོད་ཕྱིར། །

བསྐྱར་⁷བར་གནས་པ་སྤྱད་པར་བཤད། །ཅེས་སོ། །

གལ་ཏེ་ལུས་ལ་དུབ་པ་མེད་པ་ལྟ་ན་ནི་ལུས་ཡང་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་བ་ཐམས་

ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་བསྐྱར་⁸བར་གནས་པར་བྱ་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་དབྱུང་བཟངས་

ཀྱིས་ཞུས་པ་ལས་¹⁰

1. བཟང་བཟུང་གསེར།

2. ཉམས་དམའ་བ་ལྟ་ན་གསེར། སྟེ། སྟེ། ཉམ་དམའ་བ་ལྟ་ན་ བོ།

3. ཀྱིས་སྐྱར་ བོ། ཀྱིས་ཀྱང་སྐྱར་ ཅོ།

4. Toh.807 སྟེ། བཀའ། རྒྱུ། "མ" ༣༠༩ ན་པ་

འཕགས་པར་བྱུབ་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུད་ཆེན་པོ་ལས་སྐྱུབ་པའི་ཐབས་རིམ་པར་ལྟེ་བ་རྒྱུད་རང་གི་འབྱུར་དུ།
"ངལ་བ་ཐལ་བའི་སྒྲིན་ཡོད་པས། སྐྱར་བར་བྱ་བ་མི་ཤེས་སོ།" ། ཞེས་གཞུང་འདིའི་འབྱུར་དང་ཆེས་མི་
མཐུན་དོ། །

5. བྱང་ཆུབ་དུ་ སྟེ། ཅོ་ནེ་དང་མེར་གྱིང་པར་མ་གཉིས་སུ་བྱང་ཆུབ་དུ་ ཞེས་པ་མི་སྤྱད།

6. དུབ་པར་བྱེད་ བོ།

7. སྐྱར་ བོ། སྟེ། ཅོ།

8. ཅེས་སོ། ། བེར་མི་སྤྱད།

9. སྐྱར་ བོ། ཅོ།

10. ལྟ་བུ་ Toh.805 སྟེ། བཀའ། རྒྱུ། "མ" ༣༢༤ ན་པ་

བྱ་གཅིག་ལུས་དག་བྱ་ཕྱིར་བསྐྱར་¹བྱ་ཞེས། |
 བདེ་བར་གསེགས་པ་ནས་ཡང་མི་གསུང་ཡང་། |
 ལུས་འདི་མི་གཙང་སྤྲགས་པ་ཤ་བྲག་ཀང་། |
 ལྷ་དྲ་རྒྱས་²རྒྱ་མ་མཆེར་མཆེན་མཁའ་མ་ཞག |
 མཁྱིས་པ་བད་ཀན་ཁྱ་རྒྱ་རྒྱ་སྒྲི་ས་དང་། |
 གཅིན་སྒྲུབས་བ་སྒྲུ་སྒྲུ་དང་རུས་བ་དང་། |
 མིག་དང་རྩ་བ་སྒྲུ་དང་ཁ་དང་ནི། |
 བཤང་སྒྲོ་མཆེན་མ་བྱ་ག་དག་པོ་ཡི། |
 མ་ནས་དྲི་མ་སྒྲ་ཚོགས་མི་གཙང་བ། |
 འཛིག་པའི་རྒྱན་ནི་དྲིག་དྲུ་འབྱང་བ་ཡིན། |
 དེ་ལྟར་ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་འདུས་པ་དང་། |
 ས་རྒྱ་མེ་རྒྱང་ནས་མཁའ་རྒྱམས་⁴དང་ལྷན། |
 ཇི་བཞིན་འཕས་གྱི་རྒྱས་སུ་འབྱང་བའི་ལུས། |
 ཐམས་ཅད་ལྷན་པའི་གཟུགས་ལ་གནས་པ་ཡི།⁶ |

-
1. རྒྱ་བྱ་ བཤ་ རྒྱ་ ཅོ
 2. ལྷས་རྒྱས་ བཤ
 3. ཁ་རྒྱ་ ཅོ
 4. རྩས་མཁའ་རྩས་ བཤ
 5. ཅི་བཞིན་ གསེར་ རྒྱ་ རྒྱ་ ཅོ
 6. གནས་པ་ཡིས་ བཤ

བཤང་གཅི་སྤྲུལ་སྔ་དང་མཆིལ་མ་བད་ཀན་དང་། །

འདི་དག་ཟད་པར་བྱ་བྱིར་བསྐྱེད་པར་གསུངས། །

དྲི་མ་ཟད་ནས་མི་ཡི་ལྷས་དག་ནི། །

རང་གི་འགྱུར་བྱིར་སྐྱེད་ལ་བདེ་བར་འབྱུག་པ། ། ཅེས་གསུངས་སོ། །

གྲོགས་པོ་ནི་མེད་པའམ་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་བསྐྱེད་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ། བཅོམ་ལྷན་

འདས་ཀྱིས་མདོ་སྡེ་དེ་དང་དེ་དག་ལས་གསུངས་པ།

མང་པོ་དག་ནི་ཚུད་པར་འགྱུར། །

གཉིས་པོ་དག་ནི་གཏམ་བཅས་འགྱུར། །

གཞོན་ནུ་མ་ཡི་གདུ་བྱ་བཞིན། །

གཅིག་བྱ་ཞིག་ནི་གནས་པར་བྱ། ། ཞེས་སོ། །

རྗེས་སུ་མཐུན་པ་ནི་འཕགས་པ་ཉིད་དུང་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པ་ལས་གསུངས་པ།

1. རྣམས་ གསེར། སྒྲེ། སྒྲ། ཅོ།

2. སྒྲུང་ བེ། སྒྲེ། ཅོ།

3. དག་ན་ ཅོ།

4. འབད་པར་བྱ། གསེར། སྒྲ།

5. མདོ་སྡེ་དང་ བེ།

6. ཅུ་ཆོག་འདི་སྒྲོན་པས་མདོ་གང་དུ་གསུངས་པ་མི་ཤེས་ཀྱང་སྒྲོབ་དཔོན་ (ཨ་མུ་རྩུ་རྩུ་)གཉིས་མེད་རྗེ་རྗེས་
མཛད་བའི་བསམ་གཏན་གྱི་ཆོས་དུག་རྣམ་པར་བཞག་པ་ཞེས་པ་ཆེད་བཅད་བརྒྱད་མའི་གཞུང་གི་སྒྲོག་
བདུན་པ་དང་གཞུང་འདིའི་ཆོག་གཉིས་པོ་གཅིག་ལྷ་བྱ་སྤྱང་བས་ཆོགས་བཅད་འདི་བཞིན་མདོའམ་
བསྐྱེད་བཅོས་གང་གི་ཅུ་ཆོག་ཡིན་མིན་གསལ་ཁ་འབྱེད་དཀའ་བས་དཔྱད་དགོས་སོ། །

7. གཅིག་པོ་ བེ།

8. རི་འཕགས་པ་ གསེར་བྲིས་དང་སྤྱར་ཐང་པར་མ་གཉིས་སུ་མི་སྤྱང་།

9. ལེའུ་? Toh.805 སྒྲེ། བཀའ། ལྷན། "མ" ༡༡༨ བཟ

ནམ་ཡང་འཁོར་ལོ་གཅིག་པའི་ཤིང་རྟ་ནི། །
 ཉིང་འཛིན་ཡང་ལམ་དུ་མི་¹འགྲོ་ལྟར། །
 དེ་བཞིན་སྐྱབ་པ་པོ་ནི་གྲོགས་མེད་ན། །
 ལུས་ཅན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །
 དེ་ནི་ཁྱོད་ལྟན་གཟུགས་བཟང་³གཙང་སྐྱེ་ཆེ། །
 རིགས་ནི་བཙུན་ཞིང་ཆོས་ལ་གཞིལ་བ་དང་། །
 སྐྱབས་པ་ཆེ་ལ་དཔའ་ཞིང་དབང་པོ་ཐུལ། །
 ལྟན་པར་སྤྲ་ཞིང་སྤྲིན་ཐོད་སྤྲིང་རྩེ་ཅན། །
 བཀྲེས་དང་སྐྱོམ་དང་ཉོན་མོངས་བཟོད་པ་དང་། །
 བྲམ་ཟེ་དང་ནི་ལྟ་གཞན་མཆོད་མི་བྱེད། །
 སྤྲིན་ཞིང་གཙོ་ལ་བྲས་པ་གཙོ་བ་དང་། །
 དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་དད་པ་གྲོགས་པོ་⁴ཡིན། །
 དེ་ལྟའི་⁵ཡོན་ཏན་མ་ལུས་ལྟན་པ་དག །
 ཚོད་པའི་དུས་སུ་ཤིན་དུ་དཀོན་པས་ན། །
 ཡོན་ཏན་བྱེད་དམ་བཞི་ཆ་བརྒྱད་ཆ་⁶ཅན། །
 དེ་ལྟ་བུ་ནི་སྐྱགས་པས་གྲོགས་པོར་བསྟེན། །ཞེས་སོ། །

-
1. དུ་མའི་ པ།
 2. བསྐྱབ་པ་པོ་ པ།
 3. ཁྱོད་ལྟན་གཟུགས་བཟངས་ གསེར། རྩེ། ཁྱོད་ལྟན་གཟུགས་བཟངས་ རྩེ།
 4. དག་པོ་ གསེར། རྩེ། ཅོ།
 5. དེ་ལྟར་ པ།
 6. བརྒྱད་ཅ་ རྩེ།

འདིར་ནི་སྐྱོས་པ་གཙོད་པ་¹དང་། སྐྱོས་པ་དང་²བྲལ་བའི་དབང་གིས་གྲོགས་པོ་མེད་
པའམ། རིས་སུ་མཐུན་པའི་གྲོགས་པོ་དང་ལྷན་པར་བྱའོ།

དེ་བཞིན་དུ་³ཅམ་གྱིས་གཙོད་པ་སྐྱོབ་པ་དེ་ཅམ་གྱིས་⁴གོས་ལ་བཞེན་གྱི་ཆོགས་
དང་བཅས་ཤིང་ལྷག་པར་ཆགས་པར་བྱུར་བའི་གོས་དང་། གནས་མལ་⁵བཞེན་པར་མི་
བྱ་ཞེ། འཕགས་པ་དབྱང་བཟངས་གྱིས་⁶ཁྱེས་པ་ལས་⁷ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པ།

གཙུག་ཕུད་བཞག་⁸སྤྲེ་སྤྲེ་ནི་བྲེགས་ནས་སུ། །

འབྱུང་བྱངས་མཆོན་གྱིས་⁹གོས་ཀྱི་ཁ་དོག་བསྐྱར། །

གོས་དཀར་དང་ནི་ཤིང་ལོ་འམ་གསོ་མའམ་¹⁰། །

ཟར་མའི་ཤིང་¹¹ཕྱན་ནམས་ཀྱི་¹²གོས་བཞོམ། །ཞེས་སོ།

ཡང་། འཕགས་པ་རབ་དུ་གྲུབ་པར་བྱེད་པ་ལས། ¹²

1. སྐྱོད་པ་ བ།

2. སྐྱོས་དང་ གསེར། ཞེ། སྤྲེ།

3. གཙོད་པ་དེ་ཅམ་གྱི་ གསེར། སྤྲེ། གཙོད་པ་དེ་ཅམ་གྱིས་ ཞེ།

4. ལྷག་པར་ཆགས་པར་འབྱུར་བའི་གོས་དང་གནས་དང་མལ་ བ།

5. ཀྱི་ ཅོ།

6. ལེའུ་༢ Toh.805 ཞེ། བཀའ། ལྷན། "མ" ༡༢༠ན་༥

7. ཕུད་གཞག་ གསེར། ཕུས་བཞག་ བ། ཕུར་གཞག་ སྤྲེ། གཙོགས་ཕུད་བཞག་ ཅོ།

8. མཆོན་གྱི་ གསེར། ཞེ། སྤྲེ། ཆོན་གྱིས་ ཅོ།

9. གསོ་བའམ་ གསེར། ཞེ། གསོ་བ་འམ་ སྤྲེ།

10. ཟར་མའི་ཤིང་ གསེར། ཟར་མའི་ཤིན་ སྤྲེ།

11. ཀྱིས་ བ།

12. Toh.807 ཞེ། བཀའ། ལྷན། "མ" ༡༢བ་༢ ལེགས་པར་གྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ལྷན་ཆེན་པོ་ལས་
སྐྱབ་པའི་ཐབས་རིམ་པར་བྲེ་བ།

ཡང་དེ་ཉིད་ལས་༥

བདག་ནི་རྟེན་དང་བཀུར་སྟེ་དང་། །

ལུས་དང་འཛོལ་མེད་སྒྲ་ཞིང་། །

དགེ་བ་གཞན་ཡང་ཉམས་སྒྲ་ཡི། །

སེམས་ནི་ནམ་ཡང་ཉམས་སྒྲ་མི་བྱ། །

ཞེས་བསྟན་ཏེ། དེ་བས་ན་དུས་དང་གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་སེམས་ལ་མི་

གནོད་པའི་སྒྲོབ་ལས་སྒྲོབ་དོ། དེ་བས་ན་སྒྲོབ་དཔོན་རྟེན་པའི་ཞལ་³ནས་⁴

སྒྲོབ་སྒྲོབ་སྒྲོབ་སྒྲོབ་སྒྲོབ་བ་དང་། །

བྲམ་ཟེ་ན་ཡང་གཙང་སྒྲ་ཉིད་⁵། །

རྟག་དུ་གཙང་སྒྲའི་སྒྲོབ་བ་བྱ། །

སེམས་ལ་གནོད་བ་⁶མ་ཡིན་ནོ། ཞེས་བཤད་དོ། །

སྒྲོབ་བསྐྱེད་གནོན་བ་ནི་ལམ་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་གྲང་བ་དང་ཚ་བ་དང་།

བཀྲེས་བ་དང་། རྫོམ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོབ་བསྐྱེད་མ་ལུས་པས་མི་གཡོ་བར་བྱ་སྟེ།

1. སྒྲོབ་འཇུག་ ལེའུ་ ༥ རྫོག་ ༢༢ Toh.3871 གྲེ་བསྟན། དབྱ་མ། "ལ" ༡༡ བ་༢

2. ཉམས་ཀྱང་ གཞེར། བེ། སྒྲ། ཅོ།

3. རྟེན་པའི་ཞལ་སྒྲ། གཞེར། རྟེན་པའི་ཞལ་སྒྲ། བེ། རྟེན་པའི་ཞལ་ སྒྲ།

4. རྟེན་རྟེན་ཀས་མཛད་པའི་དཔལ་ལྷན་ཅིག་སྒྲེས་བ་བྱུབ་བ། ལེའུ་ ༢ སྒྲོབ་བ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྟན་པ།
Toh.2223 གྲེ་བསྟན། རྒྱུད་འབྲེལ། "མ" ༥༠ བ་༤

5. སྒྲོབ་སྒྲོབ་སྒྲོབ་སྒྲོབ་སྒྲོབ་བ་དང་། །བྲམ་ཟེ་ན་ཡང་གཙང་སྒྲ་ཡིད། གཞེར། བེ། སྒྲ།

6. གནོད་པས་ ཅོ། བེ།

7. གནོད་བ་ གཞེར། སྒྲ།

བྱང་ཚུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱད་པ་ལ་འཕྱག་པ་ལས་¹། ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པ་

ན་བ་གདོལ་བ་ཞིང་པ་ལ་སོགས་པ་³། །

རང་གི་འཚོ་བ་ཙམ་ཞིག་སེམས་པ་⁴ཡང་། །

གྲང་དང་ཚ་ལ་སོགས་པའི་གནོད་བཟོད་ན། །

འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་བདག་ལྟ་⁵ཅིས་མི་བཟོད་⁶། ཅེས་སོ། །

དེ་བཞིན་དུ། འཕགས་པ་དཔུང་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པ་ལས་⁷ཀྱང་། འདོད་ལ་མ་ཆགས་

ལུས་ཀྱི་⁸ཉོན་མོངས་བཟོད། ཅེས་གསུངས་ལ་དེ་བཞིན་དུ། འཕགས་པ་འཇིག་རྟེན་

གསུམ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བཀའ་ལས་⁹ཀྱང་།

ལུས་ཀྱི་¹⁰ཉོན་མོངས་སྤྱང་བ་¹¹ལས། །

དངོས་གྲུབ་རྣམ་གསུམ་ཐོབ་པར་འགྱུར། ཞེས་གསུངས་སོ། །

1. ལེའུ་༩ སྟོག་༩ Toh.3871 གྲུ་བཟུ་ དབུ་མ། "ལ" ལབ་

2. གསུངས་པ་དང་ བཤ།

3. ན་བ་གདོལ་བ་ཞིང་ལ་སོགས་པ་དང་། གསེར། ལྷ།

4. སེམས་དཔའ་ བཤ།

5. བདག་ལ་ གྲུ་ ཅི་ དག་ལྟ་ བཤ།

6. མི་གཟོད་ གྲུ།

7. ལེའུ་༥ Toh.805 གྲུ་ བཀའ་ གྲུ། "མ" གཙུ་ནུ

8. ལུས་ཀྱིས་ གྲུ།

9. ལུང་འདི་གོང་འཁོད་གཞུང་ནང་མི་གསལ་ཀྱང་ཁོ་བོ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་རྟོག་པ་གསང་བའི་རྒྱུད་ནང་གསལ། Toh.604 གྲུ་ བཀའ་ གྲུ། "བ" གཙུ་བུ

10. ལུས་ནི་ བཤ།

11. དབུ་དང་པ་ གསེར། ལྷ། སྤྱང་པ་ གྲུ་ ཅི་

དེ་བཞིན་དུ། དཔལ་གསུང་བ་འདུས་པ་ལས་¹ཀྱང་།

འདོད་ཆེན་སྤྲུག་བསྐྱེད་ཆེན་པོ་ཡིས། །

རང་གི་སྤྲུག་བསྐྱེད་ཆེན་བར་བྱ། །

ཞེས་གསུངས་པས་²སྤྲུག་བསྐྱེད་འབྲས་བྱ་དང་བཅས་པ་ནུས་ནི། རབ་དུ་དགའ་བ་³

བཞིན་དུ་བསྐྱེད་བར་བྱའི། སེམས་ཀྱི་ངང་རྩལ་བདར་བ་⁴ཉིད་དུ་མི་བྱའོ། །དེ་བས་ན་⁵

འཕགས་པ་དབྱང་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པ་ལས།⁶

སྒྲོ་ཡི་བདེ་བ་དང་ནི་འབྱོར་བ་དང་། །

ཆེ་དང་སྒྲོབས་གཟུགས་སྤྲན་སྤྲུམ་ཆོགས་པ་དང་། །

ཐོས་མང་མདངས་བཟངས་⁷གཅིག་དུ་ཡིད་གཞུངས་དང་། །

དབང་ཐང་ཆེ་ཀུན་དཀའ་རྒྱབ་སྒྲོབས་ཀྱིས་འཛོལ་⁸ །ཅེས་གསུངས་སོ། །

ཁྱད་པར་དུ་འགྲོ་བའི་སྒྲོད་ལམ་ནི་དེས་མཉམ་བར་མ་གཞག་པ་ན་⁹ཤེས་རབ་

1. རྒྱུད་གཞུང་དཔལ་གསུང་བ་འདུས་པར་འཛོལ་ཞིབ་བྱས་ཀྱང་ལྷུང་འདི་ཆེད་སོན་མ་བྱུང་།

2. ཞེས་གསུངས་པ་དང་། གྲུ་ ཅོ།

3. རབ་དུ་དགའ་ ཅོ། གྲུ།

4. ངང་རྩལ་སྤར་བ་ བེ། ཅོ། དང་རྩལ་སྤར་བ་ གྲུ།

5. དེ་བས་ གཤེར། གྲུ།

6. ལེབ་⁷⁷ Toh.805 གྲུ། བཀའ། རྒྱུད། "མ" ⁷⁸པར་

7. དང་མངས་བཟང་ བེ། མདངས་བཟང་ གྲུ། ཅོ།

8. ཐོབ་ གྲུ། ཅོ།

9. མ་བཞག་པ་ནི་ གཤེར། གྲུ། བེ། མ་བཞག་པ་ན་ ཅོ།

དེ་བཞིན་དུ། འཕགས་པ་¹འཛིག་རྟེན་གསུམ་ལས་རྒྱལ་བའི་ཚོག་ཞིབ་མོ་ལས་²ཀྱང་།

མཁས་པས་མཛོད་རྟེན་ལས་བྱ་ཞིང་། །

དེ་བཞིན་དམ་པའི་ཚོས་ཀྱང་བསྐྱབ་³ །

དགེ་བ་ཅུང་ཟད་གཞན་དག་ཀྱང་། །

ཅུང་ཟད་ཟིན་ནས་འདི་དག་ཀྱང་། །

དངོས་གྲུབ་མཚོག་ནི་ཐོབ་འདོད་པས། །

རྟག་དུ་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་བསྟོ། ། ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བས་ན་ཇི་ཙམ་དུ་སེམས་ལ་མི་གཞོད་པའི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་

གཡེང་བ་དང་བཅས་པ་རྣམས་སེམས་ཅན་ལ་ཕན་པར་འདོད་པས་རབ་དུ་གྲུས་པར་

བྱས་པ་ལ་བརྩམས་ཏེ་⁴འདི་ནི་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་སྦྱོད་པ་རྣམ་པ་གསུམ་སོ། །

དེ་ལྟར་ཚོགས་ཐོབ་པ་དེས་སྦྱོད་ལམ་རྣམ་པ་བཞི་གང་བདེ་བར་གནས་ཏེ།

མཚན་མ་དང་བཅས་པའམ་མཚན་མ་མེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་ལ་སེམས་མཉམ་པར་

གཞག་⁵པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་སེམས་མཉམ་པར་འཛོག་པ་དེས། ཉེས་པ་ལྔ་སྤང་⁶བའི་

1. འཕགས་པ་ བེར་མི་སྒྲུང་།

2. ལུང་འདི་གོང་འཁོད་གཞུང་ནང་མ་གསལ་ཀྱང་ཁྱོ་བོ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་རྟོག་པ་གསང་བའི་རྒྱུད་ནང་གསལ། Toh.604 གྲེ་བཀའ། རྒྱུ། "བ" 72 བཟ

3. ལྷག་ གསེར། གྲེ་ ལྷ། བསྐྱབས་ ཙོ།

4. བྱས་ལ་བརྩམས་ཏེ་ གསེར། ཙོ། ལྷ། བྱས་པ་ལ་བརྩམས་ཏེ་ བཤ།

5. མཉམ་པར་བཞག་ གྲེ་ བཤ། ལྷ། གསེར།

6. སྤངས་ བཤ། རྟོར་ གྲེ་ ཙོ།

བྱིར་སྤྱོད་བའི་འདུ་བྱེད་བརྒྱད་བཞུག་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་ཉེས་པ་ལྡན་ནི་དབྱུས་དང་མཐའ་
རྣམས་པར་འབྱེད་པའི་ཚོགས་ལེའུར་བྱས་པ་ལས།¹

ལེ་ལོ་དང་ནི་གདམས་ངག་²རྣམས། །
བརྗེད་དང་བྱིང་དང་ཚོད་པ་དང་། །
འདུ་མི་བྱེད་དང་འདུ་བྱེད་དེ། །
འདི་དག་ཉེས་པ་ལྡར་འདོད་དོ། །ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་དག་གི་གཉེན་པོ་སྤྱོད་བའི་འདུ་བྱེད་བརྒྱད་ཀྱང་དེ་ཉིད་ལས་³གསུངས་ཏེ།

གནས་དང་དེ་ལ་གནས་པ་དང་⁴ །
རྒྱ་དང་འབྲས་བྱ་ཉིད་དུ་ལོ། །
དམིགས་པ་བརྗེད་⁵པར་མ་གྱུར་དང་། །
བྱིང་དང་ཚོད་པ་རྟོག་པ་དང་། །
དེ་སྤྱོད་མཛོན་པར་འདུ་བྱེད་དང་། །
ཞི་ཆེ་རྣལ་དུ་འཕུག་པ་ལོ། །ཞེས་སོ།།

དེ་ལྟར་ཡན་ལག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དེས། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམ་
པར་བྱ་བ་ལས་འདིར་ཞི་གནས་དེ་ནི་⁶གཉིས་ཏེ། ཁ་ནང་དུ་བརྟུས་པས་ཐོབ་པ་དང་།

1. ལེའུ་བཞི་ལ། སྟོག་ཅ ཏེ། བསྟན། བཅས་ཙམ། "མི" ཅེན་ཅ
2. གདམ་ངག་ གསེར། སྟེ།
3. ལེའུ་ཅ སྟོག་པ ཏེ། བསྟན། བཅས་ཙམ། "མི" ཅེན་ཅ
4. གནས་དེ་དག་ལ་གནས་པ་དང་།། གསེར། སྟེ།
5. དམིགས་བརྗེད་ བེ།
6. ཞི་གནས་ནི་ བེ།

ཁ་སྤྱིར་བཏུས་པ་ལ་དམིགས་པའོ། ་དེ་ལ་ཁ་ནང་དུ་བཏུས་པ་ལ་ཡང་གཉིས་ཏེ། ལུས་
ལ་དམིགས་པ་དང་ལུས་ལ་བརྟེན་པ་ལ་དམིགས་པའོ། ་དེ་ལ་¹ལུས་ལ་དམིགས་པ་ལ་
ཡང་གསུམ་སྟེ། ལུས་ཉིད་ལ་ལྟའི་རྣམ་པར་དམིགས་པ་དང་། གེང་རུས་ལ་སོགས་པ་
མི་སྦྱག་པར་དམིགས་པ་དང་། ཁྲ་གྲྲི་²ལ་སོགས་པ་མཚན་མ་³བྱང་པར་ཅན་ལ་
དམིགས་པའོ། ་ལུས་ལ་བརྟེན་པ་ལ་དམིགས་པ་ཡང་⁴ལྟ་སྟེ། དབུགས་ལ་དམིགས་པ་
དང་། མཚན་མ་སྤྱོད་ལ་དམིགས་པ་དང་། མིག་ལེ་ལ་དམིགས་པ་དང་། འོད་ཟེར་
གྱི་⁵ཡན་ལག་ལ་དམིགས་པ་དང་། དགའ་བ་དང་བདེ་བ་ལ་དམིགས་པའོ།།

ཁ་སྤྱིར་བཏུས་པ་⁶ལ་དམིགས་པ་ལ་ཡང་གཉིས་ཏེ། བྱང་པར་ཅན་དང་ཕལ་
པའོ། ་དེ་ལ་བྱང་པར་ཅན་ལ་ཡང་གཉིས་ཏེ། སྦྱ་ལ་དམིགས་པ་དང་། གསུང་ལ་
དམིགས་པའོ། ་འདི་དག་ནི་ནི་གནས་ལ་འཇུག་པའི་ཡན་ལག་གོ། ་ཇི་ལྟར་བསྟོམ་པ་
ལ་⁷འདིར་མི་བརྟོད་དེ། གཞུང་ཤིན་དུ་མང་པོར་⁸འབྱུང་བས་འཛིགས་པའི་སྤྱིར་དང་།
སྒྲ་མ་དམ་པས་ཉམས་སུ་སྤྱོད་བའི་མན་ངག་ལ་བརྟེན་པར་རིགས་ཀྱི། བསྟོམ་པར་བྱ་

-
1. དེ་ལ་ བེར་མ་གསལ།
 2. ཁྲ་གྲྲི། བེ། མོ། ཁྲ་གྲྲི། སྦྱ། ཁྲ་གྲྲི། གསེར། སྦྱ།
 3. ལ་སོགས་པ་མཚན་པ་མཚན་མ་ གསེར།
 4. བརྟེན་པ་ལ་ཡང་ བེ། བརྟེན་པ་ལ་ཡང་དམིགས་པ་ཡང་ གསེར། སྦྱ།
 5. གྱི་ གསེར།
 6. ལུས་པ་ བེ།
 7. བསྟོམ་པ་ན་ བེ། བསྟོམ་པ་ལ་ སྦྱ།
 8. མང་པོ་ གསེར། སྦྱ། སྦྱ།

བའི་མན་དག་ནི་ཡི་གེར་གནས་བས་ཤེས་པར་དགའ་¹བའི་ཕྱིར་དང་། ཞིབ་དུ་ནི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བསྟན་པ་ལས་བཤད་པའི་ཕྱིར་རོ། ཞི་གནས་གྱི་འབྲས་བུ་ནི་ལྷག་མཐོང་ཡིན་ལ་ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བུ་ནི། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བྱང་དུ་འབྲེལ་བ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་དངོས་པོ་གང་ཡང་མི་གནས་པས་དངོས་པོ་མེད་པ་བྱེ་བྲག་དུ་མཐོང་ལ། དེ་ཉིད་གྱི་ཆོ་སེམས་ཅེ་གཅིག་དུ་གྱུར་པས་དམིགས་པ་དུ་མ་རབ་དུ་སྒྲིག་པ་རབ་དུ་ཞི་བར་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ།

དེ་ལྟར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བྱང་དུ་འབྲེལ་བའི་གནས་སྐབས་འདིར། ཡེ་ཤེས་གྱི་དམིགས་པ་གང་ཡིན་པ་དང་ཡེ་ཤེས་ཉིད་ཚུལ་ཇི་ལྟར་གནས་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་སྦྱོང་བ་པའི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་དང་། བདག་ཅག་དབུ་མ་པའི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བྱང་དུ་འབྲེལ་བ་ལ་ཁྱད་པར་ཅི་ཡོད་པ་³དག་ལ། བདག་གི་སྒྲོ་རབ་དུ་འབྲོ་བར་བཟོད་མོད་གྱི། འདིར་ཉམས་སུ་བྱང་བའི་ཐབས་ཅི་མ་གསལ་བར་བྱེད་འདོད་གྱི། བྱུང་བའི་མཐའ་གདམ་ལ་འབེབས་པར་འདོད་པ་ནི་མ་ཡིན་པ་དང་། འཕགས་པ་རྒྱལ་རྒྱུན་ལ་སོགས་པས་གསལ་བར་མཛད་པ་ལས། ཅུང་ཟད་ཀྱང་སུས་ཀྱང་⁴སྒྲར་མེད་པའི་ཕྱིར་སྒྱ་ཆེར་མ་སྒྲོས་སོ།

ད་ནི་གཞན་འདི་བཛྲོད་པར་བྱ་སྟེ། ཅི་མཚན་མ་དང་བཅས་པའི་ཞི་གནས་

-
1. གནས་པའི་ཤེས་པར་དགའ་ ཟླ། གནས་པས་ཤེས་པར་དང་།ར་ གསེར། ཟླ།
 2. དུ་མ་ལ་ བཤ།
 3. ཡིན་པ་ གསེར། ཟླ།
 4. སུས་ཀྱང་ བེར་མ་གསལ།

མདུན་དུ་མ་བྱས་པར་¹ལྷག་མཐོང་སྟེ་བ་²རུང་བ་ཡིན་ནམ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རུང་བ་ཉིད་དེ།
 མཚན་མ་མེད་པའི་ཞི་གནས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཉིད་ལས་མཚན་མ་མེད་པའི་
 ལྷག་མཐོང་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་³ཡེ་ཤེས་འབྱུང་སྟེ། དེ་ལྟར་ཡང་འཕགས་པ་འོད་
 བྱུངས་ཀྱིས་ཞུས་པ་ལས།⁴

ཤིང་གཉིས་དུད་པ་ལས་ནི་མེ་འབྱུང་སྟེ། །

བྱུང་བ་དེ་ཡིས་དེ་ཉིད་བསྟེན་པ་ལྟར། །

དེ་བཞིན་ཤེས་རབ་དབང་སོ་སྟེས་ནས་ཀྱང་། །

སྟེས་པ་དེ་ཡིས་དེ་ཉིད་བསྟེན་པར་བྱེད། །ཅེས་གསུངས་སོ།།

སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ནི་ཞི་གནས་མ་ཡིན་དེ། རྣམ་པ་དུ་མས་དམིགས་སོ་ཞེ་ན།
 དེ་ལྟ་ན་ནི་ཞི་གནས་ཀྱང་ཞི་གནས་མ་ཡིན་དེ། ལྟ་ཅིག་མ་⁵དུ་མ་དང་ཆ་ཤས་དུ་མ་ལ་
 དམིགས་པའི་བྱིར་རོ། །གཞན་ཡང་ཞི་གནས་ལས་ལྷག་མཐོང་ལ་འཇུག་པ་ན་ཡང་⁶ཇི་
 ལྟར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་⁸མཚམས་སྦྱར་བར་མི་བྱེད། དེ་མི་བྱེད་⁹པ་ནི་

1. མ་བཅས་པར་ གསེར། ལྟ།

2. སྟེ་བར་ ལྟ། ཅོ།

3. རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ གསེར། ལྟ། ལྟ།

4. Toh.87 ལྟ། བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། "ཆ" 222 བ 2 འབྱུང་མི་གཅིག

5. བེ་ཀིང་པར་མར་ཆོགས་བཅད་འདྲིའི་ནང་གསལ་པའི་བསྟེན་ལ་ སྟེན་ ཅེས་བྲིས་པ་སྟུང་།

6. ལྟ་ཅིག་ གསེར། ལྟ། ལྟ། ཅོ།

7. འཇུག་པ་ཡང་ གསེར། ལྟ།

8. ཀྱི་ གསེར། ལྟ། ལོ།

9. དེ་ནི་བྱེད་ གསེར། ལྟ།

འགའ་ཞིག་¹་ཟད་དོ། །དེ་ལ་འདིའི་རིམ་བ་ཡང་ལུས་ཁོ་ན་ལ་བརྟགས་བས་འབྱུང་བ་

སྟེ། འཕགས་བ་རྒྱལ་རྒྱུ་ནའི་ཞལ་སྔ་²ནས་³།

འཇིག་རྟེན་རྣམ་པར་རྟོག་ལས་བྱུང་། །

རྣམ་པར་རྟོག་བ་སེམས་ལས་བྱུང་། །

སེམས་ཀྱང་ལུས་ལས་བྱུང་བས་ན། །

དེ་ཕྱིར་ལུས་ལ་དབྱེད་⁴བར་བྱ། །ཞེས་བཤད་ལ།

འཕགས་བ་རྒྱལ་རྒྱུ་ནའི་ཞལ་སྔ་ནས་⁵ཡང་⁶བཤད་བ།

ལུས་མེད་རྣམ་པར་ཤེས་བ་ནི། །

མེད་ཅེས་བྱ་བ་རྟོག་⁷བར་གྱིས། །ཞེས་བཤད་ཅིང་།

མདོ་ལས་⁸ཀྱང་། "རྣམ་པར་ཤེས་བ་ནི་ལུས་ལས་མི་འདའོ།" ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་

བས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ལ་བསྐྱབ་བ་དང་། སེམས་ལུས་ལ་བསྐྱབ་བ་དང་། ལུས་

1. འགའ་ཞིག་དུ་ གསེར། བེ།

2. ཞལ་ནས་ གསེར། བེ། ལྷ།

3. སྟེད་བ་ལས་འདས་བའི་གཏམ། Toh.4162 སྟེ། བཟླ་ན། དབྱུམ། "གེ" ༡༩༤ བ་ཙ

འབྱུང་མི་མཐུན་བ་ནི། འཇིག་རྟེན་རྣམ་པར་རྟོག་ལས་བྱུང་། །རྣམ་རྟོག་སེམས་ལས་ཡང་དག་འབྱུང་། །

སེམས་ནི་ལུས་ལ་བརྟེན་བ་སྟེ། །དེ་ཕྱིར་ལུས་ནི་རྣམ་དབྱེད་དོ། །

4. སྟེད་ གསེར། ལྷ།

5. བྱང་རྒྱལ་སེམས་འབྱེལ། ལྷོ་ཀ ༣༩ Toh.1800 སྟེ། བཟླ་ན། ལྷུང། "ངེ" ༣༩ བ་ཙ

6. ཀྱང་ སྟེ། ཅོ།

7. བྱ་བར་རྟོགས་ བེ། བྱ་བ་རྟོགས་ གསེར། ལྷ།

8. ལུང་འདི་རྟེན་སོན་མ་བྱུང་།

ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སུ་ཉེ་བར་ན་ལ་འབྱེད་དུ་བྱ་བ་འདི་ནི་མན་ངག་གོ། །ཡང་ན་ལུས་དང་
ངག་སེམས་¹ཐ་དད་པ་ལ་དམིགས་པར་བྱ་སྟེ། འདིའི་མན་ངག་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་སུ་
དྲན་པ་²ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་བས་ན་མཚན་མ་དང་བཅས་པའི་ཞི་གནས་ལ་བརྟེན་
བ་བས་ནི་མཚན་མ་མེད་པའི་ཞི་གནས་ལ་དམིགས་ནས་ལྷག་མཐོང་བསྐྱེད་པའི་ཕྱོགས་
འདི་བསྒྲགས་ཏེ། དེའི་གནས་པ་བརྟན་པ་³དང་། ཞི་གནས་འབའ་ཞིག་གིས་⁴ཉོན་
མོངས་པ་རབ་དུ་གཞོན་ཅིང་སེལ་བ་དང་། འབྲས་བྱ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་རྒྱ་ཡིན་
པའི་ཁྱིར་རོ།།

འདིར་ནི་བདག་གི་⁵སྒྲ་མའི་མན་ངག་ལས་བྱུང་⁶འདི་བྲིས་པས། །

1. ལུས་དང་སེམས་ གསེར། གླེ། ལྷ། ཅོ།

2. སངས་རྒྱས་ཀྱིས་སུ་དྲན་པ་བློན་མེད་པ་བསྒྲོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ། Toh.3923 གླེ། བསྟན། དབྱ་མ།
"ཀྱི" ཡལ་༢ - ཡལ་༣

དེ་ལྟར་ལུས་མ་གྲུབ་པས་ཁོག་སྒྲུབས་དང་། ངག་ཀྱང་མ་གྲུབ་ལོ། དེ་ལྟར་ལུས་དང་ངག་མ་གྲུབ་
པས་སེམས་ཀྱང་མ་གྲུབ་པར་དབྱུང་དེ། འདི་ལྟར་ལེགས་པར་དབྱུང་ན་སེམས་ནི་ཁ་དོག་དུ་མི་དམིགས།
ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་གསལ་བར་བསྟན་ཏོ། །ཤོག་གུངས་ ཡལ་༥

སངས་རྒྱས་ཀྱིས་སུ་དྲན་པ། Toh.279 གླེ། བཀའ། མདོ་གླེ། "ཡ" རེ་བཅ - རེ་ན་ཡ
(Toh.3143 གླེ། བསྟན། ལྷ། "ཐུ" ༡༩༢བ༡ - ༡༩༢བ༢)

Toh.3982 གླེ། བསྟན། མདོ་འགྲེལ། "ཇི" ༡༡བ༡ - ༡༡བ༩

Toh.3987 གླེ། བསྟན། མདོ་འགྲེལ། "ཇི" ༡༡བ༢ - ༩༢བ༡

3. བརྟེན་ གསེར། གླེ། ལྷ། ཅོ།

4. 'གིས་' གསེར་བྲིས་དང་ལེ་ཀྱང་པར་མའི་ནང་མ་གསལ།

5. བདག་གིས་ བོ།

6. འབྱུང་ གསེར། ལྷ།

ཉེ་བར་འབྲེལ་བའི་དགེ་བའི་རྒྱ་ཟེར་དྲི་མ་མེད་པ་དེས།
 འགྲོ་བའི་མི་ཤེས་རབ་རིབ་ཐུན་བསལ་གདུང་བ་ཞི་བྱས་ཏེ།
 ཤེས་རབ་མིག་གིས་དེ་བཞིན་ཉིད་ཡུལ་རབ་གསལ་ཐོབ་པ་ཤོག།
 བདག་ཀྱང་རྣམ་པར་གཡེང་སྟེང་སྟོང་སོགས་རབ་ཞི་ཐུན་བསལ་ནས།
 ཐུར་དུ་²ཐུབ་དབང་རྣམས་དང་སྟོང་ཡུལ་གཅིག་ལ་ལྟ་³བར་ཤོག།

ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྲ་བ། སྟོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོས་མཛད་པ་
 རྫོགས་སོ། ། ལྷ་གར་གྱི་མཁན་པོ་བློ་ཅན་ལས་ཞུས་ཏེ། བོད་ཀྱི་ལོ་མ་བ་དགེ་སྟོང་
 ཚེས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བསྐྱར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཐབ་པའོ། །

•

1. གདུང་པ་ གསེར།
2. ཐུ་བྲ་ གསེར།
3. བལྟ་ བེ།
4. རྫོགས་སོ། ། གསེར། ལྷ།
5. བེན་ལ་ཅན་ བེ། བེན་ཅན་ ལྷ། ཅོ་ གསེར། བེན་ཅན་ ལྷ།

སྟོབ་དཔོན་ཚེས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལྷ་དུ་ལྷ་གར་གྱི་མཁན་པོ་བེན་ལ་ཅན་(བེན་ལ་ཅན་)ཡིས་གཞུང་མང་
 དག་ཅིག་བསྐྱར་ཞུས་གནང་བ་གཞུང་དེ་དག་གི་མཛུགས་བྱང་དུ་གསལ། འོན་ཀྱང་གཞུང་འདིའི་པར་མ་
 ལས་ཆེ་བའི་མཛུགས་བྱང་དུ་བེན་ཅན་ཞེས་དང་། བེ་ཀྱང་པར་མའི་ནང་བེན་ལ་ཅན་ཞེས་གསལ་བས་བརྗེ་
 ཏེ་དེའི་མཚན་འདི་ཡིན་ཞེས་བཛྲོད་པར་དཀའ། གཞན་ཡང་དཀའ་ཆག་དུ་འཁོད་པ་གཞུང་འགའ་ཞིག་
 གི་མཛད་པ་པོའི་མཚན་སྟོབ་དཔོན་བེན་ཅན་ཞེས་པ་དང་། ཡང་བེན་ལ་ཅན་ཞེས་པའང་ཡོད་ཅིང་། གཞུང་དེ་
 དག་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྟོབ་ཐབས་དང་འབྲེལ་བ་ཉིད་དོ།

སྒྲོབ་དཔོན་ནག་པོས་མཛད་པའི་ཉིང་ཏེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ།

༡། །ཉེ་གར་སྐད་དུ། སམྱུ་ཉི་མཱ་རྒྱུ་¹པའི་མཛུ་མ།

བོད་སྐད་དུ། ཉིང་ཏེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་²ཀྱི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ།

སངས་རྒྱུས་དང་བྱང་རྒྱུ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཐུག་འཚལ་ལོ།

དང་པོ། སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བའི་ཡན་ལག་བདུན།

དང་པོར་མི་ལྷས་³འིན་པོ་ཆེ་རྒྱུ་མི་གསན་ཅིང་མའི་ལྷས་ཐོབ་པ་དོན་ཡོད་པར་འདོད་
པའི་གར་ཟག་གིས་ཐོག་མར་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བ་⁴ཡན་ལག་བདུན་དང་ལྷན་པར་བྱ་སྟེ།
གཞི་དང་པ་དང་ལྷན་པ་དང་། རྒྱུན་དགེ་བའི་བསེས་གཉེན་བསྟེན་ཅིང་དེའི་ཡོན་ཏན་
ལེན་པ་དང་། གྲུས་པ་དང་ལྷན་པ་དང་། ཡིད་ཆེས་ཤིང་⁵ཐེ་ཚོས་མི་ཐ་བ་དང་། བརྩན་
འགྲུས་དང་ལྷན་པ་དང་། ཐམས་ཅད་ལ་ཡིད་སྦྱོར་བ་མེད་པ་དང་། ཐམས་ཅད་དུ་ང་
རྒྱལ་སྤངས་ཏེ། དེ་དག་ནི་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བའི་ཡན་ལག་རྣམས་བདུན་ནོ།

གཉིས་པ། ཡ་རབས་ཀྱི་རྒྱལ་ལས་མི་ཉམས་པའི་ཡན་ལག་བདུན།

དུས་དང་རྣམས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་གཞན་གྱི་སྒྲོན་ལ་མི་བརྟག་ཅིང་ཉེས་པ་མི་བཟོད་པ་དང་།

-
1. སམྱུ་རྒྱུ་ཙམ་ སྐར་མེས་ པལ་ ལྷ།
 2. ཉིང་ཏེ་འཛིན་ཚོགས་ ལྷ། གཞེས་།
 3. མའི་ལྷས་ ལྷ།
 4. སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བའི་ པལ་
 5. ཡིད་ཆེས་ཤིང་ གཞེས་ ཡིད་ཆས་ཤིང་ པལ་
 6. སྤང་བ་སྟེ་ པལ་

རང་གི་ཡོན་ཏན་ལ་སྒྲོམ་སེམས་མི་བསྐྱེད་¹པ་དང་། རོ་ཆ་ཤེས་པ་དང་བྲིལ་ཡོད་པར་
འདོད་པའི་འགྲོ་བས་རང་སྤྱང་²པ་དང་། སྒྲོམ་པ་ནམ་པ་གསུམ་ལ་ནན་ཏན་དུ་སྤྱད་
པ་དང་། རོ་དགའ་³དང་གསར་འགྲོགས་དང་མཐོ་ལྷ་⁴སྤངས་ཏེ་རྟག་དུ་བྱུངས་བྱུབ་
པར་གནས་པ་དང་། ཡུལ་དང་དུས་དང་གནས་སྐབས་ཀྱིས་གཞན་གྱི་སྤྱད་ཆོད་ཤེས་
པའི་སྒྲོ་ནས་སྤྱད་པར་བྱ་བ་དང་། གཞན་ལ་བརྟུན་⁵པ་སྤང་ཞིང་བྱུང་གིས་མི་བསད་⁶
པར་བྱ་སྟེ། དེ་དག་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བས་མི་གོས་ཤིང་ཡ་རབས་ཀྱི་ཚུལ་མི་
ནམས་པའི་ཡན་ལག་ནམ་པ་བདུན་མོ།

གསུམ་པ། བར་ཆད་སྤང་བའི་ཡན་ལག་བདུན།

རྟག་དུ་འདོད་པ་བྱུང་ཞིང་ཆོག་ཤེས་པ་དང་། ཞེན་པ་དང་ཆགས་པ་ཆེ་ཞིང་འཛིན་པ་ཆེ་
བ་སྤང་བ་དང་། ལེ་ལོ་དང་སྒྲོམ་⁸ལས་སྤང་བ་དང་། ཏ་ཅང་ཡང་⁹ཐལ་བར་འགྱུར་བ་

1. མི་སྐྱེད་ གསེར། ལྷ།

2. ཡོད་པ་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བས་རང་བསྤྱང་ བེ། ཡོད་པ་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བས་རང་སྤྱང་ སྟེ། ཅོ།

3. རོར་དགའ་ བེ།

4. མཐོ་ལྷག གསེར། སྟེ། ལྷ། ཅོ།

5. བརྟུན་ ཅོ།

6. བྱུང་གིས་གསད་ སྟེ། བྱུང་གི་མི་གསད་ ཅོ།

7. མ་གོས་ བེ།

8. སྒྲོམས་ གསེར། ལྷ།

9. ཏ་ཀྱང་ གསེར། ལྷ།

ཡང་ཤེས་པར་བྱ་བ་དང་། རོན་ཆེན་པོར་མི་འགྱུར་བའི་གཏམ་དང་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
སྤང་ཁིང་མི་འཕྱག་པ་དང་། ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སྤང་བ་དང་།
གང་གི་གཉེན་པོར་འགྲོ་བ་བསྟེན་ཤེས་²པར་བྱ་བ་སྟེ། དེ་དག་ནི་བར་ཆད་སྤང་བའི་
ཡན་ལག་རྣམ་པ་བདུན་ནོ།

བཞི་པ། གཞན་སྐྱལ་བཏབ་པའི་ཡན་ལག་བདུན།

མིའི་ལུས་ཐོབ་པ་དང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་སྦྱོད་ཅིང་སྐྱབ་པ་ནི་དཀོན་ཉོ་སྣམ་པ་དང་། དེ་
ལྟ་བུའི་³སྐྱབ་པ་ནི་དོན་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པ་ཡིན་ཉོ་སྣམ་པ་དང་། འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་
བྱེད་པ་རྣམས་ནི་ངེས་པར་དོན་མེད་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་དང་། གཞན་གྱི་སྐྱག་བསྐུལ་
རང་གི་གཉེན་པོར་བསྟེན་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་དང་། ར་ནི་རྟག་ཏུ་བདུད་ཀྱི་སྤར་བ་ན་
འདུག་སྟེ་སྤར་དུ་འཆེའོ་ཞེས་རྒྱུན་ཏུ་བསམ་⁴པ་དང་། བསགས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་ངེས་
པར་ལུས་⁵པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་དང་། རང་གི་གཉེན་མ་དང་སྤྲ་དཀར་ལ་སོགས་པ་ལ་
རྟག་ཏུ་བརྟག་ཅིང་སྦྱོར་བར་བྱ་བ་སྟེ། དེ་དག་ནི་རང་ལ་རང་གིས་གཞན་སྐྱལ་བཏབ་⁷

1. སོགས་སྤང་གཤེར། ལྟ།

2. བསྟེན་ཅིང་ཤེས་པེ།

3. དེ་ལྟ་བུ་པེ།

4. གཉན་ ལྟ།

5. ཞེས་བསམ་གཤེར། ལྟ། ཞེས་རྒྱུན་ཏུ་བསམ་སྟེ།

6. ངེས་པར་བསྐུལ་སྟེ། ལྟ།

7. བཞན་བསྐུལ་བཏབ་གཤེར། ལྟ། གཞན་བསྐུལ་བཏབ་སྟེ། གཞན་བསྐུལ་གདབ་པེ། གཞན་
བསྐུལ་བཏབ་ ལྟ།

པའི་ཡན་ལག་རྣམ་པ་བདུན་ནོ།

ལྔ་པ། གདུང་བ་གཅད་པའི་ཡན་ལག་རྣམ་པ་བདུན།

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ནི་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བཀའ་དང་མདོ་སྡེ་ནི་གྲངས་མང་བདག་ནི་སྒོ་
 ངན་ཞིང་སྒོངས་ལ་ལེ་ལོ་ཆེ་བས་ཐམས་ཅད་བཛོད་ཅིང་ཤེས་པར་མི་རྒྱས་ཏེ། བདག་
 ཉིད་ཆེ་ཟད་པར་འགྱུར་དུ་འོང་སྟམ་པ་དང་¹། སྤྱ་དང་ཡེ་བཞི་རྗེས་སྤྱ་འབྲང་²པའི་
 བཤད་པའི་ཤེས་པ་འདི་དག་གིས་གཞན་རྒྱལ་བའམ་ཕན་ཐོགས་³པ་མ་ཡིན་ཏེ་མི་
 རྣམས་ནི་ཤིན་ཏུ་མག་དཀའ་བར་བསམ་པ་དང་། རང་དང་གཞན་གྱི་གྲུབ་པའི་མཐའ་
 ལ་ཆགས་སྤང་རྣམ་པ་གཉིས་སྤངས་ཏེ་སྦྱར་བ་མི་གདབ་པ་དང་། སྤྱན་ཆེ་དང་ཉི་དུ་
 དང་མཛའ་བཤེས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་ངེས་པར་འགྲོན་པོ་ལམ་གྱིས་བསྐྱས་པ་⁴དང་
 འདྲ་བར་བསམ་⁵པ་དང་། འཛིག་རྟེན་གྱི་རྟེན་པ་དང་བཀུར་སྟོ་དང་། བསྟོད་པ་དང་།
 སྤྲད་པ་ལ་⁶སོགས་པ་འདི་དག་ནི་ངེས་པར་བསྐྱུ་⁷བ་ཉིད་ཡིན་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་དང་།

1. སྟམ་དང་ གཤེར། སྤྱ

2. རྗེས་སྤྱ་འབྲངས་ བེ།

3. ཕན་ཐོག་ བེ།

4. ལམ་གྱིས་དུབ་པ་ བེ།

5. འདྲ་བར་བསམ་ བེ།

6. སྤྲད་པ་ལས་ བེ།

7. ངེས་པར་སྤྱ་ སྟོ། ཅོ།

འཛིག་ཉེན་གྱི་ཉིད་པ་དང་འདོད་པ་དང་སྲིད་པ་དང་ཁེ་དང་¹གྲགས་པ་དང་ང་རྒྱལ་དང་
 རྣོ་མ་སེམས་ལ་སོགས་པ་འདི་དག་ནི་ངེས་²པར་མེད་དུག་དང་མཚོན་ཆེན་པོ་དང་
 འབྲ་བར་གྲེས་པར་བྱ་བ་དང་། སྤྱི་དང་ནང་གི་³དངོས་པོ་འདི་དག་ལ་སྦྱུ་མའམ་སྤྱི་ལམ་
 ལྟ་བུར་སྦྱར་དུ་དབྱུད་པར་⁴བྱ་བ་སྟེ། དེ་དག་ནི་གཏུང་བ་གཅད་⁵པའི་ཡན་ལག་རྣམས་པ་
 བདུན་ནོ།

དུག་པ། མངོན་དུ་འགྱུར་བའི་ཡན་ལག་རྣམས་པ་བདུན།

འབྲ་འཛི་ལ་དགའ་བ་སྤང་ཞིང་དཔེན་པར་གནས་པར་བྱ་བ་དང་། དེར་ཡང་རང་གཞུང་
 ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ལྟ་མཉེས་⁶པར་བྱ་བ་དང་ལྟ་ཉེ་བར་བྱ་བ་དང་⁷། ལྟ་མངོན་དུ་བ་
 རྣམས་པ་གསུམ་ལ་བཙོན་ཞིང་འབད་ཚོལ་དུ་བྱ་བ་དང་། དེར་ཡང་རེ་བ་དང་དོགས་
 པ་དང་འདོད་པ་དང་འཛིགས་⁸པ་སྤངས་ཏེ་གནས་པར་བྱ་བ་དང་། སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་
 ལྟན་པ་དང་། སེམས་དཔའ་ཞིང་རྒྱལ་པོད་⁹པའི་སྒོ་ནས་སྤང་དོར་མེད་པར་ངས་སྦྱུ་བ་པ་

1. ཁེ་ངང་གསེར།

2. སོགས་པ་འདི་དག་ངེས་ བེ། སོགས་པ་འདི་དག་ནི་ངེས་ གསེར། ལྟ།

3. ནང་གིས་ ལྟ།

4. ལྟན་དུ་དབྱུད་པར་ སྟེ། བེ། ལྟན་དུ་སྦྱུད་པར་ གསེར།

5. གཏུང་བ་བཅད་ བེ། སྟེ། ཙོ།

6. ལྟ་གཉིས་ གསེར། ལྟ།

7. 'ལྟ་ཉེ་བར་བྱ་བ་དང་' ཞེས་པ་མེ་ཁྱིང་པར་མར་ཡོད་པ་མ་གཏོགས་པར་མ་གཞན་རྣམས་སུ་མེད།

8. འཛིག་ གསེར། ལྟ།

9. བརྒྱལ་པོད་ བེ།

འདིའི་¹སྐོན་ས་འདོད་པའི་དོན་མ་གྲུབ་པའི་བར་དུ་ལུས་དང་སྟོག་གི་སྤྱིར་ཡང་མི་
གཏོང་ངོ་²ཞེས་དམ་བཅས་པ་བསྐྱབ་པ་³དང་། དེར་ཡང་མི་ལམ་ལ་སོགས་པ་རྟགས་
དང་མཚན་མ་ཅི་བྱུང་ཡང་དགའ་བ་དང་མི་དགའ་བ་མི་བྱ་ཞིང་གཞན་ལ་མི་སྤྱི་བ་དང་།
དེར་ཡང་ལྟའི་མི་ལམ་དང་རྟགས་ལ་སོགས་པ་ནི་གདམས་ངག་ལས་ཤེས་པར་བྱ་ཞིང་
ཁྱད་ཀྱིས་མི་བསད་⁴པ་སྟེ། དེ་དག་ནི་སྟེས་བྱའི་དོན་ལྟར་དུ་འགྲུབ་ཅིང་མཛད་དུ་འགྱུར་
བའི་ཡན་ལག་རྣམ་པ་བདུན་ནོ།

བདུན་པ། ལུས་བསྐྱང་ཞིང་གཞོད་པ་བསལ་བའི་ཡན་ལག་རྣམ་པ་བདུན།

དེ་ལྟ་བུའི་གང་ཟག་གི་ལུས་ནི་ཤིན་དུ་དཀོན་ཞིང་གཅེས་པས་ན་ལུས་བསྐྱང་བར་བྱ་སྟེ།
གོས་དང་ཟས་དང་སྤྲན་ལ་སོགས་པ་⁵ཇི་ལྟར་མཐུན་པར་སྦྱང་བ་དང་། མི་དང་མི་མ་
ཡིན་པའི་གཞོད་པ་བསྐྱང་བ་དང་། གནས་མཐུན་ཞིང་བདེ་ཞིང་གཞོད་པ་མེད་པ་ལ་
གནས་པ་དང་། ལུས་སེམས་ངལ་ཞིང་དུ་བ་པའི་ལས་དང་བྱ་བ་མི་བྱ་བ་དང་། རམ་
སྟེང་དང་ཉི་མ་སྟེང་⁶དང་ཟས་འཇུ་བའི་དུས་དང་ལུས་ལ་ནད་ཁམས་སྟེ་བའི་⁷དུས་སུ་

1. མེད་པ་ངས་སྐྱབ་འདིའི་ བ།

2. མི་བཏང་ངོ་ བ།

3. སྐྱབ་པ་ བ། སྟེ་ ཅོ།

4. ཁྱད་ཀྱིས་མི་གསད་ སྟེ་ ཅོ། ཁྱད་ཀྱིས་མི་གསད་ གཤེད། ཁྱད་ཀྱིས་མི་ གསད་ སྟེ།

5. སོགས་པས་ བ།

6. སྟེང་པ་ བ།

7. སྟེང་པའི་ སྟེ་ ཅོ། སྟེས་པའི་ བ།

དམིགས་པ་ལ་འབད་ཚེ་ལ་མི་བྱ་བ་དང་། ལུས་དང་སེམས་ངལ་ཞིང་དུབ་པའི་དུས་སུ་
སྒྲོ་བ་བསང་ཞིང་དམིགས་པ་གསོར་བ་ནི་མན་ངག་ལས་ཤེས་པར་བྱ་བ་དང་། རྟག་
ཏུ་སྒྲོད་ལམ་གྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་²ལུས་མཉམ་པར་གཞག་³པ་སྟེ། དེ་དག་ནི་ལུས་
བསྐྱང་ཞིང་གཞོད་བ་བསལ་⁴བའི་ཡན་ལག་རྣམ་པ་བདུན་ནོ།

བརྒྱད་པ། ཁ་སྒྲོང་གི་ཡན་ལག་རྣམ་པ་བཞི།

དེ་ལྟར་གནས་པས་སྒྲོ་ཞིང་དགེ་བ་ལ་⁵གཡེལ་བ་དང་བྱ་བ་དང་བྱེད་པའི་རྣམ་ཏོག་བྱང་
ན་⁶རང་གིས་རང་ལ་ལྷག་བརྒྱབ་ཅིང་གཉེན་པོ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། ལུས་ལ་གཞོད་པ་སྒྲོ་
བྱར་བ་བྱང་བ་དང་ཤེས་པའི་བྱེ་བྲག་མི་འདྲ་བར་⁷བྱང་ན་རང་གི་ཉམས་དང་མན་ངག་
གིས་བཙོས་པར་བྱ་ཞིང་། ཡང་ན་མཁས་པ་གཞན་ལ་ཡང་དྲི་བར་བྱའོ། རྒྱལ་པོའི་
བཀའ་དང་རང་⁸ལ་རྒྱས་པ་ཡོད་པ་དང་། གཞན་གྱི་དོན་མཐོང་ན་སྤོང་ལས་རྣམ་པ་
བཞི་ནི་རྩི་རྩེ་གཙུག་ཏོར་གྱི་རྒྱུད་དང་། མན་ངག་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། ཉོན་མོངས་པ་

-
1. དམིགས་པ་བསོར་ བེ།
 2. རྟག་ཏུ་སྒྲོད་ལམ་གྱིས་ བེ། རྟག་ཏུ་སྒྲོད་ལམ་གྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ གསེར། ལྷ།
 3. མཉམ་པར་བཞག་ བེ།
 4. གཞོད་བ་གསལ་ བེ། ལྷ།
 5. དགེ་བ་ལས་ བེ།
 6. བྱང་ནས་ གསེར། ལྷ།
 7. མི་འདྲ་བ་ ལྷ། ཙ།
 8. རང་རང་ བེ།

མི་འདྲ་བ་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་རྣམ་པར་རྟོག་¹པ་མི་འདྲ་བ་རྣམས་ལ་གཉེན་པོ་མི་
འདྲ་བ་རྣམས་ནི་མདོ་སྡེ་ལྷ་པོ་ཆེ་རྣམས་ལས་ཤེས་པར་བྱ་སྟེ། དེ་དག་ཁ་འཕངས་པའམ་
ཁ་སློང་གི་ཡན་ལག་རྣམ་པ་བཞིའོ། ཉིང་འཇིན་གྱི་ཆོགས་ཀྱི་ལེའུ་སློབ་དཔོན་ནག་
པོ་ཞབས་ཀྱིས་མཛད་པ་རྫོགས་སུ་²

ལྷ་གར་གྱི་མཁན་པོ་གྲིལ་³དེ་ཉིད་དང་། ལྷ་ཆེན་⁴གྱི་ལོ་རྒྱུ་བ་དག་སློང་ཆོས་
ཀྱི་⁵ཤེས་རབ་ཀྱིས་བསྐྱར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཐབ་པའོ། །

•

-
1. རྣམ་རྟོག་ བཤེས་
 2. རྫོགས་སྟོན་ གསེར་། སྟེ། བཤེས་
 3. གྲིལ་ གསེར་། སྟེ། གྲིལ་ བཤེས་
 4. ལྷ་ཆེན་ བཤེས་
 5. ཀྱིས་ གསེར་།

समाधिसंभार-परिवर्त

बुद्ध और बोधिसत्त्वों को नमस्कार ।

संसार की स्थिति पर्यन्त विद्यमान रहने वाले, पुत्रों (बोधिसत्त्वों) सहित मुनीन्द्रों (तथागतों) को प्रणाम कर, तन्त्र, सूत्र तथा पारमिताओं के मूलवचनों के अनुसार समाधिसंभार-परिवर्त का निरूपण करूँगा ।

सम्प्रति अधिकतर लोग मार के अंकुश से अधिष्ठित गृहस्थी रूपी जेल में दृढ़ता से बन्द हैं, मार के चार लोकपालों द्वारा सावधानी से निगरानी किए जाते हुए वे तृष्णा आदि के बन्धनों से कस कर बँधे हुए हैं । संवरपालन करने वाले अनेक (भिक्षु) भी मार के चार लोकपालों के वशीभूत हो पुण्य और पाप के विवेक एवं शील को त्यागकर गृहस्थ के समान आचरण करते हैं और दुर्गति रूपी प्रपात की ओर अभिमुख होकर अभ्युदय से वंचित हो जा रहे हैं ।

अतः इस (ग्रन्थ) की रचना मैंने अपने स्मरण के लिए की है, न कि दूसरों के हित की आशा से । फिर भी (यदि) किसी मेरे समान भाग्यवाले को इससे प्रसन्नता होती है तो वह सम्यक् रूप से इसको जान सकेगा, अतः (वह) इस वचन को सुने ।

इस समाधिसंभार के नौ अङ्ग हैं— प्रहेय, पूर्वगमन, निवृत्ति, संताप का छेदन, चित्तसंवेग, गुणानुस्मरण, वीर्य, सम्बन्ध और स्थिति के उपाय ।

१. प्रहेय-अङ्ग—

इनमें प्रहेय तो मार का कर्म है । 'मार क्या है ? उसका कार्य क्या है ?' मार पापी कामदेव है, (इसकी) पत्नी पद्ममालिनी और परिवार चार लोकपाल हैं, प्रेतों के सहित जो कोई भी हो मारकुल हैं । इनके कार्य—सपत्नीक उस कामदेव की मूर्धा में पाँच पुष्प-बाण विद्यमान होते हैं, यथा—उन्मादन, मोहन, संमोहन, मूर्च्छन तथा अचेतन । इसके उन पुष्प बाणों के प्रहार का आघात होने पर पाँच क्लेशों में से जो अधिक है उसी के आघात मात्र से (प्राणी) प्रज्वलित हो उठता, है उसके अधीन हुआ (प्राणी) मोक्ष तथा अभ्युदय से च्युत हो जाता है ।

इसका परिवार चार लोकपाल हैं, जो कलह, विक्षेप, अत्यन्त अध्यासक्ति तथा संज्ञाविपर्यास करते हैं । इन मारों के भिन्न-भिन्न कार्य हैं, जैसे (१) कलह

पैदा करने वाला मार मार्ग की भावना करने वालों में कलह, विवाद और विभेद पैदा करके इनके प्रत्ययों के बल से सफल होता है । (२) विक्षेप करने वाला मार मार्ग-भावना करने वालों में (निद्रा एवं आलस्य) की अत्यन्त वृद्धि करता है या धर्म सुनने में भी निद्रा अथवा किसी में अत्यन्त विक्षेप पैदा कर देता है । (३) वह अभ्यासक्त मार अधिकतर गृहस्थों में बाधा पहुँचाता है—वह दान (देने) का समय समीप आने पर पुत्र, पुत्री, पत्नी और स्वयं को क्या उपभोग्य है? इस प्रकार दिव्यवस्तुओं को अपने मांस को काटकर देने की भाँति समझने लगता है । जो संज्ञा-विपर्यास मार है, वह अधिकतर प्रब्रज्या पक्ष को दूषित करता है । जैसे कि प्रब्रज्या-चित्त आसन्न होने पर मैथुन का सुख, खाने और पीने का सुख, स्वजनों के समूह (के स्मरण), नृत्य एवं गीत आदि के स्मरण से अभिनिवेश कराता है, उन्हें अपने लोगों से वञ्चना, प्रलोभन, तर्जना तथा ग्रहण आदि द्वारा उनके निःश्रेयस् में बाधा पहुँचाता है । प्रब्रजितों को भी स्त्री-लिङ्गों का स्मरण दिलाता है, पूर्व के हास-परिहास एवं क्रीडा के (आनन्द का) स्मरण दिलाता है, व्यापार, कृषि और अपने सम्बन्धियों के साथ विश्वस्त चित्त का उत्पाद कर स्वप्न में (यह मार माया से) स्त्री रूप धारण कर, उसमें काम का बीज उत्पन्न करता है । अनेक प्रकारों से भी प्रब्रज्या से च्युत करता है, इनके ब्रह्मचर्य को मलिन भी करता है । ये चारों (लोकपाल) ही जम्बूद्वीप के लोगों को दुःखी करने के लिए विनाशकारी नागों को प्रेरित करते हैं, असुरों को (भी) प्रेरित करके फसलों को चौपट करते हैं, धार्मिक मनुष्यों का प्राण हरण करते हैं, शरीर में अनेक प्रकार के रोगों को फैलाते हैं, जिस प्रकार चार (चक्रवर्ती) राजा अधार्मिक आचरण करने वालों को दण्ड देते हैं उसी प्रकार ये धार्मिक (व्यक्तियों) को दण्ड देते हैं । छत्तीस कुलों में से मास्कुल के प्रेत एक कुल में गिने जाते हैं । इन मारों का कार्य ध्वनियों से स्वप्न में भय उत्पन्न करना है । लक्षण एवं अनुव्यञ्जन से विभूषित बुद्धकाय से सादृश्य दिखाकर उपदेश में बाधा डालते हैं । ध्यान में समाहित होने पर जोर से आवाज करते हैं । संक्षेप में, मार एवं मार-कुल के अन्तर्गत सम्यक् रूप से स्थित सभी लोगों में आसक्ति उत्पन्न करते हैं, या भय उत्पन्न करके बाधा डालते हैं । जैसा कि—*त्रैलोक्यविजयमहाकल्परजतन्त्र* में कहा गया है—“घोर (तीव्र) व्रत ग्रहण करने वाले साधक को, इच्छानुसार रूप धारण करने वाला मार कुल एवं देवियाँ अन्य शरीरों में भी नाना प्रकार के रूपों द्वारा संवर पालन करने वालों (ब्रह्मचारियों) को हानि पहुँचाते हैं ।”

यहाँ व्रत ग्रहण उपलक्षण मात्र है । चित्त के समस्त कर्मों को भी वे हानि पहुँचाते हैं ।

इस प्रकार के वे मार-कार्य किसमें उत्पन्न होते हैं ? विशुद्ध चित्त के द्वारा सम्यग् रूप से वीर्य करने वालों में उत्पन्न होते हैं । यथा मञ्जुश्रीविकुर्वाण-परिवर्त में कहा गया है—“हे मञ्जुश्री ! बोधिसत्त्वों का मारकर्म किसमें उत्पन्न जानना चाहिये।”

मञ्जुश्री ने कहा, “हे देवपुत्र ! बोधिसत्त्वों का मारकर्म वीर्य करने वाले में उत्पन्न जानना चाहिए । ऐसा किस कारण ? वीर्य न करने वालों के प्रति मार क्या करेगा? क्योंकि वे स्वयं ही मार हैं ।”

इस प्रकार का मारकर्म है । ज्ञान से इनका निराकरण करना चाहिये । जैसा कि आर्यदेवपुत्ररत्नोत्तमपरिपृच्छा में कहा गया है—“जब उस प्रकार मारकर्म का ज्ञान हो जाता है तब वह अनवद्य हो जाता है । कुछ मारकर्मों की इस प्रकार निवृत्ति दोषरहित है (मल रहित है) ।” उसकी अनिवृत्ति तो विमुक्ति की अप्राप्ति ही होगी । यथा आर्यसुबाहुपरिपृच्छा (तन्त्र) में कहा है—

“विघ्न समस्त पुण्यों का क्षय करता है । इस प्रकार मनुष्यों को मन्त्र-सिद्धि नहीं होती है । जैसे चन्द्रमा बादलों से मुक्त होने पर प्रकाशित होता है, उसी प्रकार विघ्नों से मुक्त होने पर वह (साधक) भी।”

यहाँ विघ्न भी दो प्रकार के हैं । सम्यक्सम्बोधि को भंग करने के लिए लगे हुये देवकुमार मार और उनसे अतिरिक्त भी । यथा सुबाहुपरिपृच्छा तन्त्र में कहा गया है—“बलि की इच्छा या क्रीडा के (द्वारा सताने की) इच्छा से या हत्या करने के लिए शरीर में प्रवेश करता है ।”

यहाँ इन दोनों का निराकरण होना चाहिये । किस उपाय के द्वारा निराकरण करना चाहिये ? ऐसा कहे तो, जैसा कि आर्यवज्रशेखरतन्त्र में कहा गया है—“स्वयं का चित्त मार है और स्वयं का चित्त ही विघ्न है, समस्त विकल्पों का प्रहाण करना चाहिये, क्योंकि समस्त विघ्न विकल्प से उत्पन्न होते हैं।” अन्य भी मारकर्म के निवारण के उपाय (कहे गये हैं) । इनको आर्यअशोकदत्तपरिपृच्छा तथा आर्यसिंह व्याकरण से जानना चाहिये । ये प्रहेय-अङ्ग हैं ।

२. पूर्वङ्गम-अङ्ग—

जिसने श्रुतस्वभाव के द्वारा प्रज्ञा उत्पन्न नहीं की है, वह मारकर्मों की निवृत्ति में सक्षम नहीं होता है । चित्त को समाहित करने में भी सक्षम नहीं होने से श्रवण को ही सबसे पहले उपस्थित किया जाता है—“प्रज्ञा का विस्तार करने वाले श्रवण तथा चिन्तन हैं । इन दोनों के विद्यमान होने पर बाद में भावना में लगना चाहिये और उससे अनुत्तर सिद्धि प्राप्त होती है ।” ऐसा कहा गया है ।

आर्यबोधिसत्त्व-दशव्यवस्थाननिर्देशपरिवर्त में भी कहा गया है—“हे जिनपुत्र, उस आदिकर्मिक बोधिसत्त्व को सर्वप्रथम स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना चाहिये, बहुश्रुत होने के बाद एकान्त स्थान में रहने के लिए प्रेषित करना चाहिये ।”

इस प्रकार का अर्थ आर्यउग्रपरिच्छासूत्र तथा आर्यरत्नप्रदीप में भी उक्त है । इसी भाँति आर्यगण्डव्यूहसूत्र में भी कहा गया है—“सर्वप्रथम (धर्म) श्रवण की इच्छा, गुरु के प्रति सत्कार, क्षान्ति का (निर्वाह) करने (के बाद) निःस्वभाव धर्म पर अच्छी तरह विचार करके ध्यान प्राप्त करने वाला सुगतत्व का अवबोध करेगा एवं जगत् (सत्त्वों) के तृष्णा चित्त को तृप्त करने वाला, उस प्रकार की धर्मता का आचरण करने वाला शीघ्र ही सुगत (बुद्धत्व) पद को प्राप्त होगा ।” उसी प्रकार आर्यश्रावकप्राप्तिमोक्षसूत्र में भी कहा गया है—“वनों में जवानी बिताने वाले बहुश्रुतों का रहना सुखकर है ।” अतः श्रुत (मयी) प्रज्ञा ही लक्ष्य-प्राप्ति की पूर्वगामिनी होनी चाहिये । यह पूर्वङ्गम अङ्ग है ।

३. निवृत्ति-अङ्ग—

इस प्रकार उस श्रुतवान् बोधिसत्त्व की धर्मप्रवचन में प्रवृत्ति का निषेध है, क्योंकि अभिज्ञा की प्राप्ति के बिना बहुश्रुतत्वमात्र से दूसरों का कल्याण कर पाना जिनों ने नहीं कहा है । अतः एव आर्यबोधिसत्त्वदशव्यवस्थान-निर्देशपरिवर्त में कहा गया है—“आदि-कर्मिक वह बोधिसत्त्व प्रथमतया स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया जाना चाहिये । बहुत श्रवण करने के बाद एकान्त स्थान में निवास के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए । विविक्त-स्थान में अच्छी तरह से निवास करने के बाद कल्याणमित्र होने के लिए सर्वतोभावेन प्रेरित किया जाना चाहिये । कल्याणमित्र हो जाने के बाद प्रवचन के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए । प्रवचनकारी होने के बाद काल की जानकारी के लिए प्रेरित किया जाना चाहिये ।

काल की जानकारी होने के बाद निर्भयता के लिए पूर्णतः प्रेरित किया जाना चाहिए। निर्भय होने के बाद अर्थ ज्ञान के लिए प्रेरित किया जाना चाहिये। अर्थ-ज्ञान होने के बाद धर्म के अनुसरण के लिए प्रेरित किया जाना चाहिये। धर्म का अनुगामी होने के बाद अमोहत्व के लिए प्रेरित किया जाना चाहिये। मोह रहित होने के बाद धर्म की सुव्यवस्था में सर्वतोभावेन प्रेरित किया जाना चाहिये। ऐसा किस कारण ? उससे भी अधिक समस्त सत्त्वों में महाकरुणा की पहले व्यवस्था करने के लिए, किसी भी स्थान के बारे में सुनने पर स्वयं को वहाँ लगाने के लिए और स्वयं के दूसरों पर आश्रित न होने के लिए है, क्योंकि, हे जिनपुत्रों ! यह तो आदिकर्मिक बोधिसत्त्वों की व्यवस्था है ।” यही अर्थ आर्य-उग्रपरिपृच्छासूत्र (आर्य-गृहपति-उग्रपरिपृच्छनाममहायासूत्र) और आर्यरत्नप्रदीपसूत्र (आर्य-रत्नोत्कानामधारणीमहायानसूत्र) में भी कहा गया है। इसके अतिरिक्त आर्य-अध्याशयसंचोदनसूत्र में भी कहा है—“मैं तो साधना से च्युत हो गया। अब क्या करूँ? इस प्रकार से बाल (पृथग्जन) मृत्यु के समय शोक करते हैं” इत्यादि। एकान्त स्थान का सेवन न करने वाले बहुश्रुत धर्म को कहने वालों में अनेक प्रकार के घोर दोष कहे गये हैं। अतः वहाँ विस्तार से द्रष्टव्य है। अतः उस बहुश्रुत को श्रवण मात्र से धर्म-भाषण से निवृत्त होना चाहिये और अभिज्ञा प्राप्ति के पश्चात् सर्वप्रथम सत्त्वों का अभीष्ट (सिद्ध) करना चाहिये। यह निवृत्ति-अङ्ग है।

४. संताप-विच्छेद-अङ्ग—

इस प्रकार से धर्म भाषण से निवृत्त होकर प्रपञ्चों का प्रहाण करने वाला वह इस प्रकार विचार करता है—“अब तक भी मैंने स्कन्धों पर कुशलता नहीं पायी, धातु एवं आयतनों पर कुशलता में भी असमर्थ रहा, (जब तक) इन सभी में कुशल नहीं हो जाता (तब तक) मोक्ष की प्राप्ति भी नहीं होगी ।”

यथा सूत्रालंकार में कहा गया है—“पाँच (महा) विद्याओं में वीर्य न करने पर परम आर्य (बोधिसत्त्वों) को भी सर्वज्ञता प्राप्त नहीं होती। इसलिए अन्यो का निग्रह एवं अनुग्रह करने के लिए अथवा स्वयं सर्वज्ञता की प्राप्ति के लिए वह (बोधिसत्त्व) इन (पाँच विद्याओं) में प्रयत्न करता है ।” इस प्रकार निर्देश किया गया है। ऐसा विचार किया जाना चाहिये। और भी, शिष्य एवं प्रशिष्य का सम्बन्ध, लाभ तथा सत्कार, कीर्ति, शब्द और गाथा के सुख की इच्छा उत्पन्न हुई तो उसका निश्चित ही प्रहाण करना चाहिये। धर्मों को (श्रुत) सुनने के

पश्चात् भावना के द्वारा अभ्यास नहीं करने वाले की कदापि प्रशंसा नहीं की जाती है । यथा— **आर्यगण्डव्यूहसूत्र** में कहा गया है—“उत्तम बुद्ध शासन श्रवण मात्र से प्राप्त नहीं होता है । जैसे नदी के द्वारा तेजी से बहाकर ले जाया जा रहा (कोई व्यक्ति) प्यास से (पानी में रहने पर भी) मर जाता है, भावनारहित धर्म से भी वैसा ही है ।” और भी कहा गया है—“जैसे महासागर से एक नाविक सभी व्यक्तियों को बाहर निकालता है, फिर भी स्वयं उसमें (डूबकर) मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, उसी प्रकार भावना रहित धर्म भी है ।” इत्यादि । भावना के द्वारा अभ्यास न करने वालों के अनेक प्रकार के दोषों को दिखाया गया है । विस्तारपूर्वक उसी ग्रन्थ से जानना चाहिये । अतः जितने मात्र से चित्त समाहित हो सकता है, उतने ही अववाद से संतोष करना चाहिये । यदि किसी प्रकार चित्त का स्वभाव सहसा परिवर्तित हुआ हो तो गुरु से पूछकर भावना करनी चाहिए । सात प्रकार के प्रमाण (ग्रन्थ), चार प्रकार के व्याकरण (ग्रन्थ), सात प्रकार के **अभिधर्म** और **योगाचार भूमि** आदि से मन को संतप्त नहीं करना चाहिये । जैसा कि **परमार्थयुक्ति** (दोहाकोष) में कहा गया है—

“(संताप से युक्त) जो कोई व्यक्ति संताप निवारक एवं शीतल अमृत जल रूपी गुरु के उपदेश के (पीछे-पीछे) दौड़ता है, किन्तु पी नहीं पाता है (अर्थात् गुरु के वचनों को सुनता तो है, किन्तु उसके मर्म से अवगत नहीं हो पाता) वह अनेक अर्थों वाले शास्त्र रूपी मरुस्थल में प्यास से मर जाता है ।” अपार कल्पों में श्रम करने पर भी उन (उपयुक्त) व्यवहारों का क्षय नहीं होता है, किन्तु उनकी आयु ही समाप्त हो जाती है ।

इसी से **उत्तरसंवर** में भी कहा गया है—“योगी बाह्य (प्रमाण, व्याकरण, अभिधर्म, योगाचारभूमि, धातु, आयतन, स्कन्ध आदि ग्रन्थों) में भ्रमण करता है और उसके धातुओं का क्षय हो जाता है । अतः बाह्य (विद्याओं) का परित्याग करके योगी को सहजभाव से स्थित होना चाहिये ।” इसी प्रकार **परमार्थयुक्ति** में भी कहा गया है—“वह बहुत स्थानों पर भ्रमण करने पर थक जाता है और सहज (ज्ञान) प्राप्त नहीं कर पाता है, क्योंकि (वह) पाप से गृहीत होता है ।” स्कन्ध, धातु एवं आयतनों में कुशलता योगबल से एक ही समय में उत्पन्न हो जाती है, न कि इनके क्रमिक अध्ययन से । यथा **आर्यवज्रोष्णीष** में कहा गया है—

“उससे ज्ञान उत्पन्न (पैदा) होता है और (शास्त्रों का) श्रवण किये बिना भी उनका ज्ञान हो जाता है।” **आर्यसुबाहुपरिपृच्छा (तन्त्र)** में कहा गया है—“आदेयवचनों में कुशल विवेकी (पुरुष) काव्य तथा रचना में भी प्रवीण होता है।” ये सभी योग के प्रभाव से होते हैं, न कि क्रमशः अध्ययन में जुटने से। **अभिधर्मकोश** में भी कहा गया है—“क्षयज्ञान में सास्रव भी ।” लाभ और सत्कार की इच्छा से होने वाले संताप को चित्तसंवेगाङ्गों से जानना चाहिए । ये तापच्छेदाङ्ग हैं ।

५. चित्तसंवेगाङ्ग—

संसार से मन को हटाए बिना भावना के द्वारा उसे शुद्ध नहीं किया जा सकता। अतः उसमें मन की विरक्ति की भावना करनी चाहिए । जैसा कि **बोधिसत्त्वचर्यावतार** में कहा गया है—“पहले अपने चित्त में शमथ (एकाग्रता) को उत्पन्न करें (और बाद में विपश्यना को)। वह शमथ भी लोक के प्रति अभिरति (आसक्ति) की निरपेक्षता से उत्पन्न होता है । अर्थात् लोक के प्रति प्रेम तो हो, किन्तु आसक्ति न हो ।”

यहाँ बन्धुओं के प्रति अधिक प्यार तथा शत्रुओं के प्रति द्वेष होने से आसक्ति, निरोगता और यौवन इत्यादि के प्रति आसक्ति, स्वाभाविक रूप से संसार के प्रति आसक्ति, लाभ, सत्कार, कीर्ति, शब्द एवं गाथाओं के प्रति आसक्ति का परित्याग करना चाहिए । जैसा कि **आर्यसुबाहुपरिपृच्छा** में कहा गया है—“शत्रु भी कभी मित्र हो जाता है और मित्र भी कभी शत्रु हो जाता है । उसी प्रकार कुछ लोग तटस्थ (मध्यस्थ) होते हैं, यह मध्यस्थ (व्यक्ति) भी शत्रु हो जाता है । उसी प्रकार मित्रत्व को जानकर बुद्धिमान् लोग कभी भी आसक्त न हों । (अतः) बन्धुओं के प्रति मुदिता की कल्पनाओं को छोड़कर सुविधानुसार (चित्त) कुशल में स्थित रहे ।”

आर्य नागार्जुन ने भी कहा है—“(इस संसार में कभी) पिता पुत्र होता है, माता पत्नी होती है, शत्रुजन मित्र होते हैं, इस प्रकार का परिवर्तन होता रहता है, इस कारण संसार में कोई नियतता नहीं है ।”

अतः बन्धुओं एवं शत्रुओं के प्रति आसक्ति का परित्याग करना चाहिये । उसी प्रकार कहा गया है कि—“आरोग्य (स्वास्थ्य) अनित्य है, यौवन अनित्य है, दीर्घ आयु अनित्य है तथा संपत्ति अनित्य है ।” इसलिए इन सबके प्रति भी

आसक्ति का परित्याग करना चाहिए । लाभ, सत्कार, यश, शब्द एवं गाथाओं के प्रति भी आसक्ति का त्याग करना चाहिये । जैसा कि **बोधिसत्त्वचर्यावतार** में कहा गया है—“मैं (सम्पत्ति का) लाभी हूँ, मैं पूजित (सत्कृत) हूँ, बहुत से लोग मुझे चाहते हैं— ऐसा सोचते रहने वाले मनुष्य को मौत से बड़ा भय होता है ।”

और भी उसी ग्रन्थ में कहा गया है—“(दुनिया में) बहुत से समृद्ध लोग हुए हैं, बहुत से यशस्वी हुए हैं, (किन्तु अपने सारे) लाभ और यश के साथ ये लोग न जाने कहाँ चले गए ?

“मैं प्रशंसा होने पर क्यों प्रसन्न होता हूँ, जबकि अन्य अनेक लोग मेरी निन्दा करने वाले भी हैं । इसी तरह निन्दा होने पर भी मैं क्यों दुःखी होता हूँ, जबकि कुछ दूसरे लोग मेरी प्रशंसा भी करते हैं ।”

और भी इसी (ग्रन्थ) में कहा गया है—“अलाभी (लाभ सत्कार से रहित) व्यक्ति की (सामान्य लोग) निन्दा करते हैं । लाभी (लाभ सत्कार प्राप्त) का तिरस्कार करते हैं । स्वभाव से बालपृथग्जनों के साथ संवास दुःखदायी है । उनके साथ (रहने वालों को) प्रसन्नता कैसे हो सकती है ?” और भी अन्यत्र **आर्य-अध्याशयसंचोदन-(महायान) सूत्र** में लाभ एवं सत्कार के दोषों को बहुत बार बताया गया है । (अतः इस विषय को) इसी (सूत्र) से जान लें । यहाँ शिष्य (इस प्रसङ्ग में) प्रशिष्य आदि के प्रति अभिनिवेश क्या करुणात्मक नहीं है ? उसका परित्याग कैसे उचित है ? ऐसा नहीं है, अनुचित स्थान पर करुणा की निन्दा की गई है, (क्योंकि) अभिज्ञा की प्राप्ति के विना शिष्य को परिपाक कर पाना सम्भव नहीं होता, (क्योंकि वह) स्वयं (बन्धन में) बंधा हुआ होता है । जैसा कि **बोधिसत्त्वचर्यावतार** में कहा गया है—“(संसार में) नाना प्रकार के विचार वाले प्राणी हैं । उन सबको बुद्ध भी सन्तुष्ट नहीं कर पाए । फिर मेरे जैसे अज्ञानी के बारे में तो कहना ही क्या ? इसलिए मुझे लोक (की प्रसन्नता) की क्या चिन्ता ?”

और भी इसी ग्रन्थ में कहा गया है—“प्रिय के साथ संगम (समागम) की आकांक्षा के कारण व्यक्ति यथाभूत (तत्त्व) नहीं देख पाता और संवेग से हीन हो जाता है । (इतना ही नहीं, वह) उस (प्रिय के वियोग से उत्पन्न) शोक से जलता रहता है ।” उस प्रिय (के समागम) की चिन्ता से ही आयु प्रतिक्षण (व्यर्थ ही) नष्ट होती रहती है । अनित्य मित्र के कारण नित्य धर्म (बुद्धत्व प्राप्ति) की भी हानि होती है ।”

अतः शिष्य आदि का सम्बन्ध विद्याफल से तथा लोक का व्यावहारिक सम्बन्ध होता है। दोनों के प्रति केवल करुणा से ही अनासक्त एकान्त वास करना चाहिए। भव के प्रति स्वाभाविक अभिनिवेश का भी त्याग करना चाहिए। यथा आर्यसुबाहुपरिपृच्छा (तन्त्र) में कहा गया है—

“लोक को व्याघ्र, सर्प तथा अग्नि की भाँति विचार कर (इसका) त्याग करके एकान्त में प्रसन्न होकर स्त्रीलक्षण, पुरुषलक्षण, औषधि, नक्षत्र, शस्त्र, अश्व के परीक्षण और (स्वयं रचित) काव्य अथवा कुत्सित शास्त्र को पढ़ाने तथा पढ़ने का त्याग कर देना चाहिए।”

और भी इसी (ग्रन्थ) में कहा गया है—“गज, अश्व, कुक्कुट, पक्षी, कुक्कुर (कुत्ता), कपिञ्जल (तीतर), चक्रवाक (चकवा), पुरुष, स्त्री, कन्या, शिशु, बकरी, मेघ, इत्यादि की लड़ाई नहीं देखनी चाहिए।”

“लोक (देश की) वार्ताओं, स्वतन्त्र आश्रय (वार्ताओं), युद्ध, मल्ल तथा युवतियों की वार्ताओं, प्रहेलिका, पूर्व इतिहास की बातें, प्रेम और वेश्याओं की कथाओं को नहीं कहना चाहिए। तान्त्रिक (मन्त्र का अभ्यास करने वाला) गृह्य मन्त्र-जप में लग कर वर्षा के तीनों मासों में एकाकी निवास करे।”

फिर से उसी में (कहा गया है)—“कर्म वशीभूत, स्वामी रहित, अनाथ, निराश्रय (प्राणी), जन्म-जन्मान्तर में, शरीर परिवर्तन (परम्परा) का अनुसरण करता है, उसी के अनुसार कुशल तथा अकुशल होते हैं। जीविका तथा मित्र से वियोग होता है, अप्रिय से योग होता है तथा काम की पीड़ा होती है। कठिन रोगों, बुढ़ापा तथा मरण की भी पीड़ा किसी भी स्थान पर जाने पर भी न हो, ऐसा नहीं है।”

मच्छर, गर्मी, ठंडक, भूख, थकान आदि कहीं भी जाने पर दुःख ही हैं, अतः विषयों में अभिरति-चित्त उत्पन्न होने पर (उनके विपरीत) उन-उन विकल्पों के द्वारा उन्हें निवृत्त करना चाहिए।

अत्यधिक अनुरक्त व्यक्ति अशुचि, मांस, चर्बी, चर्म तथा कङ्काल को देखकर (राग को) दूर हटा दे, मैत्री तथा करुणा (रूपी) जल के सिञ्चन से द्वेष की और प्रतीत्यसमुत्पाद मार्ग के द्वारा मोह की (निवृत्ति करनी चाहिए)।

लोक के अनेक दोषों का प्रदर्शन करके आर्य नागार्जुन ने भी (कहा है)—“इस प्रकार ये सभी (धर्म) अनित्य, अनात्म, अशरण, अनाथ तथा

अनिकेत हैं । अत एव हे श्रेष्ठ मनुष्यों ! कदली वृक्ष की भाँति सारहीन इस संसार से अपने चित्त को विरक्त करो ।”

और भी, बोधिसत्त्वचर्यावतार, समकुमारिकावदान, सुहल्लेख, शिष्यलेख इत्यादि ग्रन्थों का आश्रय लेकर स्वाभाविक रूप से संसार के प्रति (उत्पन्न) आसक्ति का परित्याग करना चाहिए । ये चित्त उद्वेग के अङ्ग हैं ।

६. गुणानुस्मरण-अङ्ग—

इस प्रकार विपक्षों का परित्याग कर समाधि के गुणों का स्मरण करे। यहाँ इसके गुण दो प्रकार के हैं—दृष्टधर्मवेदनीय तथा इससे अतिरिक्त। (१) (वह) कैसे? शरीर का सुखपूर्वक रहना, वाणी का सुखपूर्वक होना, चित्त की सुखपूर्वक स्थिति, धर्मपालकों का प्रसन्न होना, उसको प्राप्त मनुष्य-काय की सार्थकता, शास्ता, माता-पिता और गुरु के प्रति कृतज्ञ होना, मनुष्येतर से हानि न होना, रोगों की कमी, दीर्घायु, मरते समय पश्चात्ताप न होना, विद्वानों के द्वारा प्रशंसित होना, खान, पान, गृह, शय्या, रोग की औषधि और वस्त्रों की सरलतापूर्वक प्राप्ति तथा क्लेश और (अकुशल) कर्म का नाश, ये प्रथम के गुण हैं।

(२) जहाँ इच्छित बुद्ध क्षेत्र में जन्म, तीनों दुर्गतियों का प्रहाण, शेष अक्षणों का प्रहाण, स्त्री रूप में जन्म की अप्राप्ति, तीक्ष्ण-इन्द्रियत्व तथा त्रिरत्न से अवियोग होता है, वहाँ पर भी समाधि का आनन्द तथा अभिसम्बोधि (की प्राप्ति) होती है। ये द्वितीय गुण हैं।

आयु का अधिष्ठान अतिविशुद्ध होने से इसी जन्म में स्वर्गलोक में गमन होता है। इसी अर्थ का विचार कर भदन्त (आचार्य) चन्द्रगोमि ने अपने शिष्य के लिए कहा था—“पूर्ण शशिमण्डल के प्रकाश से सुशोभित, करधनी की भाँति लिपटे हुए सघन मेघों से युक्त, निर्जन पर्वत की चोटियों एवं वन स्थलों में वायु की तरह चञ्चल स्वभाव वाली आयु को भाग्यशाली लोग ही व्यतीत कर पाते हैं।”

“भोली-भाली मृगियों के झुण्ड से भरे हुए और अनासक्ति पूर्वक विचरण करने में सुखद वनस्थलियों में जो आनन्द प्राप्त होता है, उस अत्यन्त सुन्दर स्थान में जो सुख (आनन्द) है, क्या वह (देवलोक के) नन्दन वन में देवियों के नितम्ब-पृष्ठ रूपी शिलातलों पर मिलेगा?”

“वनों में स्वच्छ जल तथा एकान्त में रमणीय तटों वाली नदियों में जो आनन्द मिलता है, क्या वह सुगन्धित लेप से लिप्त देवियों के केशपाशों से विलोडित कल्पवृक्ष के पुष्पगुच्छों को परिहासपूर्वक तिरस्कृत करने वाली देवनदियों में भी (प्राप्त) होता है?”

“विरक्त पुरुषों के आवागमन से सुन्दर, गुफाओं के सघन विस्तार से युक्त, नदियों के तटवर्ती, विस्तृत हरी वन पंक्तियों से सुसज्जित पर्वतों के भाग मृदङ्ग के जैसे कर्णप्रिय झरनों की आवाजों से पथिकों को मानो यह कहते हैं कि—हम क्लेशरूपी अग्नि के विषय नहीं हैं।”

आचार्य शान्तिदेव ने भी कहा है—“वन के वृक्ष कभी खीझते नहीं और न प्रयत्नपूर्वक प्रसन्न ही किये जा सकते हैं, किन्तु जिनके साथ रहने से सुख होता है, उन (वन के वृक्षों) के साथ मेरा वास कब होगा?” (अर्थात् मैं उनके मध्य कब रह पाऊँगा?)

“सूने देवालियों में, वृक्षों के नीचे अथवा (पहाड़ की) गुफाओं में (एक दो रात) ठहरकर, विना पीछे देखे (किसी के प्रति आसक्ति न होने से) अपेक्षा रहित होकर मैं कब चलाऊँगा।”

“दूर-दूर तक फैले और जो मेरे नहीं हैं—ऐसे प्रदेशों में स्वाभाविक रूप से स्वच्छन्द होकर अनासक्त भाव से मैं कब विचरण करूँगा?”

“केवल मिट्टी के पात्र (पिण्डपात्र) की सम्पत्ति के साथ, चोरों के काम न आने वाला चीवर पहने, शरीर को न छिपाते हुए निर्भय होकर मैं कब विचरण करूँगा?”

“श्मशान भूमि में जाकर दूसरे के अस्थि-पञ्जरों से कब मैं अपने इस सड़ने-गलने वाले शरीर की तुलना करूँगा?”

उसी प्रकार आर्यचन्द्रप्रदीपसूत्र आदि से समाधि की अनुशंसा को विस्तार से जानना चाहिए। ये गुणानुस्मरण के उत्साहाङ्ग हैं।

७. वीर्य-अङ्ग—

इस प्रकार की (समाधि के) गुणों को देखकर प्रसन्न होकर वह प्रतिपक्ष की भावना करने के लिए उत्साह करे। जैसा कि बोधिचर्यावतार में कहा गया

है—“इस प्रकार क्षान्ति का अभ्यास कर लेने के बाद वीर्य (पारमिता) का अभ्यास करें, क्योंकि वीर्य पर बोधि आधारित है। वीर्य के बिना निश्चित ही पुण्य (सम्भार) उसी प्रकार सम्भव नहीं है, जैसे वायु के बिना गति।”

इस प्रकार अत्यन्त वीर्य करने पर भी मनःकामना सिद्ध न हुई तो इस जीवन के अत्यन्त चञ्चल होने के कारण चित्त को स्थिर करने या दीर्घ (काल) तक स्थिर करने की सामर्थ्य नहीं होने से, ‘मैं क्षणमात्र भी आलस्य नहीं करूँगा’। इस प्रकार मनसिकार करे। इसी अर्थ को मन में रखते हुए आर्य नागार्जुन ने कहा है—“जीवन अनेक बाधाओं से युक्त, वायु से जल में उठे बुलबुले से भी अधिक अस्थिर है, फिर भी आश्चर्य है कि आश्वास, प्रश्वास तथा निद्रा और जागरण के मध्य एक क्षण का समय (प्राप्त) है।”

और भी (कहा है)—“(अपने) वस्त्र अथवा सिर में अकस्मात् आग लग जाए तो इसके निराकरण (आग को बुझने) के प्रयत्न को छोड़कर भी पुनर्जन्म न होने देने के लिए प्रयास करना चाहिए, क्योंकि उससे महान् एवं श्रेष्ठ प्रयोजन दूसरा नहीं है।” इस प्रकार राजा शालिवाहन (सातवाहन गौतमीपुत्र) के लिए उपदेश दिया था।

भदन्त (आचार्य) चन्द्रगोमी ने भी अपने शिष्य को ऐसा उपदेश दिया था—“अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जन्म को प्राप्त करके जो अभीष्ट है, उसी अभीष्ट कार्य को करना चाहिए, क्योंकि प्रचण्ड वायुवेग के कारण काँपती हुई दीपशिखा के समान चञ्चल आयु का क्षणमात्र भी स्थित रहना निश्चित नहीं है।”

“इसे कल करूँगा, इसे आज थोड़ी देर बाद करूँगा और इसे क्षण भर बाद करूँगा—ऐसा व्यक्ति के सोचते रहने पर ही वक्रदृष्टि से देखने के कारण काले-पीले पड़ गये काल दण्ड वाला असहनशील एवं क्रुद्ध यमराज मानो हँसी उड़ाता है।”

“फूले हुए पुष्पों वाला यह वसन्त आ रहा है, यह चन्द्रमा की बिन्दी लगाये शरद ऋतु आ गयी, ऐसा देखते हुए सभी लोग प्रसन्न होते हैं किन्तु मेरी यह आयु क्षीण हो रही है, इस पर तनिक भी दुःखी नहीं होते।”

आचार्य शान्तिदेव ने भी कहा है—“यह विश्वासघातिनी मृत्यु कृत एवं अकृत (कर्मों) की परीक्षा नहीं करती है। इस अकस्मात् (गिरनेवाली बिजली के समान) मृत्यु के रहते हुए स्वस्थ और अस्वस्थ लोग इसका भरोसा नहीं करते।”

इसी प्रकार आचार्य श्रीवागीश्वरकीर्ति ने भी कहा है—“(आज मैं) यह करूँगा, कल यह करूँगा, इसके अतिरिक्त (मैं) यह भी करूँगा, इस तरह भव के चञ्चल स्वभाव को न जानते हुए व्यर्थ ही (इसके प्रति) विश्वास की खोज करने वाले लोग मृत्यु के मुख में उसी प्रकार प्रविष्ट होते हैं, जैसे मगरमच्छ के मुख में नाव चली जाती है और कार्य सम्पन्न किये बिना विषय की लहरों में गिरता रहता है।”

इसी प्रकार आचार्य सरहपाद ने भी कहा है—“अरे सुमुख वाले, कल, आज और कल (अर्थात् तीनों कालों में) प्राणी अर्थ-सम्पन्नता की कामना करता रहता है, किन्तु भरी हुई अञ्जलि से रिसते हुए जल की भाँति (आयु का) क्षय होते हुए अनुभव नहीं करता।”

प्रतिपक्ष का मनसिकार होने से ये वीर्य-अङ्ग हैं।

८. सम्बन्ध-अङ्ग—

इस प्रकार उस अत्यन्त वीर्य करने वाले के द्वारा दो अङ्गों को साथ में सम्बद्ध किया जाता है। वह इस प्रकार है—शमथ एवं विपश्यना, उपाय एवं प्रज्ञा। वह कैसे? शमथ के द्वारा दृढ़ किए बिना विपश्यना स्थिर नहीं हो सकती, दीप और वायु की भाँति। विपश्यना रहित शमथ से समस्त आवरणों के जाल का परिशोधन नहीं किया जा सकता है, रूप एवं अरूप आदि में शमथ फिर से चक्कर काटता है। अतः बोधिसत्त्वचर्यावतार में कहा गया है—“शमथ के साथ विपश्यना में लगा हुआ व्यक्ति समस्त क्लेशों का विनाश करता है—ऐसा जानकर पहले शमथ को खोजना चाहिए। वह (शमथ) भी लोक के प्रति आसक्ति की निरपेक्षता से उत्पन्न होता है।”

इसी प्रकार उपाय एवं प्रज्ञा भी है। वह कैसे? दो प्रकार के कार्यों की प्राप्ति तथा दो प्रकार के आवरणों का त्याग करने के लिए। अतः आर्यविमलकीर्तिनिर्देशसूत्र तथा आर्यगयाशीर्षसूत्र में कहा गया है—“उपाय रहित प्रज्ञा बन्धन है और प्रज्ञा रहित उपाय भी बन्धन है।” उसी प्रकार आर्यगण्डव्यूहसूत्र में कहा गया है—“प्रणिधान अभिसिद्धि न होने से धर्मज्ञान का अवबोध तो अनभिसिद्धि मार है।” जो दस मारों में से एक है।

केवल शून्यता से ही इन सबकी सिद्धि क्या नहीं होती है? नहीं होती है, क्योंकि फल तो हेतु का अनुसरण करता है। अतः आर्यगण्डव्यूहसूत्र में कहा

गया है—“श्रेष्ठवक्ता (तथागत) की किसी एक ही धर्म से उत्पत्ति नहीं होती और जो (भूतकाल में) उत्पन्न नहीं हुआ वह इसी तरह (भविष्य में भी) उत्पन्न नहीं होगा।”

इसी प्रकार **आर्यवज्रपञ्जरतन्त्र** में भी कहा गया है—“यदि शून्यता उपाय होगी तो बुद्धत्व नहीं होगा। हेतु से फल भिन्न नहीं होता है। इसलिए उपाय शून्यता नहीं है।”

(यदि ऐसा है) तो फिर आगमों (बुद्धवचनों) में केवल शून्यता ही भावना के लिये पर्याप्त क्यों कही गयी है? वह तो आत्मदृष्टि आदि के कारण जो शून्यता के विरुद्ध प्रवृत्त होने वाले लोग हैं उनको शून्यता का महत्व बतलाया गया है। जैसा कि **आर्यवज्रपञ्जर** में वहीं कहा गया है—“मिथ्या (दर्शनों) में आत्मदृष्टि खोजने वालों के आत्मग्राह का निराकरण करने के लिए बुद्धों ने शून्यता की देशना की। अतः मण्डलचक्र सुखोपाय का संवर है। बुद्धत्व के अहंकार से युक्त योगी को बुद्धत्व प्राप्ति में देरी नहीं होती।”

इस प्रकार केवल शून्यता का सेवन नहीं करना चाहिए, बल्कि देवकाय की भावना करनी चाहिए। अतः सम्बोधि की पूर्ति के लिए करुणा के सार से युक्त शून्यता की भावना करनी चाहिए, न कि केवल शून्यता की। आगमों में अभिप्राय यह है—“जैसे मण्डल समर्पण से यह छह पारमिताओं की प्राप्ति कही गई है, उसी प्रकार। इसलिए आगम को केवल शब्दशः ग्रहण नहीं करना चाहिए, अपितु शून्यता के अभ्यास की पूर्णता से समस्त कुशलकर्म स्वतः उत्पन्न होते हैं। पहले प्राणियों को शून्यता में प्रवेश होने पर श्रावक की भाँति शान्ति ही प्राप्त नहीं होती है। शून्यता जैसे-जैसे दृढ़ होती जाती है उतनी ही वैसा अवबोध न करने वाले सत्त्वों के प्रति करुणा उत्पन्न होंगे। यथा आचार्य **नागार्जुन** ने कहा है—“(यदि) योगीजन इस प्रकार इस शून्यता की भावना करें तो (उनकी) बुद्धि निःसन्देह परार्थ में अनुरक्त होगी।”

और भी कहा है—“धर्म के नैरात्म्य को जानने वाला निश्चित ही (धर्मों की) निःस्वभावता का अभ्यास करने के कारण विपर्यय से उत्पन्न क्लेशों के आवरण का प्रहाण करता है।”

इस प्रकार **मध्यमकालङ्कार** में कही गयी युक्ति से उसके क्लेशों का त्याग होता है। जिसने करुणा का परित्याग किये बिना भी क्लेशों को शान्त किया हो

उस (व्यक्ति) में लौकिक और अलौकिक गुण विना प्रयास के ही सिद्ध हो जाते हैं। अतः उसके मुख्य हेतु होने से और केवल उसी से उनके गुणों की उत्पत्ति का विचार होता है। **आर्यवैरोचन-अभिसम्बोधितन्त्र** में कहा गया है—“जिन (तथागत) का ऐसा मानना है कि निमित्तयुक्त (उपाय) के द्वारा निमित्तयुक्त परम सिद्धि प्राप्त होती है, अनिमित्त (शून्यता) पर आश्रित होने से तो सनिमित्त (सिद्धि) भी निष्पन्न होती है। इसलिए सभी प्रकार से अनिमित्त का सेवन किया जाता है, इत्यादि। केवल शून्यता से ही तुष्टि कही नहीं गयी है। ये सम्बन्ध के अङ्ग हैं।”

९. स्थिति-उपाय के अङ्ग—

इस प्रकार आठ अङ्गों से युक्त वह स्थान को अनुरूप, भोजन एवं चरित्र को अनुरूप तथा वस्त्र और मित्र को अनुरूप करके चित्त को समाधि में लगाएं।

यहाँ अनुरूप स्थान—**आर्यसुबाहुपरिपृच्छा** में इस प्रकार कहा गया है—“जिस स्थान (क्षेत्र) पर प्रत्येकबुद्धों और सुगतों (बोधि-सत्त्वों) का जन्म हुआ हो तथा जहाँ जिन (तथागत) ने पूर्वकाल में विहार किया हो, जो स्थान पवित्र एवं मनोहर हो, सुर, असुर आदि भी उस स्थान को प्रणाम करके पूजते हैं।”

“पोषधों और संवरों से युक्त जनों की स्वयं की शुद्धि के लिए (उन स्थानों का) सेवन करना चाहिए। यदि इस प्रकार का (स्थान) प्राप्त न होता हो तो अन्य भी (जहाँ पर) जल, नदी, जलप्रपात हो, पद्म और उत्पल से अलंकृत तालाब हो, लोगों का आना-जाना बिलकुल न हो, जल अधिक स्वच्छ एवं स्वादिष्ट हो, घोर ग्रहों का भी प्रभाव न हो, शुभ पुष्पों और फलों से सुशोभित, गिरिकुञ्ज और नाना प्रकार के वृक्षों से घिरा हुआ, अत्यन्त स्वच्छ शयनासन (बिछौना) से युक्तभूमि हो, जहाँ व्याघ्र, शार्दूल, सिंह न हों, जो मनोहर, समतल और निष्कण्टक हो, (इस प्रकार के स्थान) मनुष्यों के सिद्धि (प्राप्ति) के स्थान के रूप में प्रसिद्ध हैं।

श्वभ्र (गड्ढा), वाल्मीक, धूल, केशोण्डुक, गन्दगी, अंगार और ऊषर के समूह का प्रहाण करना चाहिए। वहाँ मिट्टी खोदकर, मिलाकर आवास का निर्माण करना चाहिए और उस पर गर्मी और मजबूती के लिए मिट्टी से संलेपन करना चाहिए।

पूर्व, पश्चिम या उत्तर (दिशा की ओर आवास का) द्वार बनाना चाहिए। दक्षिण की ओर द्वार कदापि नहीं बनाना चाहिए।” यह अनुकूल स्थान (का निरूपण) है।

भोजन को भी विना आसक्ति के सीमित मात्रा में उतना खाये जितना शरीर के सामर्थ्य के अनुरूप हो, इसलिए आर्य नागार्जुन ने कहा है—“भोजन को औषधि के समान समझ कर विना राग एवं ईर्ष्या के, केवल शरीर धारण किये रहने के लिए सेवन करना चाहिए, न कि मान, गर्व एवं सुन्दरता के लिए।”

आसक्ति का दोष—जैसा आर्यपूर्णपरिपृच्छासूत्र में कहा गया है—“स्वादृष्ट भोजन के प्रति अभिनिवेश से दोष न दिखाई पड़ने के कारण मार अवसर प्राप्त करके (साधक) को उसी प्रकार पकड़ लेता है जैसे कटिया से मछली को।”

उसी प्रकार आर्यसुबाहुपरिपृच्छा (तन्त्र) में भी कहा गया है—“जिस प्रकार व्रण को ठीक करने एवं हटाने के लिए रोगियों को औषधि दी जाती है, उसी तरह यहाँ भी भूख की पीड़ा को मिटाने हेतु जिन (तथागत) ने भोजन करने के लिए कहा है।

हीन चित्तवाले योगी को (करुणा-मैत्री हीन) हिंसा तथा मान के लिए भोजन नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह (भोजन) मार्ग में गमन करते समय थके हुए, भूख प्यास से पीड़ित किसी के द्वारा अपने पुत्र के मांस खाने की भाँति होगा।

जैसे तराजू अधिक डालने पर अनायास ही ऊँची, कम डालने पर नीची और सीमित डालने से क्षण में समान हो जाती है, उसी की भाँति (समझ कर) मनुष्यों को भी (मध्यकोटिक) भोजन करना चाहिए।

जिस प्रकार पुराने घर को नष्ट न होने देने के लिए व्यक्ति अच्छे स्तम्भ की स्थापना करता है, उसी तरह शरीर रूपी यन्त्र की स्थिति के लिए रथ की धुरी के समान भोजन का सेवन करना चाहिए।

काम-धातु भोजन से स्थित रहता है, ऐसा तथागत ने नियत धर्म कहा है। अतः शरीर को कदली वृक्ष की भाँति समझना चाहिए और खान-पान आदि के प्रति चित्त को आसक्त नहीं करना चाहिए।”

उसी प्रकार यदि शरीर धारण में कठिनाई दिखे तो सभी योगी लोग उपवास न करें। यथा आर्यसुसिद्धिकर (महायानतन्त्र) में बोधि के लिए कहा गया है—“श्रान्ति (थकान) का दोष होने से (परिश्रान्त व्यक्ति के लिए) उपवास की निन्दा की गई है।”

यदि शरीर में थकान (दुर्बलता) न दिखाई दे, तो शरीर को हल्का रखने के लिए सभी योगियों को उपवास करना चाहिए। जैसा कि आर्यसुबाहुपरिपृच्छा में कहा गया है—“हे पुत्र! शरीर की शुद्धि के लिए उपवास करना चाहिए, ऐसा सुगतों (बुद्धों) ने कदापि नहीं कहा है, किन्तु इस शरीर के अशुचि, चर्म, माँस, रक्त, मज्जा, मस्तक, गुल्म, आँत, यकृत, प्लीहा, गुर्दा, चरबी, पित्त, कफ, शुक्र, मल, मूत्र, नाक की मैल, बाल, केश, अस्थि, आँख, कान, नाक, मुख, गुप्ताङ्ग और लिङ्ग के नौ छिद्रों के घावों से अनेक प्रकार के मलों की अपवित्र धारा सदा निकलती रहती है।

इस प्रकार सभी अङ्गों के समूह, भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश से युक्त शरीर कर्मों का यथावत् अनुसरण करता है, इन सभी से युक्त शरीर में स्थित मल, मूत्र, सिंहाण, थूँक और कफ के क्षय के लिए उपवास कहा गया है। मलक्षय होने से अपने अर्थ की प्राप्ति के लिए मनुष्य-शरीर सुखपूर्वक प्रवृत्त होता है।”

मित्र या तो हो ही नहीं अथवा (यदि हो ही तो) अनुरूप मित्र का सेवन करना चाहिए। यथा भगवान् ने भिन्न-भिन्न सूत्रों में कहा है—“अनेक (लोगों) के होने पर विवाद होता है, दो लोगों में वार्तालाप होने लगता है, (अतः) कुमारी के कंगन की तरह अकेले ही रहना चाहिए।”

अनुकूलता के विषय में तो आर्यसुबाहुपरिपृच्छातन्त्र में कहा गया है कि—“जिस प्रकार अश्वयुक्त होने पर भी एक पहिए वाला रथ कदापि रास्ते पर नहीं चल पाता, उसी तरह सेवक (मित्र) न होने पर शरीरधारी साधक को सिद्धि नहीं प्राप्त होती।”

“जो बुद्धिमान्, सूरूप (स्वस्थ), अत्यन्त शुचि, उत्तम कुलवाला, धर्मपरायण, महाप्रतिभा वाला, वीर, इन्द्रियों को संयम में रखने वाला, प्रियवादी, दान देने में सक्षम, कृपालु, भूख-प्यास और क्लेश को सहन करने वाला, ब्राह्मण

और अन्य देवों को न पूजने वाला, स्वभावतः चतुर, कार्य साधक, कृतज्ञता प्रकट करने वाला, त्रिरत्न के प्रति श्रद्धावान् हो वह मित्र है।”

इस प्रकार के समस्त गुणों से युक्त पुरुष के कलयुग में अत्यन्त दुर्लभ होने के कारण उनमें से आधे, एक चौथाई या आठवें भाग वाले गुणों से युक्त व्यक्ति का योगी (तान्त्रिक) को मित्र के रूप में ग्रहण करना चाहिए।”

यहाँ प्रपञ्च का छेदन करने वाले, निष्प्रपञ्च, अधिकारी मित्र न हो तो अनुकूल मित्र से युक्त होना चाहिए। उसी प्रकार, जितने मात्र से कष्ट से बचा जा सके उतने ही मात्र वस्त्रों एवं शयनासन का सेवन करना चाहिए। किन्तु कष्टदायक एवं आसक्ति पैदा करने वाले वस्त्र अथवा शयन का सेवन नहीं करना चाहिए। यथा **आर्यसुबाहुपरिपृच्छा-तन्त्र** में कहा गया है—“चोटी रखने वालों को केश का मुण्डन कर, सफेद वस्त्र, वृक्ष के पत्तों, भाँग या क्षौम की छालों के वस्त्रों को गेरू धातु से रंगकर धारण करना चाहिए।”

और भी **आर्यसुसिद्धिकर (महायानतन्त्र)** में कहा गया है— “मन्त्र जपने वाला कुशल गृहस्थ रंगे हुए वस्त्र को धारण न करें।”

ये सब तो सुलभता और शृंगार के निषेध के लिए हैं।

अनुरूप ईर्यापथ तीन प्रकार के हैं—सुस्थित, दुःख-पराक्रम और विशेष-गमन। उनमें से सुस्थित—जिस (किसी) तरह के ईर्यापथ में स्थित होने पर उस (पथ) से मन को चोट नहीं पहुँचती है। यथा **आर्यगण्डव्यूहसूत्र** में कहा गया है—“बोधिचित्त-घातक समस्त कुशलमूल का आरम्भ तो मारकर्म है।” **बोधिसत्त्वचर्यावतार** में भी कहा गया है—“चित्त की रक्षा के व्रत को छोड़कर अनेक व्रतों से मेरा क्या।”

और भी इसी ग्रन्थ में कहा गया है—“मेरे लाभ, सत्कार, शरीर तथा जीवन नष्ट हो जाएं। अन्य कुशल भी नष्ट हो जाएं, किन्तु चित्त की हानि कदापि न हों।”

अतः सभी कालों और अवस्थाओं में भी चित्त को हानि पहुँचाने वाली चर्याओं का आचरण नहीं करना चाहिए। इसलिए आचार्य **डोम्बिपाद** ने कहा है—“छात्र हो तो छात्र की चर्या का ही आचरण करे। ब्राह्मण भी पवित्र ही रहे। सदा शुद्ध आचरण करना चाहिए, चित्त को हानि पहुँचाने वाली चर्या का नहीं।”

दुःख-विक्रम (इस प्रकार है)—मार्ग का मनसिकार करने के कारण शीत, ताप, भूख, प्यास आदि के समस्त दुःखों से विचलित नहीं होना चाहिए। जैसा कि **बोधिचर्यावतार** में कहा गया है—“मछुये, चाण्डाल, किसान आदि केवल अपनी जीविका मात्र के लिए सोचने वाले भी शीत एवं ताप आदि पीड़ा का सहन कर सकते हैं, तो समस्त जगत् के लिए मैं क्यों नहीं सहन कर सकता हूँ।”

उसी प्रकार **आर्यसुबाहुपरिपृच्छातन्त्र** में कहा गया है—“काम भोगों पर आसक्ति न रखते हुए शरीर के क्लेशों को सहन करे।”

उसी प्रकार **आर्यत्रैलोक्यविजयमहाकल्पराज (तन्त्र)** में भी कहा गया है—“शरीर के क्लेशों के शोधन से तीन प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।” उसी प्रकार **श्रीगुह्यसमाजतन्त्र** में भी कहा गया है—“अत्यधिक इच्छा वाला व्यक्ति बड़े दुःखों से अपने दुःख को शान्त करे।”

इस कथन के अनुसार फल सहित दुःखों का तो सेवन अत्यन्त आनन्दपूर्वक करना चाहिये, न कि काँपते हुए चित्त स्वभाव से। अतः **सुबाहुपरिपृच्छातन्त्र** में कहा गया है—“दिव्यसुख, सम्पत्ति, आयु, बल एवं रूप से सम्पन्नता, बहुश्रुतता, तेजस्विता, मेधा तथा महाभाग्य (ये) सभी एक साथ तपस्या के बल से प्राप्त होते हैं।”

विशेषगमन-ईर्यापथ—उसके द्वारा समाधान न हो तो **प्रज्ञापारमिता** का पाठ, (मूर्तियों को) साँचे में ढालना, परिक्रमा आदि पुण्यसम्भारों को आदर के साथ करना चाहिये। वह भी **आर्यक्रोधराजषण्मुखतन्त्र** में कहा गया है—“उठकर भगवती **प्रज्ञापारमितासूत्र** का पाठ करना चाहिये।”

आर्यसुबाहुपरिपृच्छातन्त्र में कहा गया है—“पवित्र एवं एकान्त भू-भाग में मिट्टी अथवा बालू से बने प्रतीत्यसमुत्पाद के सार वाले सुगत के चैत्य की पाप-शुद्धि के लिए सदैव स्थापना करनी चाहिये।”

उसी प्रकार **आर्यत्रैलोक्यविजयकल्प (विस्तारविधि)** में भी कहा गया है—“विद्वान् को चैत्य कार्य करना चाहिये और उसी प्रकार सद्धर्म का पाठ भी। कुछ अन्य छोटे कुशलों का भी ग्रहण करके बाद में इनकी भी परम सिद्धि को प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति को सदा सत्त्वों के लिए परिणामना करनी चाहिये।”

इसलिए चित्त में सभी निर्विघ्न पुण्यसम्भार विक्षेपों के साथ सत्त्वों के हित की इच्छा से अत्यन्त आदरपूर्वक आरम्भ किये जाते हैं। ये तीन प्रकार की अनुकूल चर्याएँ हैं।

इस प्रकार के सम्भार प्राप्त करने वाले को चार प्रकार के ईर्यापथों में सुखपूर्वक रहकर, सनिमित्त अथवा अनिमित्त योग में चित्त समाहित करना चाहिए। इस तरह समाहित चित्त वाले को पाँच दोषों के प्रहाण हेतु आठ प्रकार के प्रहाण-संस्कारों का सेवन करना चाहिए। पाँच प्रकार के दोष मध्यान्तविभाग-कारिका में इस प्रकार कहे गये हैं—“कौसीघ, अववादसम्मोष, लय-उद्धव, असंस्कार एवं संस्कार ये पाँच प्रकार के दोष माने जाते हैं।” इन सभी के प्रतिपक्ष रूप आठ प्रहाण-संस्कारों को भी इसी ग्रन्थ में कहा गया है—“आश्रय तथा आश्रित, निमित्त तथा फल, आलम्बन-असम्मोष, लय-उद्धव का अनुबोध, उसके प्रहाण के अभिसंस्कार और शान्त होने पर स्थिरता।”

इस प्रकार उन अङ्गों से परिपूर्ण (व्यक्ति) द्वारा शमथ तथा विपश्यना की भावना की जानी चाहिए। इनमें से यहाँ (पहला)-शमथ दो प्रकार का होता है—अन्तर्मुखप्रवृत्ति से प्राप्त तथा बहिर्मुख प्रवृत्ति का आलम्बन। यहाँ अन्तर्मुखप्रवृत्ति भी दो प्रकार की है—काय-आलम्बन वाली तथा काय पर आश्रितों के आलम्बन वाली। इनमें से काय-आलम्बन वाली भी तीन प्रकार की होती है—काय का ही देव रूप में आलम्बन, कङ्काल आदि का अप्रिय रूप में आलम्बन तथा खट्वाङ्ग आदि विशेष निमित्तों का आलम्बन। कायाश्रयालम्बना भी पाँच प्रकार की हैं—श्वास-आलम्बन, सूक्ष्म निमित्त-आलम्बन, बिन्दु-आलम्बन, प्रभा-अङ्ग का आलम्बन तथा आनन्द और सुख का आलम्बन।

बहिर्मुख-आलम्बन वाली भी दो प्रकार की है—विशिष्ट तथा गौण। यहाँ विशिष्ट भी दो प्रकार की है—काय के आलम्बन वाली तथा वचन के आलम्बन वाली। ये तो शमथ में प्रवृत्त होने के अङ्ग हैं। किस प्रकार से भावना करनी चाहिए, वह यहाँ नहीं कहा गया है, क्योंकि ग्रन्थ के अत्यन्त विस्तार का भय है, परमगुरु के द्वारा अनुभव किए गए उपदेश का सहारा लेना उचित होता है, किन्तु भावना करने के उपदेशों के अक्षर में निहित होने से उनका ज्ञान कठिन है। अतः विस्तार से शमथ और विपश्यना का निर्देश करते समय कहा गया है।

शमथ का फल विपश्यना है, विपश्यना का फल शमथ और विपश्यना युगल रूप है, वह भी किसी भी वस्तु के स्थित न होने से वस्तु का अभाव विशेष

दिखलाई पड़ती है। उसी समय एकाग्र चित्त अनेक प्रकार के आलम्बनों में दौड़ कर शान्त हो जाता है। इसी प्रकार शमथ और विपश्यना की इस युगनद्ध अवस्था में जो ज्ञान का आलम्बन तथा ज्ञान स्वयं जिस प्रकार स्थित रहता है, योगाचार का शमथ और विपश्यना तथा हम माध्यमिकों के युगनद्ध शमथ और विपश्यना में जो भी अन्तर है, उन पर मेरी बुद्धि प्रकाश डाल सकती है, किन्तु यहाँ अनुभव करने का उपाय-मात्र स्पष्ट करना चाहता हूँ, न कि सिद्धान्त का निर्णय। आर्य नागार्जुन आदि द्वारा प्रकाशित किये जाने के कारण (उन वचनों को) किसी के भी द्वारा किञ्चिद् मात्र भी नहीं कहा जा सकता है, इसलिए विस्तृत निरूपण नहीं किया जा रहा है।

अब कुछ और कहना है। क्या सनिमित्त शमथ को पहले विना किये विपश्यना का उत्पाद उचित होता है? वह तो उचित ही है, क्योंकि अनिमित्त-शमथ रूपी प्रत्यवेक्षाज्ञान से ही अनिमित्त विपश्यना रूपी निर्विकल्प ज्ञान उत्पन्न होता है। वह भी आर्यकाश्यपपरिपृच्छा (नामक महायानसूत्र) में कहा गया है—“दो लकड़ियों के संघर्ष से अग्नि उत्पन्न होती है, उत्पन्न वह (अग्नि) उसी को जला देती है, इसी भाँति प्रज्ञेन्द्रिय के उत्पन्न होने पर उत्पन्न वह (प्रज्ञेन्द्रिय) उस (प्रत्यवेक्षाज्ञान) को ही जला देती है।”

यदि ऐसा कहा जाय कि प्रत्यवेक्षण-ज्ञान शमथ नहीं है, क्योंकि अनेक प्रकार से आलम्बित होता है तो ऐसा कहने पर शमथ भी शमथ नहीं होगा, क्योंकि अनेक क्षणों तथा अनेक अंशों पर आलम्बित होता है। और भी, शमथ से विपश्यना में प्रवेश होने पर भी प्रत्यवेक्षाज्ञान के द्वारा कैसे प्रतिसन्धि नहीं की जाती? उसका (प्रतिसन्धि का) न होना तो कुछ ही में है अर्थात् (कुछ में वह प्रतिसन्धि नहीं करता है)। वहाँ इसका क्रम भी केवल काय की परीक्षा करने से सिद्ध होता है। आर्य नागार्जुनपाद ने कहा है—“लोक विकल्प से उत्पन्न हुआ, विकल्प चित्त से उत्पन्न हुआ और चित्त भी काय से उत्पन्न हुआ है, इसलिए शरीर की परीक्षा करनी चाहिए।”

और भी आर्यनागार्जुनपाद ने कहा है—“काय के विना (सदाश्रित) विज्ञान नहीं है, ऐसी परीक्षा करनी चाहिये।”

सूत्र में कहा गया है—“विज्ञान तो शरीर से परे नहीं हैं।” अतः समस्त धर्म चित्त में संगृहीत होते हैं, चित्त शरीर में संगृहीत है और शरीर को धर्मधातु में लगाया जाना चाहिये, ऐसा उपदेश किया गया है। अथवा काय, वाक् एवं चित्त

का अलग-अलग आलम्बन करना चाहिए। यह उपदेश बुद्धानुस्मृति से जानना चाहिये। अतः सनिमित्त शमथ के आश्रय से अनिमित्त शमथ का आलम्बन करके विपश्यना के उत्पाद का यह पक्ष प्रशस्त बतलाया गया है, क्योंकि उसकी स्थिति दृढ़ होती है, केवल शमथ से क्लेश के आक्रमण का निराकरण होता है, क्योंकि हेतु फल के अनुरूप होता है।

इस विषय पर अपने गुरु के उपदेश से इस (ग्रन्थ) की मैंने रचना की है। उससे बढ़े हुए पुण्यरूपी चन्द्रमा की निर्मल किरणों से अज्ञानरूपी रात्र्यन्धक दोषों का विनाश होने से और संसार के संताप के शान्त हो जाने से प्रज्ञा-चक्षु के समक्ष सही-सही विषय प्रकाशित हों।

विक्षेप रूपी वायु के शान्त हो जाने से और अन्धकार के दूर हो जाने से मैं भी शीघ्र ही केवल मुनीन्द्रों के विषयों को ही देखूँ।

॥ आचार्य बोधिभद्र कृत समाधि-सम्भार-परिवर्त समाप्त ॥

भारत के उपाध्याय वीर्यचन्द्र के साथ परामर्श करके भोटदेश के लोचावा भिक्षु छोस् क्यी शेस् रब् (धर्मप्रज्ञ) ने अनुवाद और संशोधन करके व्यवस्थित किया।



समाधिसंभार-परिवर्त

समस्त बुद्ध और बोधिसत्त्वों को नमस्कार ।

[सात प्रकार के पूर्वगम अङ्ग]

सर्वप्रथम मनुष्य काय रूपी रत्न व्यर्थ न हो, अतः प्राप्त मनुष्य शरीर को सार्थक बनाने के इच्छुक पुद्गल को पहले सात प्रकार के पूर्वगामी अङ्गों से युक्त होना चाहिए। मूलतः श्रद्धावान् होना, प्रत्ययतः कल्याणमित्र की सेवा तथा उसके गुणों का ग्रहण, आदर युक्त होना, विश्वास होना एवं संदेह न करना, वीर्यवान् होना, सभी के प्रति मन का खिन्न न होना तथा सभी के लिए मान (अहंकार) रहित होना, ये सात प्रकार के पूर्वगम अङ्ग हैं।

[आर्यतावृत्त के अनपायी सात अङ्ग]

कभी भी किसी प्रकार दूसरे के दोषों को न तो देखना और न दोषों को कहना, अपने गुण के प्रति मान का उत्पाद न करना, लज्जा एवं अपत्रपा की कामना करने वाले के आचरण से स्वयं की रक्षा करना, तीन प्रकार के संवरों के अनुष्ठान का आचरण करना, चाटुकारिता (चापलूसी), नई संगति और बड़प्पन (घमण्ड) को त्यागकर सदा निर्द्वन्द्व भाव से देश, काल तथा अवस्था से दूसरों के स्वभाव की मात्रा को जानते हुए विचरण करना, अन्य की अवमानना का प्रहाण करना और अनादर न करना, ये लोक में निन्दनीय कर्मों से लिप्त न होने वाले आर्यतावृत्त के अनपायी सात प्रकार के अङ्ग हैं।

[सात प्रकार के अन्तरायों के प्रहाण-अङ्ग]

सदा अल्प इच्छा तथा संतोष का होना, अति-अभिनिवेश, आसक्ति तथा अधिग्रहण का परित्याग, तन्द्रा एवं आलस्य का प्रहाण, अत्यन्त प्रसंग को भी ज्ञान, महान् अर्थ के अभाव वाली वार्ता एवं कार्य का प्रहाण कर उसमें प्रवृत्त न होना, अयोनिशोमनसिकार का प्रहाण तथा किसी के प्रतिपक्ष में जानेवाली सेवा को जानना, ये सात प्रकार के अन्तराय प्रहाण-अङ्ग हैं।

[सात प्रकार के प्रेरक अङ्ग]

‘मनुष्य शरीर की प्राप्ति, बुद्ध धर्म का आचरण एवं साधना दुर्लभ है’ ऐसा विचार करना, ‘इस प्रकार की साधना तो महार्थवाली है ऐसा विचार

करना', सांसारिक क्रिया-कलापों की निश्चित ही व्यर्थता जानना, दूसरों के दुःख की अपने प्रतिपक्ष के रूप में सेवन की जानकारी होना, 'मैं तो सदा मार की मुट्ठी में स्थित हो, शीघ्र मरूँगा' ऐसा हमेशा विचार करना, 'सभी संचित वस्तुएँ अवश्य ही छूट जायेंगी' ऐसी जानकारी होना, अपनी झुर्रियों और बालों की सफेदी आदि की सदा परीक्षा कर खिन्न होना, ये अपने आप को प्रेरित करने वाले सात प्रकार के अङ्ग हैं।

[सात प्रकार के ताप-छेदक अङ्ग]

'बुद्ध-ज्ञान तो गम्भीर और उदार है तथा (उनके) वचन एवं सूत्रों की संख्या अधिक है, मैं तो दुष्ट बुद्धि वाला, अज्ञानी और अधिक आलसी होने से सभी को कहने तथा जानने में असमर्थ हूँ, मेरी आयु क्षीण हो जायेगी, ऐसा मेरा विचार करना, शब्द और अक्षरों के अनुसार कहे गये इन ज्ञानों के द्वारा न तो दूसरों का दमन होता है और न उपकार, क्योंकि मनुष्यों को संतुष्ट करना बहुत कठिन होता है', ऐसा विचार करना, अपने और पराये सिद्धान्तों में दो प्रकार के राग एवं द्वेष का प्रहाण कर अपवाद न करना, बन्धु, रिश्तेदार तथा मित्र आदि निश्चित ही मार्ग में मिलने वालों का अतिथि की भाँति विचार करना, लोक के लाभ, सत्कार प्रशंसा और निन्दा आदि इन सभी को निश्चित ही वञ्चना के रूप में जानना, लोक की उपलब्धियों, इच्छा, तृष्णा, लाभ (=फल), यश, अभिमान तथा मान आदि इन सभी को निश्चित ही आग, विष और महाशस्त्र की भाँति जानना, इन बाह्य और आन्तरिक वस्तुओं की माया अथवा स्वप्न की भाँति सदैव परीक्षा करना, ये सात प्रकार के तापच्छेदक अङ्ग हैं।

[सात प्रकार के अभिमुख-अङ्ग]

संसर्ग (सांसारिक क्रिया-कलाप) के प्रति आनन्द का भाव त्याग कर विविक्त स्थान में स्थित होना, वहाँ भी जैसे अपने ग्रन्थों में (उक्त है) उसी की भाँति देव को प्रसन्न करना, देव की पूजा करना और देव को अभिमुख करना, इन तीनों पर वीर्यपूर्वक अत्यन्त प्रयत्न करना, उसमें भी आशा, संदेह, काम और भय का परित्याग करके स्थित होना, महाकरुणा से युक्त होना, वीर एवं शूर चित्त के द्वारा हेयोपादेयता का विचार किये बिना 'अभीष्ट अर्थ की सिद्धि न होने तक शरीर और प्राण के लिए भी मैं इस साधना का त्याग नहीं करूँगा', ऐसी प्रतिज्ञा की साधना करना, वहाँ भी स्वप्न आदि किसी भी लक्षण के उत्पन्न होने पर प्रसन्न

अथवा दुःखी न होकर दूसरों से न कहना, वहाँ भी देव के स्वप्न एवं लक्षण आदि को अववाद से जानना और अनादर न करना, ये सात प्रकार के पुरुषार्थ के शीघ्र सिद्धकारक अभिमुख करने वाले अङ्ग हैं।

[शरीर की रक्षा करने तथा बाधा-निवारण के सात प्रकार के अङ्ग]

इस प्रकार के पुद्गल का काय अत्यन्त दुर्लभ और प्रधान होने के कारण शरीर रक्षणीय है, अतः वस्त्र, भोजन और ओषधि आदि का यथानुरूप सेवन करना, मनुष्य और अमनुष्य की बाधा से रक्षा करना, अनुकूल एवं सुखद निरुपद्रव स्थान में रहना, शरीर और चित्त को थकाने वाले श्रान्तिपूर्ण कार्य न करना, अर्धरात्रि, दोपहर, भोजन पाचनकाल तथा शरीर में रोग धातु के उत्पाद-काल में आलम्बन के लिए प्रयास न करना, शरीर और चित्त के क्लमथ से श्रान्त होने के समय खिन्नता को दूर कर आलम्बन को फिर से जगाना, अववाद से जानना, सदा ईर्यापथ (में स्थित) योगी के द्वारा काय को समाहित रखना, ये काय की रक्षा तथा बाधा निराकरण के सात प्रकार के अङ्ग हैं।

[चार प्रकार के क्षेपण अथवा पूरण अङ्ग]

इस प्रकार की स्थिति से खेद होने, पुण्य में तन्द्रित होने, क्रिया के कर्ता में विकल्प उत्पन्न होने पर स्वयं अपने को प्रेरित कर प्रतिपक्ष का उत्पाद करना, काय में आकस्मिक बाधा और विभिन्न ज्ञान भेद होने पर अपने अनुभव और (गुरु के) अववाद के द्वारा उपचार (=ठीक) करना अथवा अन्य विद्वानों से भी पूछना, राजा की आज्ञा हो, अपने में सामर्थ्य हो और दूसरे का हित देखना हो तो चार प्रकार के कर्मों को वज्रोष्णीषतन्त्र और अववादों से जानना, तथा विभिन्न क्लेशों और सत्त्वों के विकल्प भेदों के विविध प्रतिपक्षों को विस्तृत सूत्रों से जानना, ये चार प्रकार के क्षेपण अथवा पूरण अङ्ग हैं।

॥ आचार्यकृष्णपादद्वाराविरचित समाधिसम्भारपरिवर्त पूर्ण हुआ ॥

भारतीय उपाध्याय कृष्णपाद द्वारा स्वयं तथा (भोटदेश के) महासंशोधक एवं अनुवादक भिक्षु धर्मप्रज्ञ (छोस् क्यि शेस् रब्) द्वारा अनुवाद एवं संशोधन करके निर्णीत किया गया है।

परिशिष्टाणि

ཁ་སྐོང་ལྟན་ཐབས་ཁག

ནལ་འབྱོར་པ་ནི་སྤྱི་རྩལ་འཁོར།

དེ་ཡི་ཁམས་ནམས་ཟད་པར་འགྱུར།

དེ་བས་སྤྱི་རྩལ་ཀུན་སྤངས་ཏེ།

ནལ་འབྱོར་རྩལ་པས་གནས་པར་བྱ།

(མངོན་པར་རྟགས་པའི་སྟེ་མ།)

परिशिष्टम्- 1

आचार्यबोधिभद्रकृत-समाधिसम्भारपरिवर्ते उद्धरणानुक्रमः

अतो बाह्यं निराकृत्य	6
अतो मण्डल चक्रेति	16
अत्यन्तदुर्लभमुपेत्य मनुष्यभावं	14
अद्य श्वश्व करोमि भिन्नम्	14
अर्थैश्चतुर्थैरथवाष्टमांशैः	21
अनेकेषु विवादः स्याद्	20
अन्नात् प्रतिष्ठा खलु कामधातोः	19
अपुनर्भवाय यतते	13
अममेषु प्रदेशेषु	13
अशाश्वतेन धर्मेण धर्मः	9
असंस्कारोऽथ संस्कारः	24
आजीविका-मित्र-वियोजनानि	10
आत्मग्राह-निवृत्यर्थं	16
आदेयवाक्ये कुशलो मनस्वी	7
आभोगचातुर्यकृतज्ञताकशश्राद्धः	21
आयाति फुल्लकुसुमः कुसुमागमोऽयम्	14
आयुर्बाधाबहुलं पवनोत्थवारि	13
आलम्बनेऽसम्प्रमोषः	24
आश्चर्यं क्षण एषः श्वासः	13
आश्रयोऽथाश्रितस्तस्य	24
आसन्नपीनशशिमण्डलमण्डनासु	12
आस्वादनीयाच्छमहाजलानि	18
इति मर्त्यस्य सम्प्राप्तान्	8
इच्छन्तिकमहादुःखैः	23

इत्थं सर्वमनित्यं निर्नाथात्म०	11
इत्यन्येषां निग्रहणानुग्रहणाय	5
उच्चैरनाभोगमलं प्रवृत्त्या	19
उपायरहिता प्रज्ञा----उपायोऽपि बन्धनम्	16
एकत्र सर्वं हि तपोबलेन	23
एकाकिनैव स्थातव्यं	20
एकेन चक्रेण रथः कदापि	20
एवं क्षमो भजेद् वीर्यं	13
एवं योगी यदा कुर्यात्	17
एवं ह्यशेषैश्च गुणैरुपेतः	21
ऐतिह्य-प्राहेलिकपूर्ववृत्तं	10
कदा तैः सुखसंवासैः	12
कदानपेक्षो यास्यामि	13
कर्माक्षिनासामुखतश्च	20
कर्मानुसारं हि यथा शरीरे	20
कर्माश्रयः स्वामि-विहीनता च	10
कश्चित्तथापि प्रभेद्वि	8
कामेष्वसक्तो वह देहकष्टम्	22
कायभूमिं निजां गत्वा	13
कायो मनुष्यस्य मलक्षयाद् हि	20
कार्यं चाप्यसमाप्य याति	14
किं पुनर्मादृशैरज्ञैस्तस्मात्	9
किं सा रतिर्भवति नन्दनभूमिकासु	12
किं सा रतिः सुरसरित्सु	12
कृच्छ्रव्रतं गृहीतस्य	2
कृताकृतापरीक्षोऽयं	14
कौसीद्यमववादस्य	24
क्लमथीभावदोषत्वाद्	19

क्षीयन्ते धातवस्तेषां	6
क्षुत्तृक्लमायाससहस्तथापि	21
गुर-उवएसें अभिअ-रसु	6
गुरूपदेशोऽमृतरसः	6
गृहीणातीव झषं मारः	19
चण्डानिलाकुलितदीपशिखाचलस्य	14
चन्द्रो यथा मेषविमुक्तवत्	3
चित्तरक्षाव्रतं मुक्त्वा	22
चित्तं वै जायते कायात्	25
चित्तेऽभिरम्ये विषये हि जाते	11
चूडाधरैस्तत्र विमुण्ड्य केशान्	21
चैत्यकर्मसु कौशल्यं	23
छात्रः स्याच्छात्रचर्यः स्याद्	22
जानाति नो भद्रमुखाः	15
जायन्ते संसारे न निश्चितं	8
जीर्णं गृहं नैतु विनाशमस्मात्	19
ज्ञात्वा सौगतभावमेव जगतां	4
ज्ञानं प्रजायते तस्मात्	7
तच्चिन्तया मुधा याति	9
तथैव विज्ञाय च मित्रभावं	8
तदपायाभिसंस्कारः	24
तदा बुद्धिः परार्थे स्याद्	17
तद्वत्क्षुधादुःखनिवर्तनाय	19
तस्मात् सर्वप्रकारेण	17
तस्माद्धि सर्वाङ्गसमूह एष	20
तादृङ् न लब्धं पुनरन्यदेव	18
तिर्यग्निरीक्षणपिशङ्गितकालदण्डः	14
तृषा च म्रियते यद्वद्	6

त्याज्याः सर्वे विकल्पा हि	3
दर्शनेषु तु मिथ्यानामात्मदृष्टिः	16
दह्यते तेन शोकेन	9
दिव्याङ्गनापरिमलाविलवेणिभिन्नः	12
दुर्व्याधिजन्मान्तजराभिपीडाः	10
देव्यश्च कामरूपिण्यः	2
देस भमइ हव्वासं लइजे	7
देहस्तु रम्भोपम एव गम्यः	19
देहान्तरालत्वमनुप्रसारः	10
देहोऽशुचिस्त्वक्पलरक्तमज्जा	20
दैवं सुखं चापि विभूतयश्च	23
द्वेषं च मैत्रीकरुणाम्बुसेकान्	11
धर्मनैरात्म्यवेत्ता हि	17
धीमान् सुरूपः स महाधिशुद्धः	21
न ज्ञात्वा वितथं चलात्मकभवं	14
न पश्यति यथाभूतं	9
नश्यत्वन्यच्च कुशलं	22
न हि वीर्यं विना पुण्यं	13
नानाधिमुक्तिकाः सत्त्वाः	9
नानामलानि व्रणतोऽशुचीनि	20
नावध्यायन्ति तरवः	12
नित्यो न नीरुङ् न हि यौवनं च	8
निन्दन्त्यलाभिनं सत्त्वम्	9
निर्भयो विहरिष्यामि	13
निवार्य मित्रे मुदिता	8
निष्कण्टका शान्तमनोहरा च	18
निःसङ्गमासु गिरिशृङ्गवनस्थलीषु	12
पद्मोत्पलालङ्कृतपल्लवानि	18

पित्तेन शुक्रेण कफेन विष्टा	20
पुण्यान्यशेषाणि हिनस्ति विघ्नः	3
पुत्रोपवासो वपुषो विशुध्यै	20
पुष्पैः फलैश्चापि पवित्रतानि	18
पुंस्त्रीसुताबालकछागमेषा	10
पूर्वेद्युरद्यापि तथोत्तरेद्युः	15
प्रकृत्या दुःखसंवासैः	9
प्रज्ञायाः स्फरणं श्रुत्या	3
प्रज्ञेन्द्रियं चापि तथैव भूत्वा	25
प्रणिधानानभि-----निर्वृतिमारः	16
प्रतीत्यसारं सुगतस्य चैत्यम्	23
प्रत्येकबुद्धाः सुगताश्च जाताः	17
प्राचीप्रतीच्युत्तरद्वाः प्रशस्ताः	18
प्राप्यते त्रिविधा सिद्धिः	23
बलीच्छया क्रीडितुमिच्छया	3
बहवो लाभिनोऽभूवन्	9
बहुशास्त्रार्थमरुस्थलीषु	6
बहु सत्थत्थ-मरुत्थलिहिं	6
बुद्धाहंकारयोगेन	16
भगवन्मातृकां व्युत्थः	23
भावनायां ततो योगः	3
भुक्तं तथा चित्तविहीनयोगी	19
भूमिश्च शय्यासनसंपवित्रा	18
भोजनमौषधवत्स्यात्	18
मञ्जुश्री ! बोधिसत्त्वानां-----मारभूतत्वाद्	2
मध्येन साम्यं च क्षमं यथैति	19
मन्त्रजापी गृही दक्षः	21
महासिन्धौ यथा नावी	6

मामेवान्ये जुगुप्सन्ति	9
मामेवान्ये प्रशंसन्ति	9
मार्गश्रमात् कैरपि यानकाले	19
मित्रत्वेन तु शत्रुः पुत्रत्वेन पिता	8
मित्रेण हीनस्तु तथैव देही	21
मृत्पात्रमात्रविभवः	13
यत्पोषधैः संवरधारिभिश्च	18
यथा कश्चिन् महौघेण	6
यदा तादृशो मारकर्माधिगम----निरवद्या	3
यद्वद्व्रणापोषनिवर्तनाय	19
या मुग्धमुग्धहरिणीगणसेवितासु	12
रागाधिको मांसममेध्यमेदश्चर्माणि	11
राजन्! कदलीव जगत् निःसारं	11
रूपैर्नानाप्रकारैश्च घ्नन्ति	2
लाभा नश्यन्तु मे कामं	22
लाभी च सत्कृतश्चाहम्	8
लोको मृत्युमुखं प्रयाति	14
लोको विकल्पतो भूतः	25
वल्मीरजश्वभ्रककेशलोमैः	18
वस्त्रं सितं चाप्यथ वृक्षपर्णं	21
वस्त्रे शीर्षे वाऽग्नौ सहसा	13
वह्निस्तु काष्ठद्वयघर्षजातः	25
वादिश्रेष्ठस्य नैकस्माद्	16
विज्ञानं तु शरीरादनतिक्रमम्	26
विण्मूत्रसिङ्घाणकश्लेष्मखेटास्तेषां	20
विद्यास्थाने पञ्चविधे योगमकृत्वा	5
विना कायं हि विज्ञानम्	25
विपर्याससमुत्पन्नक्लेशावृत्ति	17

विशालाः शैलानां विरतजनसम्पातसुभगा	12
विहाय रागद्वेषौ सेवेत	18
शत्रुः कदाचिद् भविताऽपि मित्रम्	8
शमथः प्रथमं गवेषणीयः	7, 15
शमथेन विषयनासुयुक्तः	15
शस्त्राश्वकाव्यादिपरीक्षणं वा	10
शार्दूलनागाग्निसमं हि लोकं	10
शीतातपादिव्यसनं सहन्ते	22
शीतोष्णक्षुद्दंशपरिक्लमादि	11
शुचौ विविक्ते पृथिवीप्रदेशे	23
शुश्रूषां प्रथमं गुरूपवसनं	4
शून्यता यद्युपायश्चेद्	16
शून्यदेवकुले स्थित्वा	13
श्वः कार्यमेतदिदमद्य परं मुहूर्ताद्	14
स आदिकर्मिको बोधिसत्त्वः-----व्यवस्था	4-5
सदा चान्याल्पपुण्यानि	23
सदाऽनिमित्ते स्थित्वा	17
सदा प्रपित्सुः संसिद्धिं	24
सदा शुचिचर्या कर्तव्या	22
सनिमित्तेन सनिमित्ता	17
समुत्पन्नं च यन्नास्ति	16
सम्बुद्धशासनं चेदं	6
सम्मार्ज्यं भूमिं वसतिं विधाय	18
सरित्तीरासन्ना मुरजमधुरैः	12
सर्वः प्रहृष्यति जनो न	14
सर्वो हि बोधिचित्त-----मारकर्म	22
सहज ण बुज्झइ पापे	7
सह लाभयशोभिस्ते	9

साध्यच्युतात्माऽद्य करोतु किं वै	5
सास्रवश्च क्षयज्ञाने	7
सुखो हि वासश्च बहुश्रुतानां	4
सुप्रातिभश्शूर-जितेन्द्रियश्च	21
स्त्रीलक्षणं वा नरलक्षणं वा	10
स्थानं हि पुण्यं च मनोरमं यद्	17
स्थित्यर्थमेवं हि शरीरयन्त्रधुर्यक्षतुल्यं	19
स्वकायं तुलयिष्यामि	13
स्वचित्तं मार इत्युक्तं	3
स्वच्छन्दचार्यनिलयः	13
स्वजीविकामात्रनिबद्धचित्ताः	22
स्वयं नश्यति तन्मध्ये	6
स्वस्थास्वस्थैरविश्वासः	14
स्वातन्त्र्यसेवाविषयस्य वार्ताः	10
स्वादौ रसेऽभिसक्तौ चेद्	19
हस्त्यश्चकौलेयककुक्कुटानां	10
हे जिनपुत्र! स आदिकर्मिको----प्रेषणीयः	4
हेतोः फलेतराभावाद्	16

परिशिष्टम्- 2

आचार्यबोधिभद्रकृत-समाधिसम्भारपरिवर्ते आचार्य-ग्रन्थादिनामानि

अन्यच्च (मध्यमकालङ्कारः)	17
अपि च (सुहल्लेखः)	13
अपि चोक्तम् (आर्यगण्डव्यूहः)	6
अभिधर्म (कोशः)	7
आचार्यडोम्बिपादः	22
आचार्यशान्तिदेवः	12, 14
आचार्यसरहपादः	15
आर्य-उग्रपरिपृच्छा	4, 5
आर्यकाश्यपपरिपृच्छा	25
आर्यक्रोधराजषण्मुखतन्त्रम्	23
आर्यगण्डव्यूहसूत्रम्	4, 6, 16, 22
आर्यगयाशीर्षसूत्रम्	15
आर्यत्रैलोक्यविजयमहाकल्पराजः	2, 23,
आर्यदेवपुत्ररत्नोत्तमपरिपृच्छा	3
आर्यनागार्जुनः	8, 11, 13, 17, 18, 25
आर्यपूर्णपरिपृच्छा	19
आर्यबोधिसत्त्वदशनिर्देशव्यवस्थानपरिवर्तः	4
आर्यमञ्जुश्रीविकुर्वाणपरिवर्तः	2
आर्यरत्नदीपः	5
आर्यवज्रपञ्जरः (आर्यडाकिनीवज्रपञ्जरमहातन्त्रराजकल्पनाम)	16
आर्यवज्रशेखरः (महागुह्ययोगतन्त्रम्)	3
आर्यवज्रोष्णीषः	7
आर्यविमलकीर्तिनिर्देशसूत्रम्	15
आर्यवैरोचनाभिसम्बोधिः	17

आर्यश्रावकप्रातिमोक्षसूत्रम्	4
आर्यसुबाहुपरिपृच्छा	3, 7, 8, 10, 17, 18, 20-23
आर्यसुसिद्धिकरः	19, 21
आर्यसिंहव्याकरणम्	3
आर्याध्याशयसंचोदन(महायान)सूत्रम्	5, 9
आर्याशोकदत्तपरिपृच्छा	3
उत्तरसंवरः	6
चन्द्रगोमी	12
(भदन्त) चन्द्रगोमी	14
तद्वत् (अनित्यनिर्देशसूत्रम्)	8
तत्रैव (मध्यान्तविभागकारिका)	24
परमार्थयुक्तिः	6, 7
पुनश्च तत्रैव (बोधिसत्त्वचर्यावतारः)	9
पुनस्तत्रैव (बोधिसत्त्वचर्यावतारः)	9, 22
पुनस्तत्रैव (आर्यसुबाहुपरिपृच्छा)	10
बोधिसत्त्वचर्यावतारः	7-9, 13, 15, 22
भगवता तत्तत्सूत्रेषु	20
मध्यमकालंकारः	17
मध्यान्तविभागकारिका	24
यथा	3
यथा (सूत्रालङ्कारः)	5
श्रीगुह्यसमाजः	23
श्रीवागीश्वरकीर्तिपादः	14
सूत्रेऽपि	106

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་གསུམ་པ།

སྐོང་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོའི་ཉིང་དེ་འཛིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུར་གསལ་བའི་ལུང་

འདྲན་ཁག་གི་ཀ་མད་རིམ་པ།

ཀྱི་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ལས་དང་པོ་བ་.....	41
བཀྲེས་དང་སྐོམ་དང་ཉོན་མོངས་བཟོད་པ་དང་།	85
སྐོམ་ནས་ཤི་བར་གྱུར་བ་བཞིན།	47
ཁ་ཐས་སྤྲན་དང་འདྲ་བར་རིགས་བ་ཡིས།	79
ཁ་སང་དེ་རིང་དེ་བཞིན་སང་དང་གཞན།	69
མཁས་པས་མཆོད་རྟེན་ལས་བྱ་ཞིང་།	92
མཁྲིས་པ་བད་ཀན་བྱ་བྱིས་དང་།	83
གང་གི་ཆེ་བདུད་ཀྱི་ལས་རྟོགས་པ་དེ་ལྷ་བྱ་ནི་.....	38
གང་ཞིག་སྤྲ་མའི་མན་ངག་བདུད་ཅིའི་ཆུ།	48
གལ་ཏེ་སྤྱོད་པ་ཐབས་ཡིན་ན།	72
སྤང་ཆེན་ཏྲ་དང་བྱ་གག་བྱ་བྱི་དང་།	57
བགེགས་ཀྱིས་བསོད་ནམས་མ་ལུས་ཟད་པར་བྱེད།	38
མགོ་འམ་གོས་ལ་སྤྱོ་བྱར་མེ་ཤོར་ན།	66
དངོས་གྲུབ་མཆོག་ནི་ཐོབ་འདོད་པས།	92
སྤགས་པ་གསང་སྤགས་བརྒྱས་ལ་བརྩོན་པ་དང་།	75
སྤགས་སྤྱོས་བྲིས་པ་མཁས་པ་ཡིས།	87
ཆོས་ལ་བདག་མེད་མཁས་པ་ནི།	76

ཇི་བཞིན་ལས་གྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བའི་ལུས།	83
འཇམ་དཔལ་བྱང་ཚུབ་སེམས་དཔལ་རྣམས་གྱི་བདུད་.....	37
འཇིག་རྟེན་སྟག་དང་སྦྱལ་དང་མེ་འདྲ་བར།	56
འཇིག་རྟེན་རྣམ་པར་རྟོག་ལས་བྱུང་།	97
ཉ་བ་གདོལ་བ་ཞིང་བ་ལ་སོགས་པ།	89
རྟེན་པ་དག་ནི་མང་བྱུང་ཞིང་།	53
གཏོར་མ་འདོད་བའམ་ཅེད་མོ་བྱེད་འདོད་བའམ།	39
ལྷ་བ་རྣམས་ལས་ལོག་རྣམས་དང་།	73
ཐབས་དང་བྲལ་བའི་ཤེས་རབ་ནི་འཆིང་བའོ་.....	71
ཐོག་མར་ཉན་འདོད་སྒྲ་མ་བཞུན་བཀྱར་བཟེད་དང་དེ་བྱས་ཤིང་།	42
ཐོག་མར་ཞི་གནས་བཅའ་བྱ་དེ་ཡང་ནི།	51
དུབ་པར་གྱུར་བའི་སྒྲིན་ཡོད་བྱིར།	82
དུར་བྱོད་སོང་ནས་གཞན་དག་གི།	64
དེ་ལྟའི་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་ལྷན་པ་དག།	85
དེ་ལྟར་འདི་ཀྱན་མི་ཏྲག་བདག་མེད་དེ།	59
དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་བ་རྣམས་ཀྱིས།	75
དེ་ལྟར་བཟེད་པས་བརྗོན་འབྱས་བཅུམ།	65
དེ་ནི་སྒོ་ལྷན་གཞུགས་བཟང་གཙང་སྒྲ་ཆེ།	85
དེ་སྔར་མངོན་པར་འདྲ་བྱེད་དང་།	93
དེ་ལྟར་དཀྱིལ་འཁོར་འཁོར་ལོ་ཞེས།	73
དེ་བས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ།	77

དེ་བཞིན་མངའ་བཤེས་འགྱུར་བར་རིག་ནས་ནི།	52
དེར་ནི་ས་བཀོས་སྤངས་ནས་གནས་བཅིག་པ།	79
དེ་ལ་སེམས་པ་འབའ་ཞིག་གིས།	56
དེ་ལས་ཤེས་པ་སྦྱེ་བར་འགྱུར།	50
དྲི་མ་ཟད་ནས་མི་ཡི་ལུས་དག་ནི།	84
བདག་ནི་སྦྱབ་ཉམས་དང་ནི་ཅི་བྱ་ཞེས།	44
བདག་ནི་རྟོད་དང་བཀྱར་སྟེ་དང་།	88
བདག་ནི་རྟོད་མང་བཀྱར་སྟེ་བྱས།	53
བདག་ལ་སྦྱོད་པ་གཞན་ཡོད་ན།	54
འདི་ནི་སང་བྱ་འདི་ནི་ཐང་ཅིག་འོག་ཏུ་བྱ།	67
འདི་བྱ་ནང་པར་སྦྲར་ཡང་འདི་བྱ་དེ་ནས་གཞན་ཡང་འདི་བྱ་ཞེས།	68
འདོད་ཆགས་ཤས་ཆེ་མི་གཙང་ཤ་ཆོལ་དང་།	59
འདོད་ཆེན་སྟག་བསྐལ་ཆེན་པོ་ཡིས།	90
འདོད་བའི་ཁམས་ནི་ཁ་ཟས་ཀྱིས་གནས་ཞེས།	81
འདོད་ལ་མ་ཆགས་ལུས་ཀྱི་ཉོན་མོངས་བཟོད།	89
ནགས་སྤྱང་རྩ་གཙང་འོགས་བདེ་དབེན་པར་སྦྱིད་པ་གང་།	62
ནགས་མཐོངས་རི་དྲགས་རྩ་བའི་ཆོགས་ཀྱིས་བསྟེན་བྱས་པ།	62
ནགས་ན་རི་དྲགས་བྱ་རྣམས་དང་།	63
ནད་མེད་མི་དྲག་ལང་ཆོ་དྲག་མ་ཡིན།	53
ནམ་ཡང་འཁོར་ལོ་གཅིག་བའི་ཤིང་དྲི་ནི།	85
གནས་དང་དེ་ལ་གནས་པ་དང་།	93

ནམ་བ་སྒྲ་ཚོགས་གཞུགས་དག་གིས།	37
ནམ་པར་ཤེས་པ་ནི་ལུས་ལས་མི་འདོད་.....	97
ནལ་འབྱོར་པ་ནི་ཁྱི་རོལ་འཁོར།	49
པདྨ་ལྷུང་ལས་ནི་བརྒྱན་པའི་མཚོ།	78
དཔེར་ན་ཁང་རྩིང་མི་ཞིག་བྱ་བའི་ཕྱིར།	81
དཔེར་ན་མ་ཡི་གསོ་དང་བསལ་བའི་ཕྱིར།	80
དཔེར་ན་མཚོ་ཆེན་མཉན་པ་ཞིག།	47
པ་ནི་བྱ་ཉིད་མ་ནི་རྩེད་མ་ཉིད།	52
ཕྱག་གམ་ལྷ་ཁང་སྟོང་པ་འཇ།	64
བྱ་གཅིག་ལུས་དག་བྱ་ཕྱིར་བསྐྱར་བྱ་ཞེས།	83
བྱང་རྩལ་གྱི་སེམས་ཉམས་པར་བྱེད་པའི་དགེ་བའི་.....	87
བྱང་རྩལ་སེམས་དཔའ་ལས་དང་པོ་པ་དེ་ནི་.....	43
མང་དུ་ཐོས་པ་ནགས་ཀྱི་ནང་དག་དུ།	42
མང་དུ་སྒྲུགས་པས་རྩལ་མེད་མཐོ་བ་དང་།	81
མང་པོ་དག་ནི་རྩིད་པར་འགྱུར།	84
མི་བཟད་བརྟལ་ཞུགས་བཟད་བ་ཡི།	36
མི་ཡི་དངོས་པོ་ཤིན་དུ་རྩིད་དཀའ་རྩིད་གྱུར་ནས།	67
མེ་ཏོག་འབྲས་བྱ་གཙང་མ་ཡོད་པ་དང་།	78
མ་ནས་བྱི་མ་སྒྲ་ཚོགས་མི་གཙང་བ།	83
སྟོན་ལམ་མངོན་པར་མི་འགྲུབ་པའི་ཕྱིར་.....	71
སྤྲ་བའི་མཚོག་ནི་གང་ཡང་རུང་།	72

གཙང་ཞིང་དབུ་པའི་ས་ཡི་བྱོགས་སུ་ནི།	91
གཙུག་ཕུད་བཞག་སྒྲེ་ནི་བྲེགས་ནས་སུ།	86
ཆོག་ནི་གཟུང་བར་འོས་ཤིང་ཡིད་གཞུངས་ལ།	50
ཆེ་འདི་གཞོད་མང་རྒྱུད་གིས་བཏབ་པ་ཡིས།	66
མཚན་མར་བཅས་པ་མཚན་བཅས་ཀྱིས།	76
མཚོན་ཆ་བཏག་པའམ་རྟ་དབྱེད་བཟོའམ།	57
འཆོ་དང་མཛའ་བཤེས་དང་ནི་རྣམ་པར་བྲལ།	58
ཞི་གནས་རབ་ཏུ་ལྷན་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས།	70
ཞིས་པའི་རོ་ལ་ཞེན་ཅིང་ཆགས།	80
ཟད་པ་ཤེས་པ་ཟག་བཅས་ཀྱང་།	50
སྒྲ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གསལ་བས་ཉེ་བར་རྒྱན་བྱས་ཤིང་།	61
ཡང་དག་སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་འདི།	46
ཡིད་བཏན་མི་རུང་འཆི་བདག་འདི།	68
ཡིད་འོང་མཉམ་ཞིང་ཆོར་མ་མེད་པ་དང་།	78
ཡུལ་རྣམས་བཟོད་ཅིང་གདུང་བས་ཉེན་བྱས་ཀྱང་།	49
ཡུལ་པའི་གཏམ་དང་རང་དབང་བརྟེན་པ་དང་།	57
རང་གི་སེམས་ནི་བདུད་ཅེས་གསུངས།	39
རང་སངས་རྒྱས་དང་བདེ་གསེགས་ཉིད་སྒྲེས་དང་།	77
རི་སྐལ་ཡངས་པ་སྒྲེ་བོ་ལང་ལོང་མེད་པར་རབ་བདེ་བ།	63
རིག་པའི་གནས་ལྟ་དག་ལ་བརྩོན་པར་མ་བྱས་པར།	46
རི་ཞིག་གཅིག་ན་དགྲ་ཡང་མཛའ་བོར་འགྱུར།	52

ལ་ལ་ལམ་གྱིས་དུབ་ཅིང་འགྲོ་བའི་ཆོ།	81
ལངས་ནས་བཅོམ་ལྷན་འདས་གྱི་ཡུམ།	91
ལས་གྱི་དབང་གྲུར་བདག་པོ་མེད་པ་དང་།	58
ལུས་གྱི་ཉོན་མོངས་སྦྱང་བ་ལས།	89
ལུས་མེད་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི།	97
ལེ་ལོ་དང་ནི་གདམས་ངག་རྣམས།	93
ཤ་སྤང་ཆ་གང་བཤེས་དང་ང་ལ་ལ་སོགས།	58
ཤིང་གཉིས་དྲུང་པ་ལས་ནི་མེ་འབྱུང་གླེ།	96
ཤེས་རབ་རྒྱས་བྱེད་པ་ནི་ཐོས་པ་སྟེ།	41
ས་ཕྱོགས་བདག་གིར་བརྩེད་མེད་པ།	64
སེམས་ཅན་རྟེན་པ་མེད་ལ་སྟོན།	54
སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ཆགས་བྱས་ན།	55
སེམས་ཅན་མོས་པ་སྤྲ་ཚོགས་པ།	55
སེམས་བསྐྱང་བརྟུལ་ཞུགས་མ་གཏོགས་པ།	87
སོ་ག་མེ་ཏོག་རྒྱས་པའི་དུས་འདི་འབྱུང་བར་འགྱུར།	68
སྟོབ་སྟོང་སྟོབ་སྟོང་སྟུང་པ་དང་།	88
གསོ་སྦྱང་སྟོམ་པ་དང་ནི་ལྷན་པ་ཡིས།	78
ལྷ་ཡི་བདེ་བ་དང་ནི་འགྱུར་པ་དང་།	90
ལྷུང་བཟེད་ལ་སོགས་ཉི་ཆེ་དང་།	64

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་བཞི་པ།

སྐོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོའི་ཉིང་དེ་འཛིན་ཚགས་ཀྱི་ལེའུར་གསལ་བའི་ལུང་འབྲེན་
ཆོས་ཚན་ཁག་གི་མཚན་བྱང་།

མདོའི་མཚན་བྱང་།

དྲི་མ་མེད་པ་གྲགས་བས་བསྟན་བའི་མདོ།	71
འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྦྱོན་མ།	44
འཕགས་པ་གང་པོས་ཞུས་པ།	80
འཕགས་པ་གཡུ་མགོ་ཟིའི་མདོ།	71
འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་རྣམ་པར་འབྱུལ་པ།	37
འཕགས་པ་ཉན་ཐོས་ཀྱི་སོ་སོ་ཐར་བའི་མདོ།	42
འཕགས་པ་དྲག་ཤུལ་ཅན་གྱིས་ཞུས་པ།	44
འཕགས་པ་སྤྲོང་པོ་བཀོད་པ།	41,46,47,71
འཕགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དགོད་པ་བརྩ་བསྟན་པ།	41,43
འཕགས་པ་མི་ཉག་པ་བསྟན་བའི་མདོ།	53
འཕགས་པ་མྱ་ངན་མེད་ཀྱི་བྱིན་བས་ཞུས་པ།	40
འཕགས་པ་ཁྲི་བ་སྦྱོན་མ།	65
འཕགས་པ་འོད་སྤངས་ཀྱིས་ཞུས་པ།	96
འཕགས་པ་སེའུ་ལྷང་བསྟན་པ།	40
འཕགས་པ་ལྷའི་བྱ་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གིས་ཞུས་པ།	38
འཕགས་པ་ལྷག་པའི་བསམ་པ་བསྐྱུལ་བའི་མདོ།	44

རྒྱུད་ལས་སྒྲུངས་པའི་གཞུང་གི་མཚན་བྱང་།

འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བཀའ་(ཚོག་)།	89
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་ཚོག་ཞིབ་མོ།	92
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་རྟོག་པ།	36
བདེ་མཆོག་གྱི་མ།	48
དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ།	90
འཕགས་པ་བློ་བའི་རྒྱལ་པོ་གདོང་དུག་པའི་རྒྱུད།	91
འཕགས་པ་དོ་རྩེ་ཅེ་མོ།	39
འཕགས་པ་དོ་རྩེ་གཙུག་ཏིར།	49
འཕགས་པ་དོ་རྩེ་འི་བྱ་བ།	72, 73
འཕགས་པ་རྣམ་པར་སྤང་མཛད་མཛོན་པར་བྱང་ཐུབ་པ།	76
འཕུལ་པ་དབྱེད་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པ།	38, 39, 50, 51, 56, 77, 80, 82, 84, 86, 90-91
འཕགས་པ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པར་བྱེད་པ།	82, 86

བསྐྱན་བཅོས་ཀྱི་མཚན་བྱང་།

ཚོས་མཛོན་པ།	50
རི་སྐད་དུ།	40
དོན་དམ་པའི་རིགས་པ། (དོན་མཛོད་ཀྱི་སྒྲུབ་)	48, 49, 69
མདོ་ལྷེ་རྒྱུ།	45
དཔལ་ལྷན་ཅིག་སྒྲིལ་པ་གྲུབ་པ།	88
བྱང་ཐུབ་སེམས་འབྲེལ།	75, 97

བྱང་རྩལ་སེམས་དཔའི་སྟོད་པ་ལ་འདུག་པ།	53, 55, 59, 65, 70, 87, 88
དབྱ་མ་རྒྱ།	76
དབྱས་མཐའ་ནམ་འབྱེད།	93
གཞོན་ནུ་མ་བདུན་ལ་གདམས་པ།	59
ཡན་ལག་བདུན་པ།	68
བཤེས་སྤྱིངས།	60, 66
སྤྱིད་པ་ལས་འདས་པའི་གཏམ།	60
སྟོབ་མ་ལ་སྤྱིངས་པ།	60, 61, 67
བསམ་གཏན་ཚེས་དྲུག	84

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ལུ་པ།

སྐོབ་དཔོན་བྱང་ཆུབ་བཟང་པོའི་ཉིང་འཛིན་ཆོགས་ལེའུར་གསལ་བའི་བོད་སྐད་དང་

ལེགས་སྦྱར་གྱི་ཐ་སྙད་ཤན་སྦྱར།

ཀུན་ཏུ་སྐོང་ས་པར་བྱེད་པ།

संमोहनम्

ཀུན་ནས་སྒྲིབ།

न पश्यति

ཀེང་ཅུས།

कङ्कालः

ལྷན་གྱིས།

मस्तिष्कम्

ལྷ་མ་རུངས་པ།

क्रूरनागः

དཀའ་ཐུབ་སྐྱབས་གྱིས།

तपोबलेन

དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་གྲལ་བར་མི་འགྱུར་བ།

त्रिरत्नवियोगाभावः

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་དད་པ།

श्राद्धस्त्रिरत्ने

དཀྱིལ་འཁོར་འཁོར་ལོ།

मण्डलचक्रः

བཤེས་སྐྱོམ་གདུང་བ།

क्षुत्तर्षतापान्

བཤེས་བའི་སྦྱག་བསྐྱལ།

क्षुधादुःखम्

ཀར།

मज्जा

སྐད་ཅིག་མ་དུ་མ།

बहूनां क्षणानाम्

སྐར་མའི་དབྱུང་པ།

उडुपरीक्षणम्

སྐལ་མཉམ།

सभागः

སྐལ་བ་ཆེ་བ།

धन्या

སྐྱེ་ནས་བ་གཉིས།

द्विविधकायः

སྐྱུ་ལ་དམིགས་པ།

སྐྱེས་ནས་སྤེལ་བ།

སྐྱབས་མེད།

སྤྱི་དྲག།

སྤྱི་ལྟ་ན་འཆིའི་སྤྱག་བསྐྱེལ།

སྤྱི་པོ་ལང་ལོང་མེད་པ།

སྤྱིས་པའི་མཚན་ཉིད།

སྤྱ་ཤེགས།

སྤྱ་ཤད།

བསྐྱེལ་པ་དཔག་དུ་མེད་པ།

བསྐྱོར་བ་བྱ་བ།

ཁུའྲིག།

ཁ་ཉོན་ལ་བསྐྱེལ་བ།

ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མེད་པ།

ཁ་ནང་དུ་བཞུགས་པ།

ཁ་ཐིར་བཞུགས་པ།

ཁ་ཐིར་བཞུགས་པ་ལ་དམིགས་པ།

ཁ་ཐས་ཀྱིས་གནས།

ཁ་ཐས་ཀྱང་རྩེས་སུ་ཆགས་པ་མེད་པ།

ཁ་ཐས་སྒྲན་དང་འདྲ་བ།

ཁམས་དང་སྤྱི་མཆོད་ལ་མཁས་པར་བྱ་བ།

कायालम्बना

तृषा म्रियते

निःशरणम्

लोकः

व्याधिजन्मान्तजराभिपीडा

विरतजनः

नरलक्षणम्

विमुण्डयकेशान्

केशलोमैः

अप्रमेयकल्पः

परिक्रमा

खट्वाङ्गः

स्वाध्यायाय अध्येषणम्

अनवद्यम्

अन्तर्मुखप्रवृत्तिः

बहिर्मुखप्रवृत्तिः

बहिर्मुखालम्बना

अन्नात् प्रतिष्ठा

भोजनेऽप्यननुरक्तः

भोजनमौषधवत्

धात्वायतने कौशल्यम्

ཁམས་རྣམས་ཟད་པ།

क्षीयन्ते धातवः

ཁ་ཆུ།

शुक्रम्

ཁྱད་པར་ཅན་དང་པལ་པ།

विशिष्टा साधारणा

ཁྱད་པར་དུ་འགྲོ་བ།

विशेषगामिता

ཁྱིམ་གྱི་བཅོམ་ར།

गृहनियमनगः

ཁྱིམ་པ་མཁམས་པ།

गृही दक्षः

ཁྲག།

रक्तम्

མཁམས་པ་རྣམས་ཀྱིས་བསྐྱགས་པ།

कौशलप्राशस्त्यम्

མགྲིས་པ།

पित्तम्

འཁོར་བ་ཆུ་ཤིང་གླིང་པོ་མེད་པ།

कदलीव जगत् निःसारम्

འཁོར་པོ་གཅིག་པའི་ཤིང་རྟ།

एकेन चक्रेण रथः

འགྲིག་པའི་བདེ་བ།

मैथुनसुखम्

མོམས་པ་ལུལ་དུ་གྱིན་པ།

अभ्यासपरिनिष्पत्तेः

མོས་ཀྱི་ཁ་དོག་བསྐྱར་བ།

धार्यं विरज्य

མོས་དང་གྲོགས་ཇེས་སུ་མཐུན་པ།

वस्त्रं मित्रं चानुकूलम्

གྲགས་པ།

कीर्तिः

གྲུབ་པའི་མཐུལ།

सिद्धान्तः

གྲོག་པོ་གྲོག་མཁར།

वल्मी-श्वभ्रकः

གྲང་ཆེན་བཏག་པ།

नागपरीक्षणम्

གྲུ་དང་གར་ལ་སོགས་པ།

गीतनृत्यादि

གློ་བུར་མེ་ཤོར་བ།

अग्नौ सहसा लग्ने

དགའ་བ་དང་བདེ་བ་ལ་དམིགས་པ།

དགའ་བའི་ནགས་ཚེ།

དགེ་བའི་རྩ་བ་ཚུམ་པ།

དགེ་བའི་རྒྱ་ཟེར།

དགེ་ལ་ཅི་བདེར་བཞག་པ།

དགྲ་ལ་སྤང་བ།

བགལས་ལས་གྲོལ་བ།

མགོ་སྒྲིམས་བྱེད་བར་འགྱུར།

མགོན་མེད།

འབྱེད་བ་ལ་འཇུག་པ།

འགྲོ་བའི་དོན།

འགྲོ་བའི་སྤྱོད་ལམ།

འགྲོན་ལ་སྒྲོགས་པ།

རྒྱ་ཆེན་ཁོར་ཡུག

རྒྱ་ཆེར་མ་སྒྲོས་པ།

རྒྱལ་ལོ་མཐར་འགྲོ་ཞོན།

རྒྱ་དང་འབྲས་བུ།

རྒྱ་མ།

རྒྱལ་པ།

རྒྱ་ར་ལྟར་སྒྲན་པ།

རྒྱ་ཇི་བཞིན་པ།

प्रीतिसुखालम्बना

नन्दनभूमिका

कुशलमूलारम्भः

पुण्यविधु-रश्मिः

यथासुखं कुशले स्थितः

शत्रुदूषणम्

विघ्नाद् विमुक्तः

तुलयिष्यामि

निर्नाथः

विग्रहं प्रवेश्य

जगद्धितार्थं

गामितेर्यापथः

वदन्ती पथिकान्

गुहागाढा

न विस्तरप्रपञ्चः

राज्ञे शालिवाहने

निमित्तं फलम्

अन्त्रम्

शृंगारः

मुरजमधुरैः स्वरैः

आगमे यथारुतम्

ལྷ་དང་ཚོགས་སུ་བཅད་པ།

शब्द-गाथा

ལྷོན།

चातुर्यम्

ལྷོལ་པ་གཉིས།

आवरणद्वयम्

ལྷོལ་པའི་དྲ་པ།

आवरणजालम्

ལྷོད་།

ऐतिह्यम्

ཤུད་ཆ་ཅན།

अष्टमांशः

ཤུལ་བར་བྱེད་པ།

मूर्च्छनम्

ཤམ་མ་པ།

भावना

ཤམ་མ་པར་བྱ་བའི་མན་ངག།

भावनोपदेशस्य

ང་ལོ་བདེ་བ།

सुवचस्

ངག་བདེ་བར་གནས་པ།

वाक्सुखासिका

ངན་འགྲོའི་གཡང་ས།

दुष्प्रपाता

ངན་སྲིང་གསུམ་སྒྲངས་པ།

त्र्यपायप्रहाणम्

ངལ་བ།

आयासम्

ངེས་པ་འགའ་མ་མཆིས་པ།

न निश्चितम्

ངོ་མཆར་ཆེ་བ།

आश्चर्यम्

ངོགས།

तीरा

ངོམས་པར་མི་འཐུང་བ།

धाव्यते न पीयते

དངོས་གྲུབ་མཆོག།

संसिद्धिम्

དངོས་གྲུབ་དམ་པ།

सिद्धिवरः

དངོས་གྲུབ་རྣམ་གསུམ།

त्रिविधासिद्धिः

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ།

དངོས་གྲུབ་སྒྲིན་མེད་པ་ཐོབ་པ།

དངོས་པོ་གང་ཡང་མི་གནས་པ།

མངོན་དགས་འགྲུབ།

མངོན་པར་མཐོབ།

མངོན་པར་འདུ་བྱེད།

མངོན་པར་མི་འགྲུབ་པའི་བདུན།

མངོན་པར་རྫོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པ།

མངོན་པར་ཤེས་པ།

ལྷགས་པ།

ལྷན་འབྲུངས་སྤངས་པས་སྤྲོངས།

ལྷན་བགད་པ།

ལྷན་དུ་འགྲོ་བ།

ལྷན་དུ་འཛོག་པར་བྱ་བ།

བལྟ་

ཅེས་མི་བཞོང།

གཅིག་དུ་ཡིད་གཞུངས་པ།

གཅིན་པ།

བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་ཡུམ།

ཆ་ཤས་དུ་མ་ལ་དམིགས་པ།

ཆགས་པར་གྱུར་པའི་ཉེས་པ།

ཆད་པ་སྦྱིན་པ།

ཁིལྱིར་ལུ་ཏྲུ་ལ།

कस्यचिद् वस्तुनोऽनवस्थितिः

अभिरतिः

अभ्युदयः

अभिसंस्कारः

अभिनिर्वृतिमारः

अभिसंबोधिः

अभिज्ञा

मन्त्री

हरित-लेखापरिकराः

पूर्वपरिहासः

पूर्वगमः

पूर्वकप्रणेतार्थम्

परिणामयेत्

न कथं सहेयम्

एकत्र मेधाः

मूत्रम्

भगवन्मातृकाम्

बहुवंशत उपलभ्यमानम्

आसङ्गदोषः

दण्डयन्ति

ཆར་ཆེན་སྤྱིན་གྱིས་འབྲིགས་པ།

वारिगुरुवारिद

ཕུ་སྤྱང་།

मदौघेण

ཕུ་རོགས་སྤྱན་པ།

सरितीरासत्रा

ཕུ་པོ།

नदी

ཕུ་ཡི་ཕུ་བུར།

वारिबुदबुदाद्

ཕུ་ཡི་པ་སྤྱོད་ནང་།

क्षीरोर्ममध्ये

ཕུང་མ་པད་མའི་ཐེང་བ་ཅན།

भार्या पद्ममालिनी

ཆོས་ཀྱི་རྒྱུས་སུ་འབྲང་བ།

धर्मानुसरणम्

ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས།

धर्मधातुः

ཆོས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཁོང་དུ་ཕུང་བ།

धर्मज्ञानावबोधः

ཆོས་སྤྱོད་པ་རྣམས་དགའ་བ།

धर्मपालानन्दाः

ཆོས་མཛོན་པ་རྣམ་པ་བདུན།

सप्तविधाभिधर्मः

ཆོས་ཉིད།

धर्मता

ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ལ་བསྟུ་བ།

सर्वे धर्माः चित्तै समाहिताः

ཆོས་དང་ལྡན་པ།

धार्मिकः

ཆོས་མ་ཡིན་པ་སྤྱོད་པ།

अधर्मावचरः

ཆོས་ལ་གཞོལ་བ།

धर्मपरायणः

མཆིན་པ།

गुल्मम्

མཆིལ་བས་བརྩུང་བའི་ཉ།

गृह्णात-झषम्

མཆེར་པ།

यकृत्

མཆོད་རྟེན།

चैत्यम्

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ།

མཆོད་བཀ།

འཆི་བའི་དུས་སུ་འགྲོད་པ་མེད་པ།

འཆི་བའི་དུས་ན་སུ་ངན་བྱེད་པ།

འཆིང་བ།

འཇིག་རྟེན་སྐྱོང་བཞི།

འཇིག་རྟེན་ཆགས་པ་མེད་པ།

འཇིག་རྟེན་བའི་ཐ་སྟེན་གྱི་འབྲེལ་བ།

འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་བའི་ཡོན་ཏན།

འཇིག་རྟེན་བསམ་པ།

འཇིག་བའི་ཆོས་ཅན།

འཇིམ་པ།

རྗེས་སུ་མ་སྐྱུན་བའི་གྲོགས་པོ།

བརྗེད།

ནམ་དམའ་བ།

ནམས་སུ་སྤྱང་བ།

ནམས་སུ་སྤྱོད་བའི་མན་ངག།

ནལ་ཉིལ།

ཉེ་བར་གྱུན་པ།

ཉེ་བར་སྦྱོན་པ།

ཉེ་བར་མཆོད་པ།

ཉེ་བར་འཆི་བར་བྱེད་པ།

पूज्यम्

मृत्युकालेऽविप्रतिसारः

विषीदत्यथ मृत्युकाले

बन्धम्

लोकपालैश्चतुर्भिः

लोके निरपेक्षा

लौकिकस्य व्यावहारिकः संबन्धः

लोकोत्तरा गुणाः

लोकचिन्ता

शातनधर्मिणम्

मृदा

अनुकूलं मित्रम्

सम्प्लोषः

सम्बाधः

उपादानम्

अनुभूतोपदेशः

भेलु

मण्डनासु

उपदेशः

उपलक्षणम्

उपचान्ति

ཉེར་སྤྱོད།

भोगा

ཉེས་པ་ལྡ།

पञ्चदोषा

ཉེན་མེད་ས་སྤྱི་བ་ལ།

क्लेशावृत्तिम्

ཉེན་མེད་ས་ཅན་གྱི་ཡུལ་མིན་ལ།

न गम्याः क्लेशाः

ཉེན་མེད་ས་པ་ལྡ།

पञ्चक्लेशाः

ཉེན་མེད་ས་པ་རབ་དྲུ་གཞོན་ཅིང་སེལ་བ།

क्लेशाक्रमणनिवृत्तिः

ཉེན་མེད་ས་བརྗོད་ལ།

आयाससहः

གཉིད་དང་སྤྲུགས་ལ།

स्त्यानमिद्ध-

གཉེན་པོ་ཡིད་ལ་བྱ་བ།

प्रतिपक्षमनसिकारे

གཉེན་ལ་མཛོན་པར་དགའ་བ།

मित्राभिनन्दनम्

མཉམ་པར་མ་གཞག་ལ།

असति समाधाने

རྗེད་པ་དང་བཀྱར་སྒྲི།

लाभ-सत्कारः

རྗེད་པ་མེད་ལ་སྒྲོད་ལ།

निन्दन्त्यलाभिनम्

རྗེད་སྤྱ་པར་བྱ་བ།

सुलभः

སྤྲུང་བ།

काव्यम्

སྤྲུང་པར་སྤྱ་བ།

प्रियंवदः

སྤྲིང་རྗེ་ཆེན་པོ།

महाकरुणा

སྤྲིང་རྗེ་སྤྲད་ལ།

करुणानिन्द्याः

སྤྲིང་རྗེའི་སྤྲིང་པོ་ཅན།

करुणासारः

སྤྲིམ་ལ།

अञ्जलिः

བསྐྱུང་པར་གནས་ལ།

उपवासः

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ།

བསྐྱེམས་པའི་ཁྱིམ་མ་ལགས།

ཁྱིམ་རེ་འཛིན་གྱི་ལན་ཡོན།

ཁྱིམ་རེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་དྲན་བ།

ཁྱིམ་རེ་འཛིན་ལ་དགའ་བ།

གཏན་ལ་འབེབས་བར་འདོད་བ།

གཏན་བཅས།

གཏི་མུག

གཏོར་མ་འདོད་བ།

ན་དཔྱད།

ནག་ཏུ་གདབ་བ།

ནག་པ་མེད་པའི་མཛའ་བསྐྱེས།

ནག་པའི་ཚེས་ཀྱང་འཛིག་བ།

ནེན་འབྲེལ་སྤྱིང་བོ།

ནེན་འབྲེལ་ལམ།

ནོག་བ།

སྐྱོང་བ་ཉིད།

སྐྱོན་བ་དང་པ་མ་དང་སྤྱི་མའི་དྲིན་བསབ་བ།

བསྐྱན་བཅོས་ངན་བ་སྐྱོབ་བ།

བསྐྱན་བཅོས་དོན།

ཐ་སྐྱད་ཉེ་བར་སྤྱར་བ།

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་ཉིད།

नैव गर्वः

समाध्यनुशंसा

समाधिगुणाः स्मृताः

समाधिरतिः

निर्णेतुकामा

कथासङ्गः

मोहः

बलीच्छः

अश्वपरीक्षणम्

कुर्यात् सदा

अशाश्वतो धर्मः

धर्मो भ्रश्यति शाश्वतम्

प्रतीत्यसारम्

प्रतीत्योद्भवमार्गः

बुद्ध्यना

शून्यता

शास्त्रमातापितृगुरुकृतज्ञता

दुःशास्त्रशिक्षाध्ययनम्

शास्त्रार्थः

व्यवहारोपयोगः

सर्वज्ञत्वं

ཐར་པ།

मोक्षः

ཐེག་ལེ་ལ་དམིགས་པ།

तिलकालम्बना

ཐེལ་གྱིས་ཁེབས།

जगधनपृष्ठः

ཐུབ་དབང་།

मुनीन्द्रः

ཐོས་པ།

श्रवणम्

ཐོས་པའི་ཤེས་རབ།

श्रुत(मयी) प्रज्ञा

ཐོས་མང་།

बहुवित्त्वम्

མཐོང་བའི་ཚོས་ཉམས་སུ་སྤྱོད་བ།

दृष्टधर्मानुभवः

འཐབ་པར་བྱེད་པ།

कलहः

དམ་པའི་ཚོས།

सद्धर्मः

དུབ་པར་གྱུར་བ།

क्लमथीभावः

དུར་ཁྲོད།

कायभूमिं निजाम्

དུས་ཤེས་པ་ལ་ཡོངས་སུ་བསྐྱེལ་བ།

कालज्ञतायै पर्यध्येषणीयः

དེ་བཞིན་ཉིད་ཡུལ།

तथ्यविषयाः

དོན་དམ་པའི་རིགས་པ།

परमार्थयुक्तिः

དོན་དུ་བརྒྱག་པ།

वाञ्छितम्

དོན་མེད་འདའ་བ།

मुधा याति

དྲིམ་མེད་པ།

निर्मलम्

དྲི་ཞིམ་བྱུག་པ།

परिमलाविलम्

དྲེགས་པར་བྱེད་པ།

उन्मादनः

དྲོ་ལ་བརྟན་པ།

उष्णत्वदार्ढ्यम्

གདམས་ངག་

གདམས་ངག་ཁོ་ནས་ཚིམ་པ།

གདུང་བ་བཅད་པ།

གདུང་བས་ཉེན།

གདུང་བ་ཞི་བྱས།

བདག་ཉིད་དག་པར་བྱ་བ།

བདག་ཏུ་ལྷ་བ་ཚོས་རྒྱལ་ས།

བདག་ཏུ་འཛིན་པ་བསྐྱོག་པ།

བདག་པོ་མེད་པ།

བདག་ལ་སྐྱོད་པ།

བདུད་ཀྱི་ལྷགས་ཀྱ།

བདུད་ཀྱི་རིགས།

བདུད་ཀྱི་རིགས་སུ་གཏོགས་པ།

བདུད་ཀྱི་ལས།

བདུད་ཀྱི་ལས་བསྐྱོག་པའི་ཐབས།

བདུད་ཀྱིས་སྒྲགས།

བདུད་བཅུ།

བདུད་ཅིའི་ཆུ།

བདེ་སྒྲག་ཏུ་རྟེན་པ།

བདེ་གཤེགས།

བདེ་གཤེགས་མཆོད་རྟེན།

अववादः

अववादमात्रेण तृप्तः

तापच्छेदः

अभ्यासेन गृहीतः

तापशान्तेः

आत्मविशोधनाय

आत्मदृष्टिगवेषिणाम्

आत्मग्राह-निवृत्तिः

स्वामि-विहीनः

माम जुगुप्

मारपाशा

मारकुलम्

मारकुलपर्यापन्नः

मारकर्म

मारकर्म-निवर्तनोपायः

मारश्छिद्रम्

दशमाराः

अमृतरसः

सुखलाभः

सौगतः

सुगतस्य चैत्यम्

མདངས་བཟངས།	तेजस्
མདོ་ཤི།	सूत्रम्
འབྲིད་པ།	प्रलोभनम्
འདུ་ཁྱེད་བརྒྱད།	अष्टौ संस्काराः
འདུ་མི་ཁྱེད།	असंस्कारः
འདུ་ཤེས་ནི་བར་བསྐྱབ་པ།	संज्ञोपसंहारः
འདུ་ཤེས་ལོག་པ།	संज्ञाविपर्ययाः
འདོང་པའི་གཏོལ་མེད་པ།	न ज्ञाताः गताः
འདོད་ཆེན།	इच्छन्तिकमहा-
འདོད་པའི་ཁམས།	कामधातुः
འདོད་པའི་གདུང་བ།	कामसंतापः
འདོད་པའི་ལྷ།	कामदेवः
ངོ་ལེབ་ཅན།	शिलातलम्
ལྷེ་ལྷ།	प्राहेलिकः
ལྷོག་པར་བྱ་བ།	निवृत्तिः
ལྷོག་ཅན།	पापः
ལྷོག་པ་སྤྱང་བ།	पापविशोधनम्
ལྷོག་པསྤལ་གཞོན་པ།	दुःखविक्रमः
ལྷོག་པསྤལ་འབྲས་བྱ་དང་བཅས་པ།	दुःखफलसहाः
ལྷོམ་པ་དང་ལྷན་པ།	संवरधारिणः
ལྷོམ་བརྗོན།	भिक्षुः

བད་སྐོང་བ་རྣམ་བ་བཞི།

བསྐྱེགས་ལ།

ནགས་སྐྱུང་།

ནགས་མཐོངས།

ནད་རྩང་བར་འབྱར་བ།

ནད་གྱིས་སྐྱུང་བ།

གནས་རྩེས་སུ་མཐུན་ལ།

གནས་དང་དེ་ལ་གནས་ལ།

གནས་བ་བརྟན་ལ།

གནས་བའི་ཐབས།

གནས་མལ།

གཞོད་བ་སྐྱོབ་ལ།

གཞོད་བཟོད་ལ།

རྣམ་བ་སྐྱོའོགས།

རྣམ་བར་རྟོག་བ་ཐམས་ཅད།

རྣམ་བར་རྟོག་བ་ལས་བྱུང་བ།

རྣམ་བར་ཐར་བ་མི་ཐོབ་ལ།

རྣམ་བར་མི་རྟོག་བའི་ཡེ་ཤེས།

རྣམ་བར་གཡོང་བ།

རྣམ་དུ་འཕྱག་ལ།

རྣམ་འཁྱོར་ལ།

चतुर्विधव्याकरणम्

तर्जनम्

वने

वनस्थलम्

अल्परोगत्वम्

नीयते बलात्

स्थानम् अनुकूलम्

आश्रयोऽथाश्रितस्तस्य

स्थितिर्दृढा

स्थित्युपायः

शाय्यासनम्

दुःखपरित्राणम्

व्यसनंसहः

नानाप्रकाराः

सर्वे विकल्पाः

विकल्पज

विमोक्षानवाप्तिः

निर्विकल्पकज्ञानम्

विक्षेपः

प्रशठवाहिता

योगिन्

རྣལ་འབྱུང་སྟོན་པ་ལ།

योगाचारः

རྣལ་འབྱུང་སྟོན་པའི་ས།

योगचर्याभूमिः

རྣལ་འབྱུང་རོལ་ལ།

योगिनीनये

སྒྲུབ་ས།

सिद्धाण

དཔའ་ཞིང་དབང་པོ་སྒྲུལ་ལ།

शूर-जितेन्द्रियः

སྒྲུབ་ས་ལ།

त्वक्

སྒྲུང་བར་བྱ་བ།

प्रहेयः

སྟོབས་པ་ཆེ་བ།

सुप्रातिभः

སྟོན་ཡུལ་གཅིག་ལ་ལྟ་བ།

एकं विषयं ईक्षे

སྟོན་ལམ་དང་རྩེས་སྤྱུ་མ་སྒྲུན་ལ།

ईर्यापथं च अनुकूलं

སྟོན་ལམ་རྣམ་པ་བཞི།

चतुर्विधेर्यापथे

སྟོས་པ་གཙོད་པ།

प्रपञ्चच्छेतुः

སྟོས་པ་དང་བྱལ་བ།

निष्प्रपञ्चः

སྟོས་པ་སྒྲུང་ས་ལ།

त्यक्तप्रपञ्चः

ཕ་རོལ་དུ་སྦྱིན་པ་བྱུག

षट्पारमिताः

ཕ་རོལ་སྦྱིན་པ།

पारमेः

ཕུ་རྒྱའི་རྒྱན།

निर्झरः

ཕུང་པོ་ལ་མཁས་པར་བྱ་བ།

स्कन्धे कौशल्यम्

སྦྱན་སྤྱུ་མ་ཚོགས་འདོད་པ།

संपत्ति-चाहै

བྲུག་འཚལ་བ།

प्रणम्य

བྱི་རོལ་ཀྱན་སྒྲུང་ས།

बाह्यं निराकृतम्

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ།

ཕྱི་རོལ་འཁོར།

ཕྱི་མ།

འཕགས་མཆོག་

བ་སྒྱ།

བད་ཀན།

བར་ཆད།

བྱ་ག་དགུ་པོ།

བྱད་མེད་ཏུ་མི་སྒྲེབ།

བྱད་མེད་མཆོན་ཉིད།

བྱ་གག།

བྱ་བ་མཐར་མ་ཕྱིན་པ།

བྱང་བར་མི་རྒྱས་པ།

བྱམས་དང་སྒྲིང་ཆེ།

བྱིང་བ་དང་ཁོད་པ།

བྱེ་མ་ལས་བྱས་པ།

བྲ་མ་བསྐྱེན་བཀུར།

བྲ་མ་དམ་པ།

བྲ་མའི་མན་ངག།

མོ་ཕྱོས་ལྷན་པ།

དབང་ཐང་ཆེ།

དབང་པོ་བསྐྱམས་པ།

भ्रमणाद् बाह्य-

विष्ठा

परमार्यः

तनूरूहैः

कफेन

विघ्नः

नवछिद्रः

स्त्रीत्वेनानुत्पादः

स्त्रीलक्षणम्

कौलेयकः

कार्यं चाप्यसमाप्य

शोधयितुं न शक्नोति

मैत्री च करुणा

लय उद्धवः

बालुकया कार्यम्

गुरुपवसनम्

सद्गुरुः

गुरुपदेशः

बुद्धिमत्

सौभाग्यम्

संवृतेन्द्रियः

དབང་པོ་ནོ་བ།

तीक्ष्णोन्द्रियः

དབྱ་མ་བ།

माध्यमिकानाम्

དབྱགས་རྩ་བ།

उच्छ्वासः

དབྱགས་འབྱུང་།

श्वासः

དབྱགས་ལ་དམིགས་བ།

श्वासालम्बना

དབེན་པ་མི་བརྟེན་བ།

विविक्तमनुपास्य

དབེན་པའི་ས་ཚུགས།

विविक्ते पृथिवीप्रदेशे

དབེན་པར་གནས་པ་ལ་བསྐྱལ་བ།

विविक्तस्थाने प्रेषणम्

འབད་བས་བསྐྱུབ་བ།

प्रत्ययबलात्

འབབ་ཆུ།

सरित्प्रवाहः

འབྱུང་ཁུངས་མཚོན།

धातुरागः

འབྱོར་བ།

विभूतयः

འབྲས་བུ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་བ།

फलानुरूपहेतुः

འབྲེལ་བར་བུ་བ།

संबन्धः

ཕྱིན་པོད།

दाता

མ་རངས་གད་མོ།

हसत्यसहनः

མང་དུ་སྡོས་བ།

बहुश्रुतः

མཐུལ་སྤུལ་བ།

मण्डलसमर्पणम्

མི་ཁོས་པ་ལྷག་མ་སྤངས་བ།

अक्षणावशेष-परिहारः

མི་ཚོས་དང་ལྷན་བ།

धार्मिकमनुष्यः

མི་མཚོན།

राजन्

མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་སྤངས་པ།

མི་སྦྱག་པ་དང་སྤང་བ།

མི་སྦྱག་པར་དམིགས་པ།

མི་མ་ཡིན་པས་མི་ཚུགས་པ།

མི་གཙང་།

མི་བཟད་བརྟུལ་ཞུགས་བཟུང་བ།

མི་བཟད་གདོན།

མི་ཡི་དངོས་གྲུབ།

མི་ཡི་དངོས་པོ།

མི་གཞོ་བ།

མི་ལུས་ཐོབ་པ་དོན་ཡོད་པ།

མི་སྤེས་པ།

མེ་དོག་གི་མདའ་ལྟ།

མུ་རམ་གྱི་ཐང་།

མུར་དུ་བདེ་གསེགས་ཐོབ་པ།

དམིགས་པ་བརྟེན་པར་མ་གཏུར་བ།

དམིགས་པ་དུ་མ།

མ་ནས་ཁྱི་མ་སྒྲ་ཚོགས།

མ་ཡི་གསོ།

མི་ལམ་དུ་འཛིགས་པ་སྤྱེད་པ།

མི་ལམ་ན་བྱད་མེད་དུ་སྦྱུལ་བ།

विपक्ष त्यागः

बीभत्ससंयोजनम्

अशुभालम्बना

मानुषेतरेनिघातः

अमेध्यम्

कृच्छ्रव्रतंगृहीतः

घोर-ग्रहः

लोकस्य सिद्धिः

मनुष्यभावं

अक्षोभः

अमोघमनुष्यकायावाप्तिः

अज्ञानम्

पञ्च पुष्पबाणाः

मरुस्थलम्

शीघ्रं लाभी सौगतम्

आलम्बनेऽसम्मोषः

अनेकालम्बनानि

नानामलानि व्रण-

व्रणापोषः

स्वप्ने भयोत्पादनम्

स्वप्ने स्त्रीकल्पकः

མྱོངས་པ་མེད་པ་ལ་བསྐྱལ་བ།

अमोहत्वाय अध्येषणा

མྱོངས་པར་བྱེད་པ།

मोहनः

སྤྲ་འཚོང་གཏམ།

वेश्याकथा

སྤྲ་ལམ་མངོན་པར་མི་འགྲུབ་པ།

प्रणिधानानभिनिर्वृतिः

སྤྲ་བའི་མཆོག་

वादिश्रेष्ठः

གཙང་སྤྲ་ཆེ།

महाधिशुद्धः

གཙུག་ཁྱུང།

चूडा

ཅེད་མི་བྱེད་འདོད་པ།

क्रीडितुमिच्छा

ཅེས་པ་དག་དྲན་པར་བྱེད་པ།

क्रीडास्मरणम्

ཅོད་པ།

विवादः

ཅོད་པའི་དུས།

काले कलौ

ཅོལ་མེད་མཐོ་བ།

अन्-प्रवृत्त्या

བཙོན་པར་བྱ་བ།

वीर्यम्

ཚ་ཚ་གདལ་བ།

साच्छकरणम्

ཚངས་པར་སྦྱོད་པ་དྲི་མ་ཅན།

ब्रह्मचर्यं मलिनम्

ཚད་མ་རྣམས་པ་བདུན།

सप्तविधप्रमाणम्

ཆེད་པ་སྦྱོབས།

आयुर्बलम्

ཆེ་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས་པ།

आयुरधिष्ठानम्

ཆེ་ཡོངས་སུ་གཏུགས་པ།

आयुष्यपर्यादानम्

ཆེ་རབས་གཅིག་ནས་གཅིག་

जनुषोऽन्वयः

ཆེ་མིང་པར་འགྲུར་པ།

दीर्घायुष्यम्

ཁ་སྐྱོང་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཆོ་ལ་ཡིད་མི་བདེན་པ།

ཆོགས་དང་བཅས་པ།

ཆོགས་མེད་བར་འགྲུབ་པ།

ཆོང་དང་ཞིང་ལས།

ཆོད་ཟེན་པ།

ལྷ་སྐྱོ་ཆོགས་བཅས།

མཚན་དང་དཔེ་བྱད།

མཚན་མ།

མཚན་མ་བྱད་བར་ཅན་ལ་དམིགས་པ།

མཚན་མ་སྒྲ་མོ་ལ་དམིགས་པ།

མཚན་མ་མེད་བའི་ཞི་གནས།

མཚན་མ་མེད་བའི་ལྷག་མཐོང་།

མཚན་མ་མེད་ལ་གནས་པ།

མཚན་མར་བཅས་པ།

མཚན་མས་ཡིད་མི་གཏུང་བ།

མཚམས་སྐྱོར་བར་མི་བྱེད་པ།

མཚོ་ཆེན་མཉན་པ།

མཚོན་ཆ་བདེན་པ།

འཆོ་བར་བྱེད་པ།

འཛིག་བའི་རྒྱན།

स्वस्थैरविश्वासः

सकृच्छ्रम्

अनाभोगं सिध्यति

वाणिज्यकृषिकर्म

मात्रज्ञः

ऊषरभिः

लक्षणव्यञ्जनम्

लिङ्गम्

निमित्तविशेषालम्बना

सूक्ष्मनिमित्तालम्बना

अनिमित्तशमथः

अनिमित्तविपश्यना

अनिमित्ते स्थित्वा

सनिमित्तम्

निमित्तेन न मनो संतापः

सन्धिर्न क्रियते

महासिन्धौ नावी

शस्त्रपरीक्षणम्

घ्नन्ति

धाराप्रवाहः

རྫོགས་པའི་བྱང་ཐུབ་གཞིག་པར་བྱ་བ།

सम्बोधि- विनाशः

ཞག

वसा

ཞི་གནས།

शमथः

ཞི་གནས་ཀྱི་འབྲས་བྱ།

शमथफलम्

ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་།

शमथविषयने

ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་དྲ་འབྲེལ་བ།

शमथविषयनायुगनद्धम्

ཞི་གནས་ལ་འཇུག་པའི་ཡན་ལག

शमथावताराङ्गानि

ཞེ་སྒང་།

द्वेषः

གཞན་གྱི་དྲིང་འཛོག་པར་མི་འགྱུར་བ།

अपरप्रत्ययः

གཞན་དག་ཚར་བཅད་བ།

अन्येषां निग्रहणम्

གཞན་ལ་པན་གདགས་བ།

परानुग्रहः

གཞོན་ཅུ་མ་ཡི་གདུ་བྱ།

कुमार्या वलयम्

བཞི་ཆ།

चतुर्थः

བཞིན་བཟང་རྣམས།

भद्रमुखाः

ཟག་བཅས།

सास्त्रवः

ཟད་པ་ཤེས་བ།

क्षयज्ञानम्

ཟར་མའི་ཤིང་ཤུན།

अतसी-वल्कलम्

ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར།

शशिमण्डलम्

གཟུགས་དང་གཟུགས་མེད་བ།

रूप्यारूप्यम्

གཟུགས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་བ།

रूपसमृद्धयः

གཟུགས་བཟང་།

གཞོ་ལ་བྱས་པ་གཞོ་བ།

བཟའ་བ་དང་བདུང་བའི་བདེ་བ།

འོད་ཟེར་གྱི་ཡན་ལག་ལ་དམིགས་པ།

ཡང་དག་ཏོགས་པ།

ཡང་དག་པར་བརྟོན་པ།

ཡང་དག་པར་ཞུགས་པ།

ཡན་ལག་བརྒྱད་དང་ལྷན་པ།

ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་འདུས་པ།

ཡང་དག་སངས་རྒྱལ་བསྟན་པ།

ཡི་གེར་གནས་པ།

ཡི་དྲགས་ཀྱི་རིགས་སྐུམ་ཅུ་ཙ་དུག

ཡི་དྲགས་དང་བཅས་པ།

ཡིད་གཙུགས་པ།

ཡིད་བརྟན་པར་བྱ་བ།

ཡིད་འབྱུང་པར་བྱ་བ།

ཡིད་གཞུངས།

ཡུལ་རྣམས་བསྟོད་པ།

ཡུལ་བའི་གདམ།

ཡུལ་ལ་མཛོད་དགའི་སེམས།

सुरूपः

आभोग-कृतज्ञताकः

भोजनपानसुखम्

प्रभाङ्गालम्बना

सुधिः

सम्यग्वीर्यः

संप्रस्थितः

अष्टाङ्गमयेन

सर्वाङ्गसमूहः

सम्बुद्धशासनम्

वर्णस्थितम्

षट्त्रिंशत्प्रेतकुलानि

प्रेतसहिताम्

विश्वस्तमानसः

चित्तस्य स्थिरीकरणे

चित्तसंवेगः

कुशलं मनस्

देशं भ्रमति

विषयस्य वार्ता

चित्तेऽभिरम्ये विषये

ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དཔྱེགས་པ།	ज्ञानालम्बनम्
ཡེ་ཤེས་ཁོང་དུ་རྒྱུད་པ།	ज्ञानावबोधे
ཡོན་ཏན་རྩེས་སུ་བྲན་པ།	गुणानुस्मृतिः
ཡོན་ཏན་མ་ལུས་ལྷན་པ།	ह्यशेषैश्च गुणैरुपेतः
གཡེང་བར་བྱེད་པ།	विक्षेपः
གཡེལ་བར་མི་བྱ་བ།	अतन्द्रितः
རང་གི་ངང་གིས་འབྱུང་བ།	स्वभावेन उत्पद्य
རང་གི་སྦྱལ་བསྡུལ་ནི་བ།	निजं दुःखं प्रशमः
རང་གི་འཛོལ་བ་ཙམ།	स्वजीविकामात्रम्
རང་གི་སེམས་ཉིད་བགོགས།	स्वचित्तं विघ्न एव
རང་གི་སེམས་ནི་བདུད།	स्वचित्तं मारम्
རང་འཛིང་བ།	स्वबन्धनम्
རང་ཉིད་ཀྱན་ཤེས།	स्वाज्ञा
རང་བཞིན་གྱིས་ནི་ཡངས་པ།	विस्तीर्णेषु स्वभावतः
རང་བཞིན་འགྲོགས་དཀའ།	प्रकृत्या दुःखसंवास
རང་བཞིན་མེད་པའི་ཚོས།	स्वभावरहितं धर्मम्
རང་སངས་རྒྱས།	प्रत्येकबुद्धः
རབ་དུ་གྲུས་པ།	अत्यादरेण
རབ་དུ་དགའ་བ།	प्रमुदिता
རབ་དུ་རྒྱལ་བ།	प्रधाव्य

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ།

རབ་དུ་བྱུང་བ་ལས་འབེབས་བ།

རབ་དུ་ཞི་བར་གནས་བ།

རབ་ཞི་ལྷན་བསལ།

རབ་རིབ་ལྷན་བསལ།

རི་དྲགས་རྒྱ་བའི་ཆོགས།

རི་ཅེ་ནགས་ཀྱི་མཐོང་ས།

རི་སུལ་ཡང་ས་བ།

རིག་བའི་གནས་ལྟ།

རིག་བའི་འབྲས་བུས་འབྲེལ་བ།

རིགས་ནི་བརྩམས་པ།

རིང་དུ་གནས་བར་བྱ་བ།

རིམ་གྱིས་བསྐྱབ་བ།

རུས་གོང་།

རུས་བ།

རྒྱང་ལྷན་གཡོ་བའི་རང་བཞིན།

ལང་ཆོ།

ལང་ཆོ་ཡོལ་བ།

ལན་བའི་རྒྱན་དུ་ཐོགས་བ།

ལམ་གྱིས་དུབ་བ།

ལམ་བསྐྱོམ་བ་དག་འཐབ་བ།

प्रव्रज्यायाः प्रपातयन्

प्रशान्तं तिष्ठति

तमसां निवृत्तेः

तैमिरहतेः

मुग्धमुग्धहरिणीगण-चार-

गिरिशृङ्गवनस्थल-

विशालाः शैलानाम्

विद्यास्थाने पञ्चविधे

विद्याफलेन सम्बन्धः

श्लाघ्यः कुलम्

चिरस्थिरीकरणे

क्रमेण शिक्षा

कङ्कालः

अस्थि

अनिलचञ्चलशीलम्

यौवनम्

निर्वापितयौवनम्

वेणिभिन्नम्

मार्गश्रमात्

मार्गभावनायां कलहम्

ལམ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ།	मार्गमनसिकारः
ལས་གྱི་དབང་གྱུར།	कर्माश्रयः
ལས་དང་པོ་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ།	आदिकर्मिकबोधिसत्त्वः
ལུས་གྱི་ཁ་བརྒྱད།	देहान्तरालम्
ལུས་གྱི་འབྲུལ་འཁོར།	शरीरयन्त्रम्
ལུས་གྱི་ཉོན་མོངས་སྦྱངས་པ།	कायक्लेशविशोधनम्
ལུས་ཁོ་ན་ལ་བརྟགས་པས་འགྲུབ་པ།	काय एव परीक्षणेन सिध्यति
ལུས་དང་ངག་དང་སེམས་ཐ་དད་ལ་དམིགས་པ།	कायवाक्चित्तान् पृथक् पृथक् -
	आलम्बन
ལུས་དང་འཚོ་བ།	कायजीवितम्
ལུས་བདེ་བར་གནས་པ།	कायसुखासिका
ལུས་གནས་འབའ་ཞིག	शरीरधारणमात्रम्
ལུས་ལ་ནད་ལྷན་ཚོགས་གཏོང་བ།	काये नाना रोगान् विसर्ज-
ལུས་ལ་དབྱུང་བ།	कायं विचार-
ལུས་ལ་འབབ་ཅིང་འཇུག་པ།	देहे प्रवणः प्रवेष्टा
ལུས་ལ་དམིགས་པ།	कायालम्बना
ལེ་ལོ།	कौसीद्यम्
ལེགས་པར་གནས་པ།	सुसंस्थितः
ལོ་ངོག་མ་རླུངས་པ།	शस्यं विनाश-
ས།	पलम्

ཁ་སྤོང་།

ཁ་ཆེལ།

ཤིང་གཉིས་བྱུང་བ།

ཤིང་རྩེ་མིག་སྤྱོད།

ཤིང་ལོ།

ཤིན་ཏུ་སྤྱངས་པ།

ཤེས་པར་དཀའ་བ།

ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་ལོ་ཏུ་བྱིན་པ་བསྐྱུགས་པ།

ཤེས་རབ་རྒྱས་བྱེད་པ།

ཤེས་རབ་དབང་ལོ།

ཤེས་རབ་མིག་

གཤིན་ཏེ་ཤེ་ཅོན་ནག་ཐོགས།

བཤང་སྟོ།

བཤང་གཅི།

ས་ཐོན་འབྱུང་བར་བྱེད་པ།

སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྤྱོད།

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཤིང་བྱ་སྤྱོད་པ།

སངས་རྒྱས་ཏེ་ས་སུ་བྱུང་བ།

སུན་འབྱེན་པར་བྱེད་པ།

སེམས་ཀྱི་ངང་ཆུལ།

ངེས་པོ་ཤིང་།

མང་མེད་པ་

མཆོད་པ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཕུན་སེམས་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

བུ་ཤིང་པོ་

སྤྱངས་པ་

དུ་ཤིང་པོ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

ཤིང་པོ་ལྷན་ཐབས་ལྟ་བུ་

སེམས་གྱི་ངང་ཚུལ་བདར་བ།

चित्तशीलकातराः

སེམས་གྱི་རྣམ་རྟོག་

विकल्पः

སེམས་བསྐྱེད་པ།

चित्तोत्पादः

སེམས་ཅན།

सत्त्वः

སེམས་ཅན་མོས་པ་སྒྲ་ཚོགས་པ།

नानाधिमुक्तिकाः सत्त्वाः

སེམས་ཅན་ལ་མན་པ།

सत्त्वहितम्

སེམས་མཉམ་པར་འཛིག་པ།

चित्तसमाधानम्

སེམས་བདེ་བར་གནས་པ།

चित्तसुखासिका

སེམས་མེད་པར་བྱེད་པ།

निश्चेतनम्

སེམས་ཚིམ་བྱེད།

तृष्णा तर्पयेत्

སེམས་ལ་མ་མི་འབྱུང་བ།

चित्ते क्षत्यनुत्पादः

སེམས་ལས་སྒྲ་རུང་བ།

चित्तकर्माणि

སེམས་ལུས་ལ་བསྐྱེད་པ།

चित्तं काये समाहितम्

སེམས་བསྐྱུང་བརྟུལ་ཞུགས།

चित्तरक्षाव्रतम्

སོ་ག་མེ་རྟོག་རྒྱས་པའི་དུས།

फुल्लकुसुमः कुसुमागमः

སོ་སོར་རྟོག་པའི་སྐེས་རབ།

प्रत्यवेक्षणाज्ञानम्

སྐྱས་བཅས།

सपुत्रः

སྤྲིད་པ་གཞི་བའི་རང་བཞིན།

चलात्मकभवम्

སྤྲིད་པ་ལ་ཆགས་པ།

भवरागः

སྤྲིད་པ།

तृष्णा

སྒོག་འཕྲོག་པ།

སྒོབ་སྒྱུང་སྒྱུང་པ།

སྒོབ་མ་དང་ཡང་སྒོབ་ཀྱི་འབྲེལ་པ།

སྒོབ་མ་ཡོངས་ཀྱི་སྒྲིན་པ།

གསང་སྒྲགས།

གསང་བའི་དོན་དུ།

གསུང་ལ་དམིགས་པ།

གསོ་སྒྱུང་།

གསོ་མ།

བསམ་གཏན་རྟེན་བྱེད་པ།

བསམ་གཏན་བ་དག

བསམ་གཏན་ལ་མཉམ་བར་བཞག་པ།

བསམ་པ།

བསོད་ནམས།

བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས།

བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས།

ལྟ་དང་ལྟ་མིན་ལ་སོགས་པ།

ལྟ་མ་ཡིན་དག

ལྟ་མོ་འདོད་བའི་གཞུགས།

ལྟ་མོའི་ཉམས་ཐག

प्राणान् हरन्

छात्रचर्यः स्याद्

शिष्य-प्रशिष्यसम्बन्धः

शिष्यपरिपाकः

मन्त्रः

वधाय

वागालम्बना

पोषध-

भंगः

सम्प्राप्य ध्यानम्

ध्यातृ

ध्याने समाहितः

चिन्ता

पुण्यम्

पुण्यसंभारः

पुण्यज्ञानसंभारः

सुरासुराद्यैश्च

असुरान्

देव्यः कामरूपिण्यः

दिव्याङ्गना

ལྷ་ཡི་ཆུ།

सुरसरित्

ལྷ་ཡི་བདེ་བ།

दैवं सुखं

ལྷ་ཡི་བུ་མོ།

दिव्याङ्गना

ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བུ།

विपश्यनाफलम्

ལྷག་པར་ཆགས་པར་གྱུར་བ།

अध्यवसानमापन्नः

ལྷག་པར་རབ་ཏུ་ཆགས་པ།

अभ्यासङ्गः

ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ།

सहजम्

ལྷའི་སྐུ་བསྐྱོམ་པ།

देवकायो भावनीयः

ལྷའི་གནས་སུ་ཆོ་དེ་ནིང་ལ་བསྐྱོད་པ།

सुरालये अस्मिन्नेव जीवने गमनम्

ལྷའི་རྣམ་པར་དམིགས་པ།

देवाकारालम्बना

ལྷའི་བུའི་བདུད།

देवपुत्रमारः

ལྷུང་བཟེད།

मृत्पात्रम्

•

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་དྲག་པ།

སྐོབ་དཔོན་ནག་པོ་ཐབས་ཀྱི་ཉིང་འཛིན་ཆོགས་ལེའུར་གསལ་བའི་པོད་སྐད་དང་ལེགས་
སྐྱར་གྱི་ཐ་སྙད་ཐན་སྐྱར།

པོད་ཆོག

ལེགས་སྐྱར་ཆོག

བཀའ་དང་མདོ་སྒྲེ།

वचन-सूत्राणि

རྒྱུ།

प्रत्ययः

སྐྱར་བ་མི་གདབ་པ།

अनपवादः

ཁ་འཕངས་བའམ་ཁ་སྐོང་།

क्षेपणानि पूरकाणि

ཁེ་དང་གྲགས་པ།

लाभ-यशश्च

གུས་བ་དང་ལྷན་པ།

सादरत्वम्

དགེ་བའི་བསེས་གཉེན།

कल्याणमित्रम्

འགྲོན་པོ།

अतिथिः

ལྷན་དྲུ་བསམ་པ།

सततचिन्तनम्

སྐྱ་དང་ཡི་གེ།

शब्दाक्षरम्

ང་རྒྱལ་སྐྱངས་པ།

मानप्रहाणम्

ངོ་དགལ།

चाटुः

ངོ་ཆ་སེས་བ་དང་སྐྱེལ་ཡོད་པ།

लज्जापत्रपा

ལྷག་བདེབ་པ།

चोदयन्

འཛིག་རྟེན་གྱི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ།

लोकावद्यम्

གཉེར་མ་དང་སྐྱ་དཀར།

वलीपलितम्

རྩོད་པ་དང་བཀུར་སྒྲི།
 བསྟོད་པ་དང་སྦྲད་པ།
 མཐོ་ལྡ་སྦྲངས་པ།
 རྟོགས་པ།
 བདུད་ཀྱི་སྦར་བ་ན་འདུག་པ།
 འདུ་འཛི།
 འདོད་པ་རྩུང་ཞིང་ཚོག་ཤེས་པ།
 འདོད་པ་དང་སྟེད་པ།
 ར་མ་སྟེད་དང་ཉི་མ་སྟེད།
 སྤུན་ཟླ་དང་ཉི་དུ།
 སྟོན་ལས་རྣམ་པ་བཞི།
 བར་ཆད་སྤང་བ།
 སྒྲོང་ན།
 མི་ལུས་རིན་པོ་ཆེ།
 མིའི་ལུས་ཐོབ་པ་དོན་ཡོད་པ།
 རྩུལ་བཞེན་མ་ཡིན་པ།
 ཞེན་པ་དང་ཆགས་པ་ཆེ་བ།
 གཞན་གྱི་སྦྱོན་ལ་མི་བདུག་པ།
 གཞན་གྱི་རྩུད་ཚོད་ཤེས་པ།
 གཞན་ལ་བརྟུས་པ་སྤང་བ།
 གཞི་དད་པ་དང་ལྷན་པ།

लाभ-सत्कारम्
प्रशंसा-निन्दा
उच्चदृष्टीः परित्यज्य
शंकाम्
मरमुष्टौ स्थितः
संसर्गः
अल्पेच्छता संतुष्टिश्च
इच्छा-तृष्णा च
अर्धरात्रौ मध्याह्ने
भ्रातृबन्धुम्
चतुर्विधकर्मणः
अन्तरायप्रहाणम्
दुर्मतिः
नरदेहरत्नम्
प्राप्तनरदेहसार्थकता
अयोनिशो
अत्यभिनिवेशासक्तिः
परदोषानवेक्षणम्
परचरितमात्रज्ञानम्
परावमाननां प्रहाय
मूलं श्रद्धावत्त्वम्

གཞིན་སྐྱུལ།

ཐབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ།

ལ་རབས་ཀྱི་ཚུལ་ལས་མི་ཉམས་པ།

ཡིད་སྐྱོབ་མེད་པ།

ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐེ་ཆོས་མི་ཐ་བ།

ཡོན་ཏན་ལེན་པ།

རང་དང་གཞུང་གི་གྲུབ་མཐའ།

རེ་བ།

སྐྱོམ་སེམས་མི་བསྐྱེད་པ།

ལེ་ལོ་དང་སྐྱོམ་ལས་སྤང་བ།

ལུས་སེམས་ང་ལ་ཁིང་དུབ་པ།

ལུས་བསྐྱེད་པ།

སེས་པའི་བྱེ་བྲག་མི་འདྲ་བ།

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་སྐྱོད་པ།

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས།

སེམས་དབང་ཁིང་བརྟུལ་མོད་པ།

གསར་འགྲོགས།

ལྷ་མཛོད་དུ་བྱ་བ།

ལྷ་ཉི་བར་བྱ་བ།

ལྷ་མཉེས་བར་བྱ་བ།

प्रेरकः

गम्भीरोदारम्

आर्यतावृत्तानपायीनि

खेदसहिष्णुमनस्कता

विश्वासः निसंशयत्वम्

गुणग्रहणम्

स्व-पर-सिद्धान्तेषु

आशा

मन्यनानुत्पादः

तन्द्रालस्यप्रहाणम्

कायचित्त-क्लमथश्रान्ति

कायरक्षकाणि

ज्ञानविशेषवैषम्यम्

बुद्धधर्मचर्या

बुद्धज्ञानम्

शूरवीरचित्तम्

नवासंगः

देवाभिमुख्ये

देवोपासने

देवाराधने

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་བདུན་པ།

སྒྲིབ་བརྗོད་དུ་ལུང་འབྲེན་སྒྲུབ་ས་པའི་གཞུང་ཚན་ཁག་གི་མཚན་བྱང་།

མདོ་སྔགས་ཁོང་གཏོགས་གྱི་མཚན་བྱང་།

དགོངས་པ་ངས་བར་འབྲེལ་བའི་མདོ།	45, 48, 66,
རྒྱ་ཆེར་རྩལ་པའི་མདོ།	37
ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ།	41, 42, 51, 57
མདོ་སྔང་འདས་ཆེན་པོ།	50
འཕགས་པ་དགོན་མཆོག་སྤྱིན་གྱི་མདོ།	48
འཕགས་པ་གཡུ་མགོ་རིའི་མདོ།	44
འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པ་གྲགས་པས་རྒྱས་པའི་མདོ།	44
འཕགས་པ་ཡུལ་འཁོར་སྤྱོད་གིས་རྒྱས་པའི་མདོ།	43

བསྟན་བཅས་ཁོང་གཏོགས་ཁག་གི་མཚན་བྱང་།

སྟོམ་པའི་རིམ་པ། ཐོག་མ།	41, 66
སྟོམ་པའི་རིམ་པ། བར་པ།	45, 47
སྟོམ་པའི་རིམ་པ། ཐ་མ།	56, 65
ཆས་མཛོན་པ་མཛོད་གྱི་ཆོག་ལེའུར་བྱས་པ།	39
ཆས་མཛོན་པ་མཛོད་གྱི་རང་འབྲེལ།	46
ཉན་ཐོས་གྱི་ས།	64
ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཆོགས་གྱི་ལེའུ།	40

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་བདུན་པ། 189

མདོ་མེ་རྒྱན་གྱི་ཆོགས་ལུང་བྱས་པ། 40, 49

སྤྱོད་པ་བསྟུས་པའི་སྒྲོན་མ། 43

པ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་བསྟུས་པ། 39, 44

བྱང་རྩབ་ལམ་གྱི་སྒྲོན་མ། 58, 73, 74

བྱང་རྩབ་ལམ་གྱི་སྒྲོན་མའི་དཀའ་འབྲེལ། 69, 73, 74

དབྱུས་མཐའ་རྣམ་འབྲེད། 54, 60

ཤེས་རབ་གྱི་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་བསྟུས་པའི་མན་ངག། 65

སྟུམ་རྩ་པའི་འབྲེལ་པ། 46

ལྷ་བ་ངན་སེལ། 66

བོད་གཞུང་ཁོང་གཏོགས་གི་མཚན་བྱང་།

བཀའ་གདམས་པ་ཆོས། 67, 69

དྲུ་རྒྱལ་མཛད་པའི་དུས་འཁོར་ཆོས་འབྱུང་། 71

བྱང་རྩབ་ལམ་རིམ་འབྲིང་པ། 64

ཤེས་བྱ་ཀུན་བྱུང་མཛད། 65

ལམ་རིམ་སླ་བརྒྱད། 69

བོད་སྐད་ཆོས་འབྱུང་། 71

དེབ་ཐེར་སྒྲོན་པོ། 71

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་བརྒྱད་པ།

སྐོང་བཟླ་དྲུ་བཀོད་པའི་དབྱུད་གཞིའི་གཞུང་ཚན་ཁག་གི་མཚན་བྱང་།

མདོ་སྒྲགས་ཀྱི་མཚན་བྱང་།

དགོངས་པ་ངས་བར་འབྲེལ་བའི་མདོ།	Toh. 106
རྒྱ་ཆེར་རོལ་བའི་མདོ།	Toh. 95
ཉིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ།	Toh. 127
མདོ་ཆེན་པོ་ཟུང་ན་ལས་འདས་པ།	Toh. 119
འཕགས་པ་དགོན་མཆོག་སྤྱིན་གྱི་མདོ།	Toh. 231
འཕགས་པ་གཡུ་མགོ་རིའི་མདོ།	Toh. 109
འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པའི་བྲགས་པའི་མདོ།	Toh. 176
འཕགས་པ་ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་གིས་རྒྱས་པའི་མདོ།	Toh. 62
བྱང་རྒྱུ་མེས་དཔའི་སྡེ་སྐྱོད།	Toh. 56
ལང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ།	Toh. 108

བསྐྱན་བཅོས་ཀྱི་མཚན་བྱང་།

བྱུ་བོ་བ་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུ་ལ། འཛིགས་མེད་སྤྱིན་པ།	Toh. 4961
སྐོམ་པའི་རིམ་པ། ཐོག་མ། སྐོབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྲིལ།	Toh. 3915
སྐོམ་པའི་རིམ་པ། བར་པ། སྐོབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྲིལ།	Toh. 3916
སྐོམ་པའི་རིམ་པ། ཐ་མ། སྐོབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྲིལ།	Toh. 3917
ཆོས་མཛོན་པ་མཛོད་ཀྱི་ཆོག་ལེའུར་བྱས་པ། སྐོབ་དཔོན་དབྱིག་གཉེན།	Toh. 4089

ཚས་མངོན་པ་མངོན་གྱི་རང་འབྲེལ། སྒྲིབ་དཔོན་དབྱིག་གཉེན།	Toh. 4090
ཉན་ཐོས་གྱི་ས། འཕགས་པ་ཐོགས་མེད།	Toh. 4036
ཏིང་འེ་འཛིན་གྱི་ཚིགས་གྱི་ལེའུ། བྱང་རྒྱལ་བཟང་པོ།	Toh. 3924
མདོ་སྡེ་རྒྱན་གྱི་ཚིགས་ལེའུར་བྱས་པ། རེ་བཙུན་བྱམས་མགོན།	Toh. 4020
སྦྱོད་པ་བསྐྱས་པའི་སྦྱོན་མ། འཕགས་པ་ལྷ།	Toh. 1803
པ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བསྐྱས་པ། སྒྲིབ་དཔོན་དཔལ་པོ།	Toh. 3944
བྱང་རྒྱལ་མེམས་དཔའི་སྦྱོད་པ་ལ་འབྲེལ་བ། རྒྱལ་སྤུལ་ཆེན་པོ་ཞི་བ་ལྷ།	Toh. 3871
བྱང་རྒྱལ་ལས་གྱི་སྦྱོན་མ། སྒྲིབ་དཔོན་དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས།	Toh. 3947
བྱང་རྒྱལ་ལས་གྱི་སྦྱོན་མའི་དཀའ་འབྲེལ། སྒྲིབ་དཔོན་དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས།	Toh. 3948
དབྱུས་མཐའ་རྣམ་འབྲེད། རེ་བཙུན་བྱམས་པ་མགོན་པོ།	Toh. 4021
སུམ་རྩ་པའི་འབྲེལ་བ། སྒྲིབ་དཔོན་སྒྲོ་བྱོས་བདན་པ།	Toh. 4064
ཤེས་རབ་གྱི་པ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བསྐྱོམ་པའི་མན་ངག། སྒྲིབ་དཔོན་རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བ།	Toh. 4076

བོད་གཞུང་ཁག་གི་མཚན་བྱང་།

བྱང་རྒྱལ་ལས་རིམ་ཆེན་མོ། རེ་ཙོང་ཁ་བ། ལྷ་ར་དགེ་ལྷན་གྱི་ལས་ཁང་ནས་དཔེ་སྐྱུན། 1922

བྱང་རྒྱལ་ལས་རིམ་འབྲིང་བ། རེ་ཙོང་ཁ་བ། མཚོ་སྦྱོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུན་ཁང་། 1924

ཤེས་བྱ་ཀུན་བྱབ་མངོན། ཀེང་སྤུལ་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ། མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུན་ཁང་། 1924

བཀའ་གདམས་པ་ཚོས། འབྲོམ་སྦྱོན་པ་སོགས། མཚོ་སྦྱོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུན་ཁང་། 1925

སྦྱོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་གྱི་ཁྲིང་བཟོད། ལྷ་ར་རྒྱལ་མཚན་རྣམ་གྱིས།

ལྷ་ར་མཐོ་སྒྲིབ་ཁང་ནས་དཔེ་སྐྱུན། 1922

ལྷུ་རབས་ཚོས་འབྱུང་ཁག་གི་མཚན་བྱང་།

དྲུ་རྩ་ཐ་ཚོས་འབྱུང་། ཇེ་བཅུན་དྲུ་རྩ་ཐ། ལྷ་ཆ་བོད་དགོན་ནས་དཔེ་སྐྱུན། ༡༩༩

དེ་བ་སྒྲོན་གསར་མ། ཁང་དཀར་ཚུལ་གྱིས་སྐལ་བཟང་།

གངས་ལྗོངས་ནང་རིག་མཐུན་ཚོགས་ཀྱིས་པར་སྐྱུན། ༡༩༧༧

དེ་བ་ཐེར་སྒྲོན་པོ། འགོས་ལྗོ་ཅ་བ་གཞོན་ཏུ་དཔལ། སི་ཁྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུན་ཁང་། ༡༩༩༩

བྱུ་མ་ཐའི་འབྱུང་བ་བཟོད་པ། དགེ་བཤེས་ཡེ་ཤེས་དཔར་ལྷུག། ༡༩༧༢

ལྷུ་རབས་དྲངས་ཤེལ་འབྱུལ་གྱི་མེ་ལོང་། ཡེ་ཤེས་རྩ་མེ།

དེ་བ་ཐེར་ལྗང་བྱ། ཁང་དཀར་ཚུལ་གྱིས་སྐལ་བཟང་། གངས་ལྗོངས་ནང་རིག་མཐུན་ཚོགས་ཀྱིས་དཔེ་སྐྱུན། ༡༩༩༩

བྱ་སྒྲོན་ཚོས་འབྱུང་། བྱ་སྒྲོན་རིན་ཆེན་གྲུག། ཀྱང་གྲོའི་བོད་ཀྱི་ཤེས་རིག་དཔེ་སྐྱུན་ཁང་། ༡༩༩༡

བོད་སྐད་ཚོས་འབྱུང་། ཤིང་བཟང་སྐལ་བཟང་ཚོས་ཀྱི་ལྷུ་མཚན། མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུན་ཁང་། ༡༩༩༣

གངས་ཅན་མཁས་བྱུ་མ་ཐེན་མིང་མཛོད། ཀན་ལུ་མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུན་ཁང་། ༡༩༩༣

ཚོས་འབྱུང་མཁས་པའི་དགའ་སྒྲོན། དཔལ་བོ་གཙུག་ལག་ཤང་བ། མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུན་ཁང་། ༡༩༧༩

ལྷུ་གར་པཎ་ཆེན་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར། མཁས་བཅུན་བཟང་པོ། ར་ས་དཔེ་མཛོད་ཁང་གི་དཔེ་སྐྱུན། ༡༩༧༣

སྒྲེ་དགོ་བཀའ་བསྐྱན་དཀར་ཆག། Toh.4465, 4466 ཀམ་བསྐྱན་པའི་ཉིན་བྱེད་གཙུག་ལག་ཚོས་ཀྱི་

སྐང་བ་དང་ཚུལ་གྱིས་རིན་ཆེན།

